



# अच्छती धरती

(VIRGIN SOIL)

लेखकः

तुर्गनेव



प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक

प्रभात प्रकाशन,

मुंबई



घटुषावक

रामगोपालसिंह चौहान एम ए



सर्वाधिकार सुरक्षित



प्रथम संस्करण

१९५८



मुद्रक ।

भागरा फाइन आर्ट प्रेस,

भाबरा



मुद्रक

छ: स्वया

## अच्छूती धरती के विषय में

सुगनेब कसी साहित्य के घमर नसब से । उम्होने घपने सपग्यासों में घपने बर्ये तथा सभान की घीरे-घीरे प्रस्फुटित होने वाली राजनैतिक बेतना तथा घाकासाघों को सजीब घनिय्यक्ति प्रबान की है । फ़रसीसी राज्यघाम्ति ने राजनैतिक बेतना की बी महर सठाई उसमें बदे-बदे घक्तिनासी राज्य कंग कर घराघामी हो गए । कस १९ वी घताब्दी में राजनैतिक घोर सामाजिक हर्षि से घरघम्ट विघ्नका हुपा तथा घीपित राज्य या घीर इस विघ्नबेपन का कारण घी कस को मुर्दास बारघाही जिमके दमन की चहूी में कसी बनता न जाने कब से पिसरी कसी घा रही बी । इसी बारघाही बरबरता का घंत करने घीर घकतम्यवादी राज्यम्यबस्था से मुक्ति पाने के स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से निहिनिस्ट पार्टी का निर्माण कुछ प्रहुट कसी नबमुबकों की घभतप्रेरणा तथा उनके सामूहिक प्रयासों से हुपा । घमूनी घरती के घन्तिम घमरों—

‘बहुत देर तक पाकमिन बन्द दरबाबे के घाये लड़ा रहा ।

‘घुमनाम क्य !’ घंतत उसमे कहा ।’

में न देबघ सपग्याम का बरन् १९ वीं घताब्दी के उत्तरार्द्ध के कसी नबमुबकों के स्वप्नों तथा घाकासाघों का सारास भी सन्निहित है । क्य का यह प्रहुट युबकबर्ष घम घक्ति का परिचायक है बी कि राज नैतिक घमाम एवं घंबनार से परिपूरण कस के ‘बन्द दरबाबे के सामूह

लड़ा का धीर किसी भी क्षण उसे व्यस्त कर देने को तत्पर या तार्किक रूप में भी राजनैतिक स्वतन्त्रता का पुन्योदय हो सके । इन राजनैतिक रूप से व्यापक एवं सुव्यक्तित्व कधी नवयुवकों ने सन् १८७० के पास पास कुछ संघठन किए तथा अज्ञातवास करना प्रारम्भ किया । 'मसूनी भरती' में निहितिस्ट धान्दोसन की ऐतिहासिक संगति का मार्मिक विश्लेषण तुर्मेनोव ने प्रस्तुत किया है तथा जीवन के प्रति व्यापक कक्षा कार के अनुरूप ही ऐसे धान्दोसन के जन जागृति के संदर्भ में पुण-बोनों को स्पष्ट किया है । तुर्मेनोव ने इस धान्दोसनिवासी क्रांतिकारी जन की धनिचार्य दुर्बलताओं तथा विपमताओं का अत्यन्त सहायुक्तिपूर्ण विमलु किया है । इस प्रकार यह उपन्यास कस की उत्कासीन राजनैतिक स्थिति का एक सजीव प्रतिनिधि उपन्यास है ।

भरिघाना 'मसूनी भरती' की प्राण है । यह कसी भरती की प्रतीक है । नेज्बानोव उसका पहला प्रेमी है, जिसके साथ वह अपने प्यारे देश के लिए धान्दोसन के अत्यन्त मार्ग पर निकल पड़ती है । नेज्बानोव निहितिस्ट धान्दोसन की दुर्बलताओं धीर देश की अतिरिक्त स्थिति में इस धान्दोसन की स्वामात्मिक अक्षमता का प्रतीक है । उसका धान्दोस हत्या कर केना धीर भरिघाना को सोसोमिन को सोंप जाना इस बात का प्रतीक है कि कस की मसूनी भरती की प्रतीक भरिघाना का हाथ नेज्बानोव जैसे निहितिस्ट नहीं सम्हाल सकते उसका हाथ तो सोसोमिन जैसे हड़, धीर्यवान धीर सरल स्वभाव क जनता के बीच के धान्दोस ही सम्हाल सकते हैं । तुर्मेनोव ने पाकिजन के द्वारा इस बात को स्पष्ट भी कर दिया है— 'इसलिए प्यारी मसूरिना इस सबकी चिन्ता मत करो, लेकिन एक बात में तुम्हें बताऊँ हूँ धीर वह यह कि हमारा यथा यस्ता सोसोमिन के साथ है धीरे धीरे समझदार सोसोमिनों के साथ ।'

हमारे देश भारतवर्ष में भी इस प्रकार के नौजवानों द्वारा संघामित अनेक धान्दोसन अपनी धनिचार्य अक्षमताओं को प्राप्त होकर

हमें यह अनुभव है मए है कि भारत की धरती भरती का बरख भी बीर, गम्भीर, सरल जनता के बीच के भारतीय सोसोमिन ही कर सकते हैं ।

‘धरती भरती के समस्त पात्र अपने प्रतीक रूप में तत्कालीन रूप के राजनतिक जीवन के सख्य प्रतिनिधि हैं । नेज्जामोब ‘धरती भरती का एक महत्वपूर्ण पात्र है । वह कवि है तथा भर्तृहरिभात है । उसकी शैक्षिक बैचनी वास्तव में सिद्धित अधिवातवर्ग की शैक्षन धस्त-रात्मा का प्रतिनिधित्व करती है । जो कि सर्वैत ही अपने धापको जनता के प्रति उत्तरदायी समझते हैं किन्तु अपने बगपत संस्कारों एवं सीमाओं के कारण वे न तो जनता तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं और न उनके साथ जुम मिस ही सकते हैं । नेज्जामोब जनता तक पहुँचने की धसम्भरता से धली धाँठि परिधित है । जनता के प्रति सहायुमूठि रखने के कारण एक धीर बह स्वयं अपने बय से बहिष्कृत है धीर दूसरी धीर जनता तक उसकी पहुँच है नहीं । उनके जीवन की यह स्थिति उसके मन में एक भयंकर धाल्मभाती इन्ध को उत्पन्न कर देती है धीर बह अपने घर से बिरबास जा बैठता है । मरिधाना जो उसके लिए उसी जनता का पवित्र प्रतीक है का हाथ पकड़ने में अपने की सखया धसमर्ष पाता है धीर इसी दम्भ में वह मरिधाना का हाथ सोसोमिन के हाथ में देकर प्राण छोड़ देता है । नेज्जामोब का यह मिरादाबाद तत्कालीन मिहिलिस्ट धाम्योसन की एक मनोब्रयात्सक बिधायता है । नेज्जामोब का इस प्रकार धन उपस्थित करके दुर्गबेव ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि धरू का मबिध्व किन्हीं धन्य प्रकार के धम्भिकारियों के हाथ में ही है जो कि हमें मरिधाना तथा सोसोमिन के चरित्रों के रूप में देखने को मिसते हैं । जनता का मबिध्व ऐसे तापों के हाथ में है जो कि जनता में से ही पाठे हैं ।

मरिधाना का चरित्र ‘धरती भरती की जीवनधक्ति है । इस निधि



एक

वार्त्त सन् १८६८ की है। वसन्त ऋतु में एक दिन दोपहर का एक बजे एक आदमी जिसकी आयु २७ वर्ष की थी और जिसने बड़ी सापरवाही से मीले-कूचैले कपड़े पहन रखे थे पीटसवग नगर में आफोसस स्ट्रीट पर स्थिति एक पैचमजिस मकान पर पिछवाड़े की सीढ़ियां चढ़ रहा था। वह व्यक्ति अपने जूतों का जिनकी एड़ियां घिस गई थीं भारिल पैरों से घसीटते हुए, अपने भारी भरकम बोझों से घरीर को ज्या त्यों धीरे-धीरे घसीटता हुआ, अंत में सीढ़ियों के ऊपर पहुँच ही गया। वह एक प्रघणुमे दरवाजे के सामने रना जो अपने कदमों पर से घसग मूम रहा था और विना पंटी वजाय एक भारी निस्वास छोड़ते हुए वह एक छाटी घँवैरी पीरी में घुस गया।

‘क्या नेग्धानोव घर पर हैं ? उसने भारी और सब आवाज में पुकारा।

‘वह ठा नहीं है—मैं हूँ, अन्दर आ जाओ, वगल के कमर से एक स्त्री की आवाज आई, उसकी आवाज भी भारी और रूसी थी।



## अनुवादक की बात

‘घसूनी भरती प्रबिद्ध रूपी लेखक इब्राम तुर्गनैव के कृती उपन्यास Virgin Soil का हिन्दी अनुबाद है। इस उपन्यास का एक और अनुबाद भी प्रकाशित हुआ है। उस अनुबाद में न जाने क्यों मूल उपन्यास के कुछ स्थलों विशेषकर बमन और फ्लैच भाषा में दिए मुहावरों तथा कुछ चीतों को छोड़ दिया गया है। मेरे इस बात का ध्यान रखा है कि मूल उपन्यास की आत्मा अपने रूप में ही हिन्दी में प्रस्तुत हो सके, कहीं तक लुप्त न हुआ है वह तो आप जानें।

डा० रामबिलास शर्मा ने मुझे बमन और फ्लैच मुहावरों का अनुबाद करने में सहायता दी है। मैं उनका आभारी हूँ। अनुबाद के बीच में श्री जनरलम भस्वामा ने कहीं-कहीं अपने सुन्दर सुझावों से अनुबाद को और भी सुन्दर बनाने में सहयोग दिया। मैं उनका भी आभारी हूँ।

४०६२ मोठीलाब  
नेहरू राड  
भाबरा

रामगोपालसिंह श्रीहान

एक

व्राज सन् १८६८ की है। वसन्त ऋतु में एक दिन दोपहर को एक वज्रे एक आदमी, जिसकी आयु २७ वर्ष की थी और जिसने घड़ी लापरवाही से मैने-कुचैन कपड़े पहन रखे थे पीटसवर्ग नगर में ग्रोफीसस स्ट्रीट पर स्थिति एक पंचमंजित्त मकान पर पिछवाड़े की सीढ़ियां से खड़ रहा था। वह व्यक्ति अपने जूतों का जिनकी एड़ियां बिस गद्दी थीं भारिल पैरों से घसीटते हुए अपने भारी भरकम वेर्डीन शरीर को ज्यां त्या धीरे-धीरे घसीटता हुआ घंत में सीढ़ियों के ऊपर पहुंच ही गया। वह एक अचानुने दरवाजे के सामने रुका, जो अपने बज्रा पर से अलग मूल रहा था और बिना पंटी धजाये एक भारी निद्रबास छोड़ते हुए, वह एक छाटी धपिरी पौरी में घुस गया।

‘क्या नज्मानोब घर पर हैं?’ उसने भारी और उच्च आवाज में पुकारा।

‘वह तो नहीं हैं—मैं हूँ अन्दर आ जाया, बसस के कमरे से एक स्त्री की आवाज आई, उसकी आवाज भी भारी और रुकी थी।

‘मधुरिना ?’ भागन्तुक ने जिज्ञासा की ।

‘हाँ, मैं ही हूँ । और तुम—प्रोस्त्रोदुमोव ?’

‘पियेन प्रोस्त्रोदुमोव’ उसने उत्तर दिया, और बड़ी धाबधानी से अपने रबड़ के ऊपरी बूते उतारते हुए और अपने जीर्ण लवादे को एक कील पर टांगते हुए वह उस कमरे में घुस गया, जिसमें से स्त्री की आवाज आई थी ।

वह कमरा नीचे पटाव धाना और बड़ा गन्दा था । उसकी दीवारें धुँधले हरे रंग से पुती हुई थीं । घूस से घटी हुई दो सिड़कियों से होकर धुँधला प्रकाश कमरे में आ रहा था । फरनीचर के नाम पर कमरे के कोने में केवल एक छोटा सा मोहे का पलंग दीवार में एक मेज कुछ कुर्सियाँ और फिटायों से ठ्ठाठ्ठ भरी एक आलमारी थी । मेज के पास एक स्त्री बैठी सिगरेट पी रही थी जिसकी आयु लगभग ३० वर्ष की थी सिर खुला हुआ था और वह एक काला ऊनी गाउन पहिने हुए थी । प्रोस्त्रोदुमोव को भीतर आया देखकर उसने बिना एक शब्द भी बोले अपना चौड़ा लाल हाथ उसफी ओर बढ़ा दिया । वह भी कुछ न बोला, बस उससे हाथ मिला लिया और कुर्सी पर बैठते हुए उसने अपनी बगल की जेब से एक अघपिया सिगार निकाला । मधुरिना ने उसे जसा दिया, और वह सिगार पीने लगा । वह दोनों ही आपस में बिना बोले और यहाँ तक कि बिना एक दूसरे की ओर देखे, उस बंद हवा में जो पहले से ही तम्बाकू के घुँ से भरी हुई थी, नीले घुँ के छप्से छोड़ते, बैठे रहे ।

इन दोनों में कोई न कोई साम्य था बरकर यद्यपि आकृति और रंगरूप में तनिक भी समानता न थी । उनके पूरुङ्ग मलिन चेहरों पर—बिनाके हाँठ, दाँत और नाक बड़े पूरुङ्ग और कुभङ्ग थे (प्रोस्त्रोदुमोव के चेहरे पर बेजक के दाग भी थे)।—ईमानदारी आत्मसंयम और उद्योग वीसता का भाव विद्यमान था ।

'क्या नेग्बानोव से तुम्हारी भेंट हुई?' भास्त्रिकार मोस्त्रोदुमोव ने पूछा।

'हाँ वह अभी सीधा यहीं भायेगा। वह किताबें लेकर बरा साइबेरी तक गया है।

भास्त्रोदुमाव ने दूसरी ओर मुँह करने पूना।

'क्या बात है, वह सदैव इधर उधर घूमता ही रहता है? कहीं पसा निशान तक नहीं मिलता उसका।

मगुरिना ने दूसरी सिगरेट निकाली।

'वह कुछ बेचैन सा लगता है, उकता सा गया है। उसने अपनी सिगरेट को सावधानी से जलाते हुए कहा।

'उकता गया है। मोस्त्रोदुमाव ने मुँह विषकाले हुए दुहराया। हमेशा अपने में ही खामा रहता है। कोई साधेगा हमारे पास उसकी तिये कोई काम ही नहीं है। और हम यहाँ यह खैर मना रहे हैं कि किसी तरह हमारा सारा काम मजे पजे का से पूरा हो जाय और यह है कि उकता रहा है।

'मास्का से कोई पत्र?' थोड़ी देर की चुप्पी के बाद मगुरिना ने पूछा।

'हाँ 'परसा।'

'तुमने पढ़ा।'

भास्त्रोदुमोव ने स्वीकृति-सूचना में सिर्फ अपना सिर हिला दिया।

'तो क्या सबर है?

मोह—'किसी का धीप्र ही बहाँ जाना पड़ेगा।'

मगुरिना ने सिगरेट मुँह से निकाली।

'क्यों? मुझे तो बताया गया था कि वहाँ सब ठीक-ठाक है।

'हाँ, ठीक ठा है। बक्स एक भाइमी से एसा खगता है कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसलिये हमें उसे कहीं और

नेजना होगा, या फिर उसे एक दम निकाल ही देना होगा। ओह ! ओर  
भी कई बातें हैं। उन्होंने तुम्हारे सिये भी सिसा है।'  
'यत्र में ?'  
'हाँ।'

मशूरिना ने अपने भारी घने बालों को पीछे की ओर मटका।  
लापरवाही से पीछे पूड़ा बना होने के कारण बालों की सटें उसके  
माथे और भौंहों पर बिखर गई थी।  
'ठीक है,' उसने कहा, 'जब आदेश दिया ही था चुका है, ता अब  
उस पर बहस करने से फायदा !

'विस्फुल बेकार। सिर्फ यह है कि बिना पैसा के आदेश का पासन  
नहीं किया जा सकता और पैसा आये तो कहाँ से ?'  
मशूरिना सोचने लगी। निजमानाम को कोई जुगाड़ करनी होगी।  
उसने दबे स्वर में जैसे अपने से ही कह रही हो कहा।

'यही तो बात है, जिसके लिए मैं आया हूँ' मोस्त्रोबुमोव ने कहा।  
'क्या तुम्हारे पास बह पम है ?' मशूरिना ने अकस्मात पूछा।  
'हाँ। क्या तुम पढ़ना चाहोगी ?'  
'हाँ मुझे दो  
'बाद में।'  
अच्छा रहने दो। हम सब इकट्ठे ही पढ़ें

'मैंने ठीक-ठीक ही बताया है, मोस्त्रोबुमोव ने बुदबुदया 'तुम्हें  
पर सन्देह नहीं करना चाहिए।  
'भरे, मैं सन्देह नहीं करती।

फिर दोना चुप्पी में खो गए और पहिले की ही तरह  
निश्चय होठों से धूँए के धुँसे धैरत हुए से निकलते रहे और भीरे  
बसनाते हुए उनके बिखरे बालों के ऊपर उठने लगे।  
पौरी में ऊँचे झूठा की घमक सुनाई पड़ी।  
मशूरिना ने फुसफुसाया।

दरवाजा थोड़ा सा खुला और उसकी सँभ में से कोई झंका ।  
लेकिन वह नेग्धानोब नहीं था ।

झंकने वाले के छोटे से गोस सिर पर गन्ने काने बाल थे, उसका  
माथा चौड़ा था और उस पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं । धनी मोँहों के नीचे  
उसकी छोटी-छोटी मूरी झलकती पैनी झलकती थी बतख की घोंच की तरह  
ऊपर को उठी हुई उसको नुकिसो नाक भी घोंच उसका मुँह छोटा सा  
सात घोंच सिद्धपकों सा था । इस चहरे में भीतर झंफकन चारों ओर  
दृष्टिपात किया, सिर हिलाया, अपने छोटे-छोटे सफेद दाँत निपोरते  
हुए मुस्कराया और कमरे के भीतर भा गया । उसका शरीर नाँटा  
सुबंपुत्र, छोटे-छोटे हाथ और कुछ-कुछ घुँटने पर से ऐंठे हुए पंगु पैर  
थे । मधुरिना और प्रोस्त्रोदुमोव दोनों ने ही उसे एक साथ बेला । दानों  
के चहरों पर ही उसके प्रति उपेक्षा और घृणा का भाव था, जैसे मानों  
दानों ही अपने मन में कह रहे हों—'धर ! यह तो, यह निकमा !' किन्तु  
उन्होंने कहा कुछ भी नहीं, उनके शरीर का एक जोड़ तक न हिला ।  
फिर भी इस प्रकार के स्वास्थ से आगन्तुक हठप्रभ ता हुआ ही नहीं  
बल्कि प्रथम रूप से उसे एक निर्भित संताप का अनुभव हुआ ।

'क्या बात है ?' उसने सीसी आवाज में कहा 'थोड़ा ही तिमझा  
नहीं ? तीसरा कहाँ है ?'

'क्या आपका मतलब नेग्धानोब से है, मिस्टर पाकिजन ?' प्रोस्त्रो  
दुमोव ने चहरे को गंभीर रससे हुए कहा ।

'जी हाँ, मिस्टर प्रोस्त्रोदुमोव मेरा मतलब उसी से है ।'

'वह अपनी माता ही होगा, मिस्टर पाकिजन ।'

'यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ मिस्टर प्रोस्त्रोदुमोव ।'

यह सादा पंगु बरल्लि भव मधुरिना की ओर उगम्य हुआ । यह  
ध्रुवुटि बहाय बेठी थी और जानबूझकर सिगरेट के कण पर कड़ा  
पीके सा रही थी ।

अनुमान है कि एक अनुभवहीन नागरिक को दिन के प्रकाश में पहिली बार प्रवेश कराने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता होगा ?

'नहीं बरा भी नहीं, जब तक वह तुमसे बड़ा न हो,' मधुरिमा ने उत्तर दिया और मुस्करा दी। उसने अभी हाल में ही दाईंगीरी का डिप्लोमा प्राप्त किया था। एक बड़े साल पहले उसने अपने परिवार को छोड़ दिया था। उसका परिवार दक्षिणी रूस में रहता था और एक गरीब किन्तु सम्य परिवार था। उसे छोड़कर वह पीटर्सबर्ग चली आई थी। जब वह घर से चली थी, तब उसकी जेब में केवल छ. रबल थे। पीटर्सबर्ग में आकर वह एक प्रसूतिगृह में भरती हो गई और अगले कुछ दिनों परिश्रम के बाद उसने अपना चिर प्रतीक्षित एवं आकांक्षित दाई गीरी का डिप्लोमा प्राप्त कर लिया। वह अविवाहित थी। उसका स्वभाव अत्यंत ही सरल था और आचरण शीलवान। उसके बाहरी रंग-रस के वर्णन की याद करके कुछ शकालु व्यक्ति कहेंगे कि इसमें तो कोई अद्भुत बात नहीं थी। लेकिन हमें यह कहने की अनुमति दीजिए कि उसमें कुछ अद्भुत और अनोखापन है। उसका उत्तर मुनकर पाकिस्तान फिर हुआ।

'तुम बड़ी सेज हो ! उसने कहा। 'तुमने बड़ी चतुराई से मेरी बात को पकड़ा, मैं इसी के काबिल हूँ। मैं ऐसा बेंकड़ा बना रहा ! लेकिन हमारे मेजबान का क्या हुआ ?'

पाकिस्तान ने जान झूठ कर विषय बदल दिया। वह अपने माते कद और कुक्ष्य आकृति की हीन भावना से कभी मुक्त नहीं हो पाता था। उसे अपनी यह हीनता और भी लटकती थी क्योंकि महिलाओं का बड़ा प्रसक्त होने का उसका स्वभाव था। वह उन्हें आकर्षित करने के लिये क्या कुछ नहीं कर सकता था। अपनी कुक्ष्य आकृति के प्रति चेतना का घाव उसके लिए अपने निम्न वंश या समाज में अपनी दीन स्थिति से भी अधिक पीड़ाजनक था। पाकिस्तान का बाप एक साधारण सौदागर था, जो कभी किसी के साथ तो कभी किसी के साथ इस-उस प्रकार की

बार सौ बीस और घोखाघड़ी करने कौंसिल की तथाकथित सदस्यता के पद तक ऊँचा उठ गया था। वह कानूनी मामलों में विचसुण का काम करने और महंशाही तथा मकानों व सम्पत्ति की दस्तावी के काम में बड़ा पटु और मिट्टहस्त था। उसने काफी धन कमाया था किन्तु अपने अन्तिम दिनों में शराब में उमने अपना सारा धन फूँक दिया और मरुत समय उसने एक बीड़ी भी न छोड़ी। पाकिस्तान का नाम सिमासैम्सोमिब रबन्ना गया, अर्थात् पाकि, सैम्सन का शेटा। इसे भी वह अपने ऊपर अंग और अपना उपहास समझता था। बालक पाकिस्तान की शिक्षा एक व्यापारी स्कूल में हुई थी जहाँ उसने अर्धन मापा का मसी प्रकार से ज्ञान प्राप्त कर लिया था। कहना चाहिए कि अनेक बट्ट, अरुचिकर अनुभवों के बाद वह एक व्यापारी के यहाँ ठेक सौ पीड वार्षिक वेतन पर नियुक्त हो गया। इस वेतन में वह अपनी एक बीमार बाली और अपनी एक कुवड़ी सहन का पालन पोषण भी करता था। हमारी कहानी के समय उसकी आयु केवल अट्ठाईस वर्ष की थी।

पाकिस्तान का परिचय अनेक विचारियों और नौजवानों से था, जो उसकी घोरहा हाजिर अबादी और उपल प्रकार की घृष्टापूर्ण बातों तथा उसकी एकांगी किन्तु असाध और विद्याभिमान से रहित सरल ज्ञान की बातों को पसंद करते थे। जन्म पदाकदा ही वह उनके हाथों उपेक्षित होता था। एक दिन किसी कारण से एक राजनैतिक बैठक में उसे पहुँचने में देर हो गई। वहाँ पहुँचते ही उसने अपने देर से धान के लिए अल्सी-अल्सी बहाने बनाने शुरू कर दिए

'बेचारा पाकिस्तान डर गया है।' एक कोने में से किसी न असापा और सब हँस पड़े। अन्त में पाकिस्तान भी हँस लिया हासोकि दिल ही दिल में वह मुड़ रहा था। 'बात तो ठीक ही कही, बदमाश ने।' उसने अपने मन में सोचा। नेज्जानाद से उसका परिचय एक ग्रीक रस्तर में हुआ था, जहाँ वह मोहन करने जाया करता था और जहाँ वह प्रायः अपने स्वतन्त्र और निर्भीक विचारा को प्रगट किया करता था। वह



कहा करता था कि उसकी बुद्धि की प्रजातीयिक वनावट का मुख्य कारण यह वृणित भीक पाक विज्ञान है, जो उसने पेट को बिगाड़ देता है।

‘भरे’ सबमुच ही न जाने कहाँ रह गया हमारा दोस्त ? पाब्लिन ने पुछाया। ‘मैं कुछ दिनों से देख रहा हूँ कि वह कुछ उखड़ा-उखड़ा सा रहता है। कहीं वह किसी के प्रेम-त्रोम के चक्कर में तो नहीं पड़ गया है ? खुदा सैर करे !

मशूरिना की भौंहों में बल पड़ गये।

‘वह कुछ किताबें लेने के लिए साइबेरी गया है। उसे प्रेम में पड़ने का समय ही नहीं है और न कोई है ही ऐसा जिसके प्रेम में वह पड़े।’

‘और तुम ?’ पाब्लिन कहते-कहते रह गया। ‘मैं उससे मिसना चाहता था’, उसने जोर से कहा ‘मुझे उससे एक जरूरी विषय पर बात करनी है।’

‘कैसा विषय ?’ भ्रोस्त्रोदुमोव ने पूछा। ‘हमारा विषय ?’

‘शायद तुम्हारा ही वह हमारा सबका विषय है।’

भ्रोस्त्रोदुमोव मनमनाया, मन में वह खंकाकुल तो था, किन्तु उसने गट रूप से मन में सोचा, कौन कह सकता है ? वह ऐसा फिसलू निहा साँप है ?

‘जो, भासिर हजरत था ही गये’ एकायक मशूरिना ने कहा। उसकी छोटी प्रसुम्बर भाँसों में, जो निरन्तर पौरी के दरवाजे पर रटकी हुई थीं कुछ ऊबल स्नेहसिक्त स्निग्धता और चमक थी एक कार के समान घर्त्तमुखी प्रकाश बिन्दु की चमक

दरवाजा खुला और इस बार लगभग तेईस वर्षीय धायु के एक नौबवान ने कमरे में प्रवेश किया। उसके सिर पर टोपी थी और बगल में किताबों का बंडल रखा था—वह नेज्भानोव था।



वो

अपने कमरे में प्रागन्तुका को बैठा देकर उसने  
एक लाल को दरवाजे पर ही ठिठककर  
सब पर दृष्टि डाली टोपी उतारकर एक घोर  
फेंकी फितारें फर्श पर ही पटक दीं और बिना  
कुछ कह मुने सीधा पलंग पर जाकर बैठ  
गया। उसका सुन्दर गारा चेहरा जो उसके  
गहरे लाल मुनहरे घुंघरासे बालों से और भी  
गौरा लग रहा था उसके अंतर्धोप और लोम  
को स्पष्ट ब्यक्त कर रहा था।

मधुरिना अपने होठों को अपने दाँतों से  
काटती हुई एक घोर थोड़ा सा धूम गई  
ओस्त्रोदुमोव ने मुँहसाते हुए टर्क कर कहा  
'आन्त्रिआ ठो गये !

पाकिजन ने ही सबसे पहले नेग्धानोव से  
बात आरंभ की।

'क्या खतर है, रुसी हमसेट, असेक्सी  
निमित्तिक ? क्या किसी ने तुम्हें धोखा दिया है ?  
या फिर यों ही खा-म-खा मन्नाये हुए हो ?

'बस बन्द करो अपनी यह बकवास रुसी  
मैफिस्टोफेपीस,' नेग्धानोव ने कुबले हुए

उत्तर दिया। 'मैं तुम्हारे साथ नीरस सरसता में होड़ नहीं कर सकता।

पाकिस्तान हँस दिया।

'बात बनी नहीं कुछ। जनाव, जो नीरस है वह सरस कैसे हो सकता है और जो सरस है वह मसा नीरस कैसे हो सकता है।

'हाँ, हाँ, हमें मालूम है, तुम बड़े हाज़रि जनाव हो।'

'और तुम अपनी हकी-सक़ि भूले हुये हो', पाकिस्तान ने गूब मरी आवाज़ में कहा, 'क्या सचमुच कुछ हो गया है?'

'कोई ऐसी छास बात तो नहीं है, लेकिन हो यह गया है कि इस गन्दे शहर पीटसयर्ग में बिना भोछेपन, कमीनेपन, भूर्खता, मयंकर धम्याय और गन्दगी से मुठमेड़ हुए सड़कां पर कदम रखना भी असंभव है। यहाँ तो भव रहना ही पुस्वार हो गया है।

'अच्छा तो अभी जनाव ने विज्ञापन निकलवाया है कि शिक्षक के रूप में आप कहीं भी जाने को तैयार हैं। ओस्त्रोवुमोव फिर टरिया।

'सोचता तो कुछ ऐसा ही हूँ। मैं यहाँ से जाने के लिए जिन्दगी के सारे सुखों को छोड़ सकता हूँ। शर्त है, जाने का अवसर मिसे और कोई भीष का धन्धा और गाँठ का पूरा मुझे काम दे दे।

'तुम पहिले अपना यहाँ का कर्त्तव्य तो पूरा करो' मधुरिना ने अर्ध मरे स्वर में कहा। पर वेस वह अब भी दूसरी ओर ही रही थी।

'वह कस ब्य मसा क्या है?' नेजधानोव ने तेजी से उसकी ओर मुड़से हुए जिज्ञासा प्रगट की।

मधुरिना ने अपने दोनों होठ भीच लिए। 'ओस्त्रोवुमोव से पूछो।

नेजधानोव ओस्त्रोवुमोव की ओर उन्मुख हुआ। किन्तु ओस्त्रोवुमोव ने सिर्फ़ खकार कर अपना गला साफ़ किया और मसंतुष्ट स्वर में कहा 'अभी ठहरो।'

'नहीं अब मसाक रहने दो', पाकिस्तान ने बीच में ही बात काट दी,

कोई गड़बड़ बरूर हो गई है। नेज्वानाय पलंग पर से उछल पड़ा जैसे कोई शक्ति उसे ऊपर की ओर उध्वास रही हो।

‘तुम और गड़बड़ क्या चाहत है?’ यह नीला। एकाएक उसकी भावात्मक बुलन्द हो गई। ‘भाषा उस सूत्र से मर रहा है, ‘मास्को गजट’ खुद है। पुण्यपंथ की फिर तूनी बोलगी। क्षात्र हितकारी संस्थाओं पर रोक लगाई जा रही है। हर जगह सी० आई० डी० का ज्ञान विद्यार्थी हुआ है। सजा दगा मूँठ और गद्दारी का बोलवाला है। किसी तरह भागे नहीं बढ़ सकत क्या यह सब गड़बड़ तुम्हारे लिए काफी नहीं है—और क्या चाहते हो? क्या चाहत हो कुछ भार गड़बड़ हा? समझते हो कि मैं हँसी कर रहा हूँ... बसानोव गिरफ्तार हो गया है उसका स्वर का आश्रय कुछ कम हुआ उसने बात पूरी की ‘यह खबर अभी अभी मुझे साइबेरी में मिली है।

‘प्रिय प्रसन्नोदुमोव और मयुरिना दोनों ही एकदम चौंक पड़े।

‘प्रिय प्रसन्नोदुमोव’ पाकिन्ग ने कहना शुरू किया ‘तुम उसजित हो गए हो—आईं प्रसन्नोदुमोव की बात नहीं’ लेकिन क्या तुम यह सूत्र गय हो कि यह देश और काम कैसा है, जिसमें हम भाग रहे रहे हैं? हममें स हर दूबते का अपने बचाव के लिए खुद ही विचार तक की सोच करनी पड़ेगी। भावुक होने से क्या ज्ञान? हमें भयंकर मे भयंकर स्थिति का भी सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिये मर दोस्त, न कि बच्चों की तरह भावेन में भा जाना चाहिए—

‘प्रसन्नोदुमोव, प्रसन्नोदुमोव बस रहने भी दो। नग्नानाय ने धुग्ध होठ हुए उसकी बात बीच में ही काट दी। उसकी मुद्रावृत्ति स प्रगट हो रहा था माना उस बड़ी पीड़ा हो रही है। ‘हम सब जानते हैं कि तुम बड़े ताकतवर आदमी हो तुम्हें किसी का भय नहीं—

‘हाँ, मुझे किसी का डर नहीं! पाकिन्ग ने कहा।

‘बसानोव के साथ किसने गद्दारी की होगी? नग्नानाय कहता गया

‘हाँ, मुझे किसी का डर नहीं! पाकिन्ग ने कहा।

‘बसानोव के साथ किसने गद्दारी की होगी? नग्नानाय कहता गया

‘हाँ, मुझे किसी का डर नहीं! पाकिन्ग ने कहा।

‘बसानोव के साथ किसने गद्दारी की होगी? नग्नानाय कहता गया

नेम्नानोव एकदम सिङ्गी की ओर से मुड़ा।

‘नहीं नहीं’ काई बरूरत नहीं। म प्रवन्ध कर दूँगा ”  
अपन भक्त में स पेछगी से मूँगा। उन पर मेरा कुछ चाँहिए भी,  
वहाँ तक मुझे -याद है। लेकिन मैं कहूँ हूँ श्रीस्रोदुमाब, पत्र ता  
दिखाओ।

पाकी देर तक तो श्रीस्रोदुमाब निश्चल बैठा रहा फिर उसने  
पारा ओर देखा, उठा बाहिनी धार मुका ओर अपनी पतनून मोड़ते  
हुए सावधानी से नीचे कागज के मुँहे हुए एक बंडस को अपन ऊँचे  
पूँते बास पैर में से उसने बाहर निभाया। बंडस बाहर निकालकर किसी  
अज्ञात कारण से उसने उस पर हाथ मारा और तब नेम्नानोव को  
द दिया।

नेम्नानोव म उस स लिया खोला और ध्यान से पढ़ा और तब  
मशूरिना को बमा दिया। वह पहिले अपनी मुँसी पर स उठ कर  
सकी हो गई तब उसने भी उसे पढ़ा और पढ़कर नेम्नानोव को वापस  
सीटा दिया, यद्यपि पाकिस्तान उसे खने क लिए हाथ बढ़ाए हुए था।  
नेम्नानोव ने अपने कंधे उचकाए और वह रहस्यपूर्ण पत्र पाकिस्तान  
की ओर बढ़ा दिया। पाकिस्तान ने अपनी आँख उस पर दौड़ाई और  
अपने हाठ बढ़े महत्व के साथ बीच और पत्र पढ़ कर मम्मीर आन्ति के  
साथ मेज पर रख दिया। तब श्रीस्रोदुमाब ने उस उठा लिया एव  
बढ़ी दियासलाई जलाई, जिससे दियासलाई के मसाले की दुर्गन्ध फैल  
गई और कागज को अपने सिर स ऊपर उठा कर, जैसे मानों वह उस  
सभी उपस्थित सज्जनों को दिखाएगा, जमा दिया, पूरा का पूरा अपनी  
उँगलिया को भी नहीं छोड़ा और राज को घँनीठी में फक दिया। सब  
शुक बने देखते रहे कोई हिंसा तक भी नहीं। सब की आँखें नीच झुंक  
गई। श्रीस्रोदुमाब क बेहरे पर सबन एकाग्रता और व्यवहारिकता भी  
नेम्नानोव के बेहरे पर धीम और पाकिस्तान के बेहरे पर सटपटाहट

की और मशरूफ़ा ऐसे सग रही जिस गिर्जे की प्रार्थना में हो, सम्भवतः  
गम्भीर उभयभक्त में थी ।

इस तरह दो मिनट बीत गए । तब समी पर बोड़ी-सा  
सबुआहट ब्याप्त हो गई । पाकिस्तान ने ही सबसे पहिल इस बुप्पी को  
तोड़ने की जरूरत महसूस की ।

'तो फिर', उसने कहना प्रारम्भ किया, 'पिटूभूमि के लिए मेरा  
बलिदान स्वीकृत हुआ या नहीं ? क्या मुझे सामूहिक उद्देश्य के लिए  
पचास खतल नहीं तो कम-से-कम पच्चीस या तीस ही देने की भांता है ?'

नेग्दानोब एकदम गुस्से में उबल पड़ा । ऐसा लगता था कि उसका  
चिड़चिड़ापन बढ़ता ही जा रहा है । पत्र के खलान तक से उसका  
गुस्सा खान्त नहीं हुआ था, वह सिर्फ उबल पड़ने का अवसर देख  
रहा था ।

'मेने तुमसे पहिल ही कह दिया कि इसको कोई जरूरत नहीं, कोई  
जरूरत नहीं । कोई जरूरत नहीं ! मे यह कभी नहीं होने दूंगा  
और न कभी इस मानूंगा । मैं एपरा से भाऊंगा सीधे ही मे पाऊंगा ।  
मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं है ।'

'बहुत भयाना जनान', पाकिस्तान ने कहा । 'मैं देखता हू कि तुम  
अन्तिवादी ता ही पर जनवादी नहीं ।'

'सीधे-सीधे कहो न कि मैं अन्तिवादी हूँ ।'

'लेर तुम मरिस्ट्रोट हो, सबसुब कुछ हद तब ।'

नेग्दानोब अबदस्ती हँसा ।

'ता तुम्हारा सन्नेत मेरे मरैय संतान हाने की घोर है ! तुम्हें  
तकनीक करने की जरूरत नहीं होगी, मेरे महुरवान दोस्त !  
तुम्हारी मदद के बिना ही मेरे लिए उसे भूलना संभव नहीं है ।'

पाकिस्तान ने निराशा से हाथ नटुरा । 'अन्यो'गा, तुम्हें क्या हा गया  
है भाज ! तुम मेरी जान दा ऐसा मतलब कैश निकाल सने । मैं भाज

‘अहन्नुम में आओ !’ पाक्लिन ने सोचा । ‘मैं तो बला !’

वह आया तो था विदेश से ‘ध्रुवतार’ को प्राप्त करने के सम्वन्ध में, नेज्घानोव को अपने बिचारे बताने के उद्देश्य से, (‘घन्टी’ का अस्तित्व पहिले ही समाप्त हो गया था), लेकिन बात-चीत में ऐसा मोड़ ले लिया था कि उस प्रश्न को म उठाना ही अच्छा था । पाक्लिन अपनी टोपी उठाने जा ही रहा था, सभी अज्ञानक, विना किसी आवाज या झटझटाहट के पौरी में अत्यन्त ही मधुर कोमल पुख्य स्वर सुनाई पड़ा, जिससे प्रगट हो रहा था कि आगन्तुक किसी अश्वे वंश का एक सुशिक्षित और सम्य व्यक्ति है ।

‘क्या मिस्टर नेज्घानोव घर पर हैं ?’

सभी आश्चर्य से एक दूसरे की देखने लगे ।

‘मिस्टर नेज्घानोव घर पर हैं क्या ?’ उसने फिर पूछा ।

‘हाँ’ अन्त में नेज्घानोव ने उत्तर दिया ।

बड़ी सावधानी और धीरे से दरवाना खुला और धीरे से अपने कड़े छोटे छटे वाला घाले सिर पर से हूट उतारते हुए एक चासीस वर्ष के, लम्बे सुगठित धरीर वाले धीरे बबबवे के ब्याक्त म कमरे में प्रवेश किया । यद्यपि अश्वे का अन्त निकट था, फिर भी वह एक अत्यन्त सुन्दर सूती कपड़े का कोट पहने था जिसका कालर बालदार था, उसने सभी को नेज्घानोव, पाक्लिन, मसुरिमा को भी “ और ओस्त्रोदुमोव को भी, अपनी सुन्दर आरमसंयत आकृति और निर्बन्ध सम्बोधन से स्तम्भित कर दिया । उसके कमरे में प्रवेश करने पर सब आप स आप उठ कर खड़े हो गए ।



तीन

सुंदर पोशाक पहिने आगन्तुक नेग्धानोव की ओर बढ़ा और विनम्रता से मुस्काते हुए बोला अगर आप को याद हो, मिस्टर नेग्धानोव मुझे परसों पिघेटर में आपसे मिलने और आपसे कुछ बात-चीत करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। आगन्तुक स्वा मानों किसी बात का इन्तजार कर रहा है। नेग्धानोव ने थोड़ा सा सिर झुकाया और नवा सा गया। 'याद आया आपको।' आपने आपवारों में जो विज्ञापन प्रकाशित करवाया है, मैं उसी समय में आज आप से मिलने आया हूँ। अगर उपस्थित महिला और सज्जनों को कोई आपसि न हा (आगन्तुक ने मशुरिना को झुक कर अभिवादन किया और पाबिलन तथा मोल्नोदुमोव की ओर उसने अपने सूरे स्वीडिश दस्ताने वाले हाथ को हिलाया) तो मैं आप से कुछ बातें करने का सौभाग्य चारूंगा।'

'नहीं आपसि बैसी! नेग्धानोव ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा। 'मेरे मित्र वमा करंगे आप ठगरीफ नहीं रखेंगे।'



‘अहन्तुम में आओ !’ पाकिस्तान ने सोचा । ‘मैं तो चला !’

वह आया तो था विदेश से ‘ध्रुवतार’ को प्राप्त करने के सम्बन्ध में, नेज्बानोव को अपने विचारे बताने व उद्देश्य से, (‘घन्टी’ का अस्तित्व पहिले ही समाप्त हो गया था), लेकिन बात-चीत ने ऐसा मोड़ ले लिया था कि उस प्रश्न को न उठाना ही अच्छा था । पाकिस्तान अपनी टोपी उठाने आ ही रूढ़ा था, तभी अचानक, बिना किसी आवाज या झटझटाहट के पौरी में अत्यन्त ही मधुर कोमल पुरुष स्वर सुनाई पड़ा, जिससे प्रगट हो रहा था कि मागन्तुक किसी अच्छे वंश का एक सुशिक्षित और सम्म व्यक्ति है ।

‘क्या मिस्टर नेज्बानोव घर पर हैं !’

सभी आश्चर्य से एक दूसरे की देखने लगे ।

‘मिस्टर नेज्बानोव घर पर है क्या ?’ उसने फिर पूछा ।

‘हाँ’, अन्त में नेज्बानोव ने उत्तर दिया ।

बड़ी सावधानी और धीरे से दरवाजा खुला और धीरे से अपने कड़े छोटे छटे बालों वाले सिर पर से हैट उतारते हुए एक चालीस बर्ष के, लम्बे सुगठित शरीर वाले और दबदबे क व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया । यद्यपि अंग्रेज का अन्त निकट था फिर भी वह एक अत्यन्त सुन्दर सूती कपड़े का काट पहने था जिसका कामर बालदार था, उसने सभी को नेज्बानोव पाकिस्तान, मधुरिना को भी “और ओस्त्रादुमोव को भी, अपनी सुन्दर आत्मसंयत भावृति और निर्दम्य सम्बोधन से स्तम्भित कर दिया । उसके कमरे में प्रवेश करने पर सब आप से आप उठ कर सहे हो गए ।



## तीन

सुब पौशाक पहिने प्रागन्तुक नेग्धानोव की ओर बढ़ा और विनम्रता से मुस्काते हुए बोला अगर आप को याद हो, मिस्टर नेग्धानोव मुझे परसा वियेटर में आपने मिलने और आपसे कुछ बात-चीत करने का मौभाग्य प्राप्त हो चुका है। प्रागन्तुक खा माना किसी बात का इन्तजार कर रहा हो। नेग्धानोव ने थोड़ा सा सिर झुकाया और सजा सा गया। 'यान्' धाया आपको। 'आपने अगवाराँ म जो विज्ञापन प्रकाशित करवाया है, मैं उसी सम्बन्ध में आज आप से मिलने आया हूँ। अगर उपस्थित महिला और सज्जनों को कोई आपत्ति न हो, (प्रागन्तुक ने मधुरिना को मुन कर अभिवादन किया और पाब्लिन तथा पात्प्रोपुमोव की धार उसने अपने घूरे स्वीडिश दम्पाने वाले हाथ को हिलाया) तो मैं आप से कुछ बातें करने का मौभाग्य चाहूँगा।

'नहीं आपत्ति कैसी। नेग्धानोव ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा। 'मेरे मित्र समा करेंगे आप तयरीफ नहीं रखेंगे।

भागन्तुक सौजन्यता प्रगट करने के लिए भुसा और उसने शिष्टता के साथ एक कुर्सी की पीठ पकड़ कर अपनी ओर खींचती, पर यह देख कर कि कमरे में सभी खड़े थे, वह बैठा नहीं। उसने केवल स्पष्ट किन्तु अर्ध मीमिलित नेत्रों से अपने चारों ओर देखा।

अश्वथा, नमस्कार अनेकसी दिग्दिग्ध', अचानक मधुरिना ने कहा, 'मैं फिर बाद में आऊँगी।'

'और मैं मैं भी आऊँगा' बाद में ही।' ओस्त्रोदुमोव ने भी कहा।

भागन्तुक के पास से गुजरते हुए, जैसे मानों जान बूझ कर उसकी उपेक्षा कर रही हो मधुरिना ने नेज्घानोव का हाथ अपने हाथ में लेकर विभोरता के साथ उससे मिलाया और बाहर खसी गई। अपने खूतों से अनावश्यक आवाज करते हुए, और धार-धार अपनी नाक सुड़कते हुए, जैसे मानों कहता हो—'सुम्हारे बालदार सुन्दर फाल्तर मेरे होंगे पर।' ओस्त्रोदुमोव भी उसके पीछे-पीछे बाहर चला गया।

भागन्तुक ने उन दोनों को सम्य किन्तु कुतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा फिर पाकिस्तान की ओर नजर फेरी मानो उससे भी यही शारा कर रहा हो कि वह भी उन दोनों का अनुकरण करेगा। लेकिन पाकिस्तान, जिसके मुख पर भागन्तुक के आगमन के समय से ही एक अजीब बरवस दुस्कान व्याप्त थी, एक कोने की ओर सिसक गया। सब भागन्तुक कुर्सी पर बैठा। नेज्घानोव भी कुर्सी पर बैठ गया।

'मेरा नाम सिप्यागिन है—शायद आपने सुना हो' भागन्तुक ने लीनी बिनमता के साथ आरम्भ की।

लेकिन पहिले हम पिघेटर में उन दोनों की मुसाबात की घटना का एरान कर दें।

मास्को से मशहूर अभिनेता सादोवस्की के आगमन के उपलक्ष में ओस्त्रोवस्की के एक ड्रामे—'दूसरे आदमी की गाड़ी में मठ बैठो' का दर्शन हो रहा था। रस्ताकोव का अभिनय, जैसा कि सर्वविदित है,

इस प्रसिद्ध अभिनेता का प्रिय अभिनय था। सबेरे जब नेग्बानोव बुकिंग कार्यालय गया था तो वहाँ लोगों की भीड़ लगी हुई थी। उसने नीचे दबे का टिकट मने की सोची थी लेकिन वह उसे ही लिङ्की के पास गया, एक घफसर ने जो उसके पीछे खड़ा था, नेग्बानोव की बगल से हाथ बढ़ाकर एक तीन रुबल का नाट घागे बढ़ा दिया और चिढ़ाकर बसक से कहा 'इन्हें — (अर्थात् नेग्बानोव का) — निदधय ही सरीज की जरूरत होगी और मुक्त नहीं है, इसलिए कृपया मुझे घगली सीट का एक टिकट दे दीजिए, जल्दी से मुझे बरा जल्दी है।'

माफ कीजिएगा' नेग्बानोव ने भी तीक्ष्णता से सुरन्त कहा, 'मुझे भी घगली सीट का ही टिकट चाहिए' और उसने लिङ्की में तीन रुबल, जो ही पेवस उसके पास था ठाल दिए। उसके पास कुल इतने ही पैसे बचे थे। बसक ने टिकट दे दिया, और घाम क समय नेग्बानोव लेमिक्वेग्विन्स की थियेटर में अभिवात्यवर्गोंम सीटों पर बैठा दिखाई पड़ा।

उसमें बपड़े बस्य ब्यस्य गन्दे और जनर थे। उसके जूता में कीचड़ लगी थी और उज्जे हाथा में इस्नान भी नहीं थे वह अपनी यजीय हलिया क बारण घुटन और परेगानी का अनुनन कर रहा था। उनकी दाहिनी धार गमगों से सुवज्जित एक लनरस्य बैठा था, बाईं धोर घामदार पोशाक पहिने प्रीवी काउन्सिल का सदस्य सिप्यागिन बैठा था, जिसका घागमन ने दो दिन बाद गधुरिना और घोस्त्रोदुनीव को इतना उद्विग्न बना दिया था। जब-तब जनरस्य नेग्बानोव पर उडती हुई मजर झल खेता था, जैसे वह कोई घनुपयुष्ठ भनागिन और उस पगह घनबाहा व्यक्ति हो, दूसरी धार सिप्यागिन उस पर कृपित किन्तु इपपूग नहीं इष्टि टाल रहा था। नेग्बानोव क धारों धोर बैठे व्यक्ति रीवदाब के सम रहे य साधारण व्यक्ति नहीं, वरन् भेष्ट व्यक्ति, और फिर सभी एक दूसरे स घनिष्ठ रूप में परिचित थे। वे घापस में छुट पृट यात्रे या सिफ सम्वाघन धीर स्वायत्त-राज्य कह रहे थे—दृष्ट तो नेग्बानोव को वीथ में बरा कर घापस में सम्वी खोड़ी गात्रे कर रहे थे,

जय कि वह अपनी आराम कुर्सी पर मूर्तिवत् मौन और सन्तुष्टता सा  
 धैर्य था। जैसे कोई झूठ हो। उसके मन में तलखी भय और घृणा  
 का भाव उत्पन्न हो रहा था। उसे घोस्त्रोवस्की के सुखान्त नाटक और  
 मादोवस्की के अभिनय से कोई विशेष आनन्द नहीं हो रहा था।  
 इन्टरवेल में एक बड़ी दिलचस्प घटना हुई—उसके बाईं ओर के पड़ोसी  
 ने, पदक, सज्जित जनरल नहीं, बल्कि दूसरे ने, जो पद का कोई मिशान  
 नहीं भगाए था, उसे बड़ी सौचन्यता के साथ सम्बोधित किया। उसने  
 घोस्त्रोवस्की के ड्रामे पर बात शुरू की और नेज्दानोव से, 'नवयुवक  
 वर्ग के प्रतिनिधि होने के नाते' ड्रामे पर उसकी राय जाननी चाही।  
 आश्चर्य चकित और लगभग भयभीत नेज्दानोव ने पहिले तो सीधे-सीधे  
 हाँ हूँ में उत्तर दिया -- निश्चय ही उसका दिग्गज धड़क रहा था,  
 लेकिन बाद में वह अपने पर ही नाराज हो उठा, आखिर मैं इस कदर  
 उत्तेजित किस लिए हो रहा हूँ? क्या मैं भी और सबों की तरह ही  
 आदमी नहीं हूँ? और फिर वह ड्रामे पर निरन्तर रूप से अपनी राय  
 प्रगट करते लगा बिना किसी संकोच के और अन्त में इतने जोर से  
 बोला इतने जोर के साथ कि निश्चय ही उसने सितारे वाले जनरल  
 पड़ोसी को नाराज कर दिया। नेज्दानोव घोस्त्रोवस्की का धड़ा प्रशंसक  
 था किन्तु इस नाटक में लेखक की कला कुशलता का प्रशंसक होते  
 हुए भी वह विहोरेय के विद्वेष-चरित्र में सम्यता के महत्त्व को जान  
 बूझ कर कम करने की नीयत से यह सहमत नहीं था। उसका धिष्ट  
 पड़ोसी बड़े ध्यान और सहानुभूति से उसकी बातें सुन रहा था। दूसरे  
 इन्टरवेल में भी उसने नेज्दानोव से बातें आरम्भ कर दीं। इस बार  
 घोस्त्रोवस्की के ड्रामे पर नहीं बरन् अनेकों आम विषयों पर जीवन,  
 विज्ञान और राजनीति के विषयों पर भी। वह निश्चय ही उस भावपट्ट  
 और तेज मौखिकता से प्रभावित हुआ था। नेज्दानोव ने भी संकोच करने  
 के बजाय कहना चाहिए कि दिग्गज के बन्द खोस दिए थे कि 'अच्छा फिर  
 अगर तुम अन्यायी हो चाहते हो तो सो फिर! उसने अपने पड़ोसी  
 जनरल के मन में साधारण असुविधा से भी बढ़कर निश्चित रूप से

श्लेष और मन्दैह उत्पन्न पर दिया था। इन्ना समाप्त होने पर सिप्यागिन न नेग्धानोव स बही छिष्टता बिनअता और वझे प्रेम से विदा सी पर उसका नाम जानने की कोशिश नहीं की और न अपना ही नाम उसे बताया। जब वह अपनी यात्री की प्रतीक्षा में सीढ़ियों पर रूढ़ा था तो अपने एक दूसरे मित्र राजकुमार ग० स जा जार का संग रखक था, भेंट होगई और उससे जाने करने लगा।

'मैं अपने वीरुस में से आपको देख रहा था' अपनी मुगन्धित सूँधों पर ताब देत हुए राजकुमार ने मुम्कुराकर कहा। 'जानते हैं आप किम स जाने कर रहे थे।

'नहीं तो, क्या आप जानते हैं।

'वह युवक मूल नहीं है न ?'

'बल्कि उससे विपरीत। कौन है वह ?'

तब राजकुमार ने उसके कान पर मुकुर कर फँस भाषा में फुस फुसाया 'मेरा भाई,—हाँ, वह मेरा भाई है, मेरे पिता का एक प्रबेध बेग' उगवा नाम नेग्धानोव है। मैं किसी दिन आपको उसके बारे में बताऊँगा। मर पिता ने उसके हाने की आज्ञा नहीं की थी तभी उन्होंने उसका नाम नेग्धानोव रखा—यानी अनामिस। फिर भी उन्होंने उसका पालन पोषण किया। हमन भी उसके राबे आदि में वाधा नहीं खासी। वह दिमाग का तेज है। पिताजी की कृपा स उसने शिला भी अकृषी प्राप्त कर ली है। लेकिन उसका दिमाग फिर गया है, एक प्रकार से वह अनतन्त्रवासी हो गया है। हम उस अपने पर नहीं बुलाते। विल्कुल अममव। अकृषा अथ ममफार। मेरी गाड़ी आ गई। राजकुमार ने विदा सी। दूसरे दिन सिप्यागिन न अन्धकार में नेग्धानोव का बिजापन पड़ा और वह उममे मिसने असा भाषा -

'मेरा नाम सिप्यागिन है, उसने बेंत की कुर्सी पर बैठते हुए नेग्धानोव को बताया और स्निग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। मैंने अगवार स जाना कि आप एक निराक का काम चाहत हैं और मैं

उसी सम्बन्ध में एक प्रस्ताव लेकर आपके पास आया है। मैं विवाहित हूँ मेरे एक लड़का है—नौ साल का कहना चाहिए जिसमें भ्रमीय योग्यता है। हम ग्रीष्म और शरद ऋतु के अधिनाश दिन स० प्रान्त के गाँव में ही बिताते हैं—प्रान्तीय राजधानी से करीब चार मील दूर है वह गाँव। क्या आप छुट्टियों में वहाँ हमारे साथ चलने का कष्ट करेंगे—मेरे लड़के को इसी भाषा और इतिहास पढ़ाने के लिए बड़ी विषय जिनका उल्लेख आपने अपने विज्ञापन में किया था। मैं माशा करता हूँ कि आप मुझे, मेरे परिवार और उस जगह के वातावरण को पसन्द करेंगे। वहाँ एक बड़ा सुन्दर और सुभाषना भाग है, ऋतु है, बढ़िया हवा है और मनान भी सुला हुआ और बड़ा है। क्या आप चलना स्वीकार करेंगे / अगर हाँ, तो मुझे सिर्फ आपकी रातें जानना है, हालाँकि मैं यह भाषा नहीं करता' सिप्यागिन ने थोड़ा मुँह निपोरते हुए कहा, 'कि उस सम्बन्ध में हमारे और आपके बीच किसी प्रकार की दफ्त पड़ेगी।'

थव तब भगातार सिप्यागिन ही बालता रहा और नेज्यानोव एकटक उसकी ओर देखता रहा उसके पीछे की ओर उँडगे हुए छोटे सिर और रॉकरे चतुर माथे को कोमल रोमन नाक सुन्दर सुभाषनी भाँसा, सुगढ़ हाँठों का जिनसे मधुर प्रिय शब्द ऋतु की तरह निकलते और उसके लम्बे अंग्रेजी फैशन से कटे गलमुच्छ्रा को वह एकटक देखता रहा और भाष्यचक्रित होता रहा। इसके क्या मानी है ? उसने सोचा। यह आदमी मुझ पर इस तरह फुपा करने को क्यों गुला हुआ है ? यह एक कुलीन बराने का है—और मैं ! हम दोनों में क्या मेल ? और यह भाषा मेरे पास क्यों कर ?

वह अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि जब सिप्यागिन ने अपनी बात समाप्त कर दी और उसका उत्तर पाने के लिए चुप हो गया तब भी वह सूक ही बना रहा। सिप्यागिन ने उस बौने में एक छुपी नजर डाली, जिसमें पाकिस्तान चुपचाप बैठा था। उसकी भाँखें भी वैसी

ही एकप्रता के साथ निष्प्राणि पत्नी थीं जिन एपाद्रमा के साथ  
 नेज्दानोष की गति सगी थी। वही इन दोसरे प्रादमी की उपस्थिति  
 की वजह से भी नेज्दानोष कुछ बोलने में नहीं नकूचा रहा है ?  
 निष्प्राणि ने अपनी नोहा को जप उद्यमा नाना परित्तिनि के प्रजीव  
 पन का जाँच रहा हा जिनमें वह स्वयं अपने ही व्यवहार में पड गया  
 पा भी अपने स्वर का डाटा ऊँचा करने हुए, उनसे अपना प्रप्ल  
 दुहराया। नेज्दानोष ने कहना प्रारम्भ किया। 'जी हाँ उमने अल्दी से  
 कहा 'मुझे मंजर है। है' गुपी से हासकि मैं मानता हूँ -  
 कि मुझ कुछ प्रादचर्य का प्रवन्व हो रहा है। मगे कोई सिफारिश  
 तो है नहीं और उम निन दियटर में जो मैंने अपने विचार प्रगट  
 किये थे वह भी कुछ एम थे कि आपसे मुझे पनना करने की ही  
 सम्भावना प्रधिस थी।

'यहाँ तुम हल प रह हो प्रिय प्रलैक्सी - प्रलैक्सी निनिनिष।  
 क्या ऐसी वाग नहीं है ?' निष्प्राणि ने मुत्कुरासे हुए कहा 'मैं मुझे  
 दहता चाहिए, कि मैं अपने उपा प्रगतिगीस विचारा के लिए प्रसिद्ध  
 हूँ वलि दसके विपरीत तुम्हा विचार मुक्तों की अपनी विशेषता  
 के प्रपवा के साथ—नागज मठ हा—प्रतिज्याक्ति के लिए—तुम्हार  
 विचार मरे अपने विचारा के विरुद्ध नहीं हैं प्रांग मच मुझे उन  
 तराईके ज्ञाह से प्रचनता है।

निष्प्राणि बिना किसी संभाव के वास्तव गया। उनकी निग्व  
 वास्तवीस तिस पर घट की शूदे' के समान थी।

श्री पत्नी भी मरे ही विचारों की हैं वह कहता गया, 'श्रीर  
 उनक विचार तो सम्भवत आपसे विचारों के प्रौर भी निरुद्ध हैं, यह  
 स्वामाविर भी है वह मरी प्रपला मुसा हैं ! हमारी मुमानास के दूधर  
 नि, जब मैंने आपका नाम प्रसद्वारा में पडा—आपने अपना नाम प्रपन  
 पसे के साथ प्रकाशित करवाया पा—जो कहना चाहिए, आप रिवाज  
 के विपरीत है, हासकि मन आपका नाम वहाँ दियेटर में ही जान लिया



धा—तो भी उस पर मेरा ध्यान गया। इस अजीब संगति में मैंने देखा अच्युत-विश्वास के लिए क्षमा भीजिएगा कहना चाहिए, भाग्य का निर्देश। आपने सिफारिशों की बात कही, लेकिन मुझे किसी सिफारिश को आवश्यकता नहीं है, आपका व्यक्तित्व मुझे आकर्षित करता है। मेरे लिए यही काफी है। मैं अपनी भाँखों पर विश्वास करने का भावी हूँ। तो क्या—मैं उस पर विश्वास कर सकता हूँ? आप सहमत हैं?

‘हाँ’ निश्चय ही नेज्जानोव ने उत्तर दिया ‘और मैं आपने विश्वास को निगामे का भरसक प्रयास करूँगा। सिर्फ एक बात कहने की आज्ञा दीजिए अब मैं आपके पुत्र को पढ़ाने के लिए तैयार हूँ लेकिन उसकी देखभाल करने के लिए नहीं। मैं उसके लिए उपयुक्त नहीं हूँ—और सच तो यह है कि मैं अपने आपको किसी बात से बाँधना नहीं चाहता मैं अपनी स्वतंत्रता नहीं खोना चाहता।

सिप्यागिन ने हवा में अपने हाथ हिलाए जैसे माना भक्ती उठा रहा हो।

‘बबबाओ मत। तुम उस मिट्टी के ही नहीं बने हो और फिर मैं भी नहीं चाहता कि कोई उसकी देखभाल करे—मैं तो एक शिक्षक की खोज में हूँ और मैंने उसे पा लिया है। अच्युत तो फिर शर्तें क्या होंगी? वैसे तो रुपये-पैसे की मिला भिन्न बेकार की सी बात है।

नेज्जानोव सफ़ले की सी हासत में था—क्या उत्तर दे।

‘कोई बात नहीं’ सिप्यागिन ने अपने सारे शरीर को भागे मुकासे हुए और स्नेह और आत्मियता से नेज्जानोव के घुटने छूते हुए कहा ‘सम्य मनुष्यों के बीच ऐसे प्रश्न थोड़े से सन्दर्भों में ही तै हो जाते हैं। मैं तुम्हें मासिक सौ रुपये दूँगा जाने जाने का खर्चा मेरा भाषा है तुम्हें स्वीकार होगा।’

नेज्जानोव पुनः शर्मा गया।

‘यह तो मैं बितने की मौज रखना चाहता था, उससे कहीं अधिक है मैं—

‘ठीक है, ठीक है’ सिप्यागिन न बीच में ही कहा ‘ता फिर मैं समझता हूँ बात पक्की हुई और अब तुम भी मर परिवार का एक सदस्य हुए। वह अपनी कुर्सी पर से उठ सड़ा हुआ। एकाएक उसके चेहरे पर एक धमक और सन्तापपूर्ण आभा आ गई, जैसे उसे कोई सुन्दर उपहार प्राप्त हुआ हो। उसके समस्त हाव भाव में एक निश्चित धनत्व टपकता था और विनाद प्रियता भी। ‘हम लोग एक-दो दिन में ही यहाँ से चलेंगे’, उसने कहा ‘मैं गाँव में ही बसन्त का स्वागत करना पसन्द करता हूँ, यद्यपि धन पदों का स्वभाव न तो मैं विन्दुस नीरस व्यक्ति हूँ और नगर का जीवन सही बंध गया है। अच्छा तो हम सुन्हाग पहिला महीना मात्र से ही समझ। मेरी पत्नी और मेरा बेटा पहिले सही मास्को में हैं। वह लाग मुझ से पहिल ही चल चुक है। हमारी उनकी भेंट कहीं गाँव में ही होगी प्रकृति के सुने हुए सौन्दर्य के बीच। हम लोग साथ-साथ चलेंगे अविवाहिता की तरह ह ह ह । सिप्यागिन ने अनुनासिक हसी-हँसी और धब—

उसने अपने आवर कोट की जेब से एक कासी और चाँदी की सी सफेद डायरी निकाली और उसमें से एक फाट दिखाता।

‘यह मर यहाँ का पता है। घाना उबर फल-सल। हाँ चार्ल्स बड़े। हम लाग कुछ और बाँटें करेंगे। मैं शिक्षा पर कुछ धन विचार बढ़ाऊँगा और तभी अपनी यात्रा का दिन भी निश्चित करूँगे।’ सिप्यागिन ने नञ्घानोप का हाथ अपने हाथ में लीया। ‘घोर हूँ। एक घण्टा और’, उसने जाड़ा उसकी आवाज धीमी हा गई थी और सिर जरा तिरछा, अगर तुम्हें कुछ एडवान्स की जरूरत हो तो तो हमारा द्विचिचाना मत ? एडवान्स में केवल एक महीना।

नञ्घानोप वहीं समझ पा रहा था—क्या जवाब दे, और उसी उत्तर का साथ उसने सौजन्यता और धनत्व से दीत उस बेहरे को

देखा, जो उसके लिए उसना अपरिचित था जो उसके निकट इतना भुका हुआ था और उसकी आर इतना अनुग्रह पूर्वक मुस्कारा रहा था।

‘तुम्हें नहीं चाहिए ? हूँ ? सिप्यागिन फुसफुसाया।

‘अगर आप मुझे आता दें, तो मैं बस ही आपकी इस बियर में बताऊंगा,’ नेग्मानोव ने रुकते-रुकते कहा।

‘बहुत ठीक ! अच्छा तो जय ठक हम फिर मिल ! कस तक क लिए ! विदा।

सिप्यागिन ने नेग्मानोव का हाथ छोड़ दिया और जाने ही आया था

‘मुझे पूछन की आज्ञा थीनिए’ एका-एक नेग्मानोव ने कहा ‘आपन अभी कहा था कि आपकी मेरा नाम बियेटर म हो पता लग गया था ? आप को मेरा नाम किस ने बताया ?’

‘किसने ? ओह, तुम्हारे एक दोस्त ने और जहाँ तक म समझता हूँ एक सम्बन्धी ने राजकुमार राजकुमार ग० ने।

‘आर के अर्थ रक्षक ?’

‘हाँ।’

नेग्मानोव पहिले स भी अधिक खाम हो गया। उसने अपना सुँह आसा पर कहा कुछ नहीं, सिप्यागिन ने फिर उसका हाथ बनाया पर इस बार मौन रहते हुए ही और पहिले उससे और फिर पाब्लिन से झुंझकर विदा लेत हुए, उसने थलत्रे घसके अपना हूँट पहिना और आता गया। उसके चेहरे पर आत्म सन्तुष्टि की मुस्कान अब भी बिरक रही थी जिसमें उसक इस मुलाकात के अनुभवों की अनुसृति पढ़ी जा सकती थी।

घार

अमी मुदिफ्न स सिप्यागिन न मरान की  
देहनीज पार की हागी नि पाफिनन  
अपना कुर्मो पर स उदल पद्म और ने-घानाय  
की घोर लपपत हुए दायाह देता हुना दोसा ।

'तुमन वडा ऊँचा हाय मारु है । उमन  
नीसनिपारते हुए घार पैरा से तास दव हुए  
कहा जानते हो वह वान है ? सिप्यागिन ।  
हू कोई उच जानता है, समाज वा एव स्टम्म  
एक प्रकार से भविष्य में हाने वाला मन्त्री ।

अँ—सक वारे में विन्तुल नही जानता  
नग्यानोद न उगसीनता स दवाया ।

पाबिलन ने निराग स अपने हाय फके ।

वही ता हमारु दुभग्य है अलस्ता  
दिमिद्विष नि हम किसी का नही जानते !  
हम लाना को प्रभावित करना चाहते हैं  
दुनियाँ का बदलना चाहते हैं, लेकिन हम उसी  
दुनियाँ स बाहर रहत हैं, हम सिफ अपने दा  
तान मित्रा क घेर वा ही हुए के मेदक की तरह  
साचे दुनियाँ समन्त हैं और उसी में चकर  
बाटत रहत हैं—'

है कि वह त्याग करना जानता है, अगर जरूरत पड़े चाय तो वह मृत्यु का भी सामना कर सकता है, जो हम तुम नहीं कर सकते।

पाकिस्तान के चेहरे पर एक दयनीय विस्फुटा भावार्थ और उसने अपने बेकाम पट्टे पैरा की घोर इधारा किया।

'क्या मैं सच्चाई के लिए उपयुक्त हूँ, मेरे मित्र अलैकसी दिमित्रिच ? खुदा की पनाह ! लेकिन कोई बात नहीं मैं फिर कहता हूँ सिप्यागिन से तुम्हारे इस सम्बन्ध पर मैं हाथिक रूप से प्रसन्न हूँ, और अपने उद्देश्य के लिए मैं इससे धड़े-बड़े लाभ देखता हूँ। तुम्हारा सम्बन्ध उच्च बर्ग में स्थापित होगा। तुम उन सेरनिया को बखोले स्याती स्त्रिय के बने मुसायम शरीर वाली उन औरता को बैसे कि 'स्पेन की डॉक म कहा गया है, उनका अध्ययन करो मेरे प्यारे बच्चे उनका अध्ययन करो। अगर तुम इतिव्य सुस्ता में निरत रहने बास होते तो मुझे निश्चय ही तुमसे डर होता। लेकिन निश्चय ही इस काम का स्वीकार करने में वह तुम्हारा भक्त नहीं है ?'

'मैं यह काम स्वीकार कर रहा हूँ मेग्धानोव ने उसकी बात को पकड़कर कहा 'रोटी के लिए' और इसलिए भी कि मैं कुछ दिनों के लिए तुम सबसे घसग होना चाहता हूँ। उसने अपने मन में कहा।

'जरूर ! जरूर ! और इसीलिए तो मैं कहता हूँ, तुमसे उनका अध्ययन करो। कैसे सुगन्ध छोड़ गए हैं वे महाशय अपने पीछे ? पाकिस्तान में हवा में सूँघा। इसी इश का तो श्रीमती मेयर ने स्वप्न देसा था।

'उसने राजकुमार ग० से मेरे बिपय में पूछा था मेग्धानोव ने सिङ्की के पास होते हुए भर्राई भावाज में कहा 'सम्मबत उसे मेरे बारे में पूरे बात पता लग गई है।

'सम्मबत नहीं बल्कि निश्चय ही ! लेकिन उसका क्या ? मैं तुमसे घर्षत सभा सकता हूँ कि उसी वजह से तो उसने तुम्हें घिसाक रखने का विचार किया है। और तुम क्या चाहते हो ? तुम खुद खून से एक

अभिजातीय हो। और निश्चय ही इसका मतलब है कि तुम भी उनमें से ही एक हो। लेकिन मुझे यहाँ बहुत देर हो गई, इस समय तक मुझे पाकिस्तान में पहुँच जाना चाहिए था अपन पापक के पास। अन्ध, फिजहाल के लिए नमस्कार मित्र।

पाकिस्तान दरवाजे की घोर बका पर, बीच में ही रुक गया और पोछे पूमा।

'सुना, अल्योषा उसन भाप्रहूपूर्ण स्वर में कहा 'तुमने अभी मना कर दिया था और अब मुझे खपया मिस भी जायगा मैं जानता हूँ लेकिन उद्देश्य के लिए, जो हम सब का है मुझे भी थोड़ा त्याग करने का अवसर दो मने ही यह किसना भी कम हो। और कोई तरीका नहीं है, जिससे मैं मदद कर सकूँ वो कम से कम पैसे से ही करने दो? देखो यह मैं उस खल का नोट मेज पर रख रहा हूँ। स्वीकार है? नेग्मानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया और न अपनी जगह से हिला ही।

मौन स्वीकृति का लक्षण है। धर्मवाद! पाकिस्तान ने प्रसन्नता से कहा और चला गया।

नेग्मानोव अफसा रह गया यह अपनी लिङ्की में से बाहर के धपेरे रक्रे मैदानों में जिसमें गर्मी का दिन में भी सूरज की एक भी किरण नहीं गिरती थी धूरता रहा। उसका मुँह भी मसिन हो रहा था।

जैसा कि अब हम सबको विदित ही है, कि नेग्मानोव एक अमीर सैनिक जनरल 'जब्रुमार ग० और उसकी बेटी को एक सुन्दर अयान धाय का नेग्मानोव के अम का दिन ही मर गई थी का बेटा था। नेग्मानोव ने अपनी आर्थिक शिद्या स्कूल के वाडिंग में रहकर एक योग्य और बड़े स्कूल गास्टर से प्राप्त था थी और उसने बाद यह विश्वविद्यालय में दाखिल हो गया था। उसन यानून पढ़ना चाहा था लेकिन उसने अनरल पिजा ने जिस निहितिस्टा से धृणा थी, चारा

हिल-मिल जाते थे, और वह भी उनसे स्नेह करने लगता था। नेग्घामोव जिस घुटम का अनुभव कर रहा था, वह हर भावुक व्यक्ति के मन में हर स्थान परिवर्तन के समय उत्पन्न होती है। जो लोग निर्भीक और आशावादी होते हैं, उन्हें ऐसा अनुभव नहीं होता। वे तो जीवन में ऐसे परिवर्तनों का स्वागत करते हैं और मानसिक होते हैं। नेग्घामोव अपने विचारों में इतना मग्न हो गया कि वह अनजाने रूप से उन्हें तरन्नुम में गुनगुनाते लगा।

‘घोड़, सैतान?’ वह जोर से निस्लाया यह तो मैं निश्चय ही कविता के राजमार्ग पर बढ़ता जा रहा हूँ।

उसने अपने को झुकझोरा और झिड़की पर से हट गया। मेज पर पड़े पाक्सिन के बस स्मस के मोट को देखते ही उसने उसे बेब में ठूस लिया और कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।

‘मुझे पेशगी लेना चाहिए उसने अपने से कहा अर्थात् है कि यह महालय अपने आप ही देने को तैयार है। सी खल और अपने भाइयों से सी खल पचास कर्ज में निकल जायेंगे पचास या सत्तर यात्रा के लिए और रहे बाकी सो घोस्त्रोवुमोव के लिए हो जायेंगे। और जो कुछ पाक्सिन देगा वह भी वह ल सकता है। और हमें मज्जु सोब स भी तो कुछ भाना होगा।

जब वह अपने मन में यह सब जोड़-तोड़ मिला रहा था तब भी वही मधुरता उसके मन को अभिभूत कर रही थी। वह रुक गया और स्वप्न सा देखने लगा - और उसकी आँसू दूर पर स्थिर थीं। वह उसी स्थान पर जड़बस सड़ा था। थोड़ी देर उसी स्थिति में रहने के बाद उसने मेज की दरज खोली और उसमें से एक पांडुसिपि निकाली।

वह कुर्सी में घँस गया, उसकी आँसू अब भी कहीं दूर देख रही थीं। उसने कसम उठाया और गुनगुनाने लगा। कभी-कभी वह अपने वासों को पीछे झटकार देता। काफी काट-पीट के बाद वह लिखने लगा।

पीरी का दरवाजा धाधा लुत्ता और उसमें से मधुरिना का सिर पमना । नेग्बानोव ने उसे नहीं देखा और अपने काम में व्यस्त रहा । मधुरिना गौर म देर तक उसे देखती रही और अपने सिर को दीप-बाए भटका देकर पीछे हट गई । लेकिन सभी नेग्बानोव ने अपना सिर उठाया और मधुरिना को देखकर धवराहट क साथ बोला 'ओह तुम !' उमने भट से बाँपी मेज की दरज में धन्द कर दी ।

तब मधुरिना मधे रुदमों से कमरे में घुसी ।

'मीन्प्रोदुमोव मे मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' उसने शब्दों पर भटका देते हुए कहा, 'यह पता करने के लिए कि तुम पैसे का प्रबन्ध कब तक कर सकोगे अगर आज ही कर सको, तो हम लाभ आज शाम को ही खाना हो जायें ।'

'आज तो मैं नहीं कर सकता नेग्बानोव ने उत्तर दिया और थोरियाँ धड़कते हुए बोला, 'कस घाना ।

'कै वने ?

'दा वने ।'

'अच्छ ।

मधुरिना धोड़ी देर के लिए चुप हो गई । तब एकाएक उसने अपना हाथ नेग्बानोव की घोर धड़ा दिया ।

'पायद मैने तुम्हारे काम में धाधा धान दो—क्षमा करना, और फिर मैं अभी जा रही हूँ । कौन जानता है हम फिर किस भी सकेंगे ? मैं तुमसे बिदा सना चाहती थी ।

नेग्बानोव ने उसकी ठंडी लाल उँगलियों को धवाया ।

'तुमने उन सख्तन का यहाँ दया धा न ।' उमने कहना धारम्भ किया 'उनमे मेरे काम की वात पकरी हा गई है । मैं उमके साथ उनके सङ्घ के निरक्षक के रूप में स० प्रान्त म स० नगर क पाम ही न्यित उनरी जागीर में धा रहा हूँ ।



हिस-मिल जाते थे और वह भी उनसे रनेहू करने लगता था। मेग्धानोव जिस घुटन का अनुभव कर रहा था, वह हर मासुक व्यक्ति के मन में हर स्थान परिवर्तन के समय उत्पन्न होती है। जो लोग निर्भीक और प्राणावादी होते हैं, उन्हें ऐसा अनुभव नहीं होता। वे सो जीवन में ऐसे परिवर्तनों का स्वागत करते हैं और प्रानन्दित होते हैं। मेग्धानोव अपने विचारों में इतना मग्न हो गया कि वह अनजाने रूप से उन्हें तरम्मूम में गुनगुनाते सगा।

‘मोह, शीतान?’ वह जोर से चिल्लाया यह तो मैं निश्चय ही कविता के राजमार्ग पर बढ़ता जा रहा हूँ।

उसने अपने को झरझोर और खिड़की पर से हट गया। मेज पर पड़े पाकिस्तान के दस खस के मोट को देखते ही उसने उमे बेव में दूध लिया और कमरे में इधर-उधर टहलने लगा।

‘मुझे पेशगी लेना चाहिए, उसने अपने से कहा ‘अच्छा है कि यह महाशय अपने आप ही देने को तैयार हैं। सौ खस और अपने भाइयों से सौ खस पचास कर्ज में निकल जायेंगे पचास या सत्तर यात्रा के लिए और रहे बाकी सौ प्रोत्रोवुमोव के लिए हो जायेंगे। और जो कुछ पाकिस्तान वेगा वह भी वह ल सकता है। और हमें मरु खोय से भी तो कुछ साना होगा।

अब वह अपने मन में यह सब जोड़-तोड़ मिला रहा था सब भी वही मधूरता उसके मन को अभिसृत कर रही थी। वह रुक गया और स्वप्न सा देखने लगा और उसकी आँखें दूर पर स्थिर थीं। वह उसी स्थान पर जड़वस खड़ा था। थोड़ी देर उसी स्थिति में रहने के बाद उसने मेज की दराज खाली और उसमें से एक पांडुलिपि निकाली।

वह कुर्सी में बैस गया उसकी आँखें अब भी कहीं दूर देख रही थीं। उसने कसम उठाया और गुनगुनाने लगा। कभी-कभी वह अपने बालों को पीछे मटककर देता। काफी नाट-पीट के बाद वह सिसने सगा।

पौरी का दरवाजा धाधा झुला घीर उसमें से मधुरिना का सिर पमना । नेग्मानोव ने उस नहीं देखा घीर अपने काम में व्यस्त रहा । मधुरिना घीर से दूर तक उसे दस्तवी रही घीर अपने सिर को दाँए-वाँए झटका देकर पीछे हट गई । लेकिन तभी नेग्मानोव ने अपने सिर उठाया घीर मधुरिना को देखकर घबराहट के साथ बोला, 'मोह तुम !' उसने झट से बाँपी मेज की दरज में बन्ध कर दी ।

तब मधुरिना मधे कदमा से कमरे में घुसी ।

'मीस्त्राडुमोव ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' उसने घबराई पर झटका देने हुए कहा, 'मह पता करने के लिए कि तुम पैसे का प्रबन्ध कब तक कर सकोगे, अगर आज ही कर सको, तो हम ज़ोर आज शाम को ही खाना हो जायें ।'

'आज तो मैं नहीं कर सकता नेग्मानोव ने उत्तर दिया घीर खारियाँ बढ़ाते हुए बोला, 'अन खाना ।'

'कै बजे ?'

'दो बजे ।'

'अच्छा ।'

मधुरिना थोड़ी देर के लिए झुप हो गई । तब एकाएक उसने अपने सिर नेग्मानोव की ओर बढ़ा दिया ।

शायद मैंने तुम्हारे काम में बाधा डाल दी—क्षमा करना, घीर फिर मैं अभी जा रही हूँ । कौन जानता है हम फिर मिल भी सकेंगे ? मैं तुमसे बिदा लेना चाहती थी ।'

नेग्मानोव ने उसकी ठंडी झाल उँगलियों को दबाया ।

'तुमने उन सज्जन का यहाँ देखा था न ?' उसने कहना प्रारम्भ किया, 'उनसे मेरे काम की बात पक्की हो गई है । मैं उनके साथ उनके लड़क के प्रिन्स के रूप में रा० प्रान्त में सु० नगर के पास ही स्थित उनकी जागीर में जा रहा हूँ ।'

एक हृष्यपूर्ण मुस्कान मधुरिना ने चेहरे पर बौढ़ गई ।

‘स० के निकट—! तब फिर शायद हम लोग एक दूसरे से फिर मिल सकेंगे । हमें सम्भवतः यहीं भेजा जाय । मधुरिना ने सांस छोड़ते हुए कहा । ‘आह असेकमी विमिश्रित । ’

‘क्या बात है ?’ नेग्धानोव ने पूछा ।

मधुरिना एकटक उसे देखती रही ।

कुछ नहीं है । असबिदा । कुछ नहीं ।’

एक बार और उसने नेग्धानोव का हाथ दबाया और पीछे हट गई ।

‘सारे पीटर्सबर्ग में मेरा कोई इतना ध्यान नहीं रखता ‘असीब सड़की है ! नेग्धानोव ने सोचा । लेकिन उसने बीच में घाबर मुझे रोका क्यों ? यद्यपि यह अच्छा ही हुआ ।

दूसरे दिन सबेरे नेग्धानोव सिप्यागिन के निवास स्थान पर गया । वहाँ वह उनकी धानदार अध्ययनशाला में गया जो एक उदार राजनीतिज्ञ और आधुनिक सज्जन के गौरव के अनुरूप तरह-तरह के सामदार फर्नीचर से सजी थी । वह एक बड़ी मेज के सामने बैठ गया जिस पर करीने से कागज रखे थे जो शायद कभी भी किसी के काम न आते हों और उनकी बगल में बड़े-बड़े हाथी दाँत के चाकू रखे थे जिनसे कभी कोई चीज नहीं काटी गई थी । एक घंटे तक वह मकान के उदार विचारों वाले मालिक की बातें सुनता रहा और उसकी चतुर एवं सौजन्यसाधन विनीत मधुरिना की स्निग्ध वाढ़ में डूब गया । अन्त में उसे सौ बयल पेशगी मिल गए, और दस दिन बाद वही नेग्धानोव फर्स्टक्लास के रिजर्वडिब्बे में मसामसी सोफे पर अचलेटा था और हाथ में था वही उदार, चतुर राजनीतिज्ञ और आधुनिक-सज्जन । दोनों निकोलावस्की रेसवे से मास्को जा रहे थे ।

## पाँच

देहात में सिप्यागिन का पत्थर का बना हुआ एक बड़ा झालीघान मकान था जिसमें बड़े-बड़े मन्ने थे और उन मकान का सामने वाला हिस्सा श्रीक शैमी का बना था। यह मकान उसका पिता क द्वारा वर्तमान जगहनी के धारम्भ में बनवाया गया था। उसके पिता एक आगीरदार थे जा सेठी-बाड़ी के प्रति अपने मोह और पूंसे के उमुक्त प्रयाग के लिए प्रसिद्ध थे। उस झालीघान मकान क ड्राइंगरूम में बैठी सिप्यागिन की पत्नी बालेन्तिना मिखासोवना उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। वह घंटों स अपने पति क आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे पति के आगमन का तार प्राप्त हो चुका था। ड्राइंगरूम की सजावट अत्यन्त प्राधुनिक ढंग से हा रही थी। उसमें की हर चीज सुभाषनी और सुन्दर थी। सरह-सरह क फूलदार और हल्क गहरे रंगों क पदों के कपड़ों क सकर रगदार छोट क चीनी कपड़े कसि और पीने की छोटी-बाड़ी बस्तुएँ जो सामने की

मेजों और ताका पर और इतर उधर फैली हुई थीं। इन सब की सम्पूर्णाता में एक हल्का सामञ्जस्य था और उन पर पड़ती खुली ऊँची लिङ्गी में से स्वच्छन्दरूप से मई के सूर्य की चमकदार किरणें उनसे इस रूप में घुल मिल गई थीं कि उन्हें और सुन्दर और सुभावना बना रही थीं। कमरे की हवा कुमुदिनी के फलों से बसी हुई थी (इन सुगन्धित प्वेत फूलों के गुच्छे यहाँ यहाँ रखे हुए थे)। लिङ्गी में होकर वायु से फूलों की सुगन्ध को लिए हुए हल्की हवा के भक्ति जब-तब धाकर कमरे की हवा को और भी बदबरा देते थे।

कैसा सुन्दर चित्र है। और गृहणी बालेन्तिना मिस्सालोवना ने तस्वीर को पूर्ण कर दिया था—उसे सजीवता और सार्थकता प्रदान कर दी थी। वह एक तीस बप की लम्बे कद की स्त्री थी। उसके बाल गहरे भूरे रंग के थे। साँघल रंग का किन्तु स्फूर्ति पूर्ण एक से बर्ण का उसका मुख, अतीव सुन्दर पैनी मखमशी रसीली भ्राँसों वाली आकृति सिस्टिन मेडोना की याद दिलाती थी। उसके हाँठ धीरे थे, कन्धे ऊँचे, और बाँहें सम्ची थीं। उसको धान और स्वच्छन्दता से झाँगलम धूमते अपने दुबल सिकुड़े हुए शरीर से फूला पर झुककर मुस्कराते हुए उन्हें सूपते, चीनी फूलदानों को घुमात और तब अपने चिकने चमकदार बालों को तेजी से ठीक करते और पीछे के सामने अपनी दिव्य धाँसा को अर्धनिमीलित करते जो कोई भी देखता तो हम निश्चय ही कह सकते हैं कि वह निश्चय ही अपने मन में या स्पष्ट रूप से कहे बिना नहीं रह सकता कि उसने ऐसी जादूई सूरत कभी नहीं देखी।

एक नौ साल का सुन्दर बुँधराले दासों वाला बालक स्काच पोशाक पहिने नगे पैर उद्विग्णता के साथ झाँगलम में दीड़ता हुआ आया और एकाएक बालेन्तिना मिस्सालोवना का दबकर ठिठक गया।

‘क्या है, कोल्पा /’ उसने पूछा। उसकी आवाज उसकी भ्राँसों जैसी ही कोमल और मधुर थी।

'ममी', लड़के न प्यङ्गते हुए हुए महा बुधा ने मुझे यहाँ भेजा है। उन्होंने कुछ पस मगाए हैं अपने कमरे के लिए उनके पास एक भी नहीं है।

वासन्तिना मित्रालोचना न अपने बेटे की ठोड़ी पकड़ कर उसने सुगन्धित तिर को ऊपर उठाया।

अपनी बुधा से जाकर मही कि बहू माली से फूलों के लिए कहला दें, ये फूल मरे हैं " मैं उन्हें किसी को छूने देना नहीं चाहती। उनम कहना कि मैं अपनी सजावट को बिगाड़ना पसन्द नहीं करती। क्या मेरे दादा दुहरा सकते हो ?

'हाँ' लड़के ने कहा।

'अच्छा तो कहो।

'मैं कह दूँगा मैं कह दूँगा

तुमने नहीं खाने दिया।

वासन्तिना मित्रालोचना हँस पड़ी। उसकी हँसी भी बड़ी स्निग्ध और मधुर थी।

'तुम से कोई बात कहलाना भी बेकार है। कोई बात नहीं, तुम जो सुझारी समझ में आए जाकर कह देना।

सड़के ने जल्दी से अपनी माँ का धँसूठिया से पूरी तरह भरा हुआ हाथ भूमा और बाहर भाग गया।

वासन्तिना मित्रालोचना उसे देखती रही और एक गहरी साँस भरती हुई वह सोने के तारा से बन हुए एक पिजड़े के पास चली गई जिसमें एक हरे रंग का छोटा उबक रखा था और सावधानी से अपनी साँस और पंखे मार रहा था। उसने उसे अपनी उँगली से छेड़ दिया, और एक नीची धाराम कुर्सी पर बैठ कर उसने एक मक्कापीदार मेज पर स 'दो संभारा की भ्रासोचना' नामक एक पत्रिका का अन्तिम अंक पढ़ा लिया और उसने पन्ने पलटने लगी।

एक सम्मान पूर्ण मठार म सचत हा उमन धालें ऊपर उठाईं।

वरदाजे पर साधारण स्वतः वस्त्र की वरदा पहिने एक सुन्दर मौकर लडा था ।

‘क्या बात है भागाफोन ?’ वासन्तिना मिखासोयना ने उसी कोमल मधुर स्वर में पूछा ।

‘सिम्योन पैत्रोविच कालामियेस्लेव पधारे हैं । क्या मैं उन्हें ऊपर भेज दूँ ?’

‘जमर भेज दो । और मरिघाना बिकेन्त्येबना से भी इइंगरूम में भाने को कहना दो ।’

वासन्तिना मिखासोयना ने पत्रिका मेज पर फेंक दी और धाराम कुर्सी पर पीछे को पीठ लगाली । उसने अपनी धाँसे ऊपर उठाई और विचारों में खोई सी दिखने लगी । यह मुझा उसे बहुत सूट करती थी ।

उसी द्वार से एक बत्तीस वय के नीजवान सिम्योन पैत्रोविच कामो मियेस्लेव ने मस्ती और आपरबाही के साथ कमरे में प्रवेश किया । दूर से ही वह विनम्रता प्रदर्शन में मुक गया । वह थोड़ा सा एक धोर मुका और इलाम्बिक की तरह ऊपर उठ गया । उसने कुछ विनीत कुछ बनावटी ढंग से भादर पूर्वक वासन्तिना मिखासोयना का हाथ अपने हाथ में लेगिया और जोर से उस झूमा । इस सबसे कोई भी देखने बसा यह अनुमान लगा सकता था कि भागनुक इस प्रदेश या रहने वाला नहीं है और कमी-कमी ही यहाँ जाता है । भमीर भी है, लेकिन पीटर्स बर्ग के सुजन-समान का सही रूप में उच्च फैसन का व्यक्त है । उसने पोशाक भी सर्वोत्तम अंग्रेजी ढंग की पहन रखी थी । उसकी टूथिठ ब्राकेट की ऊपरी जेब में से उसके सके महीन रेद्यमी स्मास का रंगीन बौर्बर त्रिकोनाकार बाहर को बमक रहा था, और बस्मे का एक गोधा फामे पीते से बंधा एक धोर खटका हुमा था । हलके रंग के उसके दस्ताने उसक हलके मूरे रंग के धारखाने के पात्रामें से मैथ कर रहे थे । उसके बाल बटे हुए और दाढ़ी चिकनी बनी हुई थी । छोटी पास पास धाँसे, मुनी पतली नाक और लाम होंठों वाला उसका नारी बैसा

मुख्य धनी उष्ण वंश के सुख और प्राराम के जीवन की साक्षी दे रहा था। उसकी सारी सुधीलता बड़ी भासानी से प्रतिशोध की भावना के रूप में परिवर्तित हो जाती, कभी-कभी कठोरता में भी, वस सिम्योन पैत्रोविच को अपने अनुदार देशभक्ति के और धार्मिक सिद्धान्त पर भ्रष्ट करने के लिए उभाड़ देने भर की बेर होती—ओह! सब वह निर्मम हो जाता! उसकी सारी शिष्टता एकदम हवा हा जाती उसकी कोमल आँखें बृष्टतापूर्ण चमक से चमकने लगतीं, उसके सुन्दर मुख से गालिया की झड़ी लग जाती—और दयनीय रूप से पिन्नाप करते हुए और कराहते हुए वह सरकार से दुहाई माँगने लगता।

सिम्यान पैत्रोविच के परिवार ने एक साधारण भाखी को कृतियत से उत्पत्ति की थी। जिस प्रदेश से वह आया था, उसमें उसका परदादा फालोमेन्तसोव का नाम से प्रसिद्ध था। लेकिन उसका दादा ने इस यवसकर अपना नाम फालोमेत्सोव पर लिया था और उसका पिता फालोमित्सोव सिखाता था और मन्त में सिम्योन पैत्रोविच ने उसे फालोमित्सोव पर लिया था और अपने को पूरी गम्भीरता के साथ दुद्धतम रक्त का अभिजातीय समझा था और अपने को दौन गैलेन मियेर के नदावों का बदाब्ज बतलाता था जिनमें से एक तीस साला युद्ध में फ्रास्ट्रीयन सेना का सेनापति था। सिम्योन पैत्रोविच एक दरबारी सदस्य था। सब उसे 'दिग भक्त' कहते थे। उसने अपनी देश भक्ति के कारण कूटनीति-विभाग की नीबरी छाड़ दी थी। किन्तु वह जैसे उसके लिए बनी ही थी, क्योंकि वह अपनी शिक्षा, सांसारिक बहु ज्ञान, स्त्रियों के बीच अपनी सापप्रियता और अपनी प्राकृति के कारण उसके लिए निदान्त उपयुक्त था। सही मामा में सामन्ती। फालोमित्सोव का पास काफी सम्पत्ति थी, और बड़े ऊँचे ऊँचे सम्बन्ध थे उसने। वह विस्वास और रागन का आदमी समझा जाता था—जैसा कि पीटस बर्ग के अफसर बर्ग में प्रमुख समझे जाने वाले सम्मानित राजकुमार ब० न उसके विषय में कहा था—'मिरी राय



में भाठी याँठ कुमैत है। कालोमियेस्सेव स० प्रास्त में अपनी जागीर की देखभाल करने के लिए दो महीने की छुट्टी पर आया था। कहना चाहिए 'किसी को छूटने और किसी को भूसने के लिए।' और फिर इसक बिना काम भी तो नहीं चलता।

'मुझे आशा थी कि वारिस भान्द्रिव से मरी भेंट हो सकेगी' उसने विष्टता के साथ कभी इस पैर पर तो कभी उस पैर पर मुसते हुए और एकाएक-एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के अनुकरण में काटका से देखते हुए उसने कहना आरम्भ किया।

वालन्तिना मिस्सालोवना ने हसका सा मुँह बनाया।

'नहीं ता आप नहीं मात।'

कालोमियेस्सेव की वालन्तिना मिस्सालोवना का प्रश्न बड़ा अजीब सा लगा और वह एक दम सक्षपका सा गया।

'वालन्तिना मिस्सालोवना' वह जोर से बोला, 'क्या आप ऐसी बात सोच सकती हैं'

'घरे छोड़िये भी। आप बैठिए भी ता। वारिस भान्द्रिव आते ही होंगे। मैंने उनके लाने के लिए गाड़ी भेज दी है। थोड़ी देर बैठिए आपकी उनसे भेंट हो जायगी। इस समय क्या बजा है ?'

'हाँ' कालोमियेस्सेव ने अपनी वास्केट की जेब से एक सोने की बड़ी जेब पड़ी जिस पर मीने का काम हो रहा था निकाल कर देखत हुए उत्तर दिया। उसने बड़ी धीमती सिप्यागिन को दिखाई 'क्या आपने मेरी बड़ी देखी है ? यह मिहाइल ने मुझे भेंट की थी। आप जानती हैं न उसे ! वही सविद्या देश का राजकुमार—प्रोप्रेनोविच। देखिए, यह रही उसकी कंसगी। हम दोनों बड़े गहरे दोस्त हैं। हम दोनों साम-साथ खिकार खेतने जाया करते थे। बड़ा ही घामदार और काम का आदमी है। फौलादी-हाथ का आदमी जैसा कि एक आसक को हाना चाहिए ! यह कोई बेहूशगी और बकवास बर्दासत नहीं कर सकता ! कभी नहीं ही-हीं !

कासोमियत्सेव एष धाराम कुर्सी पर पैर पर पैर रखकर बैठ गया और बड़े इतमिनान के साथ धीरे-धीरे अपने थोए हाथ का दस्ताना उतारने लगा ।

‘भाहू, अगर कहीं मिहाइल जैसा कोई आदमी यहाँ हमारे प्रान्त में होता ।

‘क्या ? क्या आप किसी बात से असन्तुष्ट हैं ?’

कासोमियेत्सेव ने अपनी नाफ सुनोड़ी ।

हां हमेंगा बही प्रान्तीय काउन्सिल । वही प्रांतीय माउन्सिल । क्या नाम इस सब से । उस से ता घासन व्यवस्था और भी कमजोर होती है, और बेकार के आदमियों की डींग मारी जाती है । (कासोमियेत्सेव ने दस्ताने में से निकल हुए अपने खाली बगि हाथ को हवा में झुंटाया)

आर असम्भव आघाएँ । (कासोमियेत्सेव ने अम्हाई ली) मैंने थोड़े दिन पहिले पीटर्सबर्ग में इस विषय में खर्चा की थी । अब हवा का रक्त वह नहीं रहा । आपके पति भी जरा सोचिए ता । लेकिन वह ता जाने-मान उदार बादी है ।’

धामती सिप्यागिम अपनी कुर्सी । पर सीधी बैठ गई ।

क्या ? थी मान कासोमियेत्सेव आप सरकार के विराधी हैं ?

‘मैं ? विरोध में ? कभी नहीं । फिस्ती भी कीमत पर नहीं । मैं साफ बात कहता हूँ और कभी-कभी बस आलोचना कर देता हूँ, लेकिन बाद में मान भी लेता हूँ ।

‘और मैं ठीक इसका उलटा करता हूँ । मैं आलोचना नहीं करती, पर कभी मांठी नहीं ।

बाहू,—क्या बात कही है, यदि आप आना दें ता मैं आपका वही वाक्य अपने एक मित्र सादिना को बताना दूँ जा एक सामाजिक उपन्यास लिख रहा है । उसने मुझे अपने कुछ अध्याय सुनाए थे । वह उपन्यास बड़ा धनूटा होगा । उसमें यह विराट रूसी संसार का चित्र भविष्य ।

‘प्रकाशित कहीं से होगा ?

‘निश्चय ही ‘रूसी सन्देश’ में। यह प्रपना वास भ्रमवार है। मैं  
देखता हूँ कि आप भी वही पढ़ रही थीं।

‘हाँ, लेकिन इसका स्टैंड गिरता जा रहा है।

‘शायद हो सनता है और रूसी-सन्देश, छाया, कुछ  
समय स—ठेठ मापा में कहना चाहिए—पानी मिसी शराव या पउभा,  
जैसा हो बना है।’

कालोमियेत्सेव दित साल बर हुआ पानी मिसी शराव कहना उस  
बड़ा व्यंग्यारमक लगा और वह भी पउभा’।

‘सेबिन है यह एक प्रतिष्ठित पत्रिका, यह कहता गया। और यही  
मुख्य बात है। मुझे मैं मानता हूँ रूसी साहित्य में मुझे बहुत कम  
दिसचस्पी है, और आजकल टटपू जिण सेभक सिप्त रह हैं। नतीना  
क्या होता है कि उपन्यास की प्रधान नायिका रसाइयन होती है, घुड़  
रसोइयन। हँसने भी बात नहीं है। लेकिन सादिला का उपवास में  
जहर पहुँगा। वह विराट रूसी संसार का बिच घकिगा और सोगा को  
प्रवृत्ति, हँ, प्रवृत्ति का भी साका घीवेगा। इन शून्यवादी निहितिस्ता  
की भी कलई खुल जायगी। मैं सादिला के विचारा से छूप परि  
चित, है।

बीठी बात तो बहुत से कह सकते हैं, थोमशी सिप्यागिन ने  
टिप्पणी की।

‘अवामी की गलतियों पर पर्दा डाल दा’ कालोमियेत्सेव और स  
बोला और उसने अपने दाहिने हाथ का भी दस्ताना उतार लिया।

वासेन्तिना मिखालोवना की भाँसें फिर खँचल हा उठी। वह अपनी  
सुन्दर भाँसा का स्वच्छन्द प्रयोग करने की भारी थी।

‘सिम्योम पैत्रोबिच ! क्या ‘मैं यह पूछ सकती हूँ कि आप रूसी  
भाषा बोलने में फन्ध शका या इतना मयिप प्रयोग क्यों करते हैं ? मैं

समझती हूँ मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा कीजिएगा यह प्रश्न  
पुपानी कैशन होगई है।<sup>१</sup>

‘क्यों ? क्या / हर एक को सा मातृभाषा का उतना प्रश्रय शान  
नहीं हो सकता, जितना आपको है । मैं स्वी भाषा को सरकारी कामों  
को भाषा के रूप में ही स्वीकार करता हूँ । मैं उसकी शुद्धता की भी  
बद्ध परता हूँ । मैं बरामिजन का अभिनन्दन करता हूँ ? “सकित स्वी  
भाषा, मैं पूछता हूँ क्या सबसुच रोजमर्रा की भाषा के रूप में स्वी  
भाषा का कार्य ध्वित्व है नी ? क्या आप मेरे बहुत से कपना का स्वी  
भाषा में अनुवाद कर सकती हैं ? इसमें मुझे दाक है ।

‘क्यों नहीं कर सकती ?’

कालामिसब हूँसा ।

‘हा सकता है वानन्विता मिखातावना । सकित क्या आप ऐसा  
अनुभव नहीं करती कि इसमें पुष्ट परिष्कारण भा जाता है और  
भाषा की सारी प्रवाहोतता और उसका सौन्दर्य मारा जाता है ।

‘आप मुझे सहमत नहीं कर पाएंगे । सकित यह मरिधाना क्या  
करती रह गई ? उसने बटी बजाई , एक धाकरा धाया ।

‘मैंत मरिधाना विरन्त्यवना को यहाँ ड्राइंग कम में बुनवाया था ।  
क्या मेरा सन्देश उस सब नहीं पहुँचाया गया ?

छोकरा उत्तर दे कि इसके पहिन ही दरवाजे पर उसका पीछे कासा  
फताउब पहिन एक सुपती दिगई पड़ी । उसके याल छोटे-छोटे छट हुए  
थे । यह सिप्यागिन की मौजी मरिधाना विरन्त्यवना थी ।

— ७ —

<sup>१</sup> मूस उपस्थास में कालामिसब बाठ बाठ में करम बालता है पर  
दिन्नी अनुवाद में उस दिवा सबना सम्मब नहीं था, प्रत बालेविता मिखा  
कोबता के संवाद बाए ही सस्यी बद्ध आरिबिक विसेपता सट्ट करती गई है ।



‘क्षमा कीजिएगा वामेन्तिना मिखाजोबना’  
उसने श्रीमती सिप्यागिन की ओर बढ़ते हुए कहा, ‘मैं जरा व्यस्त थी, देर होगई।’

तब उसने कालोमियेस्सेव को नमस्कार किया और थोड़ा एक तरफ हटकर, तस्ते के जो उसको देखते ही पंख फड़फड़ा कर उसकी ओर मपकने लगा था, निकट, एक गद्दीदार स्टूल पर बैठ गई।

इसनी दूर क्यों बैठ रही हो मरिभाना ? श्रीमती सिप्यागिन ने उसकी ओर देखते हुए कहा। क्या तुम उस अपने नन्हे दोस्त के पास ही रहना चाहती हो ? सिम्योन पैत्रोबिच देखो, वैसी भजीब बात है, इस तोते को मरिभाना से प्रेम है।

‘इसमें कोई, आश्चर्य की बात तो नहीं।

और मुझे बह फूटी घाँस नहीं देख सकता।’

यह जरूर आश्चर्य की बात है ! मरा क्यास है, आप उसे तंग करती होंगी !’

‘कमी नहीं, बल्कि बात इसकी उसटी है। मैं उसे चीनी देखी हूँ।  
 लेकिन वह मेरे हाथ से कुछ नहीं लेगा। नहीं वात प्रेम और  
 घृणा की है।

मरिघाना ने अपनी नीचे मुकी छाँटा से पलक उठाकर थीमती  
 सिप्यागिन को देखा और श्रीमती सिप्यागिन ने उसकी ओर देखा।

यह दोना ही औरतें एक-दूसरे को पसन्द नहीं करती थीं। अपनी  
 मामी बानेन्तिना मिलालोवना की तुनना में हम मरिघाना को  
 सरल और मासूम कह सकते हैं, पर सुन्दर नहीं। उसका चेहरा गोल  
 नाक बड़ी वाक जैसी छाँसें सूरी बड़ी और स्वच्छ पतली मोहें  
 पतल हाठ सूरे छूटे हुए घने बाल। वह एकान्त प्रेमी थी मिलने  
 उसने से दूर। पर उसके समूचे व्यक्तित्व में कुछ शक्ति और निमित्तता,  
 कुछ उसेजकता और रागात्मक उप्रता थी। उसके हाथ-पैर छिगने थे  
 उसका सुगठित योमल लचीला धरीर सालहबीं सदी की फ्लरेन्स की  
 यनी नृति की याद दिना देता था। गति में वह गजगामिनी थी।

सिप्यागिन का परिवार में मरिघाना की स्थिति बरा भजीब सी ही  
 थी। उसका पिता अर्थ-पोलिश बंध का था। वह एक होशियार और  
 उत्साही व्यक्ति था। उसने जनरल का पद प्राप्त कर लिया था,  
 लेकिन सरपार का विरुद्ध एक मर्यमर धारसोयीस के मामसे में पकड़े  
 जाने से बर्बाद हा गया था। उस पर बेस घसा सजा मिली और  
 अपने पद से हटा कर उसे रांश्वरिया भेज दिया गया। याद में उसे  
 माफी मिल गई थी और वापस हुआ लिया गया था। लेकिन फिर  
 वह भीषण में कमी उप्रति नहीं कर सका और अत्यधिक गरीबी में ही  
 उसकी मृत्यु होगई। उसकी पत्नी, सिप्यागिन की वहन और मरिघाना  
 की माँ (उसने और कोई बच्चा न था) इन सब भीषण आयाता को  
 सहन न कर सकी और अपने पति की मृत्यु का थोड़े दिन बाद ही उसकी  
 भी मृत्यु हो गई। सिप्यागिन ने अपनी माँकी का अपने घर में आयय  
 लिया, लेकिन वह इस पराश्रित जीवन से परेतान थी। वह अत्यन्त

अपनी स्वभाव की सम्पूर्ण शक्ति से आजादी के लिए प्रयत्नशील थी उसकी मामी के बीच निरन्तर यद्यपि गुप्त भगडा चलता रहता था। श्रीमती सिप्यागिन उसे शून्यपादी और नास्तिक समझती थी। मरिमाना, श्रीमती सिप्यागिन से भ्रूणा करती थी, उसे अपना घोपक समझती थी। अपने मामा से वह दूर ही दूर रहती थी, जैसे ही खैस वह घोरा से दूर रहती थी। वह सिर्फ उनसे दूर ही रहती थी, उनसे डरती नहीं थी। वह डरपोस स्वभाव की नहीं थी।

‘घ्रणा’ कामोमित्सेव ने दुहराया, ‘हाँ यह तो निश्चय ही आश्चर्य की बात है। मिसाल के लिए—हर कोई जानता है कि मैं कट्टर धार्मिक विचार का व्यक्ति हूँ शब्द व सही धर्मों में कट्टरपन्थी सक्रिय पादरी के घोड़ों के प्रयास जैसे सटकते वामों को मैं फूटी शक्ति नहीं देख सकता। उन्हें देखकर मुझे मजली सी भाने लगती हैं।

घोर कामोमित्सेव ने अपने हाथों और मुस की श्रेष्ठा से मजली की सिहरन को व्यक्त किया।

‘लगता है, सारे बालों स ही आपको बिड़ है, सिम्प्योन पैत्रोविष मरिमाना ने कहा ‘मुझे विश्वास है कि मेरे जैसे कटे वामा को भी आप नहीं देख सकते।

श्रीमती सिप्यागिन न धीरे से अपनी भाहों को ऊपर उठवा घोः अपने सिर को मुका लिया आज-कल जिस स्वभ्रन्दता से ये नौजवान महकियाँ बात चीत में हिस्सा लेती हैं, उस पर माना आश्चर्य कर रही हा और कामोमित्सेव विनीत भाव से मुस्करा रहा था।

‘जी हाँ उसने उत्तर दिया मैं आपके जैसे प्यारे, सुधरासे बाला को देख कर दुखी हुए बिना नहीं रह सकता मरिमाना विवेक्येवना जो कृतघ्न निर्दय केची से कठरे जाते हैं, लेकिन मुझे घ्रणा नहीं होती और हर हानत में आपके वासा ने तो मुझे धर्मपरिवर्तन ही करा दिया हावा!

कालोमियेस्तेव को अपने भाषा को स्पष्ट करने के लिए इसी शब्द ही नहीं मिस रहे थे और श्रीमती सिप्यागिन के टोक देने के बाद वह फ्रेन्च शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता था।

'स्त्रिंशत् का अर्थवाद है कि मरिघाना अभी तक अस्मा नहीं लगाती श्रीमती सिप्यागिन ने कहा, 'और इसने अभी तक कफ और कापर का जो नहीं त्यागा है। हालांकि मेरे बुरा मारने पर भी वह प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन करती है, और स्त्रिया को समझाना मैं भी खिन्नी रहती हूँ 'क्या है न यही बात मरिघाना ?'

यह नव कृष्ण मरिघाना का हतप्रभ करने के उद्देश्य से कहा गया था लेकिन वह हतप्रभ नहीं हुई।

हो मारी उमने उत्तर दिया, 'मैं उस विषय पर सब कुछ पढ़ती हूँ, और मैं उस समस्या का पूरी तरह समझने का प्रयास करती हूँ।'

यही ता है युवापन ! श्रीमती सिप्यागिन कालोमियेस्तेव की ओर उन्मुख हुई और बोली, 'हम तुम अब ऐसी बातों की परवाह नहीं करते—हैं न।'

कालोमियेस्तेव के मुख पर सहानुभूतिपूर्ण मुस्मान आ गई, वह श्रीमती सिप्यागिन के मन्त्रों में आने देने के लिए विवश था।

'मरिघाना विद्वन्मयेवना' उमने कहना आरम्भ किया 'मैं आदम पादिमा है 'असानी का न्मानी जो' का समय रहने

'सतिन मैं तो अपनी ही निन्दा कर रही हूँ' श्रीमती सिप्यागिन ने खोप में ही हाथ बाट कर फहना घुस किया, 'मैं स्वयं इन समस्याओं में खिन्नी रहती हूँ मैं जो या कोई अभी ऐसी नहीं रहा है।'

और मैं तेरी सभी प्रश्नों में दिलचस्पी लेता हूँ, कालोमियेस्तेव ने उत्तरता में कहा 'कबल मैं इन पर बातें करना बंशित बनूँगा।'

'आप इन पर बातें करना बंशित करेंगे, मरिघाना ने पूछा।  
हां। मैं लोगों से कहूँगा मैं तुम्हारी खिन्नी में याथा नहीं देना



एक स्वभाव की सम्पूर्ण व्यक्ति से भाजादी के लिए प्रयत्नशील  
 उसकी मामी के बीच निरन्तर यद्यपि गुप्त भगड़ा चलता रहता  
 ५ । अमली सिप्यागिन उसे शूयवादी और नास्तिक समझती थी।  
 मरिमाना श्रीमती सिप्यागिन से घृणा करती थी उसे अपना शोषक  
 समझती थी। अपने मामा से वह दूर ही दूर रहती थी, वैसे ही जैसे  
 वह औरों से दूर रहती थी। वह सिर्फ उनसे दूर ही रहती थी, उनसे  
 दूरती नहीं थी। वह डरपोक स्वभाव की नहीं थी।

‘घृणा’ कालोमियेस्तेव ने दुहराया, ही यह तो निश्चय ही  
 आश्चर्य की बात है। मिसाल के लिए—हर कोई जानता है कि मैं  
 कट्टर धार्मिक विचार का व्यक्ति हूँ। शब्द व सही धर्मों में कट्टरपन्थी  
 लेकिन पादरी के घोड़ों के प्रयास जैसे सटकरे वास्तो को मैं फूटी प्रांस  
 नहीं देख सकता। उन्हें देखकर मुझे मचसी सी घाने लगती है।

और कालोमियेस्तेव ने अपने हाथों और मुख की चेष्टा से मचसी  
 की सिहरन को व्यक्त किया।

‘सगता है, सारे बासों से ही आपको बिड़ है, सिम्योन वैत्रोविच  
 मरिमाना ने कहा ‘मुझे विश्वास है कि मेरे जैसे कटे वासा को भी  
 आप नहीं देख सकते।’

श्रीमती सिप्यागिन ने धीरे से अपनी भाहा को ऊपर उठाया और  
 अपने सिर को झुका लिया। आज-कल जिस स्वच्छन्दता से ये नौजवान  
 नबकियाँ बात शीत में हिस्सा लती हैं, उस पर माना आश्चर्य कर रही  
 हा और कालोमियेस्तेव विनीत भाव से मुस्करा रहा था।

‘जी हाँ’ उसने उत्तर दिया मैं आपके जैसे प्यारे दुःखरासे बासा  
 को देख कर दुखी हुए बिना नहीं रह सकता मरिमाना विवेक्येवना  
 जो कृतघ्न निर्दय बैची से कसरे जाते हैं, लेकिन मुझे घृणा नहीं होती  
 और हर हासत में -- आपके घाला ने तो मुझे धर्मपरिवर्तन ही  
 कर दिया होता।

बालोमियेस्लेव का अपने भावा को स्पष्ट करने के लिए स्त्री शब्द हा नहीं मिल रहे थे और श्रीमती सिप्यागिन के टोक देने से याद वह फेन्ब शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहता था ।

'ईस्वर का धर्मवाद है कि मरिमाना अभी तक बदमा नहीं सगाती ' श्रीमती सिप्यागिन ने कहा 'और इसने अभी तक कफ और कासर को भी नहीं त्यागा है हासॉक मरे बुरा मारने पर भी वह प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन पढ़ती है, और स्त्रियों की समस्याओं में भी रूचि रखती है ' क्यों है न यही वान मरिमाना ?'

यह सब कुछ मरिमाना को हतप्रभ करने के उद्देश्य से कहा गया था लेकिन वह हतप्रभ नहीं हुई ।

'हाँ मामी उमने उत्तर दिया, मैं उस विषय पर सब कुछ पढ़ती हूँ और मैं उस समस्या को पूरी तरह समझने का प्रयास करती हूँ ।'

यही तो है युवापन ।' श्रीमती सिप्यागिन बालोमियेस्लेव की ओर उन्मुग हुई और बोली 'हम तुम अब ऐसी बातों की परवाह नहीं करते—हूँ म ।

बालोमियेस्लेव के भ्रम पर सहानुभूतिपूर्ण सुझान भागई, वह श्रीमती सिप्यागिन के मज़ार में साथ देने के लिए विवश था ।

'मरिमाना विरहस्लेवना' उमने कहना प्रारम्भ किया, 'मैं आदर्श यादित्वा है 'जबानी का खमानी जोग' का समय रहे

'सदिन में तो अपनी ही निम्न कर रही हूँ', श्रीमती सिप्यागिन ने बीच में ही घाउ घाट पर कहना शुरू किया, मैं स्वयं इन समस्याओं में रूचि सती हूँ, मैं तो या कोई अभी ऐसी दूती नहीं हा गई ।'

और मैं एक अभी प्रना में दिपनम्पो सेउा हूँ', बालोमियास्लेव ने तत्परता से कहा 'बवस मैं इन पर बातें करना बजित करूँगा ।

भाप इन पर बातें करना बजित करेंगे ? मरिमाना ने पूछा ।

'हाँ । मैं सोचों से बहूँगा मैं तुम्हारी रूचि में बाधा नहीं देना'

लेकिन अभी तक चरचा चलाने का प्रयत्न है बिल्कुल नहीं ।'—  
 उसने अपने होठों पर रौंगटी रखी—'और वह भा मिश्रित रूप में—मैं  
 उस पर रोक लगा दूँगा—बिना किसी शर्त के ?'

श्रीमती सिप्यागिन हँस दी ।

'क्या आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कोई कमीशन  
 नियुक्त करेंगे ?'

'क्यों नहीं ? क्या आप समझती हैं कि हम उन मिश्रणों की तरह  
 से इस प्रश्न पर विचार करेंगे, जो अपनी नाक से घागे की बात तो  
 सोच नहीं सकते और महान जीनियस बने फिरते हैं । हम बोरिस  
 ग्रान्डीविच को सम्पन्न बनाएँगे ।'

श्रीमती सिप्यागिन और भी खोर से हँसी ।

'अगर होसियार रहना बोरिस ग्रान्डीविच कभी-कभी ऐसे अजीब  
 प्रजापति मुर्रा कबूतर से हो जाते हैं कि—

'मुर्रा, मुर्रा मुर्रा' तोते ने रट लगाई ।

बालन्दिना मिसामोवना ने उसकी ओर अपना स्थापन हिलाया ।

बुद्धिमान व्यक्तियों की बातचीत में वाघा मत डालो ! मरिघाना  
 उसे चुप करे ।

मरिघाना ने पिछड़े की ओर घूम कर ताँते की खोंच सहलानी शुरू  
 कर दी, जो तोते ने तुरन्त बाहर निकाल दी थी ।

'हां', श्रीमती सिप्यागिन ने बहना जारी रखा, 'बोरिस ग्रान्डीविच  
 तो कभी-कभी मुझे भी शक्ति कर देते हैं । उनमें कुछ कुछ प्रजापति  
 के से गुण हैं ।

'भीषण भाषणकर्ता है । कामामियेलेव ने तीलेपन से बीच में  
 बात काटी । 'आपके पति के पास भाषण का गुण है, जैसा और किसी  
 के पास नहीं है, वह सफ़सला प्राप्ति के भादी हो गए हैं क्योंकि  
 वे एक अच्छे बच्चा हैं' और साथ ही उनमें प्रसिद्धि प्राप्त करने के  
 प्रति रुचि भी है । क्यों है न ठीक बात ।

श्रीमती सिप्यागिन ने मरिघाना की घोर देखा ।

'मैंने ठा इस बात पर ध्यान नहीं दिया', उसने टाणिक मोन के बाद उत्तर दिया ।

'हाँ !' कालोमियेस्वेब ने खोये-खोये से स्वर में कहा , 'उनकी जरा उपेक्षा की गई है ।'

श्रीमती सिप्यागिन ने फिर मरिघाना को एक अर्धपूर्ण दृष्टि से देखा ।

कालोमियेस्वेब खोस निपोरता हुआ हँसा मानों कह रहा हो, 'मैं सब समझता हूँ ।

'मरिघाना विधेस्वेबना' उसने एकाएक अनाद्वय रूप से खेज भावात्र में कहा, तुम्हारा 'क्या बिचार है ?

मरिघाना पिजड़े की घोर से घूमी ।

'क्या इसमें भी आपको दिलचस्पी है ?

क्या नहीं बल्कि इसमें ठा मुझे बहुत दिलचस्पी है ।'

'क्या उम आप पैर कानूनी नहीं करेंगे ?'

'मैं धून्यबादिया का सूत्र क बारे में साजना भी पैर कानूनी कर दूँगा । सक्ति पाददिया क मिदेंशन और देस रत्न में, मैं स्वयं सूत्रों की स्थापना करूँगा ।

'सब अभी ? तैर, मैंने ठा अभी कुछ नहीं साबा कि मैं इस बर्ष क्या करूँगी । पिछले बर्ष सब कुछ ऐसा गड़बड़ा गया कि और फिर गर्मिया में सूत्र भी तो नहीं होते ।'

मरिघाना जैसे जैसे बात करती जा रही थी, उसका रंग गहरा होता जा रहा था, माना बात करने में उम पर जोर पड़ रहा था, जैसे वह जवर्स्टो याम बन रही हा । उममें धारममत्रगता का भाव उत्पन्न हा रहा था ।

'धूनी मैयागे नहीं है याय तुम्हारी ?' श्रीमती सिप्यागिन ने व्यंग न पूछा ।

लेकिन जहाँ तक चरचा चलाने का प्रश्न है बिल्कुल नहीं !'—  
उसने अपने होठों पर उँगली रखी—'और वह भी लिखित रूप में—मे  
उस पर रोक लगा दूँगा—बिना किसी शर्त के ?'

श्रीमती सिप्यागिन हँस रीं ।

'क्या आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कोई कमीशन  
नियुक्त करायेंगे ?'

'क्यों नहीं ? क्या आप समझती हैं कि हम उन मित्रमर्गों की तरह  
से इस प्रश्न पर विचार करेंगे जो अपनी नाक से आगे की बात तो  
सोच नहीं सकते और महान जीनियस बने फिरते हैं । हम बारिस  
ग्रान्डीविच को अध्यक्ष बनाएँगे ।'

श्रीमती सिप्यागिन और भी जोर से हँसी ।

अरा होशियार रहना बोरिस ग्रान्डीविच कभी-कभी ऐसे भजीव  
प्रजानायक मुर्दा कब्रतार से हाँ जाते हैं कि—'

'मुर्दा, मुर्दा मुर्दा' छोटे ने रट लगाई ।

वासिन्विमा मिलासोबना ने उसकी ओर अपना स्मान दिखाया ।

बुद्धिमान व्यक्तियों की बातचीत में वाधा मत डालो ! मरिघाना  
उसे चुप करो ।'

मरिघाना ने पिक्ले की ओर घूम कर छोटे की चोंच सहमानी शुरू  
कर दी, जो छोटे ने तुरन्त बाहर निकाल दी थी ।

'हाँ' श्रीमती सिप्यागिन ने कहना जारी रखा 'बोरिस ग्रान्डीविच  
तो कभी-कभी मुझे भी शक्ति कर देते हैं । उनमें कुछ' कुछ प्रजानायक  
के से गुण हैं ।

'भीषण भाषणकर्ता है !' कालोमियेस्केव ने तीखेपन से बीच में  
बात काटी । 'आपके पक्ष के पास भाषण का गुण है, जैसा और किसी  
के पास नहीं है, वह सफलता प्राप्ति के भादी हो गए हैं, क्योंकि  
वे एक अच्छे वक्ता हैं' और साथ ही उनमें प्रसिद्धि प्राप्त करने के  
प्रति रुचि भी है । क्यों ही न ठीक बात ?'

श्रीमती सिन्ध्यामिनि ने मरिघाना की ओर देखा ।

'मैंने तो इस बात पर ध्यान नहीं दिया' उसने दार्शनिक शैली के बाद उत्तर दिया ।

'हाँ !' कामामियेस्वेव ने लोचो-लोचो से स्वर में कहा, 'उनकी जरा उपेक्षा की गई है ।

श्रीमती सिन्ध्यामिनि ने फिर मरिघाना की एक धर्मपूर्ण दृष्टि से देखा ।

कामामियेस्वेव लोच निपोरना हुआ हुआ मानों कह रहा हो, 'मैं सब समझता हूँ ।

'मरिघाना विवेक्येवना', उसने एकाएक अनावश्यक रूप से तेज आवाज में कहा, तुम्हारा 'क्या विचार है ।

मरिघाना पिछड़े की धार से घूमी ।

'क्या इसमें भी आपको निजबस्ती है ?

'क्या नहीं बल्कि इसमें तो मुझे बहुत दिलचस्पी है ।'

'क्या उपेक्षा गैर कानूनी नहीं करेंगे ।

'मैं शून्यवादियों का स्वयं के धारे में साधना भी गैर कानूनी करूँगा । तन्निद पान्द्रिया के निष्ठात शीर केम रेक में, मैं स्वयं सृष्टियों की स्थापना करूँगा ।

'सब धर्म ? और, मैंने तो अभी कुछ नहीं सोचा कि मैं इस रूप क्या करूँगी । पिछले रूप सब कुछ ऐसा गड़बड़ा गया कि शीर फिर गरमियों में सृज भी तो नहीं होत ।'

मरिघाना जैसे-जैसे बात करता आ रही थी, उसका रंग गहरा होता जा रहा था, माना बात करने में उस पर जोर पड़ रहा था, जैसे वह प्रवर्द्धना बात कर रही है । उनमें ध्यात्ममजगता का भाव उत्पन्न हो रहा था ।

'पूरी सैवागे नहीं है आपद तुम्हारी ।' श्रीमती सिन्ध्यामिनि ने ध्यान प पूछा ।

लेकिन वहाँ तक चरचा चलाने का प्रश्न है बिल्कुल नहीं !'—  
उसने अपने होंठों पर उँगली रखी—'और वह भी मिश्रित रूप में—  
उस पर रोक लगा दूँगा—बिना किसी शर्त के ?'

श्रीमती सिप्यागिन हँस दीं ।

'क्या आप इस प्रश्न पर विचार करने के लिए कोई कमीशन नियुक्त करायेंगे ?'

'क्यों नहीं ? क्या आप समझती हैं कि हम उन मिस्त्रमर्गों की तरह से इस प्रश्न पर विचार करेंगे जो अपनी नाक से घागे की बात तो सोच नहीं सकते और महान जीनियस बने फिरते हैं । हम बोरिस ग्रान्डीविच को अध्यक्ष बनाएँगे ।'

श्रीमती सिप्यागिन और भी जोर से हँसी ।

'भरा होशियार रहना, बोरिस ग्रान्डीविच कभी-कभी ऐसे प्रचीव प्रजानायक मुर्दा कबूतर से हो जाते हैं कि—'

'मुर्दा मुर्दा मुर्दा' छोटे ने रट लगाई ।

वालेन्तिना मिखालोवना ने उसकी ओर अपना स्मास हिसाया ।

बुद्धिमान ब्यक्तियों की बातचीत में वाधा मत डालो ! 'मरिघाना उसे चुप करो ।'

मरिघाना ने पिअड़े की ओर घूम कर छोटे की चौंच सहलानी शुरू कर दी जो छोटे ने सुरस्य बाहर निकाल दी थी ।

'हाँ' श्रीमती सिप्यागिन ने कहना जारी रखा, 'बोरिस ग्रान्डीविच तो कभी-कभी मुझे भी चकित कर देते हैं । उनमें कुछ' कुछ प्रजानायक के से गुण हैं ।

'भीषण भाषणकर्ता है । कामोमियेस्केव ने तीखेपन से बीच में वात काटी । 'आपके पति के पास भाषण का गुण है, जैसा और किसी के पास नहीं है, वह सफलता प्राप्ति के भावी हो गए हैं, क्योंकि वे एक अच्छे बच्चा हैं और साथ ही उनमें प्रसिद्धि प्राप्त करने के प्रति रस भी है । क्यों है न ठीक बात ?'

श्रीमती सिप्यागिन ने मरिमाना की ओर देखा ।

'मैंने तो इस बात पर ध्यान नहीं दिया' उसने दारिद्र्य मौन के याद उत्तर दिया ।

'हाँ !' कासोमियेस्वेव ने खोदे-खोदे में स्वर में कहा , 'उनकी जरा उपेक्षा की गई है ।

श्रीमती सिप्यागिन ने फिर मरिमाना को एक अर्धपूर्ण दृष्टि से देखा ।

कासोमियेस्वेव खोम निपोरता हुआ हँसा मानों कह रहा हो, 'मैं सब समझता हूँ ।

'मरिमाना विकेन्सेवना', उसने एकाएक अनावश्यक रूप से तेज आवाज में कहा तुम्हारा 'क्या विचार है ?

मरिमाना पिजड़े की ओर से घूमी ।

क्या इसमें भी आपकी दिलचस्पी है ।

'क्या नहीं बल्कि इसमें तो मुझे बहुत नितचस्पी है ।'

'क्या उमे आप गैर कानूनी नहीं करेंगे ?'

'मैं धून्यवादियों का खूब ब वारे में साबना भी गैर कानूनी कर दू या । सक्ति पाठिया ब निश्चय और वेन रेग में, मैं स्वयं खूनों की स्थापना करूँगा ।

'सब, अभी ? तैर, मैंने तो अभी कुछ नहीं सोचा कि मैं इस रूप क्या करूँगी । पिछले यप सब कुछ ऐसा गड़बड़ा गया कि 'और फिर गर्मिया में खूब भी ता नहीं होत ।

मरिमाना जैसे-जैसे बात करती जा रहीं थी, उसका रंग गहरा होता जा रहा था माना बात करने में उस पर जोर पड़ रहा था, जैसे वह अबर्दस्ती बात कर रही हो । उसमें अल्पमत्रगता का भाव उत्पन्न हो रहा था ।

'पूरी तैपारी नहीं है आप तुम्हारी ? श्रीमती सिप्यागिन ने व्यंग से पूछा ।



‘शायद नहीं।

‘क्या ?’ कालोमियेस्सेव ने आश्चर्य प्रगट करते हुए कहा। ‘मैं यह क्या सुन रहा हूँ ? किसानों के छोकरे-छोकरियों को भ्रष्टाचार के लिए भी तैयारी की आवश्यकता ?’

लेकिन उसी समय कोल्या चिल्लाता हुआ ड्राइंग रूम में भागा भागा आया, ‘ममी ! पापा धा रहे हैं !’ और उसके पोछे-पीछे अपने भारी मरकम पैरों पर लुबकती सी सफेद वालों वाली, टोपी पहिने और घास छोड़े एक महिला भी कमरे में दाखिल हुई और उसने भी बताया कि प्यारा बोरिस सीधा यहीं धा रहा है। यह स्त्री त्रिप्यामिन की भूमा थी अपना जहारोवना। ड्राइंग रूम बैठे सभी लोग एक तरह से अपनी-अपनी जगहों से उछल से पड़े और पौरी की ओर लपके और वहाँ से सीढ़ियों पर होते हुए नीचे मुख्य द्वार पर पहुँच गए। सड़क से प्रवेश द्वार तक तराशे हुए देवदार के पेड़ों की बहार लगी थी। सामने से एक बग्गी दौड़ी चली धा रही थी। कोल्या अपना रुमा ल हिलाते हुए एक तेज आवाज में चीखा ‘पापा ?’ कोववान ने तेजी के साथ में भरे घोड़ों की रास ओर से खींची। सार्जिस उछल कर नीचे कूटा और लपक कर उसने बग्गी का दरवाजा खोला। अपने होठों की ओर सम्पूर्ण मुख पर एक सौमन्यता पूर्ण मुस्कान लिए हुए, अपने गाउन को असमत्नी से समेटते हुए बोरिस आन्नीबिच बग्गी से नीचे उतरा। तेजी से धागे बढ़ कर और शालीनता के साथ बालेन्तिना मिस्त्राकोवना ने उसकी गर्दन में हाथ बाल दिए और तीन वार उसे धूमा। कोल्या अपने पिता के पीछे उससे निपका खड़ा उसके कोट के पल्लु को खींच रहा था लेकिन उसने अपने असुविधाजनक मयंकर स्काच यात्रा-टोप को उतारते हुए, पहिले अपना जहारोवना को धूमा। तब उसने मरिआमा और कालोमियेस्सेव को प्रतिमस्कार किया। वह सबके साथ बाहिरी द्वार पर आगया था—(उसने कालोमियेस्सेव से धंध भी ढंग से खूब ओर के साथ भटका देते हुए हाथ मिनाया जैसे बन्दे की रुम्बी को खींच रहा

हो) —धीर तब अपने पुत्र को उसने अपनी याहों में भर कर गोद में उठा लिया ।

जिस समय वह सब हो रहा था मेघानाथ अपना भी वरुणा की रूप में चोरी-चोरी बग्यी में से उतर कर उसके प्रागे खाल पहिए क पास दाड़ा हो गया । वह अपने टोप क नीचे से प्राखें मुनाए ही ऊपर का देखने का प्रयास कर रहा था । वालन्तिना मिसालोवना जब अपने पति के गले संमिल रही थी तभी अपने पति के बन्धा पर होकर उसने इन नए धागनुक पर एक पैनी दृष्टि भी डाली थी । सिप्यागिन ने उसे पहिने ही बताया दिया था कि उक्त माय कोम्पा क लिए एक शिक्षक आएगा ।

सभी लोग सिप्यागिन का स्वागत करते और उससे हाथ मिलाते हुए सीढ़िया पर प्रागे बढ़े जिन पर दोनों और फन्तार बांधे अपने स्वामी का स्वागत—सम्मान करने के लिए घर क नीकर नीकरानिया खड़े थे । उन्होंने उसक हाथ चूम—वह गुसामाना पद्धति काफी दिन पहिले ही समाप्त हागई थी—धस सम्मान प्रदर्शन के लिए मुन जाय और सिप्यागिन प्राग आहा और सिर के गकिस से ही प्रतिउत्तर दे देता ।

मेघानाथ भी पीड़ी सीढ़िया पर धीर धीरे चढ़ रहा था । पीरी में पहुँच कर सिप्यागिन ने उसका अपनी पत्नी अन्नाहारोवना और मरिधाना स परिषय कराया और कोम्पा स कहा 'देगो यह तुम्हारे मास्टर साहब हैं । उनको प्राशा मानना । इन्हें अपना हाथ दो । बाल्या ने भी संकाष क साथ मेघानाथ की और अपना हाथ बढ़ाया और उसकी ओर देता, लेकिन उसमें प्रगट रूप से कोई विरोधता और आक्रपण भी बात न पानर वह फिर अपने पापा' स विपक गया । मेघानाथ विपेटर को भी ही सजपकाहट नरी पवराहट अनुभव कर रहा था । वह एक पुत्रना और पूरुड़ सन्वा कोट पहिने हुए था उसका बेहरा और हाथ रास्ते की पूस स नरे हुए थे बालेन्तिना मिसालोवना ने उसने सीजग्यता प्रगट करते हुए कुछ कहा, पर वह उसकी गडगड को

समझ नहीं पाया और भीन बना रहा। उसने बस इसका ध्यान दिया कि वह अपने पति की भार एक अजीब चमक और प्यार के साथ देख रही है और हरदम उसके बगल से ही सटी रह रही है। उसे काल्या का पटिया पड़ा और सुगन्धि से भरा हुआ सिर अच्छा नहीं लगा। कालो मियेस्सेव को देख कर उसने सोचा 'कैसा अजीब है यह अपने में ही विभोर और दंभी।' दूसरों की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। सिप्यागिन ने दो बार चारों ओर देखा मानो अपने घर के धैमव को देख रहा हो जिससे उसके गन्तमुच्छ्यों के बालों में आत्म गौरव और संतोष की अनुभूतियों से रोमांच हो आया। तब उसने तब और कड़कती आवाज में एक नीकर को आवाज दी। उसकी आवाज में यात्रा की यज्ञान के कोई चिन्ह नहीं थे : 'इवान ! आपको प्रतिविगृह में नेजापो और आपका टुक भी और नेजधानोव से कहा कि वह वहाँ जाकर हाथ-मुँह धो-धा कर कपड़े बदल कर आराम कर सकता है और भोजन ठीक पाँच बजे तैयार हो जायगा। नेजधानोव ने सिर झुकाकर आवेश स्वीकार किया और इवान के साथ, दूसरे मंजिस पर स्थित प्रतिविगृह में चला गया।

बाकी सब लोग ड्राइंग रूम में चल गए। स्वागत-खण्ड फिर एक बार बुहुराए गए। एक अर्घ्य-अर्धी नर्स भी अभिवादन के लिए आई। उसकी बुमर्गी का स्वागत कर सिप्यागिन ने उस अपना हाथ धूमने दिया और तब कालोमियेस्सेव से क्षमा याचना करता हुआ वह अपनी पत्नी के साथ अपने कमरे में चला गया।



## सात

जुस धडे घोर भारामदेह कमरे में से, जिसमें नेज्मानोब लेजाकर ठहराया गया था, बाग का दृश्य दिखाई पड़ता था। उसकी खिड़कियाँ खुली हुई थीं घोर धीमी धीमी हवा सफेद पर्दों का हिला रही थी वे हवा में पाल की तरह फूल रहे थे, फूलते घोर फिर मिकुड़ जाने। मुनहले प्रकाश की किरणें कमरे की छत पर धीरे-धीरे रेंग रही थीं सारा कमरा भीनी, नम, सुगन्धित बसन्ती हवा से भरा हुआ था। नेज्मानोब ने नीकर को छुट्टी देदी, सामान गोला हाथ-मुँह धोया और बपड़े बदले। यात्रा सं बह बक कर पूरा होगया था। निरन्तर दो दिन तक एक अमनबी आदमी सं साथ, अनेक विषयों पर दिदृश्य बातों ने एक अजीब तनाव, कुछ अजीब बट्ट न उन पूरी तरह पकान ही कह सकते हैं घोर न खोम ही, बल्कि कुछ अजीब से बट्टता पूरा तनाव न उससे मन प्राण और शरीर की गिराओं को अभिभूत कर रग्या था। वह अपने हृदय की इस अवस्था से संघर्ष कर रहा था फिर भी उसका दिम उसमें डूबा ना जा रहा था।

समय का ऐतान किसी बन्दी के द्वारा नहीं, बल्कि चीनी बन्दे की देर तक होने वाली गुँज से हुआ। सभी लोग भोजन घर में जमा हो गए थे। सिप्यागिन ने पुन एक बार उसका स्वागत किया और अपना जहारोवन और कोल्या के बीच में उसे बैठने को स्थान दिया। अपना जहारोवन सिप्यागिन के स्वगवासी पिता की वृद्ध बहन थी। जैसे कपड़ों में रखी कपूर की गोमियों से कपड़ों में सुगन्ध घाने समझी है वैसी ही सुगन्ध उसमें घा रही थी। उसके मुख पर निराशा पूर्ण प्रौत्सुक्य का भाव था। परिवार में उसकी स्थिति कोल्या की धाय की थी, जब नेज्वानोव को उसके और कोल्या के बीच में बैठाया गया तो उसके झुर्रीदार चेहरे ने अप्रसन्नता का भाव प्रगट किया। कोल्या अपने इस नए पड़ासी को कनक्षियों से देख रहा था। बुद्धिमान लड़के ने तुरन्त यह भाँप लिया था कि उसका यह मास्टर संकोच और असुविधा का अनुभव कर रहा है। वह सारे समय घाँसे नोचे किए ही बैठा रहा और उसने न क बराबर ही भोजन किया। यह सब देखकर कोल्या को प्रसन्नता हुई। उस समय तक उसे भय था कि उसका यह मास्टर कहीं कठोर और तेज मिजाज का न हो। वासेन्तिना मिखासोवना ने भी उसकी धार देखा।

‘वह एक विद्यार्थी जैसा दीखता है, वह सोच रही थी और इसने अभी बुनियाँ का ज्यादा देखा भी नहीं है। लेकिन इसका चेहरा आकर्षक है और याम सुन्दर और मौलिक हैं, ठीक उस धर्मव्रत की तरह जिस पुराने इतालवी कसाकार लाल घासों घास के रूप में प्रकट करते हैं, और उसके हाथ साफ हैं। भोजन की मेज पर बैठे सभी लोगों ने नेज्वानोव की ओर ऐसे देखा था जैसे सभी को उस पर दया घा रही हो और इस समय कोई उसे छोड़ने के पक्ष में न था। वह उन सब के भावों को समझ रहा था और प्रसन्न था और साथ ही साथ किसी कारण से झुम्ला भी रहा था। भोजन के समय बात चीत का सूत्र सभासन कासोमिब्रेसेव और सिप्यागिन कर रहे थे। उनकी बात चीत के विषय थे—प्रांतीय काठन्सिल गर्बजर, मार्ग कर और उनसे मुक्ति

प्राप्त करने के तरीके बीटर्स वर्ग और मास्को के आपसी मित्र और परिचित, मिस्टर वाटकोव का खुल जो दोठे दिनों से ही प्रभावशाली हाथसा था, मजदूर मिसने की कठिनाई, जुमनि और पदुओं द्वारा किए गए नुकसान बिस्माक और १८६६ का युद्ध, मैपोलियन एपीय जिस कालोमियेस्लेव एक महान पुरुष मानता था। कालोमियेस्लेव न अत्यन्त असीतो मुझी बिचार प्रगट किए और भले ही मजाक में ही सही—उसने अपने एक मित्र के अम दिवस ही की मिसाल देते हुए दूहराया—‘मैं तो सिर्फ उन सिद्धान्ता के नाम पर ही पीता हूँ जिन्हें मैं मानता हूँ और वह हैं—हटर और बेंन।

वायन्तिना मिस्लावावना की त्थारिया में बस आ गया और उसने कहा कि यह निहायत बकार और बेहूदी बात है। मिप्यागिन न इसके विपरीत अत्यन्त उदार विचार प्रगट किए अत्यन्त दान्त और मजे मजे से उसने कालामियस्लेव का बिराब किया और चाड़ा उमकी बाता था मजान उड़ात हुए, ताना भी मारा।

‘प्रिय सिम्पान पैत्राविष। मुक्ति के बिषय में तुम्हारे विचार उसने कहा, ‘मुझे हमारे अत्यन्त सम्मानित एवं अनुपम मित्र इवानिच स्वरिदिनाव के द्वारा १८६० में मिले एक सख की याद दिनावा है, जिसे पीटस बग के प्रत्येक मसान के इर्दगन्म में उसने मुनावा था। उसमें एक बडा ही उल्लेखनीय वाक्य था कि जैसे आजार किसान हाथ में मजान सपर निर्भय रूप से नारे देन में छा जायगा। तुमने तो देना होगा उस, मपुर-स्नेही स्वभाव, कृप गाल, गाल घात, घागे को निबासा पिही सा मुँह पा उसका। ‘म-म-मजान ! म-म-मजान ! वह हाथ में मजान सपर जायगा ! अथ मुक्ति एक प्राप्त सरन है पर मजालपारी किसान नहीं हैं !

कालामियेस्लेव ने उत्तर दिया ‘स्वरिदिनाव के कथन में सिर्फ इतनी ही सा भूल थी कि किसान नहीं यरन् दूसरे लोग मजाल सपर बल रह हैं।

नेज्जानोव ने अब तक मरिघाना की घोर विशेष ध्यान नहीं दिया था पर अब उसने उसकी घोर देखा—वह उससे दूर कोने में बैठी थी—अकस्मात् दोनों की आँखें धार हुई और तुरन्त ही उसके मन में यह भाव उदबुद्ध हुआ कि वह और वह लड़की एक ही विचारों और विश्वासों के हमराही हैं। जब सिप्पागिन ने उसका उससे परिचय कराया था तो उसने नेज्जानोव को जरा भी प्रभावित नहीं किया था। इस समय क्यों उसकी आँखों ने उसके मन को पकड़ लिया? उसने अपने से ही प्रश्न किया कि क्या ऐसी बातों को चुपचाप बैठे सुनते रहना और उनका विरोध न करना और अपने मौन से एक प्रकार से उनके प्रति सहमति प्रगट करना क्षम और लज्जा की बात नहीं है? नेज्जानोव ने दूसरी बार मरिघाना की घोर देखा और उसने अपने प्रश्न का उत्तर उसकी आँखा में पढ़ लिया बोझ इन्तजार करा उठावन ने हो, वे कहती सी लग रही थीं 'अभी समय नहीं है अभी कोई फायदा न होगा' 'बाद में समय ही समय है।'

वह उसे समझती है यह अनुसूति उसके लिए बड़ी आनन्ददायक थी। वह फिर बात पीठ सुनने लगा। थालेन्तिना मिसालोबना ने अपने पति का स्थान ले लिया था तथा और भी अधिक आज्ञादी के साथ बोल रही थी उससे भी अधिक उग्रता के साथ। उसे विश्वास ही नहीं हो पाता था 'सचमुच विश्वास ही नहीं हो पाता था' कि कैसे एक शिक्षित व्यक्ति जो अभी जवान है, पुराने विचारों की परम्परा का विश्वासी हो सकता है।

'मेरा विश्वास है, उसने कहा, 'कि आप सिर्फ विरोध के लिए ही विरोध कर रहे हैं। और रही आपकी बात, असेक्सी विमिश्रण,' वह मुस्कुराती हुई नेज्जानोव की घोर घूमी (उसे यह जानकर मन ही मन बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उसका और उसके पिता का भी नाम जानती है), 'मैं जानती हूँ कि आप सिम्पान पैत्रीविच के विचारों के

मागीदार नहीं हैं, थोरिस ने, माया में जा आपकी उनसे यारें हुई थीं, वह मुझे बतार्ही थीं ।'

नेग्वानोव लजा गया और अपनी सस्ती पर और भी झुक गया और कुछ अस्पष्ट फुसफुसाते हुए उसने कहा वह इतना शर्मिला नहीं था, जिसना ऐसे घबे सोगा के बीच में बैठकर बात करने का अनम्यस्त्व था । थीमती सिप्यागिन अब भी उस पर हंस रही थी, उसका प्रति भी उसका साथ दे रहा था । लेकिन कालोमियेस्सेव ने जानबूझ कर अपना चक्षु सगा रखा था और उस विचारों की ओर घूर रहा था, जो उसके विचारों से सहमत न होने का साहस कर रहा था । मकिन इस तरह से नेग्वानोव को उत्तमन में डालना आसान न था, बल्कि इसके विपरीत उसने तुरन्त अपने वा सम्हाल लिया और उमटकर कैम्बेनेविस अफसर की ओर घूरा, और उसी आश्चर्यकता क साथ, जैसे उसने मरिभाना में एक साथी का अनुभव किया था, उसी तरह कालोमियेस्सेव में एक शत्रु का अनुभव किया ! और कालोमियेस्सेव भी इसके प्रति जागृतक था, उसने चक्षु उतार दिया और दूसरी ओर देखकर हंसने का प्रयास करने लगा लेकिन व्यर्थ सिर्फ अन्ना जहारोवना ने, जो मन ही मन उसकी भक्त थी, उसका पक्ष लिया और अपने अर्वाचित पड़ासी, जो बोल्या को उससे अलग कर रहा था, क प्रति और भी क्रुपित हो उठी ।

पोदी देर में ही माजन समाप्त हा गया, सब लोग काफा पीने क लिए यरामदे में उठ गए । सिप्यागिन और कालोमियेस्सेव ने सिगार जलाए । सिप्यागिन ने नेग्वानोव को भी एक चुस्ट पद्य किया, पर उसने लिया नहीं ।

'मोह ! मैं वा भूल हो गया था कि तुम सिर्फ अपनी ही सिगरेट पीठ हो । सिप्यागिन ने कहा ।

'अनीच बात है, कालोमियेस्सेव ने अपने मुह ही मुह म पुस फुलाया ।



नेग्धानोव ने कहा 'मैं सिगरेट और चुरट के अन्तर को खूब जानता हूँ, लेकिन मैं किसी का आभार नहीं लेना चाहता', इतना कह उसने अपने को राक मिया, लेकिन अन्तिम उदंड बात तो उसने अपने शत्रु की बात के जवाब में कही थी।

'मरिभाना ! श्रीमती सिप्यागिन ने एकाएक जोर से कहा तुम्हें एक अजनबी के सामने लिहाज में पड़न की कोई जरूरत नहीं है तुम अपनी सिगरेट पी सकती हो और नेग्धानोव की ओर घूम कर उसने कहा 'मैंने सुना है, तुम लोगों में सभी अबानु औरतें सिगरेट पीती हैं ?'

'जी हाँ', नेग्धानोव ने ह्सेपम से उत्तर दिया। यह पहला शब्द था, जो उसने श्रीमती सिप्यागिन से बोला था।

'मैं तो नहीं पीती' कहते समय उसकी मसमली आँसु में प्रकटा थी। 'म पिच्छड़ी हुई हूँ।

मरिभाना ने बड़े भाराम भाराम से जैसे मानों अपनी मामी को चिढ़ा रखी हो, सिगरेट और माचिस निकाली और जसाकर पीने लगी। नेग्धानोव भी मरिभाना से सिगरेट खर पीने लगा।

शाम बड़ी सुन्दर थी। पोल्या और असा अहारोवना बाग में खने गए थे। बाकी सब लोग एक घंटे तक चरान्दे में घेठे हवा का आनन्द लत रहे। बाग की कान्द फल फलित हो गया था। कामा मियेट्खे ने साहित्य की कट्टु आलोचना की। सिप्यागिन ने इस विषय पर भी उगारता प्रगट की और साहित्य की स्वतन्त्रता का पक्ष लिया उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला और सातोवरिया का भी उल्लेख किया और बताया कि उठे सम्राट असेक्रेटर पाब्लोविच ने सन्त एन्डी का तमगा दिया था। नेग्धानोव ने बहुत में भाग नहीं लिया। श्रीमती सिप्यागिन ने उसकी ओर दम टरु देखा, जिससे मालूम होता था कि वह उसकी चुप्पी को पसन्द करती है और साथ ही मानो उसकी चुप्पी पर आश्चर्य भी कर रही हो।

समी भोग उठकर चाय पीने के लिए ड्राइंग रूम में गए ।

'हमारी जड़ी बुरी घादत है' एलेक्सी दिमित्रिच, सिप्यागिन ने नग्भानोव से कहा हम हर राज शाम को ठान खेलते हैं और यह भी यह खेल जो घजित है । इसलिए मैं तुम्हें अपने साथ खलने का न्यासा नहीं दूंगा ताकन मरिमाना जरा हमें पिमानों सुनाने की कृपा करोगी । मैं समझता हूँ तुम्हें संगीत बहुत प्रिय भी है ।' और उत्तर की प्रतीक्षा न करके उन्होंने ताघ उठा लिए । मरिमाना पिमानो पर बैठ गई । यह कृच्छ्र साधारण रूप में मेन्डलेसन के कुछ 'घाघ्दहीन गीत' की धुन निगालती रही । दूर बैठा कासामियत्सेव एसा हँसा मानों गरम दूध से जल गया हा, नपिन यह हँसी धिनधता से युक्त थी । नग्भानोव को भी संगीत से कोई प्रेम नहीं था , यद्यपि सिप्यागिन ने ऐसी ही भाषा प्रगट की थी ।

उपर सिप्यागिन उमर्या। पत्नी कासामियत्सेव और भ्रमजहारोयना ताघ खेसन बैठ गए । काल्या रात्री की विदाई के लिए नमस्कार करन घावा या और अपने माता-पिता से आशोर्वादि और एक म्नास दूध, चाय नहीं प्राप्त कर यह सोने पसा गया । उचक जाते जाते पीछे से उसने पिता न चिह्नाकर कहा कि फल से उसकी पढ़ाई गुरू हा जायगी । सनी उमरी तमर नग्भानाव पर गई, जा समरे क धीध में निरदृश्य एम एनयम क पल्ल पलटता हुमा भूम रहा था । सिप्यागिन ने उससे कहा 'पर्या अय में एट हो पाकर प्राराम करो यात्रा मे निदचय ही थक गए होंगे । स्वयंत्रता इस घर का प्रधान सिद्धांत है ।'

नग्भानाव सधसे मनमद्वार कर पसा गया, दरवाजे में यह मरिमाना से टकरा गया और फिर उचनी धाँखा में न्दिक्त हुए । उसने फिर अनुभव किना कि यह उसमें एर साथी या सवता है, टकराने से वह मुस्कराई नहीं, वरन् उमरी नौहा में पाइ से बल जरूर पड़ गए थे ।

उसने एपा पमर का ताजो हवा मे भरा हुमा पाया, सारे दिन ताइकिया गुमां रखा थीं । उसकी सिङ्गरी क ठीक सामने बाग में बुन

बुल बहक रही थी वृक्षों के गोसाकार शिखरों पर नैशगगन में ऊष्म और धुँधली-सी चमक थी, चाँद धागे तैरने को उद्यत लग रहा था नेज्घानोव ने बत्ती जलाई, बाग स भूरे पंतिगा का झुठ उड़कर प्रकाश के चारों ओर मधराने लगा, हवा का भ्रंशका उन्हें पीछे को ठकेपता और मोमबत्ती की नीली-मीनी लौ में कम्पन उत्पन्न कर देता ।

‘अजीब है !’ अपने विस्तर पर सेटते-सेटते उसने सोचा ‘यह लोग भले आदमी लगते हैं, उदार, मानवीय लेकिन मन में मे रूपाता का अनुभव करता है घुटा-घुटा-सा । और, सबेरे तक सब ठीक ही जायगा माबुक होना अर्थ है ।

लेकिन उसी समय बाग में एक चौकीदार ने आर-ओर से लटलट की और उसकी बुलन्द लम्बी सतत् पुकार सुनाई पड़ी ?

‘जा आ गये ए रहना आ आ ।’

‘स’ अ ‘ब’ अ... ठीक ई क है ।’ एक दूसरी बुलन्द आवाज ने प्रति गूँब की ।

‘ओह सुदा रहम कर !—यह ही लगता है, जैसे हम बेस में हो !’



## प्राठ

नेग्धानोव सड़के ही उठ बैठा और बिना नीकर की प्रतीक्षा किए ही कपड़े बदल कर बाग में निकल गया। वह बाग काफी बड़ा और सुन्दर था और वठे बरीने से घना बुना कर उसे रखा गया था। मजदूर बाग की रोमों को ठीक कर रहे थे हरी झाड़ियाँ के फुरमुटाँ में से किन्तान आसिराभा के त्माल भाँक रहे थे उनका हाथों में स्यारियों को घोरम करने की पटेनी थी। नेग्धानोव भील की घोर पसा गया। यद्यपि प्रातः काम का बुहासा छँट चुका था यकिन बुहासे का घाड़ा सा पुषसरा किनारे की निर्बन झाड़ियों से घटका हुआ था। सूरज अभी आगमान में ऊँचा नहीं उठा था उसकी प्रसंगिक घामा से भील की रोगमी विम्बुम गतहू रगी हुई थी। घाट के पाम बुद्ध यदई अपने काम में व्यस्त थे, वहाँ एक नई साजी रोगन की हुई नाव पानी में लड़ी, पानी के सपडा स इपर उपर भूय रही थी घोर पानी में भवक पैदा कर रही थी। जब सब आदमियों की आबज सुनाई पट जाती थी।

कुल घाठ मील पर भी, भ्रामा । एक पित्रमुष्मा भी भ्रामा उनमें से एक जमीरदार का वर्णन दो प्रसिद्ध पश्चिमों में लमन्तोय ने बड़ा उपयुक्त किया है

कानों तक का क्रैबेट<sup>१</sup>, और एबी तक का कोट,  
सूँछे और किबियाहट और भ्रालें गंदली, मोटी ।

निराश-उदास पोपल मुख बाला, पर बड़े ठाट-बाट के कपड़े पहिने एक और पड़ोसी भी भ्रामा और एक नीम-हकीम डाक्टर भी भ्रामा जो बड़े-बड़े विद्वत्तापूर्ण शब्दों के प्रयोग से अपना ज्ञान बधारा करता था, मिसाल के लिए वह कहता कि वह पुस्किन की अपेक्षा कुकोल्निक को पसन्द करता है क्योंकि उसमें 'जीवन दायी उत्तव अधिक है' । ये सब ताश खेसने बैठ गए । नेज्धानोय अपने कमरे में चला गया और भाधी रात तक लिखता पढ़ता रहा ।

भगसा दिन नौ मई, कोल्मा का नामकरण-संस्कार दिवस था । तीन सुसी बच्चियों में जिनके फुट बोर्ड पर साईस लड़े थे बैठ कर सारा परिवार चर्च को गया हासार्कि यह से घर से दो फलार्ग से अधिक दूर नहीं था । हर काम बड़े शान और रीब-दाय के साथ किया गया । सिप्यापिन ने अपने तमगे पहन रखे थे बालेन्तिना मिक्तालोयना ने पीले यकाइन के रंग का आकर्षक पश्चिम गाउन पहन रखा था, और चर्च में उसने प्रार्थना के समय रेसमी साल जिल्द की छोटी प्रार्थना पुस्तक से प्रार्थना की । इस छोटी सी पुस्तक ने अनेक लड़कों को सक्ते में डाल दिया था जिनमें से एक तो अपने पड़ोसी से पूछे बिना नहीं रह सका क्या जादूगरनी का जादू है, ईस्वर उस पर रहम करे वह उसका उपयोग कर रही है, पर क्या ओह ! चर्च में बसी हुई फूलों के सुगन्ध के साथ नवायन्तुक किसानों के गन्ध की तीब्र गंध छूटा की गन्ध से मिलकर एक विशिष्ट प्रकार की गन्ध पैदा कर रही

<sup>१</sup> बो की तरह की एक चीज जो घने में जायी जाती है ।

रही थी। और इन सबके ऊपर घूप की मीठी गंध दूसरी गंधों को दबा रही थी। पाण्डी और गाने वाले चित्रित करने वाले कुछ अन्य कारणों के साथ गा रहे थे और कुछ पैक्टरी के मजदूर भी अपनी बेसुरी लय में उनका साथ दे रहे थे। एक क्षण ऐसा भी आया जब सभी उपस्थित लोगों ने कुछ त्रास का सा अनुभव किया। सबसे ऊँची आवाज का गाने के एक मजदूर कसीमा की थी, जो दायरोग के राम्ने पर तेजी से बढ़ता जा रहा था। वह झकझका गाता रहा। यह सब यज्ञ प्रज्वलित सा लग रहा था, लेकिन उनके बिना तो सारा बोरस धीमे ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता। बहरहाल जैसे-तैसे समारोह समाप्त हुआ। अत्यन्त आन्तरिकीय रीय दाव के व्यक्ति फादर सिप्रियान ने, पुस्तक से अत्यन्त ही प्रभावशाली लेख पढ़ा। दुर्भाग्य से पवित्रारमा पादरी ने किसी विद्वान असीरियन राजा का नाम लेना आवश्यक समझा, जिसके नाम के उच्चारण में उन्हें यज्ञ बष्ट हुआ। हालांकि यह कुछ हद तक अपनी विद्वत्ता प्रगट करने में सफल तो होगया था। नेग्धानोव ने आ बहुत दिना से चर्च नहीं गया था, अपने को एक बने में विमान औरता के बीच दिया गया था, वे आपस में लगातार इतर से उधर होने परस्पर अभिवादन के लिए झुटने और अपने घबचा थी माफ पोछते समय कभी-कभी उसकी ओर देव सर्ती, लेकिन गया शोट पहिने अपने माथे पर दांच के मनका की सड़ी पहिने और कप्ये में लटकने वाले कड़े हुए पीसैदार फलरुर्घा में बच्चा को लिए विमान गानाएँ जकर इम नए प्रार्थना करने साथ को उसकी ओर घूम घूम कर देत रही थी और नेग्धानोव भी उनकी ओर देव रहा था और नाता प्रकार के पिचार उमर्त मन में उठ रहे थे।

प्रार्थना के बाद—आ काफी देर तक चलती रही—क्योंकि घमरारकर्ता संघ विद्वानों की पूजा की रस्म, जैसा सब जानत है, धार्मिकों के यज्ञों में सपने सम्पी रस्म है,—मिथ्यागिन के निमन्त्रण पर सभी पादरी उमरे घर आए। घमर के अनुष्ठान कुछ और रस्मे पूरी करने के बाद—कमरों में पवित्र जल छिड़कने के भी बाद, सब को

कुल घाठ मील पर भी, आया। एक विचलुआ भी आया, उनमें से एक जगीरदार का वर्णन दो प्रसिद्ध पत्रियों में लर्मन्तोव ने बड़ा उपयुक्त किया है

कानों तक का त्रैयेट<sup>१</sup>, और एड़ी तक का कोट,  
सूँछे और किकियाहट और घाँसें गंदली, मोटी।

निराश-उदास पोपसे मुल्ला वाला पर बड़े ठाट-बाट के कपड़े पहिने एक और पड़ोसी भी आया, और एक मीम-हकीम डाक्टर भी आया जो बड़े-बड़े बिदस्तापूर्ण शब्दों के प्रयोग से अपना ज्ञान बखारा करता था, मिसाल के लिए वह कहता कि वह पुस्कन की अपेक्षा क्रुकोलिनिक को पसन्द करता है, क्योंकि उसमें जीवन दायी तत्व अधिक हैं। वे सब ताश खेलने बैठ गए। नेज्धानोय अपने कमरे में बसा गया और प्राची रात तक निश्चिन्ता पड़ता रहा।

अगला दिन नौ मई, कोल्या का मामकरण-संस्कार दिवस था। तीन खुसी बन्धियों में, जिनके फुट बोर्ड पर साईस छड़े थे बैठ कर सारा परिवार चर्च को गया हासार्कि यह से घर से दो फर्नांग से अधिक दूर नहीं था। हर काम बड़े शान और रौब-दाव के साथ किया गया। सिप्यागिन ने अपने तमगे पहन रखे थे, वासेन्तिना मिखासोवना ने पीले यकाइन के रंग का आकपक पश्मिन गाउन पहन रखा था और चर्च में उसने प्रार्थना के समय रेशमी साफ जिल् की छोटी प्रार्थना पुस्तक से प्रार्थना की। इस छोटी सी पुस्तक ने अनेक बड़ों को सकने में डाल दिया था जिनमें से एक तो अपने पड़ोसी से पूछे बिना नहीं रह सका क्या जावूगरमी का जावू है, ईश्वर उस पर रहम करे वह उसका उपयोग कर रही है, पर क्या मोह? चन्द में बसी हुई फूलों के सुगन्ध के साथ मवागन्तुक किसानों के गन्ध भी तीव्र गंध जूतों की गन्ध से मिसकर एक विचित्र प्रकार की गन्ध पैदा कर रही

<sup>१</sup> बो की तरह की एक चीज जो गले में बांधी जाती है।

रही थी। और इन सबके ऊपर घूम की मीठी गंध दूसरी गंधों  
 को ढका रखी थी। पादरी और गाने वाले खिठ करने वाले गूढ  
 प्रणत करण के मास गा रहे थे और कुछ फैक्टरी के मजदूर भी  
 अपनी बेसुरी सय में उनका नाय दे रहे थे। एक क्षण ऐसा भी आया  
 जब सभी उपस्थित लोगों ने कुछ नास का सा अनुभव किया।  
 मरम ऊँची आवाज कारगाने के एक मजदूर कसीमा की थी जो दाय  
 रोग के रास्ते पर सजी से बढ़ता जा रहा था। यह प्रकेला गाता रहा।  
 यह सब बड़ा प्रजीव सा लग रहा था, लेकिन उनके बिना तो सारा  
 प्रोग्रम शीघ्र ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता। ~ बहरहास जैसे-तैसे  
 समारोह समाप्त हुआ। अत्यन्त घादरलीम रीव दाव के व्यक्ति फादर  
 सिप्रियान न पुस्तक से अत्यन्त ही प्रभावशाली श्रेष्ठ पढ़ा। दुर्भाग्य  
 से पवित्रात्मा पादरी ने किसी बिद्वान असीरियन राजा का नाम सेना  
 आदित्यक समझा जिसके नाम के उच्चारण में उन्हें बड़ा बट हुआ।  
 हासों कि यह कुछ हद तक अपनी विद्वत्ता प्रगट करने में सफल था  
 होगया था। मेग्घानोय ने, जो बहुत दिना से चर्च नहीं गया था, अपने  
 को एक बौने में पिसान धौरठा के बीच छिपा रखा था वे आपस में  
 सगासार इनर से उपर होने, परस्पर अविवादन के लिए झुंझने और  
 अपने बच्चों की नाक पौछते समय कभी-कभी उसकी धोर देख लेतीं  
 लेकिन ममा मोट पहिने, अपने माये पर बाँव के मनकों की लड़ी पहिने  
 और कपड़े में लटकने बाव कड़े हुए पीतेशार फनरुघा में बच्चों  
 का लिए किसान बानाएँ जखर इन नए प्रार्थना करने बाव को उसकी  
 धोर घूम घूम कर देख रही थीं और मेग्घानोय भी उनकी आ-  
 दाय रहा था और नाना प्रकार के पिचार उसके मन में उठ रहे थे।

प्रामना के घात,—आ काफी देर तक चपली रही—क्योंकि  
 समरकारकता संत निकोनाई की पूजा की रम्म, जैसा सय जानत है  
 प्रार्योडोक्स बर्षों में सबसे मम्यी रम्म है,—विष्यागिन के निमन्त्रण प  
 सभी पादरी उनके घर आए। प्रथम के अनुष्ठान कुछ और रम्म पू-  
 करने के बाद—कमरा में पवित्र जल छिड़कने के भी बाद, सब



गानदार भोज किया गया। भोजन के बीच में आध्यात्मिक पर धका देने काग उपदम और वास पीत, जैसी धामसौर पर टेचे धदसरों पर होती ह चखती रहीं। पर क स्वामी और स्वामिा दोनों ने ही हासा कि ने उस समय कुछ नहीं जाते थे, बोड़ा जा लाया और पिया भी। सिध्पागिन ने समयोचित हँसी और धामोद वायक क्या सुनाई उसकी राखीली पोधाक और वेठरे न और कपा ने, ऐसा प्रभाव हासा कि पादरी सिप्रियान ने धामार और धादधर्म का भाव प्रगट किया और यह प्रगट करने क लिए कि ऐसे समय के उपयुक्त यह भी कुछ कह सकता है, पादरी सिप्रियान ने विद्यप क खिले भर क दौरे के समय जब उमन अगर के मठ में जिभे भर के पादरिया को जमा किया था विद्यप के साथ हुई धपनी बात सुनाई। 'यह बहुत मस्त थे हम सब क माय भी बहुत मस्त थे' पादर सिप्रियान ने धताया पहले तो उन्होंने हमसे हमारे धम दोषों के विषय में हमारी ध्ययस्था मादि क विषय में पूछा और तब उन्होंने हमारी परीक्षा लेनी शुरू की मेरी धोर धूम कर उन्होंने पूछा "सुन्हारे गिर्जाधर का ममपण दिवस कौन-सा है?" हमारे रक्षक का रूपान्तर पियस में उत्तर दिया। क्या तुम उस दिन का गीत जानते हो?" धाछा तो जरूर करता है। 'सुनाओ। मने सुरत्न गाना शुरू किया

हे हमारे ईसूमसोह  
जब हुआ तुन्हारा  
रूपान्तर पवत पर

'बन्द करो। यह रूपान्तर है क्या? और हमें उसे कैसे समझना चाहिए।' 'एक शब्द में मने कहा ईसा धपने पिप्या को धपना यश दिखाना चाहते थे। 'बहुत मुश्किल उन्होंने कहा, "सो, मरी मा" में यह सुति धपने गले में धारण करना। मैं उनसे धरणों पर गिर पड़ा। 'मेरे पूज्य में धापका धमयया देता है। तो उन्होंने मुझे क्लासी धापसा नहीं भेजा।

मुझे भी उनका परिचय प्राप्त होने का गौभाग्य प्राप्त है मिथ्यागिन ने गर्व से कहा । 'परन्तु योग्य पात्री हैं ।

'निःसन्देह प्रत्यक्ष योग्य हैं । पादरी मिथ्यागिन न दुर्गमया । यद्यपि वह अपने धर्म क्षेत्र के अधिकारिण्या पर अहङ्कृत न ज्योति विम्वाम करने की गलती करते हैं । " "

यासन्तिना मिथ्यागिनाना न माधी स्तम्भ प्रख्यापिका क रूप में मरिचाना का उन्मुख करण हुए विज्ञान स्तम्भ की पर्चा की । ( स्तम्भ की देखभाल उमी क निम्ने की ) जिगाधिकारी ने भी विम्वाम प्रदान देत्य जैसा था और उमने गणगत वान धोड़े की पत्नी हुई पूछ की याद जिगाते थे, अपनी सहर्मथ प्रकट की लेकिन अपने फलदा की शक्ति पर विज्ञान न बान हुए उमने उमी गहरी मांस मरी कि उमकी भावाज सङ्गनाई गई और दुगरे भी पीक गए । इनक नुरगत बाद ही मय पात्री विग हा गए ।

कोया अपनी साने क दटा वाली नई जाकर पहिले उम दिन का हीरा का मजदूर, नीला रङ्गा और जवान गौरवा और विज्ञाना द्वारा उम अटे और वपाइया मिली तथा मयने उनक हाथ चुने । जैसा कि प्राचीन गान प्रवा क दिना में हाता था विज्ञान लोग घर क सामन पड़ी मय क चारा धार वाक्का पीने हुए नाच-नाच रहे थे । काया धर्मा भी रहा था और उसे प्रनाना और गौरव का भी अनुभव हा रहा था । उमने अपने माता-पिता का आर्तिगन किया और घर से बाहर भाग गया । भोजन के समय मिथ्यागिन ने धैम्यग की यात्रा के खाने का आदेश दिया और अपने बेटे क न्याय्य के नाम पर पीन के पत्रिम उमने एक छाया सा ब्यान लिया अपने दण की सदा करने क महत्त्व पर और अपनी इच्छा प्रकट की कि उमी दण लेया क मार्ग पर उनका निवासार्थी भी भग श्री परिवार क प्रति अपने का के प्रति सम्राज और जगता ही महानया, जनता, और अन्त में अस्वार्थ क प्रति अपने कर्त्तव्या का पालन कर । पाये-पीरे जोग में प्राप्त हुए

सिप्यागिन बहुरता के घरम विन्दु पर पहुँच गया, उसने राबर्टपीस की तरह अपना हाथ अपने कोट के कालर में डाल रखा था, 'विज्ञान' शब्द पर वह बहुत प्रभावशाली हो गया और एक सैटिन शब्द से— जिसका उसने तुरन्त क्सी में अनुवाद किया, अपना मापण समाप्त किया। कोल्पा को अपने हाथ में एक खास लिए हुए मेज के दूसरे कोने पर अपने पिता के पास ध्यवाद देने और अपने को सबके द्वारा चूमे जाने देने के लिए जाना पड़ा। इस समय फिर मरिघाना और नेज्यानोव की आँखें मिल गई। दोना सम्भवतः एक ही बात अनुभव कर रहे थे लेकिन उन्होंने आपस में बातें नहीं कीं।

नेज्यानोव ने जो कुछ भी देखा वह सब उसे अदृशिकर और उकसाहट पैदा करने वाले की अपेक्षा धानन्ददायक और चिन्तक ही लगा और गृहस्थामिनी वानेन्दिना मिस्त्रासोवना ने एक क्षण स्त्री के रूप में उसे प्रभावित किया। वह जानता था कि वह अभिभय कर रही है और मन ही मन प्रसन्न भी था कि उसको समझने की क्षमता रखने वाला एक और भी है, जो क्षण और पालाक भादमी है। नेज्यानोव सम्भवतः स्वयं नहीं समझ पा रहा था कि उसके प्रति वानेन्दिना मिस्त्रासोवना का व्यवहार उसके आत्मगौरव को कितना मनुष्ट कर रहा है।

अगले दिन से पढ़ाई फिर शुरू हो गई और नियमित रूप से दैनिक जीवन चलने लगा।

याही एक सप्ताह बीत गया और मासूम ही न पड़ा। इन दिनों में नेज्यानोव के अनुभव और विचारों को उसके एक पत्र के धाँ से जाना जा सकता है, जो उसने अपने सबसे मध्ये मित्र सिमीन को लिखा था। वह उसका सहपाठी था। सिमीन पीटर्सबर्ग में नहीं बल्कि एक सुन्दर नगर में अपने एक धनी सम्बन्धी के साथ रहता था, और उसी पर पूरी तरह से आश्रित था। उसकी स्थिति ऐसी थी कि स्वप्न में भी वहाँ से जाने की बात सोचना उसके लिए ब्यर्थ था, वह एक बमजोर, दम्भ और सकुचाया सा, पर अत्यन्त निर्मल स्वभाव का व्यक्ति

या। राजनीति से उस कोई दिलचस्पी नहीं थी और उसने बहुत थोड़ी  
 सी साधारण बातों ही पढ़ी थी। बच्च काटने के लिए धंसी बजाता  
 रहा और जवान औरतों से बहुत डरता था। सिलिन नेज्दानोव  
 से घनिष्ठ स्नेह करता था और यह बड़ा ही स्नेही व्यक्ति था। नेज्दानोव  
 और किसी से अपना हृदय उतना नहीं खोलता था जितना यलादिमीर  
 सिलिन से। अब कभी वह उस पत्र लिखता तो उसे ऐसा अनुभव होगा  
 जैसे वह उसका कोई अपना निकटतम आत्मीय हो सगा ही और जो  
 दूर रहते हुए भी उसके विस्तृत निकट ही सामने है। नेज्दानोव एक  
 ही नगर में सिलिन के साथ एक साथी के रूप में रहने की भी कल्पना  
 नहीं कर सकता था। अगर ऐसा प्रयत्न प्राया होता तो यह  
 गुरन्त उससे उकता जाता। उन दोनों में इतनी कम समानता थी  
 फिर भी उसे सबसे अधिक पत्र लिखता और खुले दिल से लिखता।  
 दूसरों के साथ कम से कम पत्र में बनावटीपन प्रा जाता सिलिन के  
 साथ—कभी नहीं। सिलिन लिखने में बड़ा आसवी या बहुत कम पत्रों  
 का उत्तर देता—और वह भी छोट और बेडगे बाक्या में नेज्दानोव  
 को भी लम्बे चीड़े उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। वह उनके बिना भी  
 यह जानता था कि उसका मित्र उसके प्रत्येक शब्द को पौ जाता है  
 जैसे ही जैसे रास्ते की धूल कर्पा की कूँद को पौ जाती है। उसकी बातों  
 को पवित्र वस्तु की तरह गुप्त रखता और हृदय के ऐसे कोने में उन्हें  
 छिपा देता जहाँ से वह कभी बाहर न प्राती। वह अपने मित्र के जीवन  
 में एकाकार होकर रहता। नेज्दानोव ने उसके साथ अपने सम्बन्ध  
 दुनियाँ में किसी से भी नहीं बताए थे वे उसके लिए बहुत ही  
 मूल्यवान थे।

'प्रिय मित्र—मेरे पवित्र चम्ब यलादिमीर, का उतने उते लिखा—  
 वह उते हमेशा पवित्र कहता था, और उसके पर्याप्त उपयुक्त कारण भी  
 थे—'मुझे बधाई दा मैं प्रत्यन्त ही हितकर और मुर्छित स्थान पर  
 प्रागया है और अब यही आराम कर सकता है और शक्ति पुनः सबसा

हूँ। मैं एक धनी व्यक्ति सिप्यागिन के मपान में शिक्षक की हैसियत से काम कर रहा हूँ। मैं उससे छोटे बच्चे को पढ़ाता हूँ। बूब बढ़िया भोजन करता हूँ, (इतना अच्छा, बढ़िया भोजन अपने जीवन में मैंने पहिले कभी नहीं किया) बट के सोता हूँ और जो कर कर सुहावने प्यारे मैदानों में घूमता हूँ, और सबसे खान याद तो यह है कि मैं थोड़े दिना के लिए अपने पीटिसवर्ग के मित्रों की देखभाल से मुक्त हो गया हूँ और यद्यपि पहिले तो मेरा मन कुछ अजीब सी घुटन और उदासी से घस्त था पर अब मैं उससे मुक्त हो गया हूँ। अल्दी ही मुझे अपने काम में जुट जाना है, (जैसी कि पहिले है कि अगर तुम अपने को कुकुरमुत्ता कहते हो तो तुम्हें डालची में जाना चाहिए) और ठीक इसीलिए उन्होंने मुझे यहाँ आने दिया है, लेकिन इस बीच में मैं ध्यानभ्रम पूर्ण धारण का जीवन व्यतीत कर सकता हूँ, माटा हा सकता हूँ और अगर मूढ बन गया तो सम्भवतः कुछ गीत भी लिख सकूँ। इस प्रवेश ने मुझे पर कैसा प्रभाव डाला है यह फिर लिखूँगा। जागीर की व्यवस्था अच्छी मामूम होती है, हालांकि वारसान में शायद कुछ गड़बड़ है। रहे किसान सा कुछ तो पहुँच से बाहर सगत हैं, और मुख्य घडे पिनीठ हैं। लेकिन उन सब पर फिर कभी बात होगी। परिवार के भावमी सम्य और उदार है। सिप्यागिन सदैव बड़ा कृपालु और विनम्र रहता है—मोह। बड़ा ही कृपालु, और फिर एकाएक भावुकता में वह आता है—बड़ा ही सम्य और सुसङ्गठ व्यक्ति है। बहुस्वामीनी सौन्दर्य की मूर्ति है—पर मैं कहूँ कि एक मन्दार खिड़ी यह हर एक पर नजर रखती है और मोह गजब की कामल है। जैसे शरीर में एक भी हड्डी न हो। मैं उससे डरता हूँ औरता के पीछे मैं कैसा सेटपिटा आता हूँ और अजीब व्यवहार करने लग जाता हूँ तुम ता जानती ही हो। यहाँ पर पड़ोसी भी हैं—पर सब मित्रम्मे! एक बुद्धिया है, जिससे मुझे सख्त पिक है। लेकिन एक लड़की में भरी सबसे अधिक देखभाली है—यह इन लोगों की रिश्तदार है, या योंही साथ रह रही है, खुदा जाने, मैंने शायद ही उससे दो बातें की होंगी, लेकिन मैं

एसा अनुभव करता है कि यह उमी मिट्टी की बनी जिस मिट्टी का मैं बना हूँ ।

इसके आगे नखानाच न गरिमाना की शकस-मूरत और उसक तीर-तराशा का विवरण दिया मार सब उसने लिखा —

'कि यह दूखी है, गर्धीसा स्वार्थमानी और संपाधी है, मार सद्से प्यादा ता यह प्रमृक्षत दुग्नी है मृन्ने इनम जग नी सदेह नही । यह दुखी दया है मभी मो में नही जानता । यह ईमानदार है यह मर नजरोक साफ है पर यह अशुद्ध स्वभाव का नी है—यह मभी प्रल्ल ही है । क्या का स्त्री ऐसी नी है जो पूरी मार स अशुद्धे स्वभाव की हो और जो मूत्र न हो ? और क्या बकरी है कि हा ही ? यैम ता में भी-त्रा क मार म बहुत कम जानता है । पर की माखानेन उस नही पाहती मार यह ना उस नही चाहती सचिन दोना म से शौन गही है, मैं नही जानता । म मना समझता है कि घर की मात चिन ही गानती पर ह मयादि मैं दग्ना है कि यह उसक प्रति चिनअ है जब कि सद्दी की नाह अपनी स-क्षिमा स दात फरके समय पददाह स सन जाती है । ही यह पड़ी ही पददाह-वभाव की सगधी है इम नी यह मु टै जैसी ही है । और यह मेरी ही तरह उरकी-पड़ी सी नी है, हार्ताकि सम्नयत पूणज मी हा सख नही ।

जब यह सन जरा और साफ हाता, सब म तुम्हें लिखेगा । -

'यह काम' हा कभी मुक ए बोनसी है, जैसा कि मने मनी दहा, मचिना जो दोड़ा ता उनन मुन्स पाना है, ( हनेगा एदाएक और अप्रत्यासित एप य ) उसमें कुछ रग्ना स्पटवागिता है मार निरदयता है - मे उउ पम-द करता है ।

'पर ही' जरा यह हा पतासा कि क्या तुम्हारा रिस्तेगर तुम्ह सब भा जी पर सग्ना है ? क्या जगन अपन अगु क मार में मभी साधात नहा मूर चिया ?

'क्या तुमने ओरेन्बर्ग प्रान्त में अन्तिम सिंहासनामिलापियों पर 'योरप-सदिश' में प्रकाशित लेख पढ़ा है? वह १८३४ में हुआ था, मेरे प्यारे मित्र ! मैं उस पत्रिका की परवाह नहीं करता, और उसका लेखक अनुदार बिचारों का है, रॉजरवेटिव है, लेकिन यह बड़ी विसयस्य बात है और सोचने पर विषय भरती है ।



नौ

मई का आधा महीना बीत चुका था और  
भयंकर गरमी ५ दिन दुरू हा गए थे  
एक दिन सोल्यो को इतिहास का पाठ पढ़ा  
चुकने ५ याद नेज्यानाव वाग में चला गया  
और बाग से भोजपत्र के जंगल में चला गया  
जो बाग से निकलते ही एक ओर दूर तक फैला  
हुआ था। १५ वष पहिले इस जंगल का एक  
गाग सक्ड़ी के ब्यापारिया द्वारा मटवा डाला  
गया था, लेकिन बड़े पेडा की जडा में फिर से  
बल्ले फूट आए थे और ये अब मखरे भोजपत्र  
के छोटे-छोटे पेड़ बन गए थे। पेड़ों के तने पास  
पास मटियासी चाँदी के स्तम्भ स लग रहे थे  
जिन पर चूरे छन्ने पड़े हों छोटी-छोटी हरी  
पमरदार पत्तियाँ एक जैसी सा रही थीं, माना  
किन्ही ने उन्हें घाकर उन पर यानिध कर दी  
हो। पिछले वष की गिरी हुई पत्तियों के वाले  
और औरत डेरा के बीच स बसन्ती घास ऊपर  
जो घपनी जीन निकाल रही थी। सारे जंगल में  
पतली-पतली पगडंडियाँ इपर-उपर फैली हुई  
थी। पीलो चोंच वाली काली बिडियाँ एकाएक



धीस कर, जैसे बोक पड़ी हा, पगडडियों पर फडफडाती उठने सर्गी और जमीन के नबदीक नीचे-नीचे उड़कर पागसों की तरह झाड़ियों में घुस गई ।

भाषा बन्टा घूमने के बाद नेग्धानोव, जमीन पर कुस्हाड़ी से फेड़ काटने पर छितरे छीलन के बीच कटी पड़ी एक छास पर बैठ गया । अनेक बार उन पर बाढ़े में वर्ष जमी और बसन्त में पिषस गई और किसी ने उन्हें स्पर्श भी नहीं किया था । नेग्धानोव एक छोटे भोजपत्र के तने के सहारे पीठ लगाए छाँह तले बैठा था । वह कुछ सोच नहीं रहा था और उसने बसन्तो म्यन्वन पर अपने को कर्तई छोड़ दिया था जिसमें जबान और वृद्ध दोनों के लिए समान रूप से दुख था प्रथ रहता है । जवानी में भासा और उम्मीदां की बेचैत ब्यया और बुढ़ापे में पक्कातापों की त्विर ब्यया ।

एकाएक नेग्धानोव ने नबदीक घाती पदचाप सुनी ।

यह एक भादमी के घाने की भावाब नहीं थी, और न तो भारी पूते पहिने किसी किसान या नंगे पैर किसी किसान स्त्री के घान की ही भादाब थी । ऐसा लगता था जैसे दो ब्यक्ति धीरे-धीरे कदम रखते हुए उबर टहलते घसे घा रहे हैं । किसी स्त्री के बस्रों की हसकी सी सरसराहट भी सुनाई पड़ी

एकाएक एक खोससा सा पुरुष स्वर सुनाई पड़ा 'तो यह तुम्हारा अन्तिम फैसला है ?—कमी नहीं ?'

'कमी नहीं ?' स्त्री कण्ठ ने उत्तर दिया । यह स्वर नेग्धानोव को परिचित लगा, और बोड़ी वेर भाव रास्ते की मोड़ पर अहाँ झाड़ी का घेरा बनाती हुई पगडडि मुड़ती थी, भरिभाना दिखाई पड़ी । पीछे-पीछे पहरी कामी भास बाभा एक भादमी था, जिसको नेग्धानोव ने इसस पहिसे कमी नहीं देखा था ।

नेग्धानोव दोनों को देखकर ऐसे ठिठक गया, जैसे उन्हें गोली मार दी गई हो, जब कि वह स्वयं उन्हें देखकर इतना हक्का-बक्का हो गया

था कि वह जिस घास पर बैठा या उस पर से उससे उठा सब नहीं गया। मरिघाना अपने वासा की जड़ तक घर्म से साल हो गई। सकिन तुरन्त ही विरस्कारपूर्ण मुस्कान उसका होठ पर आ गई। यह मुस्कान किसके लिए थी—अपने लिए, शर्मिने के कारण या निज्जानोब के लिए? उसने साथी की मौहां में बल पड़ गए, और उसकी म्यत्र धाया की पीली सफेदी में मन्द प्रकाश छा गया। उसने मरिघाना की ओर देखा और फिर दोना ही नेज्जानोब की धार पीठ करके पीर-भीरे चुपचाप भाग बढ़ गए और वह उन्हें स्वम्भित दृष्टि से एकटक देखता रहा।

घास घंटे बाद वह घर साटा धार सीधा अपने कमरे में चला गया और घंटे की पूरा के द्वारा पुकारे जाने पर ही ड्राईंगरूम में गया। वहाँ भी उसने उस सकिन रय के अवनवी घावमी को देखा जिसे उसने पोंडा देर पहिल अंगस के भुरमुगा में देखा था। सिप्यागिन नेज्जानोब को उसका पाठ तक ले गया और उससे उसका परिचय कराया—‘भाप मेरे सासारेअंग हूँ—बालन्दिना मित्तालोबमा के भाई साहब—सर्वा मित्तालोबिना माकसोब।’

‘मुझे आगा है तुम दाना में अर्घ्य पटेयो सिप्यागिन न अपनी विधिष्ट गवपूण निन्तु छोई-सोई ती मुस्कान के साथ कहा।

माकसोब ने निम्न ५ अभिवादन किया, नेज्जानोब ने भी उसी तरह प्रथि उत्तर दिया। सिप्यागिन अपने छोटे सिर को पोंडा हिमाठा हुमा और अपने फन्धे सिकोड़ता हुमा, एक धार हट गया, मानां कह रहा हा ‘मैने अपना बर्तुष्य पूरा कर दिया। अब आप दोनों में दोस्ती होती है या नहीं, मुझे इससे कोई मतलब नहीं?’

तब बालन्दिना मित्तालोबमा उन दाना के पास आई। दोना धर्मो तक चुपचाप स्थिर रह बै। उसने फिर दुबारा अपनी सुन्दर धारों में एक धीमे धमक नर नर दोना पर आपस में परिचय कराया। उसने धमक भाई से कहा

‘तो किसानों को ही जानने की क्या जरूरत थी?’

‘क्यों नहीं! क्योंकि उनके लिए प्रूथो या आदम स्मिथ की प्रपेक्षा बन विलाव या वैन्डारू के बारे में जानना कहीं प्रच्छा है।’

इसी बात पर सिप्यागिन ने फिर उसे खींचा और बताया कि आदम स्मिथ मानव विचारों का एक प्रमुख प्रकाश स्तम्भ है और यह प्रच्छा हो कि सब उसके विचारों को (उसने अपने लिए शराब का एक ग्लास बनाया) अपनी मांताओं के (उसमें शराब को नाक से सूँघा) वृष के साथ आत्मसात करलें। उसने गिन्नास साली कर दिया, कानोमियेत्सेव ने भी शराब पी और उसकी तारीफ भी की।

मार्कोलोव ने पीटर्सवर्ग के इस पदाधिकारी की जमीन-आसमान की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन दो बार उसने मेज्वानोव की ओर पूँछती सी दृष्टि से देखा और रोटी की एक गोली को उछालते हुए दकत्वादी भगान्तुक की नाक की ओर फेंकते-फेंकते रह गया।

सिप्यागिन ने भी अपने साल की चुप्पी को तोड़ने का कोई प्रयास नहीं किया और न वालेन्तिना मिखालोवना ने ही उससे कोई बात की। ऐसा लगता था कि दोनों मिया घीबी मार्कोलोव को नगम्य और खनकी व्यक्ति समझते थे, जिसको न छेड़ना ही प्रच्छा है।

भोजन के बाद मार्कोलोव पाहूप पीने के लिए विसियर्ड के कमरे में घला गया और मेज्वानोव अपने कमरे में। बरामदे में उसकी भरिघाना से झुठभेड़ होगई। वह उसके घगल से गुजरने ही वाला था कि उसने उसे आकस्मिक संकेत से रोक लिया।

‘थी मेज्वानोव उसने भर्राई आवाज से कहना शुरू किया, आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं? लेकिन फिर भी मैं सोचती हूँ कि सोचती हूँ (उसे धाबद नहीं मिला रहे थे) मैं आपको यह बताना ठीक समझती हूँ कि जब आज आप जंगल में मुझे और मार्कोलोव कोमिसे थे “बताइए इसमें सन्देह नहीं कि आपको आश्चर्य

हुया था कि क्यों हम सोग घबडा गए थे, और क्यों हम सोग वहीं गए थे माना पहिले से तै करके गए हों

‘थोड़ा घबड़ाव तो मुझे लगा था’, नेन्धानोव ने कहा ।

‘श्री मावेंसोव’ मरिघाना ने बीच में कहा ‘नि मेरे सामने एक प्रस्ताव रखा और मैंने इन्कार कर दिया । यही बात मुझे घ्राप स कहनी थी घबड़ा—नमस्कार । घ्राप जा चाहें तो मेरे बारे में सोच सकते हैं ।

वह जल्दी से घूमती और तेजी से एक घोर वरगन्दे में चली गई ।

नेन्धानोव अपने कमरे में जाकर अपनी लिटकी पर बैठ गया और सोचना रहा ‘कैसी घबड़ाव महती है । एंमो मफाई बिम लिए । घोर फिर मैंने तो सफाई चाही भी नहीं थी ।

यह क्या है—अपने को घट्टी प्रगट करने की इच्छा या सिर्फ स्नेह, या दर्द ? सम्भवतः दर्द ही । यह अपने बारे में थोड़ा सा भी मन्देह नहीं सहन कर सकती यह यह मही चाहती कि कोई उसके बारे में सतत चारखालें बनाए । घबड़ाव लडकी है ।

मा उमर नेन्धानोव बैठा सोच रहा था और उसकी लिटकी के नीचे घुसी छत पर उमर वार में धावें हो रही थीं , जो उम साफ-साफ मुताई पड़ रही थीं ।

‘मैं जानता हूँ , शान्तिमिदेलव जोर देकर कह रहा था ‘वह एक पुराना और उग्र प्रजातन्त्रवादी (रिडरिपनिशन) है । जब मैं मास्का क मदनरंजतनक क नीचे स्पगत कमीशन में काम करता था तो मुझे इन शान्तिवाद्या और राजद्रोहियों की सूच पर्वमान हो गई थी । मेरी माऊ कभी-कभी इन्हें गुणगुण से ही पर्वमान करने में बड़ी तैज हो जाती है । शान्तिमिदेलव न बनाया कि जैसे वह एक बार घबरावत मास्को क बाहरी भाग में एक घुटे हुए शत्रुदोही को पीछा करता हुआ घरा जो अपनी संपत्ति की लिटकी में बंद कर नाया था और पुसिस उमरा

पीछा कर रही थी। - 'और वहाँ वह विस्कुल शान्त बैठा था, वह वदमाश कहीं का।'

कालोमियेस्सेव यह बताना मूल गया कि वही क्रान्तिकारी, जब बैस में बन्द किया गया, तो उसने खाना खाने से मना कर दिया और उपवास करके मर गया।

'और तुम्हारा यह नया मास्टर ईर्षानु है'—मफसर कहता रहा, 'एक क्रान्तिकारी है, निःसन्देह? क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि वह कभी पहिले नमस्कार नहीं करता?'

'यह पहिले नमस्कार करे भी तो क्यों? श्री मती सिप्यागिन ने कहा, विस्कुल विपरीत—उसकी यही बात तो मुझे पसन्द है।'

'मैं उस घर में अस्तित्व हूँ जिस घर में वह नौकर है', कालोमियेस्सेव ने बिल्लाते हुए कहा—'हाँ, हाँ, पैसे के लिए नौकर है, वेतन भोगी - निदमय ही मैं उससे बड़ा हूँ और उसे पहिले नमस्कार करना ही चाहिए।'

'तुम बड़ी जरा-जरा सी बातों पर नाराज हो आते हो, कालोमियेस्सेव, 'सिप्यागिन ने नाम के 'से' शब्द पर जोर देते हुए कहा, 'यह एक'— भगर तुम उसके कहने के लिए माफ करो, तो यह सब दकियानूसी है। मैंने उसे नौकर रखा है, लेकिन फिर भी वह स्वतन्त्र है।'

'वह बड़ा अकड़ है अकड़,' कालोमियेस्सेव ने कहना शुरू किया। यह सब क्रान्तिकारी ऐसे ही होते हैं। मैं तुम से कहता हूँ कि मैं उनकी नस-नस पहुँचानता हूँ। सादिता से सम्भवतः इस सम्बन्ध में मेरी तुलना की जा सकती है। भगर वह मेरे हाथ पड़ जाय, वह अध्यापक 'तो मैं उसे जरा ठीक कर दूँ' क्या मैं उसे ठीक नहीं कर सकता! फिर वह कुछ दूसरे ही सुर अनापन सगे, तब क्या वह पहिले से मुझे नमस्कार नहीं करे। 'उसे जरा हाथ सग जाते' - !

"निफम्मा मूत्र, दोमी खोर मूत्र" नेज्जानोव ऊपर से यरीय करीब  
 चीलने जा रहा था पर उसी समय उसके कमरे का दरवाजा खुला  
 और नेज्जानोव के लिए पर्याप्त आश्चर्य का विषय बनना हुआ  
 माकेंसोव कमरे के भीतर आया।



नेज्दानोव उससे मिलने के लिए अपनी बगल से उठा, और मार्कोव भी सीधा उसकी ही ओर भागे बढ़ा और बिना नमस्कार के लिए झुके और मुस्कुराए उसने नेज्दानोव से पूछा कि क्या वह पीटसवर्ग विश्वविद्यालय का विद्यार्थी असेक्सी दिमित्रिच नेज्दानोव ही है।

'हाँ' नेज्दानोव ने उत्तर दिया।

मार्कोव ने अपनी बगली जेब से एक झुला हुआ पत्र बाहर निकाला। 'तो फिर इसे पढ़ लो। यह वेसिमी निकोसोवविच का सिखा हुआ है', उसने अपने स्वर को धीमा करते हुए कहा।

नेज्दानोव ने पत्र-खोल कर पढ़ा। वह कुछ अध अधिभूत सरकपूलर जैसा था, जिसमें मार्कोव को 'अपना' सापी समझने की सिफारिश की गई थी, पूरी तरह विश्वास के योग्य। उसके बाद मिस-पुल के काम करने की तात्कालिक आवश्यकता पर और दिया गया था और कुछ सिद्धान्तों के प्रचार की बात कही

गई थी। सरकपूलर औरा के साथ-साथ नेज्मानोव को भी एक विश्वासी साथी समझते हुए उसके नाम भी था।

नेज्मानोव ने मार्कोसोव से मिलने के लिए अपना हाथ बढ़ाया उससे बैठने को कहा और स्वयं भी एक कुर्सी पर बैठ गया। मार्कोसोव ने एक सिगरेट सुलगाई और उसके साथ-साथ नेज्मानोव ने भी।

'क्या तुम्हें यहाँ किसाना से दोस्ती करने का समय मिला?' मार्कोसोव ने पूछा।

'नहीं, मुझे अभी समय नहीं मिला।'

'तो तुम्हें अभी यहाँ ज्यादा दिन नहीं हुए।'

'मुझे यहाँ रहते पन्द्रह दिन पूरे हो जायेंगे।'

'काफी व्यस्त रहे?'

'कोई ज्यादा तो नहीं।'

'मार्कोसोव ने क्रूरता से खगारा।

'हूँ! यहाँ के किसान बड़े निरक्षर हैं' उसने कहा, 'विल्कुल अनि-मित्र। उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है। यहाँ बड़ी गरीबी है लेकिन कोई उन्हें यह बताने वाला नहीं है कि उनकी इस गरीबी का कारण क्या है।'

'आ तुम्हारे सहनाई के दास हैं, जहाँ तक मैं समझ सका हूँ गरीब नहीं हैं, नेज्मानोव ने कहा।

'मेरे वहमोई यड़े यने हुए हैं पकने लॉगी, बहु लागों को मूर्ख समाना खुद जानस हैं। यहाँ के किसानों की भी निश्चय ही कोई अच्छी दशा नहीं है लेकिन उनका एक कारण है। जहाँ बोलिया करनी चाहिए। वहाँ जरा सी बोधिया की बात है, फिर तो गारा काम अपने प्राप बन जायगा। क्या तुम्हारे पास कुछ बितावें है?

'हाँ 'लेकिन अधिक नहीं।'

'मे फुल्ले मे दूंगा। लेकिन ऐसा बेस कि तुम्हारे पास बितावें नहीं हैं?



नेज्दानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। मार्कोसोव भी चुप होगया और वस अपनी नाक से घुमाँ निकालता रहा।

‘यह फालोमियेस्त्रेव कैसा जगसी है!’ उसने एकाएक कहा। ‘मोजन के समय में सोच रहा था कि उस मूसल जैसे घूट बेहरे घाने ब्यक्ति के पास जाऊँ और जरा उसे मजा बसा दूँ, जिससे दूसरों के लिए मिसाल बन जाय। लेकिन नहीं! उसे हाथ लगाने से ज्यादा महत्वपूर्ण काम है अभी तो। अभी मूर्खों की मूर्खाता और घूर्तता पूर्ण बातों पर गुस्सा करने का समय नहीं है यह समय तो उन्हें घूर्तता करने से रोकने का है।’

नेज्दानोव ने सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रगट की, और मार्कोसोव ने फिर अपनी सिगरेट का कक्ष खींचा।

‘यहाँ और नौकरों के बीच एक थोडा अकलमन्द भावमी भी है’ उसने फिर कहना आरम्भ किया तुम्हारा नौकर इवान नहीं यह तो कुन्डमन्ड है, बल्कि दूसरा ‘उसका नाम किरिल है, वह यहाँ मोजन परोसने और ऊपर का काम देखने का काम करता है’—(यह किरिल बडा पियककड है)—‘तुमने उस पर ध्यान दिया है। एक पियककड जगसी’ लेकिन हम नकजदू तो नहीं हो सकते, तुम जानते ही हो। और मेरी बहन के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?’ उसने एकाएक अपना सिर उठाते हुए और नेज्दानोव पर अपनी पीसी घाँसों को जमाते हुए पूछा। ‘वह मेरे बहनोई से भी अधिक बोंगी है। उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है?’

‘मे समझता हूँ कि वह बडी सरल और सहज स्वभाव की स्त्री है और फिर, वह सुन्दर है।’

‘हूँ। बितनी कोमलता स तुम उसके बारे में कह रहे हो। ‘यस इसकी तारीफ ही करते बनती है! अच्छा जहाँ तक ‘उसने बात भागे बढ़ाई, लेकिन एकाएक मोहि सिकोषी, उसका बेहरा और जाना पड़ गया, और उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। ‘मे सोचता

हैं, हमें बरा खुमासा वातें कर लेनी चाहिए उसने फिर कहना शुरू किया। 'यह हम यहाँ नहीं कर सकते। कौन जाने बहुत दरवाजे पर सुन रहे हैं? क्या तुम जानते हो, मैं क्या सलाह दूँगा? आज शनिवार है, मेरा स्वागत है, कम तुम कोल्पा को नहीं पढ़ासोगे? या पढ़ाओगे?'

'कम तीन बजे मुझे उसके तीन हफ्ते की पढ़ाई की रिहर्सल करनी है।'

'रिहर्सल! माना तुम स्टेज पर हो? जहर यह सूझ लीदी की हो लेनी। अच्छा, एक ही बात है। क्या तुम सुरन्त मेर साथ आने की कोसिच करोगे? मेरी जगह यहाँ से कुछ आठ मील है। मेरे पास पैस थोड़ा है हवा से यात्र करने वाल—तुम रात को यहाँ ठहरोगे और सबेरा भी वहीं गुजारोगे—और कम तीन बजे तक मैं तुम्हें यहाँ वापस ले आऊँगा। सहमत हो?'

'यिल्कुस' ने जयानाथ न कहा। मार्कोलोव के कमरे में आन क समय से ही वह एक अजीब तनाव और संकोच का अनुभव कर रहा था। उसके साथ उसको इस आकस्मिक प्रगाढ़ता ने उस उलझन में डाल दिया था लेकिन साथ ही वह उसकी ओर लिखावट का भी अनुभव करता था। यह अनुभव कर रहा था कि उसके सामने एक सुस्त, मध्व लेकिन निःसन्देह ईमानदार और दृढ़ व्यक्ति बैठा है। और फिर मरि घाना क साथ जंगल में उसकी भेंट और मरियाना का अप्रत्याशित स्पष्टीकरण।

'तो यह पकरा रहा! मार्कोलोव न कहा। 'तुम तब तक तैयार हो ला और मैं तब तक जानर बम्पी हैमार करने का आदेश देता हूँ। मैं समझता हूँ, तुम्हें घर व आलिका से पूछने की जरूरत नहीं होगी?'

'मैं उनसे कह दूँगा। मैं समझता हूँ, बिना बतलाए जाना ठीक न होगा।'

'मैं ही उनसे कह दूँगा, मार्कोलोव ने कहा। 'तुम धिन्दा मत करा। वे साथ इस समय वाशा ल शुरू रहे होंगे, वे तुम्हारी अनुप

स्थिति पर ध्यान भी नहीं देंगे। मेरे जीजा एक महावपूर्ण राजनीतिज्ञ बनने का स्वप्न देखते हैं, पर सिवाय ताप खेलने के उन्हें कुछ नहीं आता; ताप वे बड़ा प्रयत्न खेलते हैं। जो भी हो इस तरह उन्होंने धन खूब कमाया है। तो तुम भ्रम पैयार हो जाओ। मैं तुरन्त सारा प्रबन्ध करता हूँ।

मार्कोलोव बना गया और एक बन्टे बाद नेम्बानाव एक पुराने वय की यड़ी बग्गी में, एक चौड़ी बमड़े की सीट पर उसकी धगम में बैठा, उसके साथ घसा जा रहा था। फूहड़ नाटा फोखान अमर हाँकते बाल की सीट पर बैठा मुँह से एक चिड़िया की मधुर संगीत की मय में सीटी बजा रहा था, फाले प्रयाल और पूछ वाल तीन चितफवर घोड़े औरस सबक पर चौकड़ी भरते दौड़े जा रहे थे। राठ क पहिले पहर की छाया मे पेड़, झाड़ियाँ खेत, मैदान और लडू साप-साप दौड़ते स लग रहे थे, पर पीछे छूटते जा रहे थे।

मार्कोलोव की छोटी सी जागीर (यह छ सौ एकड़ स अधिक नहीं थी और उसकी मास गुजारी साठ सौ दबस थी—उसे योज्यॉन्कोवो कहा जाता था) प्रान्तीय राजधानी से कुछ रो मील पर थी, जब कि सिप्यागिन की जागीर छ मील दूर थी। योज्यॉन्कोवो पहचन के लिए उन्हें नगर को पार करना पड़ा। उन मए मिश्रो को आपस में पचास शब्द कहने का भी अवसर नहीं मिला कि उससे पहिले ही उन लोगों को नगर के बाहरी भाग में स्थित मजदूरों की म्पोपड़ियाँ दिखाई पड़ीं जिनकी छतें लकड़ी की बनी थीं और उखड़ी पुसड़ी सो थीं। उनकी सिड़कियों से मद्रिम रोधनी भा रूही थी और तब उहीने अपनी बग्गी के पहियों के नीचे नपर की पत्थर की सड़कों की खड़खड़ाहट सुनी। बग्गी सड़क पर दौड़ती हुई इधर-उधर हिचकोमे खा रूही थी और हर धक्के से उदस उदस पड़ती थी। वे लोग नगर के व्यापारियों के पत्थर के बने सड़ियत से दुमंजिसे मवानों और गुन्बजदार घसों और सरामों के पास से होकर गुजरे। छतिवार

की रात थी, सहकों पर कोई भी आदमी नहीं था, मकिन सराय में सभी भी भीड़ थी। सराय में से भर्राई भारी आवाज से नखे में गाने का स्वर और बाजा की मुरीसी पुन आ रही थी। एकाएक एक दरवाजा खुला। उसमें से धाराव की तीखी बुभकार्यैद भाई और सास रोगनी की लौ। सगभग सभी सराय का दरवाजा पर बिसानों की गाड़ियाँ खड़ी थीं जिनमें मोट राँए के फूहड़ बड़े पेट क टट्टू कुते हुए थे। वे सिर नीचे को मुकाए बंधारगी की मुद्रा में खड़े थे ऐसा लग रहा था, जैसे सा रहे हों। धीस कासीन टोपी लगाए एक बिसान अपने पथ पर बैला खटकाए, मराय स बाहर आया। गाड़ी क जुए स टकरा कर यह मूर्खित् पड़ा रह गया दुर्बनता से प्रसंत अपने हावा का इधर उधर फरने लगा जैसे माना कुछ टटोस रहा हो, उमकी टोपी फनी हुई थी और उसकी सूती कमीज भी फनी थी। यह इगमगाते कदम रखता हुआ नंगे पैर—उसप जूठ सराय में ही रह गए थे—धीरे धीरे रका धंगड़ाई ली और फिर जोड़ो को नटका देकर चटखाटा हुआ और प्राकस्मिक बराह क साय वापस बना गया।

‘स्सी जनता धाराव की गुलाम है। उदास दुस्ती स्वर में मार्कोसोव ने कहा।

‘दुग ही उसे ऐसा बना देता है, सर्जी मियासोविच!’ पाबवान ने बिना पीछे पूरे हुए ही कहा। हर सराय के सामने बह सीटी बजाना बन्द कर देता लगता जैसे महरे बिचारा में डूब गया हो।

‘बड़े बसा बड़े बसा!’ अपने कोट के झालर को दोना हाथों से पीचते हुए मार्कोसोव ने कहा। बन्धी धीरे धाजार का पार कर गई, और दुगम्यपूरा गन्द सब्जी के बाजार को पार करती हुई गवर्नर के बर्मने को भी पार कर गई, जहाँ संतरी पहुरा दे रहे थे और किसी की अछिगत कोठी जिसमें मुम्हर बाग और पेड़ा की बतार सपी थी को भी पार कर गई। उसके बाद फिर एर बाजार पड़ा जिसमें कुसे सूँक रहे थे और और गरक रहीं थीं। इस तरह के सौग धीरे-धीरे मगर

दरबाजे चौपट खुले पड़े थे, मगता था, वे कभी वन्द ही नहीं किए जाते थे। मकान के बेर के नीचे भूटपुटे में साफ देखा जा सकता था कि दो सफेद घोड़े बंधे हुए थे। दो पिस्से, वह भी सफेद, कहीं से दौड़ कर आ गए और जोर-जोर से भौंकने लगे। लोग-बाग मकान में घूम रहे थे। कुछ भटके और हिचकोले देती हुई, लोहे के पहियों की चर र चूँ करते हुए बगधी सीढ़ियों के पास जाकर रुक गईं। मार्केशोब ने मेज्बानोब से कहा 'सो, हम सोन घर आगए, यहाँ तुम्हें वे लोग मिलेंगे, जिनसे तुम घण्टी तरह परिविस्त हो और जिनसे मिलने की तुम्हें खनिक मी भासा न हागी। कृपया अब अन्दर आओ।'



## ग्यारह

मार्कोसोव के यहाँ ठहरे अतिथि हमारे पूर्व परिचित धीस्त्रोदुमोव और मधुरिना निकले। वे दोनों मार्कोसोव के साधारण ढंग से सजे ड्राइंग रूम से बैठे थे। उन्हें नेग्पानोव के आगमन से कोई आश्चर्य नहीं हुआ, वे जानते थे कि मार्कोसोव उसे अपने साथ लाएगा, लेकिन नेग्पानोव को उन्हें देखकर जकड़ बड़ा आश्चर्य हुआ। उसका नीतर घुसते ही धीस्त्रोदुमोव ने कहा 'मित्र कैसे हाल-भाल हैं?' और चुप हो रहा। मधुरिना पहिले तो ऊपर से नीचे तक लजा गई, फिर उसने उससे मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। मार्कोसोव ने बताया कि यहाँ धीस्त्रोदुमोव और मधुरिना को 'पट्टी का काम' करने के लिए भेजा गया है, जो अब अन्दी ही अमसी रूप सने वाला है। यह सोग एन हपना हुआ सभी पीटर्सबर्ग से आए हैं, धीस्त्रोदुमोव तो स० प्रान्त में प्रचार के लिए रहेगा और मधुरिना कुछ सोगों से मिसने के लिए व० प्रान्त जायगी।

मार्कोसोव एकाएक गरम हो गया, हालाँकि किस्वी ने भी उसका विरोध नहीं किया था।

वह अपनी सूँछे कुतरता हुआ धीरे जलती भाँपों से घूरते हुए भारी  
 उत्तेजित गमे से बोला लेकिन एक-एक शब्द भराग-भराग, जैसे मानो  
 वह अपनी ही कुछ कर गुबरेगा। उसने जनता पर ही रहूँ मन्यायों की  
 बात कही और उनके रोफने के लिए कोई सस्ते कदम जल्दी ही उठाने  
 पर जोर दिया। फिजा बिल्कुल तैयार है और कार्यों के प्रसाधा कोई  
 भी प्रवसर टासने की बात नहीं कहेगा। फाठ को धीमे के लिए कुछ  
 हिंसा तो आवश्यक होती ही है, चाहे वह कितना ही पका हुआ क्या न  
 हा। उसकी प्रभाज में नष्टर जैसा पैनापन या धीरे कई धार नष्टर  
 जैसी तीखी मुन्फान उसके शोठों पर आ गई। उससे उस निश्चय ही  
 प्रानन्द प्राया यह उसकी अपनी सोच नहीं थी। उसने किसी फिस्तार  
 में पड़ा था। ऐसा नगसा था कि मानो मरिप्राना की धीरे से निरासा  
 होने पर अब उस कुछ सोने को नहीं रहा था और प्रव तिर्फ साध रहा  
 था कि कैसे जल्दी से बल्की 'उद्देश्य' की पूर्ति के लिए नाम पर चुट  
 जाया जाय। उसके शब्द मुल्हासी की मार जैसे निबल रहे थे बिल्कुल  
 तीखे, घुस जाने वाले। तेज मरल, फाटने वाले किन्तु प्रनाबप्राप्ती  
 शब्द एप के बाद एक उसके सधे हुए शोठों से निबल रहे थे जैसे  
 रह रहकर सेब इले फुल का मॉकना। उसने कहा कि वह पड़ोसी  
 किसानों और फारस्ताने के मजदूरों को खूब प्रबन्धी तख्त मानता है और  
 उनमें स गोलोप्योक का एरेमी काम का प्रावमी है जो हर दम  
 हर काम के लिए तैयार रहेगा। गोलाप्योक गाय का एरेमी नाम  
 निरन्तर उसकी खुशान पर था। हर दस शब्द कहने के बाद वह मेब  
 पर आर से दहिना हाथ गारला, हथेली नहीं बरल हाथ के बिनारे से,  
 और बाँया हाथ म घुमावा, एक उँपली प्रलग निकल हुए। उसके  
 बालबाद, पुष्ट हाथ, यह उगली आरदार प्रभाज और जनती हुई  
 प्रौज सब बड़ा परिष्काला प्रभाव डाल रहे थे। रास्ते में मार्बेनोब ने  
 नज्मानोत्र स बहुत कम बात की थी, उसका गुस्ता प्रन्वर ही प्रन्वर  
 मुसगता रहा था लेकिन प्रब वह फूट निकला था। मसुरिना और  
 मोल्त्रोदुमोव अपनी मुन्फान स फनी-फनी उसकी और देखकर या कगी

एक-आय तब धालकर उगकी दाँ ३ रहें थे। लेकिन नेउधानोय में कुछ प्रजाय उदम-मुपस हो रही थी। पहिन उतने बवाव देने की दौदिया की—उरुदयाजी में धमरुचरे, विना सोबे समझे लिए गए काम से नुकरान हो जाने की सम्भावना पर ध्यान दिसाया और सबसे प्रथिम श्रादधय तो उसे इस बात का था कि यह सब पूर्वनिश्चित-सा था जिनमें न समझें ही स्थान का और न स्थानीय परिस्थितियों की परीक्षा की सम्भावना ही छोड़ी गई थी और न यह जानने की जरूरत ही समझे गई थी कि यहाँ के लोग-जाग प्राणिर चाहते क्या हैं।

लेकिन धार में उनरी तगा में भी मनाव आ गया। उसकी नम-नस मितार के तारों की तरह काँपन लगी और एकदम हठात-सा होकर लगनग धार में घाँसू भर हुए, पीत तैसी भावाज से वह भी उसी जोरा पर धार धोपने लगा जिन लोग से मार्सेलिय बाल रहा था बल्कि और नी जोर के गाव। उनमें गीन-मा पल्लि काम कर रही थी यह कहा नहीं जा सकता। क्या अब सब की अपनी उल्माहूहीनता का पश्चाताप उगा तब काम कर रहा था? या अपने या दूसरा के प्रति पीड़ा और गीन का भाव या या फिर बोध अन्तर की घुटन को आ बाहर निपानना चाह रही थी? अथवा अपने मादिया पर जिनसे वह दुबारा मिल रहा था अपनी गति प्रगट करने को इच्छा थी? या मार्सेलिय के शब्दों में उगे वाला न प्रतमित दिया था—उाके मृत को गीन दिया था? अपने तब बात बात चलती री ओम्ब्रोदुगोव और मगुरिना अपनी जगह न गही री और मार्सेलिय और नेग्जानाव बैठे नहीं। मार्सेलिय चारें विन के पहनाय के रूप में एक ही जगह खड़ा रहा और मग्जानाव कनरे में इयर न उबर पगी तनी न था अपनी धीरे धारे टाना रहा। अन्ति पागाम के चारें में प्रागाम का काशीन्विन करत क घरे का क चार म और रिनता बरा-बरा काम होया था यों था। समता तिनात्रा और पबों के यत्न बाधे। उन्होंने एक उग्रविचारों के श्वापारी गामुदिन के चारें में नी यों की जा बड़ा ईमान पर प्रपड़ था। नौदबान प्रपारक निस्त्रायोव के चारें में यों



भी पूछा। इन पर मार्कोलोव सकुचाया उसने अपनी सखी सुखी को निकोझा और धन्त में समझाया कि धमी तक उसके बारे में कुछ निश्चय से नहीं कहा जा सकता चायद किस्त्याकोव कुछ बता सकें।

‘और यह किस्त्याकोव कौम है?’ मेग्घानोव ने व्यग्रता से पूछा। मार्कोलोव प्रथमपूर्ण ढंग से मुस्कराया कि वह एक घादमी है ‘एक ऐसा घादमी’

‘हालाँकि बिसके बारे में मैं बहुत कम जानता हूँ,’ उसने कहा, ‘अब तक मैंने उसे केवल दो बार देखा है। लेकिन वह जो सत मिलता है। ऐसे होठ हैं। मैं तुम्हें दिखाऊँगा तुम आश्चर्य करोगे। ऐसी भ्राम है उममें। और उसकी त्रियाशीलता। पाँच छ. बार उसने उस का एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर बाट डाला है और हर स्थान से उमने दस-बारह पत्रों के पत्र सिये हैं।’

मेग्घानोव ने प्रत्येक सूक्ष्म दृष्टि से घोस्त्रोदुमोव की छोर देखा, लेकिन वह तो धूर्ती की तरह बैठा हुआ था, उसके पसक तक स्थिर थे और मरुरिना के हाठ रुद्र मुम्मान से मिचे हुए थे, और वह गूँगी सी स्वग्ध बैठी थी। मेग्घानोव ने मार्कोलोव से उसके फार्म पर उसके हाथ किए गए समाजवादी मुधाग के बारे में पूछन की कोशिश की लेकिन यहाँ घोस्त्रोदुमोव ने टांग ब्रहा दी।

‘उस पर इस समय यहूद करने से क्या फायदा?’ उसने कहा ‘इससे कोई फन्तर नहीं पड़ता बाद में तो हर चीज बदसनी ही होगी।’

वातपीत फिर राजनीति पर चली गई। मेग्घानोव अब भी एक धेधेनी का अनुभव कर रहा था, जैसे उसने भीतर कोई चीज़ रंग रहा हो और उसे काट रखा हो, लेकिन जितना ही वह उल्लुभ और उत्साहित हागा, उतना ही उसे फ्रान्सरिक पीडा होती और उतनी ही तेजी से और जोग से वह बोलता। उसने भीयर का सिर्फ एक ग्लास ही पिया

था, लेकिन बीच-बीच में उसे लगता जैसे यह मधे में बुरी तरह घूर है। उसक सिर में धक्कर धार रहे थे और उसका दिन पीड़ा जनक रूप से घटक रहा था। जब अन्त में सवेरे के चार बज गए, राव कहीं जाकर वहस खतम हुई और पौरी को पार करते हुए सब लोग शमग शमग कमरों में चले गए। लेटने से पहिले नेग्धानोव काफी देर तक स्तब्ध खड़ा रहा, उसकी धाँसि अपने प्रागे फश पर जमी हुई थी। वह, मार्क्सोव की बातों में भरी हृदयव्रावी पट्टता पर सोचता रहा। इस भादमी का स्वाभिमान चाट छाया हुआ है, वह निश्चय ही दुखी है, इसकी अपनी सारी भाशाओं पर पानी फिर चुका है और फिर भी यह अपने को कितना झूल गया है—जिसे यह सत्य ससम्भता है, उसके पूरा करने के लिए उसने अपने को कितनी उत्कण्टता से लगा दिया है। 'एक सीमित व्यक्तित्व' नेग्धानोव का विचार था किन्तु क्या ऐसा सीमित व्यक्तित्व मेरे अपने स्वभाव से वास्तव में सौ गुना अच्छा नहीं है ?

लेकिन दीध्र ही उसने अपनी आत्मस्तानि के प्रति सयप धारम्भ कर दिया।

ऐसा क्यों ? क्या मुझ में त्याग की योग्यता नहीं ? जरा ठहरो मेरे मित्र और पाकिन्तन तुम भी समय घाँसे ही मान आओगे, यद्यपि मैं कुछ कलाप्रेमी हूँ और कुछ कविता-बबिता भी सिंस लेता हूँ । उसने कोष से अपने बास पीछे को भटके दाँत पीसे और जन्वी से अपने कपड़े उतार कर नम-मूर्द बिस्तर पर जा पड़ा।

'अच्छी तरह सोना !' दरवाजे पर से मगुरिना की आवाज आई। 'मैं तुम्हारे बगल में ही हूँ।

'अच्छा ममस्ते', नेग्धानोव ने उत्तर दिया और सब उसे ध्यान आया कि शाम से ही मगुरिना ने अपनी धाँसि एक पल को भी उन पर से नहीं हटाई।

'बहु चाहती क्या है ?' उसने बुदबुदाया और एकदम से अपने ऊपर

सज्जित होगया। 'मोह' श्रवण पन्थी त जन्मी सा जाना ही उचिता है।

सकिन रूपमी पिरामा क तनाव को फाट करना उमने लिए बठिन  
पा और जब प्राग्निगार उमने नीचे न माफक घेग ता मूरज  
शाममान में ऊंचा पड़ चुका पा।

जब यह सोकर उठा तो उसका मिर दुग रहा था। उसन कपड़े  
पहने और सयने उपरी मंगिल से घपन हमरे की गिहनी पर गया ता  
रना कि माफेनाव क पास रानी ता बस नाम मात्र को ही है। उमना  
यह छोटा सा घर जंगल क शिष्टुप करीब एक गड्ड क ऊपर स्थित  
पा। एक द्वार एक छोटी सी तली एक भस्मदल एक नह्याना और  
एक छाटी सी भापभी थी जिम की घास-फूस की छत भाभी गिरी पड़ी  
थी और दूसरी ओर एक छाटी सी वीणर एक छाटी मो नाग-मञ्जी  
की घारी एक पटमन का डेन एक दूसरी छाटी मो म्पछी थी। उमकी  
छत भी बैसे ही थी। थोड़े दूर पर मीकरों की काठरियाँ एक खलिहान  
और गानी पड़ा घानाज मीटन का मैदान था—यही उमकी सारी  
जागीर दिग्याई देनी थी। यह सब न सिर्फ गरीबी बचनति और उपला  
की परिचायक थी बल्कि एग सगला था माना पन्थी उन्हाने बचड़े  
दि देरो ही न ह्य ठीक उम पेड़ की तरह जिमकी बड़ें बच्छी तरह  
न बर्मी हा। मेघानात उतर कर तिचे गया। मग्निना वाचना का  
सामने भोजन पर में बैठा थी। वह निचय ही उसका इन्तजार कर  
रही थी। उम ठगस पाउ दुप्रा, कि प्राग्निगारमाव काम पर जा चुका था,  
और पात्रह दिन गरु वापस नहीं आवगा, और माफेनाव घपन मजदूरों  
की दरनाल करने चला गया था। बगिचि मई का महीना बीस रहा  
था और अब थोर्ट जररी काम करने को जा नहीं इगतिग माफेनोत्र ने  
चिना किसी बाहरी महायमा क भाजपत्रा का एक जंगल कातर साक  
करने की योजना बनाई थी, और तबरे गडब ही यहाँ चला गया था।

नगपानाव घपन दिल में एक बज्जीव घबान गी अनुभव पर रखा  
था। उद्वेग की पूर्ति क लिए घमत्त करने में अधिर दर करने की

असम्भवता पर पछली रात बहुत कुछ कहा जा चुका था, कई बार यह कहा गया था कि अब सिर्फ 'अमल करना' ही बाकी रहा है। पर कैसे अमल किया जाय ? किस विधा में, और बिना देर किए किस प्रकार ? यह सब अस्पष्ट था। मधुरिना से इस विषय पर प्रश्न करना व्यर्थ था। उसे क्या करना है, कैसे करना है की कोई धंका ही नहीं थी, उसे क—प्रान्त जाना है बस इतना उसके लिए काफी था। इसके आगे न वह सोच सकती थी और न देख सकती थी। नेज्घानोव नहीं सोच पा रहा था कि उससे क्या कहे ! चाय पीने के बाद अपनी टोपी लगाकर वह मोजपत्र के जंगल की ओर चला गया। रास्ते में उसे खेतों में ख़ाद डालते हुए कुछ किसान मिले जो पहिने मार्कलोव के फार्म पर मजदूर थे। उसने उनसे बातें करनी शुरू कीं लेकिन उसे उनसे कुछ विषेय पता न लग सका। वे भी बके हुए लग रहे थे, पर सिर्फ़ साधारण शारीरिक थम से जैसी थकान वह अनुभव कर रहा था, वैसी बिल्कुल नहीं। उनके कथनानुसार उनका पहिला मानिक अन्धे स्वभाव का सीधा-साधा सा लेकिन अजीब निराशा व्यक्ति है उन्होंने पहिले ही से कह दिया था कि उसका विनाश हो जायगा क्योंकि उसे काम करने का समीका नहीं आता और हर काम को अपने ढंग से करना चाहता है, जैसे उसके पिता-बाबा आदि ने पहिले किया था, जैसे नहीं। लेकिन वह बड़ा चतुर है, और किसी भी प्रकार कोई उसे झूठ भी नहीं बना सकता, लेकिन स्वभाव का अन्ध है। नेज्घानोव आगे बढ़ा और मार्कलोव के पास पहुँच गया।

वह मजदूरों के बीच भिरा हुआ चला जा रहा था। दूर से ही यह अनुमान किया जा सकता था कि वह उनसे बातें कर रहा था और उन्हें कुछ समझ रहा था। उसने निराशा से पूछा मैं अपना हाथ झुलाया जैसे मानों वह निराश हो गया हो ! उसके पीछे उसका सहकारी कारिन्दा था—एक उदास आँसूवाला मौजवान। उसमें अफसरियत जरा भी नहीं लग रही थी। वह कारिन्दा बार-बार कह रहा था,

'हज़ूर जैसा चाहेंगे वैसे ही होगा। इससे उसका मालिक और भी  
 लौक्य रहा था। वह उससे अधिप समानता और स्वतन्त्रता का व्यवहार  
 चाहता था। नेज्दानोव मार्कोलोव के पास गया तो उसने उसके बेहरे  
 पर भी उसी तरह की आध्यात्मिक क्लान्ति का भाव देना, जिससे वह  
 त्रयं पीडित हो रहा था। दोनों ने परस्पर अभिवादन किया। मार्कोलोव  
 एकदम स रात की बहस पर और निकटम्य भ्रान्ति की सम्भावनाधा  
 पर वासने लगा, यद्यपि संक्षेप में ही लेकिन क्लान्ति का भाव उसके  
 बेहरे पर से मढ़ी हटा। वह ऊपर स नीच तक धूल और पसीने से घटा  
 हुआ था सबड़ी की छीमन, और दसदस की हरी सेवार क टुकड़े  
 उसके पपडा से घटके हुए थे उसकी आवाज भारी और भर्राई हुई  
 थी। उसक पास-पास सड़े लोग चुप थे वे कुछ ता आश्चर्य में थे  
 और कुछ उसकी बातों में मजा ले रहे थे। -- नेज्दानोव ने मार्कोलोव  
 की ओर देखा और ओस्त्यानुमोव क शब्द पुन उसने मस्तिष्क में  
 प्रतिध्वनित हा उठे 'क्या पापदा ? इसस कोई अन्तर नहीं पड़ता यह  
 सब कुछ तो बाद में बदलना होगा। एक मजदूर जिसस किसी तरह  
 की कोई गस्ती होगई थी मार्कोलोव से अपना जुमाना कम करने की  
 विनय कर रहा था। पहिले तो मार्कोलोव गुस्से में उबल पड़ा और बड़ी  
 जोर स उस पर चीगा सकिन बाद में उसने उसे माफ कर लिया  
 'इसस कोई अन्तर नहीं पड़ता यह सब बाद में बदलना  
 होगा। नेज्दानोव ने उससे थोड़े और सवारी के प्रवन्ध की बात  
 बही ताकि वह घर वापस जा सके। मार्कोलोव को उसकी इच्छा  
 सुनकर आश्चर्य हुआ, सकिन उत्तर दिया कि शीघ्र ही सब प्रवन्ध हो  
 जायगा।

वह नेज्दानोव के साथ ही घर वापस गया। पकान के मारे  
 वह बसने में सड़खड़ा रहा था।

'तुम्हें हुआ क्या है ? नेज्दानोव ने पूछा।

'मैं थक गया हूँ ! मार्कोलोव ने कहा। उसके स्वर में अपेक्षापूर्ण

सिगरेट पी। नगर की सीमा पर पहुँच कर उसने एक दीर्घ साँस  
छाड़ी।

‘मुझे सर्जोमिखालोविच के लिए दुःख है उसने कहा और उसका  
चेहरा मलिन पड़ गया।

‘वह चिन्ताओं से परत हो गया है,’ नेज्मानोव ने कहा, मेरा स्थान  
है कि उसकी जागीर की हानत बड़ी गड़बड़ बन रही है।

‘इस कारण से मैं उसके लिए दुःखी नहीं हूँ।’

तब फिर ?

‘वह बड़ा दुःखी घावमी है, भभागा। उससे मना घावमी कहाँ मिल  
सकेगा ? लेकिन कोई—कोई उस नहीं चाहता।’

नेज्मानोव ने मशुरिना की ओर देखा। ‘सो, क्या तुम उसके बारे में  
कुछ जानती हो ?’

‘मैं कुछ नहीं जानती पर अनुमान तो हर कोई देखकर लगा  
ही सकता है। अच्छा, नमस्ते अलेक्सी दिमित्रिच !’

मशुरिना बगधी से उतर गई और एक भन्टे बाद नेज्मानोव  
सिप्यागिन के भकान के हाते में प्रवेश कर रहा था। उसकी तबियत  
ठीक न थी। बिना सोए ही उसने पूरी एक रात बिताई थी  
और फिर वह सारी बहस और बात पीत

झिड़की में से एक खूबसूरत मुसड़ा मझका और उसे देखकर  
प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान से खिन्न उठा श्रीमती सिप्यागिन वापसी पर  
उसका स्वागत कर रही थीं।

‘कैसी मजब की घाँसें हैं इसकी ! उसने सोचा।



## बारह

खान पर बहुत स भोग घाये थे। खाने के बाद  
नेज्घानोव उस भीड़ माह में अपने  
कमरे में तिसक गया। वह अकेला रहना  
चाहता था ताकि अपनी यात्रा के प्रभावा पर  
मनन कर सके। भोजन की मेज पर वासेन्सिना  
मिसालोवना ने अनेक बार ध्यान से उसकी  
घोर देखा पर घात करन का अवसर न पा  
सकी। मरिघाना जो उस अप्रत्याशित घटना  
के बाद जिसने उसे इतना दर्मा दिया था,  
अपने स ही सजाई हुई लग रही थी और  
उससे घात नहीं मिला रही थी। नेज्घानोव ने  
कन्सम उठा लिया, उस इच्छा हुई कि वह  
अपन मित्र सिलिन से कागज पर बात-चीत  
करे लेकिन वह नहीं सोच पा रहा था कि  
अपने मित्र से भी यह कह भी तो क्या कहे  
या चायद अनेक परस्पर विरोधी विचार और  
अनुभूतियाँ उसके मस्तिष्क में परस्पर टकरा  
रहीं थीं। उन्हें सुसमझने का उसने प्रयास नहीं  
किया और मित्र को पत्र लिखने का विचार  
दूसरे दिन के लिए टाल दिया। रातों की पाठों

सिगरेट पी। नगर की सीमा पर पहुँच कर उसने एक दीर्घ साँस छोड़ी।

‘मुझे सर्जोमिस्लासोबिच के लिए दुःख है, उसने कहा और उसका चेहरा मसिन पड़ गया।

‘बहु बिन्ताग्रों से पस्त हो गया है,’ मेग्धानोव ने कहा। मेरा क्या है कि उसकी आगीर की हासत बड़ी गड़बड़ चल रही है।

इस कारण से मैं उसके लिए दुःखी नहीं हूँ।

‘तब फिर ?’

‘बहु बड़ा दुःखी भावमी है, भभागा। उससे भला भावमी कहाँ मिल सकेगा ? लेफिन कोई—कोई उसे नहीं चाहता।’

मेग्धानोव ने मधुरिना की ओर देखा। ‘तो क्या तुम उसके बारे में कुछ जानती हो ?’

‘मैं कुछ नहीं जानती। पर अनुमान तो हर कोई देखकर लगा ही सकता है। अच्छा, नमस्ते अलेक्सी दिमित्रिच !’

मधुरिना बग्गी से उतर गई और एक घन्टे बाद मेग्धानोव सिप्यागिन के मकान के हाते में प्रवेश कर रहा था। उसकी तबियत ठीक न थी। बिना सोए ही उसने पूरी एक रात बिताई थी और फिर बहु सारी बहुस और बात-चीत

खिड़की में से एक खूबसूरत मुखवा भूँका और उसे देखकर प्रसन्नतापूर्ण मुस्मान से स्निग उठा। ‘थीमसी सिप्यागिन बापसी पर उसका स्वागत कर रही थीं।

‘कैसी गमब की भाँबें हैं इसकी। उसने सोचा।





## धारह

स्नान पर बहुत स मोय घाय थे। स्नाने क बाद  
नेरुधानाक उस भीड-भाड में अपन  
कपरे में लिसक गया। वह अकेला रूना  
चाहुँठा था, ठाकि अपनी यात्रा के प्रभावों पर  
मनन कर सके। भोजन की मेज पर वासेन्तिना  
मिस्तासोवना न अनेक बार ध्यान से उसकी  
घोर देखा पर बात करने वा अवसर न पा  
सकीं। मरिभाना, जो उस अप्रत्याशित घटना  
के बाद जिसने उस इतना शर्मा दिया था,  
अपने स ही सजाई हुई लग रही थी और  
उसस शक्ति नहीं मिसा रही थी। नेरुधानोव ने  
कसम उअ लिया उस इच्छा हुई कि वह  
अपने मित्र सिमिन स कायब पर बात पीत  
करे, लेकिन वह नहीं साष पा रहा था कि  
अपने मित्र स भी वह कह भी तो क्या सके,  
या शायद अनेक परस्पर विरोधी विचार और  
अनुभूतियाँ उसके मस्तिष्क में परस्पर टकरा  
रही थीं। उन्हें सुनभाने का उसन प्रयास नहीं  
किया और मित्र को पत्र लिउने का विचार  
दूसरे दिन के लिए टास दिया। सानें की पार्टी

में मिस्टर कानोमियेस्सेय भी थे। उसने इतनी अधिक उदङ्गता और घोर घरीफाना घौदस्य पहले कभी नहीं दिखाया था, बितना उस दिन, लेकिन उसकी मन मानी चुटकियाँ और रिमाजों का नेम्बानाव पर कोई असर नहीं हुआ। उसने उन पर ध्यान ही नहीं दिया। वह एक प्रकार के बादल में घँद सा लगता था, जो उसके और बाकी सत्तार के बीच एक घु घस परदे जैसा खड़ा था— और धारपर्यं है कि इस परदे के पीछे वह तीन चहुरा का देव सजता था, और तीना ही स्त्रीया के चहुरे। उन तीना की घासों गिरन्तर उस पर गड़ी हुई थी थीमती सिप्यागिन, मधुरिना और मरिमाना। इसका क्या मतलब था? और केबल यही तीन क्या? उन सबमें क्या समानता थी? और वे उससे क्या चाहती थीं?

वह अन्दी ही सान खला गया पर सान सका। बिचार, उद्भिन्न मलिन विचार उसके मस्तिष्क में घबकर बाट रह थे यद्यपि ठीक पीड़ा जनक नहीं अवध्यम्मायी घन्त, मृत्यु के विचार। वह जाने-पहचाने विचार थे। वह धरसे से उन पर सोच रहा था, कभी बिनास की सम्भावना से काँपते हुए, और कभी इगका स्वागत करते हुए, सगमग उनसे धानन्दित होते हुए। प्राश्निकार उसने घनीव उसेजना का अनुभव किया जिसे वह सूब जानता था। वह उठ बैठा मिलने की मेज पर बैठ गया और, थोड़ा सोचने के बाद, सयमग बिना कुछ बाटा-काँसी किए उसने अपनी पवित्र गुण डायरी में निम्नलिखित कविता लिख डानी—

प्रियबर मेरे मरते समय—

यह मेरी बसीयत है  
मेरी सब कृतियों को जमा कर बसा देना,  
ताकि मेरे साथ ही वे भी मर हो जाय !  
फिर मुझे कृपा से सूब सजाना,  
और मेरे फमरे में श्लेष को माते देना ,

संमोसना का मेरे द्वार पर नियुक्त कर देना,  
 पर उनको सोक संगीत मठ प्रवाहित करने देना !  
 लेकिन धामोद-ध्रमोद के दाणों की तरह,  
 ह्योग्नस सुरोनी घहनाइयाँ बजवाना  
 बिनक ऊपर भूमठी हुई और उनमद  
 बाल्ज की रागिनी मुखर हो ।  
 तब जैसे जैसे मेरे निर्जोष होते कानों में,  
 वह मस्ता मरा संगीत मन्द होता जायगा  
 में भी सन्दासस होकर  
 मृत्यु को प्राप्त होता जाऊँगा ।  
 तुम ध्यर्भ-धिसाप से उस शान्ति का  
 भंग मत करना  
 या मृत्यु के साथ ही प्रावी है ।  
 में अपनी धरती की धानन्दकारी सारियों से,  
 निशामय्य होकर  
 धुपभाप कहीं दूर, दूसरे सोक में  
 प्रस्थान कर जाऊँगा ।

जब उठने 'मेरे प्यारे' शब्द लिखे तब वह सिमिन के वार में सोच  
 रहा था । उसने अपनी कविता गुनगुमाई और यह देस कर धमिठ रू  
 गया कि उसनी कसम य क्या सिन गया । जीवन क प्रति ऐसा  
 धदिस्वार, एसी उपेक्षा एसी धिधनी भनात्या यह सय उसके सिद्वान्ता  
 य कैसे मत राता है ? उसने मार्केन्तोव के यहाँ क्या कहा था ? उसने  
 शायरी में की दरज में फेंक दी और फिर अपने विस्तर पर जा पड़ा ।  
 लेकिन सवेरे क वक्त जब सवा पक्षियों का पहला टोल पीतान  
 धारमान में बहचाटा हुआ उड़ता था रहा था तब कहीं जाकर उस  
 नींद था सकी ।

दूसरे दिन उसने अपनी-अभी पहना समाप्त किया था और विलीवर के कमरे में बैठा था कि श्रीमती सिप्यागिन भीतर आई। उन्होंने आरों और देखा और मुस्कराते हुए उसके पास जाकर उससे अपने कमरे में जाने को कहा। वह एक हलकी नाविक ड्रेस पहने हुए थी, बहुत सादी और बहुत आकर्षक और सुन्दर, उसकी धास्तीमें कोहनी पर झलक के रूप में समाप्त हो गयी थी, एक चौड़ा रिबन उसकी कमर को घेरे हुए था, उसके घने घुँघरासे वाला उसकी गर्दन पर बिखरे हुए थे। उसकी हर चीज से उसके अर्धनिमीलित नेत्रों के दमिस्त बिबेक से, स्वर की कोमल मधुरता से, भावमग्नियों और उसके अस्वने के आकर्षक ढंग से कसणा और सहानुभूतिपूर्ण कोमलता, एक बट्ट पर झुक पड़ने को उठावनी स्निग्धता छलकी पड़ती थी। श्रीमती सिप्यागिन उसे अपने कमरे में ले गई, जो सुन्दर, आकर्षक प्रकाशयुक्त था और जो इस तथा फूलों की सुगन्धि तथा एक सुन्दरी के बस्त्रों की पवित्र साजगी एवं एक सुन्दरी की उपस्थिति से भरा हुआ था। उसने उसे एक धाराम कुर्सी पर बैठाया तब उसके पास बैठ गई और उसकी यात्रा के विषय में और मार्सेलौब के बारे में, अत्यन्त साधक क साध शरारत से और मधुरता से प्रश्न करने लगी। उसने अपने माई के प्रति हार्दिक अगाध प्रणत किया जिसका उसने अब तक नेरधानीव से एक बार भी उल्लेख नहीं किया था। उसके कुछ शब्दों से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि मरिभाना के प्रति मार्सेलौब के भाव उससे छिपे नहीं थे। स्वर कुछ दुखी था... "वाहे इसलिए कि मरिभाना ने उसकी भावनाओं का प्रति उत्तर नहीं दिया, या इसलिए कि उसके माई ने एक ऐसी सड़की को पसन्द किया, जिसके विषय में वह कुछ नहीं जानता और उसे निराश हुई, यह स्पष्ट नहीं हुआ। लेकिन यह तो स्पष्ट था, कि वह निश्चित रूप से नेरधानीव की जीतने का अपने प्रति उसमें विश्वास पैदा करने का और अपने साथ उसके संकोषों को मिटाने का प्रयास कर रही थी। बालेस्विना मिश्रासोबना यहाँ तक बढ़ गई कि उसके बारे में यमल धारणाएँ रखने के लिए नेरधानीव की उसमें झिड़का भी।

नेग्मानोक उसे सुनता रहा, उसकी बाहों को देखता रहा और उसका कंधा का भी, और कभी-कभी उसका गुसावी हाठों को भी और उसने उसका धीरे-धीरे झूमता हुए घुँघराले धासा को भी देखा। दूर में ता वह बड़ा संक्षिप्त सा उत्तर देता रहा वह अपने गल और सीने में थोड़ा भिन्नापन और घुटन का अनुभव कर रहा था 'सकिन धीरे धीरे उस अनुभूति का स्थान एक दूसरी अनुभूति ने स सिया जा बेचैनी पैदा करने वालो ता भी ही, पर मधुर थी। उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसी उद्वितीय सुन्दरी ऐसी कुसोन सुन्दरी उसमें दिसचस्पी सन मोगी, उसमें, जा महज एक बिघारपी है। और यह सिर्फ उसमें दिसचस्पी ही नहीं स रही थी बल्कि मगता था कि जैसे वह उसका थोड़ा-सा प्रेम प्रदर्शन भी करने लगी थी। नेग्मानाव ने अपने स प्रदन किया कि वह ऐसा क्या कर रही है, पर उस काई उत्तर न सूझ, और न वह उत्तर पाने का ऐता इच्छुक ही था। भीमती सिप्यागिन ने कोन्या क धार में बाठों का। उसने नेग्मानोक का यह प्रारबासन भी दिया कि वह तो अपने पुत्र की सिदा पर गम्भीरता स बात करना चाहती है इसीलिए वह स्त्री बच्चा की सिदा क विषय में उसका विचार जानना चाहती है। वह उसने विषय में अक्षी तरह सारी बातें जानना चाहती है। जितना अजामद उत्तरी यह चाहना प्रगट हुई वह किसी को अजीब तो सम सकती है सकिन इसका मूल इसमें नहीं था, जो अभी बालन्धिना मियामोयना ने कहा था, बल्कि इस सत्न में था कि इन्द्रीय सुख की तरंग जैसी किसी भावना न उस अमिनुत कर दिया था जीतने की अदम्य इच्छा, इस हठी व्यक्ति का अपने कदमों पर मिरान की इच्छा उसमें जाग उठी थी

सकिन यहाँ हमें थोड़ा पीछे जाकर याउ का स्पष्ट करना चाहिए। बालन्धिना मिसालोचना एक मूर और अराक निरस्तही अनरस की बेटो थी, जिस अपने पञ्चम वय की शौररी में केवल एक समता और एक बैज मिस गया था। वह यड़ा ही मूढ़ और इस उस की भिङ्गने

बाना मोक्ष कसी था। बालेन्तिना मित्रालोचना अनेक स्त्री शौचों की  
 ही तरह ऊपर से बड़ी सीधी, और मूक सी भी, मोमी भासी थी, और  
 वह यह खूब जानती थी कि किसी से अधिक स अधिक काम कैसे बनाया  
 जा सकता है। बालेन्तिना मित्रालोचना के माता-पिता लाले-पीठे  
 लोग न थे। वह किसी तरह स्मोल्नी कन्वेंट में भर्ती हो गई। वहाँ  
 वह यद्यपि रिपब्लिकन मानी जाती थी, फिर भी उसकी प्रतिष्ठा थी,  
 क्योंकि वह पढ़ने में मेहनती थी और उसका व्यवहार बड़ा शिष्ट था।  
 स्मोल्नी कन्वेंट छोड़ने के बाद, वह अपनी माँ के साथ (उसका भाई  
 देहात चला गया था और पिता की मृत्यु हो गई थी) एक साफ सुपरे  
 सीले फ्लैट में रहने लगी थी। बनने में जब लोग बात करते होते तो  
 उनके मुँह से सौस सीम के मारे भाव सी निकलती दिखाई पड़ती।  
 बालेन्तिना मित्रालोचना हँस कर कहा करती कि यह 'धर्व में रहने  
 जैसा' था। वह गरीबी की सारी मुश्किलों को सहन करने में बड़ी  
 पक्की थी। उसका स्वभाव बड़ा ही अच्छा था। अपनी माँ की सहायता  
 से वह अपने रहन-सहन के स्तर को कायम रखने और लोग स  
 आन-पहँचान बढ़ाने में सफल रही। कुलीन और बड़े लोगों में भी  
 उसके सौन्दर्य, उसके सुभावने शिष्ट व्यवहार और कुसोन वश की चर्चा  
 होती। बालेन्तिना मित्रालोचना के कई चाहने वाले थे। उसने सबसे स  
 सिप्यागिन को पसन्द कर लिया था और यही सरभत्ता से, दीघ्रता से  
 और बड़ी चतुराई से उसे अपने प्रेम में फँस लिया। यद्यपि,  
 निदर्य ही सिप्यागिन ने भी दीघ्र ही यह समझ लिया था कि उसे  
 इससे अच्छी पत्नी नहीं मिल सकती थी। ऊपर से यह चतुर हँसमुख  
 और अच्छे मधुर स्वभाव की थी। किन्तु समस्त वह सहानुर्भावहीन और  
 दूसरा के प्रति उदासीन रहने वाली थी। लेकिन अपने प्रति दूसरों की  
 उपेक्षा और बेव्या के विचार तक को भी वह सहन नहीं कर सकती  
 थी। बालेन्तिना मित्रालोचना के सौन्दर्य में एक आकर्षण था, या एक  
 आकर्षक चहम्पाही की अपनी विशेषता है जिस आकर्षण में न  
 कविता होती है और न सच्ची सद्भावना ही। पर स्निग्धता और

गहामुसृति होती है, और मामूमियत भी। इन आकर्षक ग्रहणियों का  
 बस विरोध नहीं करना चाहिए, यह शक्ति के प्रेमी होते हैं और दूसरों  
 की स्वतन्त्रता का सहन नहीं कर सकते। सिध्यामिना जैसी स्त्रियाँ  
 अनुभवहीन और भावुक स्वभाव के लोगों को उत्तेजित कर देती हैं और  
 फिर उनसे अपना उल्लू सीधा करती हैं। लेकिन अपने लिए ये नियमित  
 और दान्तिपूर्ण सम्बन्धित जीवन पसन्द करती हैं। ऐश्वर्य ऐसी स्त्रियों  
 के बरतम अपने प्राप कृतज्ञता है और वे स्वयं अन्दर से अविषयित रहती  
 हैं लेकिन दूसरों को अपने आनन्द से विषयित करने और उनसे  
 ऐतने ही दृष्टि शक्ति हृदय उनमें बखवती रहती है, जो उन्हें स्वयं  
 को भी सक्रिय और बुद्धिमान व्यवहार कृपास यता देती है। उनकी  
 दृष्टि शक्ति धी-धी बनवान जाती है और उनका जादू इसी दृष्टि  
 शक्ति के बस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। मनजाने अथेतररूप में  
 ऐसी स्त्रियाँ किर्गों जय किसी पवित्र और सात्विक व्यक्ति में प्रवेश  
 करती हैं, ता उसके लिए संयत रहना कठिन हो जाना है। वह इस  
 आशा में इन्तजार करता है कि अथ समय आया, अथ अर्पण विषयनी  
 लेकिन वह स्वच्छ अथ प्रपाय की नीला का ही प्रतिबिम्बित करती  
 रहती है, कभी पिवसती नहीं और न कभी वह उसकी मित्तमिसाहट  
 को ही अस्थिर हावे देग पाएगा।

इस प्रकार का प्रेमाचार सिध्यामिना के लिए कोई महत्ता नहीं पड़ता  
 था। वह मूल जानती था कि उसके लिए कोई रास्ता नहीं था और न  
 कभी हा सकता है। दूसरों की धार्मिक निराशा से पुँधली कर देना और  
 फिर उनमें अथा वेदा करना, दूसरा वे गावाँ को लासता की लतक  
 और धार्मिक की मिली जुली अशुभ्रुति से गुवाथा करना और अशुभ्र  
 देना, दूसरे की आकाश में अथ और अशुभ्रुति वेदा करना, दूसरे की  
 धार्मिक का पोडित करना—आह, यह सब उसकी धार्मिक को कितना  
 मपुर लगता था, कितना प्रिय ! काफी गठ गये, जब यह अपने, पवित्र  
 मीढ़ में अथरी लगी होती है, तब उन अथेतर आहों, हृदय के

उद्गारों, निराश भाँसा और निश्वासों को याद करना उसको कितना सुखद लगता था। कैसी सुखी मुस्कान से वह अपने में ही अपनी अप्राप्यता, अपनी दुर्भेद्यता और अपने अखंड धर्मेश सतीत्व की आत्मा नुसूति के आनन्द में विभोर हो जाती और मोहक उदारता से वह अपने कुसीन पतिके बैच आनिगन में अपने को सौंप देती थी। इस प्रकार की अनुसूतियाँ उसके लिए इतनी सन्तोषप्रद और सुखद होतीं कि कभी कभी वह निश्चित रूप से प्रभावित हो उठती और कोई दयापूर्ण कार्य करने के लिए और किसी प्राणी की सहायता करने के लिए उद्यत हो जाती। एक बार उसने एक दूतावास के एक सचिव के नाम पर, जिसमें उसके प्रेम में पागल होकर अपना यमा काट डालने का प्रयास किया था, एक दानगृह खुलवा दिया था। उसने हृदय से उसकी बीबन रखा के लिए प्रार्थना भी की थी यद्यपि धर्मनाथ शुरू से ही उसमें कम था।

तो उसने मेग्थानोव से बात की और उसे अपने कदमों पर मुकाने की हर मुमकिन कोशिश की। उसने उसे अपना विश्वास पात्र बना लिया, उसने मानो कि अपने आप को उस पर प्रकट कर दिया और वह एक अर्थ-मातृत्व-पूर्ण कोमलता से इस बहुत सुन्दर लगने वाले, दिलचस्प कठोर उम्र नमयुवक अन्तिकारी को धीरे-धीरे और सकुचाते हुए अपने प्रभाव से अभिसूत होते देखती रही। एक दिन में, एक घंटे में, एक मिनट में—यह सब घोमल हो जायगा, कोई चिन्ह भी न बनेगा लेकिन वह फिर भी इसमें आनन्द लेती। यह सब उसे बड़ा मनोरंजक बल्कि कष्टक वल्कि मार्मिक भी लगता। उसके अन्त की बाना का मूल कर और यह सोचते हुए कि जो स्पष्ट जीवन में एकाकी है, वह अजनबियों द्वारा अपने प्रति उनकी रुचि से कैसा आनन्द का और सुख का अनुभव करते हैं वासेन्तमा मिस्त्रालोवना मेग्थानोव से उसको बचपन और परिवार के घारे में पूछने लगी। लेकिन उसके उत्तरे हुए और संक्षिप्त उत्तरों से तुरन्त यह अनुमान करते हुए कि उसने



बड़ी भूल की बासेन्तना मिश्रासावना ने अपनी गसती को मुधारने की कोशिश की और अपना दिम और भी बतुवाई के साथ उसके सामने खोस कर रख दिया जैसे बुपहरी की उनीधी गर्मी में एक पूर्ण विकसित गुलाम अपनी सुगंधित पंगुड़िया को गोवला है, जो पीछ ही रात्रि की स्फूर्ति दायक पीवलता से पुन बन्द हो जाती है ।

जो भी हो अपनी भूल का पूरी तरह स निराकरण करने में वह सफल नहीं हुई । मेग्दानाव का मन छू गया था । वह पहले जैसा आदवस्त अनुभव न कर सका । जैसी बटुठापूर्ण अनुभूती हमेशा उसे हावी थी, जो हमेशा उसके अन्तस्सल का पीड़ित करती रहती थी फिर स जाग उठी । उसकी जनबासी का और आत्मस्तानि जाग उठी थी । 'इस सब के लिए ता मैं यहाँ नहीं आया था' उसने सोचा, पाकिलन की व्यगपूर्ण ससाह उसे याद आ गयी और बुप्पी के पहिने धवसर का ही सान उठा कर वह उठ खड़ा हुआ और घोडा मुक कर अभिषादन करता हुआ बाहर निकल आया । जैसा तो भूर्त्त है मैं । अपने मन ही मन अपने बारे में कहे बिना यह न रह सका ।

उसका संरोष बासेन्तिना मिश्रासावना से छिपा न रह सका लेकिन जिस संक्षिप्त सी मन्द मुतकान से यह उसे बाहर जाते देखती रही, उससे यह अनुमान होता है कि उसके संरोष न उसका घट्ट को बल दिया और उसका भिन्नकर बग जाने को उसने अपनी विजय समझा ।

विसियर्ड के कमरे में मेग्दानाव की भरियाना स भेंट हो गयी । वह अपने हाथा का परस्पर कनकर बांधे हुए, बासेन्तिना मिश्रासावना के कमरे के दरवाजे के पास वाली गिठकी स पीठ टिकाए गमभीन खड़ी था । उसके चेहरें पर कासिमा छाई हुई थी, मरिन उनकी धारें इतना प्रलवायक दृष्टि से देग रही थीं, मेग्दानाव पर इतनी निनिमेप टकटकी बांध देग रही थीं उसका जाग स मिथ हुए होठा पर इनकी विग्स्वाग इतनी अपमानजनक दमा दृष्टिगोपर हो रही थी कि उग देग कर वह स्तम्भ, स्थिर, सक्ते की सी हासठ में गड़ा रह गया ।

आपको मुझसे कुछ कहना है।' धनवाहे वह पूछ बैठा।

मरिआना ने तुरन्त कोई जबाब नहीं दिया। 'नहीं' या 'शायद हाँ', कहना है। लेकिन अभी नहीं।'

'तब, कब?'

'बोड़ा इन्तजार कीजिए। शायद—कल, शायद—कभी नहीं। आप तो जानते ही हैं कि मैं आपके बारे में बहुत कम जानती हूँ।'

'फिर भी', नेज्दानोव ने कहा, मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है, " कि हम लोग—'

'और आप भी तो मुझे भिस्कुस नहीं जानते।' मरिआना ने बीच में बाव काट दी। 'लेकिन, इन्तजार करिए। कल, शायद। अभी मुझे जाना है, अपनी मामकिन के पास। कस तक के लिए ममस्कार।'

नेज्दानोव दो कदम आगे बढ़ा था कि यकायक लौट पड़ा और बोला—'ओ अर, मरिआना बिकेम्पेवना! मैं लगातार आप से पूछना चढ़ाता रहा हूँ "क्या आप मुझे स्कूल बन्द होने से पहिले अपने साथ स्कूल नहीं ले चलेगी सिर्फ यह देखने के लिए कि आप वहाँ क्या करती हैं?'

जरूर लेकिन स्कूल के बारे में तो मैं आपसे बात नहीं करना चाहती थी।

'तब फिर?'

'कस ही' मरिआना ने दोहराया।

लेकिन यह उसने दूसरे दिन पर नहीं टाला। उसी दिन शाम को घागीचे की एक रीस पर जो खदूतरे से बहुत दूर नहीं थी और जिस पर मोड़ के पेड़ लगे थे उसकी और नेज्दानोव की आपस में बात भीत हुई।



## तेरह

वही पहिले उसके पास गई ।

'मिस्टर नेग्दानोव,' उसने अल्सी के स्वर में कहा 'आप पर, मुझे सगठा है, बालेन्विना मिखासोवना ने आदू कर दिया है ।'

और उसकी प्रतीक्षा किए बगैर ही भूम कर आगे बस दी और वह उसकी पीछे-पीछे ।

यह आपने कैसे सोचा ? —उसने थोड़ा रुककर पूछा । 'तो क्या ऐसी बात नहीं है ? घर नहीं है तो फिर आप उसका दायं ठीक नहीं पड़ा । मैं सोच सकती हूँ कि कितनी बतुर्गई से उसने सब काम किया होगा, कितनी सावधानी से अपने छोटे-छोटे आस फैलाए होंगे ।'

नेग्दानोव कुछ नहीं बोला, बस अपने धड़का साथी की ओर टकटकी बंधे देगता रहा ।

'मुनिये' उसने कहना शुरू किया 'इसमें कोई छिपाने की बात नहीं, मुझे बालेन्विना मिखासोवना अच्छी नहीं लगती—और यह आप भी गूब अच्छी तरह जानते हैं । मरी

बात आपकी आश्चर्यपूर्ण लग सकती है लेकिन आप जरा पहले यह ता सोचिए - '

मरिघाना का स्वर टूट गया। उसका चेहरा धमसमा उठा और वह माबुकता से अभिसूत हो उठी। माबुकता में वह हमेशा ऐसी लगती, मानो गुस्से में हो। 'आप शायद अपने से पूछ रहे हों, उसने फिर कहना शुरू किया, 'यह सबकी यह सब मुझे क्यों बता रही है? आपने जरूर यह सोचा होगा, मैं यह समझती हूँ, जब मैंने आपसे कुछ कहा था मार्क्सोव के बारे में?'

वह एकाएक नीचे झुकी, एक छोटा-सा कुत्तरमुत्ता उसने उखाड़ लिया उसके दो टुकड़े किये और फेंक दिया।

'आप सूझ करती हैं, मरिघाना बिबेन्त्येवना' नेग्धानोव ने कहा 'बल्कि बात इसकी ठीक उल्टी है, मैंने सोचा था आप मुझे विश्वासी भावमी समझती है और यह विचार मेरे लिए बड़ा भ्रान्तदायक था।

नेग्धानोव ठीक-ठीक उसी बात नहीं बता रहा था, यह विचार सिर्फ अभी अभी उसके दिमाग में आया था।

मरिघाना ने एकाएक उसकी ओर देखा। तब तक वह निरंतर दूसरी ओर देखती रही थी।

बात इतनी ही नहीं है कि आप पर मैं विश्वास करती हूँ, उसने सोचते हुए कहा 'आप यहाँ बिल्कुल धमनवी हैं, समझे। लेकिन आपकी और मेरी स्थिति बहुत कुछ एक जैसी है। हम दोनों एक से ही खुशी हैं यही हम दोनों को एक दूसरे के नजदीक लाने वाला है।'

'आप खुशी हैं? नेग्धानोव ने पूछा।

'और आप—क्या आप नहीं हैं? मरिघाना ने उत्तर दिया।

उसने कुछ नहीं कहा।

'क्या आप मेरी कहानी जानते हैं?' उसने बल्की से कहना शुरू किया, 'मेरे पिता की कहानी? उनके बेश से निकाल जाने की?—

नहीं ? तो सीजिए मैं बघाती हूँ—कि उन पर अपराध समायामा गया मुकद्दमा चला वे अपराधी ठहरे और उन्हें उनके पद से हटा दिया गया, उसका सब कुछ जप्त कर लिया गया—सब कुछ, और उन्हें साइबेरिया भेज दिया गया। उसका बाद उनकी मृत्यु हागर्द मेरी माँ भी मर गई। मेरे मामा श्रीमान सिप्यागिन न मरी वेल्डमाल की और अब मैं उन्हीं की आश्रित हूँ वे ही मेरे संरक्षक हैं। और वामेन्तिना मिस्लाभावना मेरी संरक्षिका—और मैं इस सबके बदले में उन्हें देती हूँ, अपनी इच्छा कर्माकि मैं सोचती हूँ मेरा दिल बड़ा कठोर है—और दया की रोटी बड़ी कट्टू—और मैं अपमानजनक दया नहीं सहन कर सकती मैं किसी का संरक्षण नहीं सह सकती और मैं अपने भावों को छिपा भी नहीं पाती, और जब तानों की सुइयाँ मुझे चुमोई जाती हैं, तो मैं चीखने से अपने को बस किसी तरह रोक रूठी हूँ क्योंकि मैं गर्बीनी हूँ।

परिधाना इन बे-मेस असम्बद्ध वाक्यों को बोलते समय और भी तेजी से चलने लगी। एकाएक वह एकदम खड़ी हो गई, स्थिर।

‘क्या आप जानते हैं कि मेरी मामी सिर्फ सुभ्रम पिंड छुड़ाने के लिये—मेरी घादी कर देना चाहती है उस फूहड़ घेतान फासोमियसख से ? निसंदेह वह मेरे विचारों को जानती है, उसकी नजर में मैं एक निहिसिस्ट हूँ, धून्यवादी। जबकि वह, मैं उससे लिये आकर्षक नहीं हूँ, आहिर है—मैं गूदसूरत नहीं हूँ, समझे लेकिन हो सकता है मुझे बेच दिया जाय। यह एक और कृपा मेरे ऊपर की जान जानो है, समझे आप।’

तब फिर क्यों नहीं आप नेज्पानोव कहने लगा, लेकिन निम्न गया।

परिधाना ने एक क्षण को उसकी ओर देखा। ‘मैं मार्केसोव का प्रस्ताव क्यों नहीं स्वीकार कर लेती, यही न ? ठीक है, लेकिन मैं क्या

बात आपकी आश्चर्यपूर्ण लग सकती है लेकिन आप जरा पहले यह ता सोचिए

मरिआना का स्वर टूट गया। उसका चेहरा समतल उठा और वह भायुकता से अभिभूत हो उठी। भायुकता में वह हमेशा ऐसी लगती मानो गुस्से में हो। 'आप शायद अपने से पूछ रहे हों,' उसने फिर कहना शुरू किया, 'यह सबकी यह सब मुझे क्यों बता रही है? आपने जरूर यह सोचा होगा मैं यह समझती हूँ, जब मैंने आपसे कुछ कहा था मार्कोलोव के बारे में ?

वह एकाएक नीचे झुकी, एक छोटा-सा कुकुरमुत्ता उसने उठाइ लिया उसके दो टुकड़े किमि और फेंक दिया।

आप झूल करती हैं, मरिआना विकेन्त्येवना' नेग्धानोव ने कहा, 'बल्कि बात इसकी ठीक उल्टी है, मैंने सोचा था आप मुझे विस्वासी आदमी समझती हैं और यह विचार मेरे लिए बड़ा आनन्ददायक था।

नेग्धानोव ठीक-ठीक सही बात नहीं बता रहा था यह विचार सिर्फ़ अभी अभी उसके दिमाग में आया था।

मरिआना ने एकाएक उसकी ओर देखा। तब तक वह निरंतर दूसरी ओर देखती रही थी।

बात इतनी ही नहीं है कि आप पर मैं विस्वास करती हूँ उसने सोचते हुए कहा 'आप यहाँ बिल्कुल अजनबी हैं, समझे। लेकिन आपकी और मेरी स्थिति बहुत कुछ एक जैसी है। हम दोनों एक से ही दुसी हैं यही हम दोनों को एक दूसरे के नजदीक साने बासा है।

आप दुसी हैं? नेग्धानोव ने पूछा।

'और आप—क्या आप नहीं हैं?' मरिआना ने उत्तर दिया।

उसने कुछ नहीं कहा।

क्या आप मेरी कहानी जानते हैं?' उसने अल्बी से कहना शुरू किया, 'मेरे पिता की कहानी? उनके देश से निकाले जाने की?—

मही ? ता खीजिए में बताती हूँ—कि उन पर अपराध लगाया गया मुश्किल था वे अपराधी ठहरे और उन्हें उनके पद से हटा दिया गया उनका सब कुछ बर्बाद कर लिया गया—सब कुछ, और उन्हें साइबेरिया भेज दिया गया। उसके बाद उनकी मृत्यु हा गई मेरी माँ भी मर गई। मेरे मामा श्रीमान सिप्यागिन न मेरी देखभाल की और अब मैं उन्हीं की आश्रित हूँ वे ही मेरे संरक्षक हैं। और बालेन्तिना मिखाइलवना मेरी संरक्षिका—और मैं इस सबके बदल में उन्हें देती हूँ, अपनी इच्छा, क्योंकि मैं सोचती हूँ, मेरा जित बड़ा कठोर है—और दया की रोटी बड़ी कट्टू—और मैं अपमानजनक दया नहीं सहन कर सकती मैं किसी का संरक्षण नहीं सह सकती और मैं अपने भावों को छिपा भी नहीं पाती, और जब तानों की सुइयाँ मुझे चुनोई जाती हैं, तो मैं चीखने से अपने को बच किसी तरह रोकें रखती हूँ क्योंकि मैं गर्वीसी हूँ।’

मरिघाना इन बे-मेल असम्बद्ध वाक्यों का बालते समय और भी तेजी से चलने लगी। एपाएक वह एकदम खड़ी हो गई स्थिर।

‘क्या आप जानते हैं कि मेरी मामी - सिर्फ मुझे पिंड छुड़ाने के लिये—मेरी सारी बर देना चाहती है उस फूहड़ वैतान कासामियेन्सेव से ? निःसंदेह वह मर विचारों का जानती है, उसकी नजरों में मैं एक निहिसिस्ट हूँ, दून्यवाणी। जबकि वह, मैं उसक लिये आकर्षक नहीं हूँ बाहिर है—मैं खूबसूरत नहीं हूँ, समझे, लेकिन हा सकता है मुझे बेच दिया जाय। यह एक और कृपा मेरे ऊपर की जाने वाली है, समझे आप।’

तब फिर क्यों नहीं आप नेग्यानोव कहने लगा, लेकिन किम्बन गया।

मरिघाना ने एक दाएँ हाँ उमरी और बेग्या। ‘मैं माँसोव का प्रस्ताव क्या नहीं स्वीकार कर लेती, यही न ? ठीक है, लेकिन मैं क्या

कर सकती है ? वह गला मादमी है । लेकिन यह गेरी गल्टी तो नहीं है , कि मैं उसे प्यार नहीं करती ।

मरिघाना फिर आगे आगे चलने लगी, शायद वह अपनी इस अप्रत्याशित भावाभिव्यक्ति का उत्तर देने के संकोच से अपने साथी को बचाना चाहती थी ।

दोनों सड़क के छोर पर पहुँच गये । मरिघाना तेजी से एक सफरी बगर पर मुड़ गई, जो देवदार के घने पेड़ों के बीच से होकर जाती थी, और उस पर चलने लगी । नेग्बानोव ने मरिघाना का अनुगमन किया । वह इस वृहती आकुलता के प्रति सचेत था , वह बड़ा आश्चर्य कर रहा था कि यह क्षमीशी नहकी एकाएक उससे इतनी मुठ कैसे गई और उस उस बात पर तो और भी आश्चर्य हो रहा था कि उसे उसका यह मुलापन अभीब नहीं लग रहा था, बल्कि स्वानाबिक लग रहा था ।

मरिघाना एकाएक घूमी और बीच रास्ते पर घपस खाड़ी हो गई ऐसे कि नेग्बानोव का मुँह उससे सिर्फ एक गज के फाससे पर रह गया और वह उसके चेहरे पर घाँसे गढ़ाये एकटक उसे देखती रही ।

अलेक्सी दिमित्रिच' उसने कहा 'यह मत समझियेगा कि मेरी मामी बुरे स्वभाव की है । " नहीं ! यह सय शोखा है, वह एक एक्ट्रेस बनती है, चाहती है कि सब कोई उसके सौन्दर्य के प्रदर्शक हों और उसके संतपन के पुजारी बन जायें । वह कुछ सहानुसूतिपूर्ण वाक्य गढ़ लेती है, उन्हें एक ब्यक्ति से कहती है, और सब उन्हीं को दूसरे से बुरहा देती है और फिर तीसरे से और हमेशा एक ही भावुकता से, जैसे उसे यह अभी-अभी सोचा हो और ठीक तभी वह अपनी आश्चर्यजनक जादूगर धाँजा का प्रयोग करती है । वह अपने को खूब समझती है , वह जानती है कि यह एक पैवीभूति जैसी है, और वह किसी की परबाह नहीं करती ! यह बनती है कि वह हमेशा कोत्या के बारे में चिंता करती रहती है, लेकिन वह



सिर्फ विद्वानों से उसके बारे में बात करती है और कुछ नहीं। वह किसी का पुरा नहीं चाहती। वह यही उदार और परापूर्वकारी है! लेकिन उसके सामने ही तुम्हारी कोई हठी हठी ताड़ दे उसके लिये कुछ नहीं। वह तुम्हें यजाने के लिये अपनी एक उंगली भी न उठायेगी। लेकिन यदि उससे उसका कुछ जान है तब 'ओह तब क्या कहने!'

परिभाषा बालते-बालते खन गई उसका गुत्सा उस बेचैन बन रहा था। और उसको गला भरती गया था उसने शोध को उगल बालने की सोची, वह अपने को राक न सकी लेकिन उसने चाहते हुए भी उसकी वाणी उसका साथ न दे सकी टूट गई। परिभाषा दुखी जागा था एक विशेष धन को भी (रुस में ऐसे सागा से राह चलते भेंट हो सकती है) न्याय उन्हें सन्तुष्ट तो करता है, पर उनके हृदय को फिर से पूरी तरह शान्त नहीं कर सकता जबकि प्रायः जिसका समझने में व यज्ञे उत्सुक और खेन हाते हैं उनकी नम-नस में घिटाह उत्पन्न करता है। जब वह यात्र कर रही थी सा नेघानाव गौर से उसका तमतनाए हुए मुझसे को देख रहा था, उसके मुग पर उठा घाटे-घाटे बाल कुछ इमर-उधर बिसरे हुए थे उसका पतल हांड उतारना स फड़फड़ रहे थे, उस सागा जैसे यह घय उसे धमना रहे हा और उसकी इस मुग मुद्रा का उस पर अर्धपूर्ण और नु-र प्रभाव पड़ा। पेड़ को टहनिया व धन जास स खन पर सूर्य का प्रकाश तिरछी सुनहली रेखा क न्य में उसकी गोंह पर पड़ रहा था और धाग की सपलपाती जीभ उमके यमूके बेहरे की उतवनापूर्ण नंगिमा की उसकी विस्तारित टाटकी बांध चमकती घागों की, उसकी यौली व फलित स्वर्ण की प्रतीक सी लग रहा थी।

न-चांगोय न मास्तिरवार उससे पूछा, बालो, आप मुझे दुखी क्या कहती हैं? क्या यह सम्भव है कि आप मेरे इस जीवन व बारे में कुछ जानती हैं।

मरिभाना ने स्वीकारोच्छि में सिर हिलाया और कहा—  
'हाँ ।'

'तो आपको कैसे मामुम हुआ ? किसी स मरे घारे में  
आपकी बातें हुई थीं ?'

'मैं जानती हूँ आपके जन्म के घारे में ।'

'आप जानती हैं किसने बताया आपको ?'

'क्यों ! आपकी उसी बालेन्तिना मिखालोवना ने जिसने आप पर  
इतना जादू कर दिया है । वह मेरी उपस्थिति में कहने में चूकी नहीं,  
उसने बड़ी सापरवाही से, जैसा उसका अपना तरीका है, सफ़िन साफ़-  
साफ़—सहानुभूतिपूर्वक नहीं, बस एक उदार व्यक्ति के रूप में जो अपने  
को इन तमाम आग्रहों से ऊपर समझता है—कि निश्चय ही, अपने नये  
शिक्षक के जीवन में एक दिग्गजत्व घटना है । आश्चर्य मत कीजिए  
रूपया । बालेन्तिना मिखालोवना विल्कुल ठीक ऐसे ही अपनी भाँजी के  
जीवन के दिग्गजत्व सत्य को भी हर आगन्तुक स बतलाती है उसका  
पिता रिस्वत लेमे के अपराध में साइबेरिया भेजा गया था । वह भस ही  
अपने को एक अमिबातीय समझे—पर वह सिर्फ़ एक पीठ पीछे चुपचाप  
करने वाली चुगलखोर है, और बनती है, बड़ी देवी ।'

साफ़ कीबिएगा, नेग्घामोव ने कहा, वह 'मेरी' क्यों हैं—'

मरिभाना एक ओर घूमी, और फिर रास्ते पर चलने लगी ।

आपकी उससे इतनी देर तक चुप घुस कर बातें बो हुईं, उसने  
मारी गले से कहा ।

'मैंने तो शायद ही एक शब्द कहा होना', नेग्घामोव ने उत्तर दिया,  
'वही अकेली सारे समय बात करती रही ।'

मरिभाना बिना कुछ बोले चलती गई, लेकिन यही पर रास्ता एक  
ओर को मुड़ा, देबदार बुर तक फैले हुए थे उनके आगे एक मैदान था,  
जिसके बीच में एक पोसा मोरूपत्र का पेड़ था और उस पुराने पेड़ को

बैठे हुए बैठने की एक सीट बनी हुई थी मरिघाना उम सीट पर बैठ गई, नेज्जानीव भी उसकी बगल में बैठ गया। उसकी छोटी-छोटी हरी पत्तियों से लदी सन्वी नटकनी टहनियाँ दोनों के सिरा पर भूम रही थीं, उनके चारों तरफ हरी घास के बीच सफ़्त अंगली फूल झोमिल रहे थे और ठाजी हरी घास की सुगन्ध आता और फैल रही थी, जा देबदार की तीसरी गंध क बाव बड़ी मधुर और सुन्दर लग रही थी।

‘आप मेरे साथ यहाँ का स्नूस् देखने चलना चाहें वे मरिघाना ने कहना शुरू किया। ता चलिए, हम लाग वसें सिर्फ मैं नहीं जानती। आपको बाई विनोप खुशी न हागो। आपने तो मुना ही है कि हमारे प्रधान अध्यापक छांट पादरी हैं। वह आदमी तो अन्ध स्वभाव क हैं, लेकिन आप अनुमान नहीं लगा सकते कि अपन विप्या से वह क्या-क्या बातें करते हैं। उनमें एक लड़का है। उसका नाम है गार्डी। वह अनाथ है। दस मास की उमर है अभी उसकी पर आपका चाखुब हागा यह हर बात समय जल्दी सीखता है।’

बात बीच के बिपय का एकाएक बदलने में, ऐसा लगता था कि मरिघाना ने अपने को बिस्कुल बदल लिया हो। वह प्राय पीली और पाल्त होगई थी और उसके चेहरे से उलम्न का भाव प्रगट हो रहा था जैसे वह उस सब के लिए, जो कुछ उसने अभी पहिले कहा, तार्म रही हो। वह चाहती थी कि नेज्जानीव किसी बिपय पर, स्नूस्ता या फिर मिन्नाता क बिपय पर ही उससे कुछ भी बात करे, ताकि वे साथ स्वस्थ स्पर में बातें कर सकें। लेकिन उस समय वह किसी ‘यम्भीर बात’ करम के मूड में नहीं था।

‘मरिघाना विकल्पेबना उसने कहना आरम्भ किया ‘मैं आपस गुसकर बढूंगा। जैसा जो कुछ अभी अभी हमारे बीच हुआ है उसरी मुझे स्पन् में भी आगा न थी। (‘हमा है’ शब्द पर मरिघाना ने उमपी और गौर से देगा।) ‘मैं समन्ता हूँ, हमलाग परम्पर, एनाएक बड़ ही बड़े पनिष्ट हो गए हैं। और एसा तो होना ही

या। हम लोग धरसे से एक दूसरे के निकट घाते जा रहे थे। वस उसे हम लोगों ने वाणी नहीं दी थी। और इसीलिए मैं भी, बिना किसी सहाय के आपसे बात करूँगा। इस घर में आपका जीवन दुखी और दूबर हो रहा है, यद्यपि आपके मामा, यद्यपि उनकी भी सीमाएँ हैं, फिर भी, जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, उनमें इन्सानियत है। क्या मेरा कहना गलत है? क्या वह आपकी स्थिति को समझकर आपका साथ न देंगे ?

‘मेरे मामा ? पहिले तो वह मनुष्य ही नहीं हैं, नाम को भी नहीं वह एक पदाधिकारी है—सिनेट के सदस्य या मिनिस्टर मैं नहीं जानती। और दूसरे मैं घर में ही किसी की सहायता और सुराई नहीं करना चाहती। मैं यहाँ बिल्कुल भी, दुखी नहीं हूँ, कहना चाहिए कि मैं यहाँ किसी भी तरह नहीं सताई जाती, मेरी मामी के वह छोटे-मोटे ताने बस्तुतः मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ते मैं बिल्कुल आजाद हूँ।

मेज्दानोव ने भौंभका सा हा मरिमाना की ओर रखा।

तब तो फिर जो कुछ आपने अभी मुझे बताया

‘आप मुझ पर हँसना चाहें तो हँस सकते हैं, पूरी आजादी है, उसने जल्दी से कहा, ‘लेकिन अगर मैं दुखी हूँ—तो अपने दुख के लिए नहीं। मुझे कभी कभी ऐसा लगता है कि मैं दुखी हूँ तमाम सहाय हुए लोगों के लिए रूस के उन हीन हीन गरीबों के लिए नहीं मुझ पर कोई दुख नहीं, यद्यपि मुझे गुस्सा है—मेरे अन्दर उनके लिए विद्रोह की भावना मरी हुई है मैं उनके लिए, मैं अपनी जान तक देने का तैयार हूँ। मैं दुखी हूँ क्योंकि मैं एक बवान स्त्री हूँ—पराए आधीन हूँ, और मैं कुछ कर नहीं सकती—मैं कुछ कर सकने के योग्य नहीं। अब मेरे पिता साइबेरिया में थे, और मैं माँ के साथ मास्को में छोड़ दी गई थी—आह मैं उनके पास जाने का कितना तड़फड़ाई थी। इसलिए नहीं कि मैं कोई उनसे बहुत अधिक प्रेम और उनको भजता

करती थी—वल्कि मुझे वही उत्कट इच्छा थी यह जानने की कि अपनी माँओं से देखूँ कि कैसी कैसा जीवन व्यतीत करते हैं और मुझे अपने स और उन सब सागा स जो धाराम का जीवन व्यतीत करते हैं, छाते-पोते सागा से किसनी गतानि होती थी। और बाद में, जब वह वापस आए निराग, कुबले हुए और अपने को अपमानित करने लगे अपने का पीडा बन गये 'ओह' 'किसना कठोर था वह सब ? मरने की किसनी कोशिश की उन्होंने और मैं उन्होंने भी। और मैं मैं एकदमी रह गई किस लिए ? यह अनुभव करने के सिद्ध कि मैं धमगा है कि मैं कृतघ्न है, कि मैं किसी योग्य नहीं कि मैं कुछ भी नहीं कर सकती—कुछ भी नहीं—किसी के लिए भी नहीं।'।

मरिघाना ने दूसरी ओर मुँह कर लिया। उसका हाथ बेंच पर सरक गया था। नेग्मानोव उसक लिए बड़ा अघित अनुभव कर रहा था, उसने उसके हाथ पर अपनी उँगली स एक ठोंका दिया लेकिन मरिघाना ने अपना हाथ तुरन्त सीध लिया, इसलिए नहीं कि नेग्मानोव का ऐसा करना उस अनुचित लगा वल्कि इसलिए कि वह कहीं—ईश्वर न करे। वह यह न साबने लग कि वह उसकी सद्गानुभूति चाह रही है।

देवदार क झुरझुरा में से एक स्त्री क वस्त्रों की क्लमक मिली।

मरिघाना तुरन्त सन्हस गई। देवा ! आपको मेडोना देवी ने हमार पीस अपना सी० आई० डी० मेजा है। यह नीकतनी मरे अजर मजर रराने क लिए और अपनी मातकिन को मेरी खब दन के लिए नियुक्त है कि मैं कहीं है और किस क साथ है। मते मामी न सम्भवत अनुमान कर लिया है कि मैं आपक साथ है, और वह इसे अनुचित समझती है, और साथ हीर स उस मार्मिक दृश्य से बाद, जिसका प्रदर्शन आपके पास वह अभी कर रही थी। अब हम लोगों को वापस बसना चाहिए। बसिए, परों।

मरिघाना उठ कर लड़ा हाथ, नेग्मानोव भी। मरिघाना न

उसकी घोर देखा, और एकाएक उसके चेहरे पर एक भाव खेलने लगा, लगभग बचकाना, भावपक, कुछ-कुछ मजीला ।

‘आप मुझ से नाराज तो नहीं हैं ? कहीं आप यह तो नहीं सोचते कि मैं भी आप से दिखावा कर रही हूँ । नहीं आप ऐसा नहीं सोचते ।’ और नेज्जानोव के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही आगे बोली ‘आप मेरे जैसे ही बुरी हैं, और आपका स्वभाव भी बुरा है, मेरा ही जैसा । कल हम लोय साय-साय स्कूम बसेंगे क्योंकि अब हम दोनों दोस्त हैं, क्यों, ठीक है न ।

जब मरिघाना और नेज्जानोव घर के पास पहुँचे तो वामेन्तिना ने ऊपर छप्पे पर से उन्हें गुप्त दुरबीन से देखा, और हमेशा की सी मधुर मुस्कान के साथ उसने धीरे से अपना सिर हिलाया, और तब क्षीणे के दरबाजे में से होकर, ड्राइंगरूम लौटते हुए—जहाँ सिप्यागिन पहिले से ही एक पोपने पड़ोसी के साथ जो चाय पीने आया था बैठा हुआ था उसने सुनसुनाते हुए, पर एक एक शब्द को धसग धसग बोझते हुए कहा ‘इस रात की हवा कितनी सीसी है ! यह बड़ी खतरनाक है !

मरिघाना ने नेज्जानोव की घोर देखा और सिप्यागिन ने जो अभी अभी अपने पड़ोसी से एक ग्लान्ट घीता था, पहिले तो अपनी पत्नी पर ऊपर से नीचे तक एक सञ्ची रीखीसी (मन्त्री पद के गौरव के सर्वथा उपयुक्त) दृष्टि डाली और वही उपेक्षापूर्ण, उनीदी, सेफिन पैनी दृष्टि उसने उन दोनों तरुणों के जोड़े पर डाली, जो धीरे धाय में से सीधे बले आ रहे थे ।



## घोरह

एक पलबारा बीत गया। हर काम पूर्ववत् एक ही निश्चित व्यवस्था से चलता रहा। सिप्यागिन ने सब जागा का सारे दिन का काम-काज अगर एग मिनिस्टर को तरह नहीं, वो कम-से कम एक विभाग के संचालक को तरह ही सही व्यवस्थित कर दिया था। यह सब करते समय उसका स्वभाव वैसा ही गर्वोन्नत मानवीय घोर कुछ-कुछ उपेक्षापूर्ण बना रहा। काल्या नित्य निश्चित समय पर पढ़ता अनाबहारोचना उसी तरह अपने दमित श्रेय से उत्तेजित बनी रही प्रागन्तुक भी घाए गप्प उड़ाई गई ताज खते गए और प्रगट रूप से जोई उकताया नहीं।

वामन्तिना मिरामानाजना उसी तरह मेजघानाव से अपने का बहुलार्ती रही। यजपि उसके मधुर अमहार में घोड़ा तीस्तापन प्रागया था। मरिमाना और मेजघानाव का सम्बन्ध अधिकाधिक प्रगाढ़ होते गए और नेघानाव ने आश्चर्य से इस बात पर ध्यान दिया कि मरिमाना का स्वभाव भी यही मधुर है और

यह हर किसी विषय पर बिना किसी उत्तेजनापूर्ण विरोध के बुलकर बात कर सकती है। वह उसके साथ दो बार स्कूल गया, यद्यपि पहली बार जाने पर उससे यह अनुभव कर लिया था कि वहाँ उसका कोई उपयोग नहीं हो सकता। आदरणीय पादरी ने सिप्यागिन के निर्वेद्य से स्कूल पर पूरी तरह अधिकार जमा रक्खा था। यह योग्य पादरी बच्चों को भली प्रकार लिखना-पढ़ना सिखाता था, यद्यपि पुराने ढंग से, लेकिन परीक्षा में बड़े प्रजीव सवाल पूछता, जिसके लिये, एक दिन उसने गार्सी से पूछा, "आकाश क जल" की तुम कैसे ब्याख्या करोगे, इस प्रश्न का उत्तर उन्हीं योग्य पादरी के आदेशानुसार गार्सी को देना था, 'वह अवगुनीम है।

और फिर, वह स्कूल जैसा कुछ भी था छोड़ ही—गमियों के लिये शरद ऋतु तक बंद हो जाता था। नेग्बानोव ने पाकिस्तान और दूसरों के कथनानुसार किसानों से भी दोस्ती करने की कोशिश की लेकिन छोड़ ही यह समझ लिया कि जहाँ वह अपने भरसक उनका अभ्ययन कर रहा है, प्रचार का काम बिल्कुल भी नहीं। उसने सगमग अपना सारा जीवन शहर में ही बिताया था, और उसके तथा शमीण जनता के बीच एक ऐसी खाई थी, जिसे वह पार नहीं कर सकता था। पियकफड़ किरिस से उसकी कुछ बातें हुई और मैग्जने से भी, लेकिन, कहते हुए आश्चर्य होता है, कि वह उनसे डरता था और सामान्य रूप से चीजों के बारे में बुरी भली संक्षिप्त सी आलोचना के अतिरिक्त वह उनसे और कुछ नहीं पा सका। फ़्लेव नाम के एक दूसरे किसान ने उसे बिलकुल सकपका ही दिया। इस किसान के घरे पर आसाधारण छवि थी, ठीक एक डाकूओं के सरदार की सी। 'वह जरूर कोई डकैत होगा,' नेग्बानोव ने सोचा। लेकिन फ़्लेव एक दिन और उपेक्षित निकला। उसकी जमीन छीन सी गई थी, क्योंकि वह—एक स्वस्थ और निश्चित रूप से एक शक्तिशाली आदमी होते हुए भी—काम नहीं कर सकता था।



मैं नहीं कर सकता !' फिलेव सिसकता, बराहूता घीर एक दीर्घ निस्वार्त छोड़ता हुआ कहता , मैं काम नहीं कर सकता ! मुझे मार डालो ! बरना मैं स्वयं धारमहत्या कर सूंगा। घीर अंत में भीख माँगता हुआ अपनी बात समाप्त करता— एक पैसा, रोटी के टुकड़े के लिये ।'— उसका चेहरा ठीक रिनाल्डो रिनाल्डिनी के किसी चित्र जैसा लगता !

कारखाने के मजदूर भी नेज्दानोव के लिए किसी उपयोग के न थे । यह सब लोग या तो मरकर रूय से मस्त-मौला घीर मन-मौजी थे या मर्यादित रूप से सुस्त —नेज्दानोव की उनके साथ जरा भी पटरी नहीं बैठ पाई । उसने अपने मित्र सिस्तिन को इस विषय पर, अपनी असमर्थता घीर अयोग्यता की कटु आलोचना करते हुए घीर अपनी दिशा घीर कलात्मक स्वभाव पर लीमते हुए एक सम्या पत्र लिखा । एकाएक यह इस परिणाम पर पहुँचा कि प्रचार कार्य में यह धोखेवर नहीं लिखकर ही भाग ले सकता है । लेकिन उसके पत्रों की योजना भी जो कार्यान्विति नहीं हो पाई थी । यह पागल पर जो कुछ भी लिखता, उसे ऐसा अनुभव होता कि यह सब गलत है, अव्यवहारिक है, धनापदी भाषा में है । घीर दो-दो बार उसने अपने धापको अनजाने ही पद्य में अथवा सदिग्ध व्यक्तिगत उपास में मटकते हुए पाया ! घीर उसने यह सब निश्चितरूप से मरिधाना को बता भी दिया । यह उन दोनों के परस्पर अद्भुत विस्वास घीर अस्तरग प्रगाढ़ता का सक्षण था । 'घीर उस उसमें भी तय्यारवता पाकर फिर आश्चर्य हुआ अपनी साहित्यिक रचि के प्रति ता नहीं बलिय उस मैतिक व्याधि के प्रति जिससे यह पीड़ित था और जिससे यह भी परिचित थी । जितना ही वह बसा प्रेमी था उतना ही मरिधाना उनसे दूर थी, फिर भी उसने माने लोव स इगीनिये वाली नहीं की पि उसमें कलारमक स्वभाव का धिन्ह भी न था । मरिधाना का स्वयं हमको स्वीकार करने का साहस नहीं था , तपिन हम जानते हैं कि यही जो हमारे मन में हमसे हो चुपा रहता है , यही हममें सबसे बलवान होता है ।

सिप्यागिन ने बड़े रौब के साथ निघड़क नेज्घानोव का पक्ष लिया, चालेन्तिना मिस्सालोवना ने भी अपने पति का साथ दिया, यक्षा जहारोवना उधर से कोल्या के ध्यान का हटाने के प्रयास में लयी रही और अपनी टोपी के नीचे से समी पर गुस्स भरी भाँखों से देखती रही, मरिघाना ऐसे बैठी थी, जैसे पत्थर की मूर्ति हो।

लेफिन एकाएक नाबिला का नाम लगभग बीसवीं बार सुनते ही, नेज्घानोव एकदम उबक पडा और मेज पर खोर से धूसा मारते हुए चीसकर बोला 'क्या ही अशुद्ध प्रमाण है! जैसे कि मानों हम जानते ही न हों कि यह सादिला कौन प्राणी है! वह अपने जन्म से ही एक वर सरीव कठमुस्ता पालतू है, और कुछ नहीं!'

'हैं एं एं तो' — तो यह बात है, कालोमियेस्तेब गुस्से से काँपते हुए मनमनाया तो इस तरह आप उस व्यक्ति के बारे में भोछी बातें करते हैं जिसे नबाब (काउन्ट) ब्लेजे क्रम्फ और राजकुमार कोविग्निहकिन जैसे महान व्यक्तियों का सम्मान और विश्वास प्राप्त है।

नेज्घानोव ने अपने कंधे मिचकाए। 'भोह, नि-सन्देह बहुत बड़े लोगों का—राजकुमार कोविग्निहकिन का—वह आपकूस बर्दीघारी चपरासी—'

'सादिला मेरा मित्र है', कालोमियेस्तेब ने खोर से चीसते हुए कहा, वह मेरा साथी है और मैं

'तब तो आपके लिए और भी बुरा है', नेज्घानोव ने व्यंग किया, 'इसके तो यह मानी है कि आपके भी वही विचार हैं, और मेरा कथन आपके लिए भी सही बैठता है।

कालोमियेस्तेब गुस्से से काँप उठा।

'क्या या या, आप आप हैं सते हैं! आपको आपको, अपनी मासूम हों, !

'क्या माहूम हो जायगा ? आप क्या कर लेंगे मेरा ? नेज्दानोव ने व्यग्रापूर्ण चित्तवृत्ता के साथ हुवाग उमकी बात धीब में काटी ।

बुद्ध नहीं कहा जा सकता था कि दोनों क बीच का यह भगड़ा कैसे समाप्त होता अगर सिप्यागिन ने भगड़ा ज्यादा बड़ने से पहिले उसे रोक न दिया होता । ऊँची आवाज करके और अधिकारपूर्ण स्वर में जिसमें कहा नहीं जा सकता कि राजनीतिज्ञ की अधिकार भावना थी प्रथम घर क स्वामी की सिप्यागिन ने शान्त किन्तु अधिकारपूर्ण प्रभावशाली भाषा में कहा कि वह अपनी मेज पर इस तरह का भगड़ा सहन नहीं कर सकता, उसने बहुत पहिले से ही अपनी नियम बना रखा है (उसने अपनी भूल ठीक की—पवित्र नियम)—कि हर तरह के विचारों का आदर करना चाहिए, लेकिन बह बहे जाने चाहिए (उसने अपनी कोमली अँगूठी वाली उँगली उठाकर कहा) संयत, संयमित और सहिष्णु भाषा में । एक ओर तो वह नेज्दानोव की उदबुध भाषा की मने ही वह कितनी ही शम्भु क्यों न हो, निन्दा किए बिना न रह सका और दूसरी ओर विरोधी विचारों के सोंगों पर कालोमियेस्सेव के कट्टे दोषारोपण से भी जो मने ही कितने भी अन्याय के हित से प्रेरित हो, सहमत न हो सका ।

'मेरी छत के नीचे', उसने अपनी बात का अन्त करते हुए कहा 'सिप्यागिन परिवार की छत के नीचे न बिश्रोही हैं और न पालतू कठमुल्ले, सिफ उम्ब अन्दे विचारों के सोंग हैं, जो जब एक दूसरे के विचारों की समझ में हैं, तो निश्चिन्त रूप से हाथ मिलाए बिना नहीं रह सकते ।

नेज्दानोव और कालोमियेस्सेव दोनों ही शान्त हो गए, लेकिन बाना ने ही आपस में हाथ नहीं मिलाए, अभी उन दोनों के परस्पर भेद का समय नहीं आया था, बल्कि इनके विपरीत उसनी अधिक पारस्परिक पूजा उन्होंने पहिले कभी नहीं अनुभव की थी । भोजन आयन ही अचानकपूर्ण और उत्तेजनामय चुप्पी में समाप्त हुआ । सिप्यागिन ने एक इन्तनीतिज्ञ घटना सुनाने का प्रयत्न किया, लेकिन

प्राथे पर ही निराशापूर्ण उवासी से कहना बन्द कर लिया। मरिमाना एक टक अपनी प्लेट पर ही ध्यान गड़ाए रखी। नेज्जानोव के प्रति उसकी बातों से जो उसके हृदय में हृमदवी का भाव उत्पन्न हुआ था, उसे उसने प्रगट करने का प्रयास नहीं किया—फायरता के कारण नहीं, शोह नहीं। बल्कि इसलिए कि थोमती सिप्यागिन के सामने वह अपने भावों को प्रगट नहीं करना चाहती थी वह देख रही थी कि उसकी धार-धार हो आने वाली पैनी आँखें निरन्तर उस पर और नेज्जानोव पर ही बनी हुई हैं। पहिले तो नेज्जानोव के एकाएक बोश में आ जाने से उस चालाक तीखी फिमियाँ कसने वाली महिला को आश्चर्य हुआ था, फिर एकाएक जैसे वह चकाचौंध में पड़ गई हो, बुदबुदायी। आह! उसने एकाएक अनुभव किया कि नेज्जानोव, जो अब तक उसकी पकड़ में था अब उससे दूर हटता आ रहा है। तो बरकर कुछ होगया है क्या मरिमाना इसका कारण है? हाँ, निश्चय ही मरिमाना है नेज्जानोव ने उसे आकर्षित कर लिया है हाँ, और वह - ।

'कुछ करना होगा', उसने अपने विचाराधार का निष्कप निकाला। उधर कालोमिमेत्सेव क्रोध से धुटा आ रहा था। अब वह दो घण्टे बाद ताश खेल रहा था, अब उसके 'पास!' या 'मैं घोलता हूँ।' फपनों में उसने दुखी मन की गूँज थी। उसके स्वर के मारीपन और कम्पन से उसकी आहत भावनाओं को जाना जा सकता था, हालाँकि वह अपने को 'उन सब से ऊपर' प्रगट कर रहा था! इस गटना से बेवस सिप्यागिन ही सचमुच निश्चित रूप में आनन्दित लगता था। उसे उठती हुई आँधी को घान्त करने में अपनी भाषण शक्ति और अपना प्रभाव प्रकट करने का अवसर मिला गया था वह सैटिन जानता था और वजिस के 'क्या आई है?' से वह परिचित था। उसने सफ़ान को घान्त करने में जानबूझ कर बरकर से अपनी तुलना तो नहीं की लेकिन एक सहानुभूति के साथ उसका स्मरण तो किया ही।



## पद्रह

अक्सर मिलते ही नेग्घानोव अपने कमरे में चला गया। वह किसी से नहीं मिलना चाहता था किसी से भी नहीं सिवाय मरिघाना के। मरिघाना का कमरा उसी सभ्ये यरामदे के कमरे में था जो उपरी मंजिल को दो भागों में बाँटता था। नेग्घानोव सिर्फ एक बार ही उनके कमरे में गया था और वह भी पोलो देर के लिए लेकिन उसे ऐसा लगा कि अगर वह फिर उसका दरवाजा पटपटाएगा, तो वह सुरा नहीं मानेगी और चापद वह मृदु भी उससे बात करना चाहती थी। देर काफी हो गई थी, लगभग दस बजे थे। नोजन पर जो इत्य उपस्थित होगया था उसके बाद सिप्यागिन और थीममी सिप्यागिन ने उस छेड़ने की आवश्यकता नहीं समझी और वे शोग घय भी बालोमियेलोव के साथ तारा रोम रह थे। बालन्तिना मिग्घानोयना ने, दो बार मरिघाना के बारे में जरूर पूछा, क्योंकि वह भी नाजन ममात होने के बाद से गायब होगई थी।

'मरिघाना विवेकत्येवना कहाँ है ? पहिले तो उसने स्त्री भाषा में और तब फ्रेंच भाषा में पूछा, किसी को कास तौर से संबोधित करके नहीं लेकिन घामद दीबासों से, जैसा कि लोग प्रायः अस्पष्ट आश्चय की स्थिति में करते हैं, लेकिन तुरन्त ही वह भी खेस में व्यस्त हो गई।

नेजधानोब ने एक-दो बार अपने कमरे में ही इधर-उधर चक्कर काटे और तब वह पराम्दे में होकर मरिघाना के कमरे की ओर गया और धीरे से दरवाजे पर दस्तक दी कोई उत्तर नहीं आया। उसने फिर एक बार दस्तक दी, दरवाजे को देखा ऐसा लगा कि वह बन्द है। वह अभी सौटकर अपने कमरे में मुश्किल से पहुँच कर मेज पर बैठा ही था कि उसका दरवाजा धीमे से चरमराया और मरिघाना की आवाज सुनाई पड़ी।

'असेकसी दिमिप्रिच, क्या आपने अभी मेरा दरवाजा छटबटाय था ?'

वह तुरन्त उठकर खड़ा होगया और खपक कर बराम्दे में गया मरिघाना दरवाजे पर हाथ में एक पलठी मोमवती लिए निस्तेज सि लकी थी।

'हाँ मैं ' वह फुसफुसाया।  
 'आपो', उसने उत्तर दिया और बराम्दे में होकर आगे बढ़ी लेकिन भन्त में पहुँचने के पहिले ही उसने दबकर एक नोक से दरवाजे को खोसा। नेजधानोब को एक छोटा-सा काली कमरा दिखाई दिया।

'अच्छा हो हम लोग यहाँ बैठें असेकसी दिमिप्रिच, यहाँ हमें कोई परेगान नहीं करेगा। नेजधानोब ने कहना मामा। मरिघाना ने मोमवती लिङ्की की चौखट पर जमा दी और नेजधानोब की ओर उन्मुक्त हुई।

'मैं समझती हूँ, आप मुझ से क्यों मिलना चाहते थे', उसने कहना

धारम्भ किया, 'इस मकान में रहना आपके लिए अब बड़ा दुखदायी हो रहा है, और सोई मेरे लिए भी।'

हाँ, मैं आपसे मिलना चाहता था, मरिघाना विकेन्ट्येवना', नेग्मानोब ने उत्तर दिया लेकिन अब स मैंने आपको जाना है, यहाँ रहना मेरे लिए दुखदायी नहीं रहा।

मरिघाना बिषारा में सोई सी मुस्सुरायी।

'घन्यवाद, असेक्सी दिमित्रिच, लेकिन क्या आप इस घटना के बाद भी यहाँ रहना चाहते हैं ?

'मुझे घाया नहीं है कि य सोग मुझे यहाँ रहने दग, ये सोग मुझे स्वयं ही काम से असग कर देंगे !'

'क्या आप अपने आपही नहीं छोड़ोगे ?

'अपनी घोर से ? नहीं।

'क्यों ?'

'क्या आप सत्य धानना चाहते हैं ? क्योंकि आप यहाँ हैं।

मरिघाना ने अपना सिर मुफा लिया और कमरे में एक घोर नेग्मानोब से जरा हट गई।

'घोर फिर', नेग्मानोब न भागे कहा। 'मुझे तो यहाँ रहना ही है। आप कुछ नहीं जानती—लेकिन मैं चाहता हूँ मैं अनुभव करता हूँ कि, आपको सब कुछ बता दूँ।'

उसने मरिघाना के पास जाकर और उसका हाथ पकड़ लिया। उसने अपना हाथ छुड़ाना नहीं, सिर्फ उसने अहरे का गौर स धराने समी। 'मुनिय ! उसने एकाएक धान्वरिय भावना स प्ररिष्ठ होकर कहा, 'मिरी बात मुनिण ! घोर एनदन यिना बैठे, यद्यपि कमर में दो-तीन वृत्तिर्मा भी थीं मरिघाना के सामने लड़े-लड़े घोर भावधिरक स अमिभूट उतारा हाथ पकड़े हुए ही, स्वयं के लिए भी धानपयजनक भावुकता के साथ नेग्मानोब ने उसे अपनी योजनाएँ अपने दराने सिप्यागिन का

स्थाय स्वीकार करने का कारण, अपने सारे विगत सम्बन्ध और  
 रिश्तों तथा यह सब जो उसने भय तक मरिघाना से छिपाया था,  
 और मरिघाना से ही नहीं बल्कि किसी से भी कभी नहीं बताया था,  
 उसे सब कुछ बता दिया। उसने उसे वासिनी निकोसाइविच के पत्र का  
 हान भी बताया—सब कुछ यहाँ तक कि सिनिन के बारे में भी बता  
 दिया। वह जल्दी-जल्दी बिना किसी के याचता गया माना वह पछता  
 रहा हो कि भव तक मरिघाना से उसने यह सब क्या छिपाया, मानों  
 वह इस अपराध के लिए उससे क्षमा माँग रहा हो। वह उसकी एक-  
 एक बात को पीठी सी ध्यान से सुनती रही, पहिले तो वह भौंचककी  
 सी हो गई लेकिन तुरन्त ही उसकी यह भावना जाती रही।  
 वृत्तज्ञता, गब, थडा, सकल्प से उसकी आत्मा घाप्तावित हो रही  
 थी। उसका बेहूरा, उसकी, औरों चमक रही थीं उसने अपना दूसरा  
 हाथ नेक्यानाव के हाथ पर रख दिया। हृदय और ध्यान से उसके हाठ  
 खुले हुए थे एकाएक वह अनुपम सुन्दरी लग उठी थी।

बोलना बन्द कर उसने मरिघाना के बेहरे में भौंका, जैसे पहिली  
 बार उसने उस बेहरे को बेसा हा जो उसे पहिली नबर में ही इतना  
 प्यारा इतना परिचित, इतना सुन्दर लगा हो।

उसने एक लम्बी निःश्वास छोड़ी—  
 'भाहू। मैंने आपसे सब बातें बता दीं, यह अच्छा ही किया?—  
 वो मुस्किन से उसके मुँह से बात निकल रही थी।  
 'हाँ, ओह, बहुत अच्छा बहुत अच्छा।' उसने फुसफुसाहट के स्वर  
 से बुहराया, प्रथेउन रूप में उसने भी उसका अनुकरण किया और  
 जानते हैं,' वह कहती गई, मैं आपके कहने में हूँ, मैं भी आपके उद्देश्य  
 में सहायक होना चाहती हूँ, मैं हर कुछ करने का तैयार हूँ, मैं वहाँ  
 भेजी जाऊँगी, जाने को तैयार हूँ, मैं भी अपनी आत्मा से वही कामना  
 करती रही हूँ जो आप'



वह बोसते-बोलते एफाएफ चुप हो गई। अगर वह एक भी शब्द और बोसती तो भाबुकता में उसके घाँसू की धार बह सकती। उसका सारा कठोर ब्यक्तित्व माम की तरह मुलायम हो गया। सत्रियता, त्याग सुरन्त त्याग की भाससा ने उसने मन-प्राण को धमिसूसर दिया।

बराम्दे में किसी क सावधानी स तेज-हल्क कदमा स चलने की भावाव सुनाई पड़ी।

मरिघाना एक दम सभेस हो गई हाय छुड़ा लिए और एक दम चौकत्री और सावधान हो गई। कुछ घुणा कुछ साहसी डीठठा का भाव उसके चेहरे पर आ गया।

‘मैं जानती हूँ इस समय मैं हमारी जासूसी पर रखा है,’ उठने पेस कहा, कि उसका एफ-एफ शब्द बराम्द में प्रति-ध्वनित हो गठा। ‘यौमती सिप्यागिन हमार ऊपर जासूसी कर रही है। लेकिन मैं इसको जरा भी परवाह नहीं करती।

ससने की भावाज बन्द हो गई।

‘तब फिर? नेग्भानोव की ओर उमुस होकर मरिघाना न कहा मुझे क्या करना होगा? मैं कैसे भापकी सहायता कर सकती हूँ? मुझे बताइए “जल्दी बताइए! क्या करना हागा मुझे?

क्या? ने-पानोव ने कहा मुझे भी अभी सन नहीं मासूम—मुझे माकेंसोव का एक पत्र मिला है।

‘कब? कब?’

भाज ही शाम को। सस मुझे उसके साथ सोसोमिन से मिलने उसके काररताने जाना है।

‘हाँ हाँ वह वह माकेंसोव बड़ा धानदार भादमी है। वह सक्का दोस्त है।

‘मिरी तरह?’

मरिघाना ने उसके चेहरे पर मजबूत झाँसी ।

‘नहीं “ आपकी तरह नहीं ।’

‘क्यों ?’

एकाएक वह दूसरी ओर घूम गई ।

‘भाह ! क्या आप नहीं समझते कि अब आप मेरे लिए क्या हो गए हैं और मैं इस समय कैसा अनुभव कर रही हूँ ? ...’

नेग्धानोव का दिल लकी से घटकने लगा अब चाहते हुए उसकी निगाहें नीचे झुक गई । यह लड़की जिसने उसे प्रेम किया—उसे जो एक गरीब बंधन-धार का प्राणी है—जिसने, उसमें विश्वास किया, जो उसके कहने पर सब कुछ करने को तैयार है, उसके साथ समान उत्सुक के लिए साथ-साथ चलने को तैयार है—यह सुन्दर लड़की—मरिघाना उस समय नेग्धानोव के लिए धरती पर की सम्पूर्ण अज्ञानियों और सच्चाई का अवतार थी,—माँ बहन, पत्नी के समस्त प्रेम का अवतार जिसका उसे पहिले कभी ज्ञान न था—देश का अवतार, सुख, संघर्ष, स्वतन्त्रता का अवतार ।

उसने अपना सिर उठाया, और अपने पर मुस्की हुई उसकी आँखा को फिर देखा “

‘ओह, वह स्वच्छ पावन और उदात्त दृष्टि, उसकी आत्मा में बैठती चली गई ।

‘तो उसने कहना शुरू किया, ‘मैं कस जा रहा हूँ ... और जब मैं वापस आऊँगा, मरिघाना विकल्पेवना’—( उसे एकाएक अब यह पूरा नाम लेकर शिष्ट सम्बोधन बढ़ा घटपटा सा गया )—‘तो आपको जो कुछ मुझे पता चलेगा, जो कुछ मैं होगा, सब बताऊँगा । अब से मैं जो कुछ भी करूँगा जो कुछ भी मैं सोचूँगा, सब कुछ, सबसे पहिले तुमसे बताऊँगा “ मरिघाना ।

‘ओह, मेरे आत्मीय ! मरिघाना ने आत्म विमोचता से कहा, और

फिर स उसक हाथ घन्ने हाथों में स सिए, 'और यही वापस मैं नी  
तुम से करती हूँ मेरे त्रिप ।

वह अन्तिम शब्द उसके मुँह स इतनी आसानी से और सहज ढंग  
से निकला जैसे उसक परिचित कुछ और कहा ही नहीं जा सकता था,  
जैसे वे बहुत पुजन 'प्रीती' हा, पतिव्रत हमराही ।

'क्या मैं पत्र देख सकती हूँ ?'

'यह सा ।

मरिघाना न पत्र पढ़ा और घड़ान-विनोर दृष्टि से उसकी ओर देला ।

'क्या व साग तुम्हें इतने महत्वपूर्ण काय सोंपते हैं, असेकसी ?

उत्तर में वह मुस्करा दिया और पत्र अपनी जैब में रख लिया ।

'आश्चर्य है, नेग्घानाव ने कहा हमने अपना प्रेम एक दूसरे पर  
प्रगट कर दिया—हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं—और हमने आपस  
में इस सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहा ।

'अस्मरठ क्या है ? मरिघाना ने भी फुसफुसाया और एकाएक  
अपने का उसक सीने पर भुका दिया और अपना सिर उसके कन्धे पर  
टिका दिया सकिन दोनों ने आपस में चुम्बन भी नहीं किया—उसे  
उन्होंने हल्कापन और किसी बदर नयानक समझा—और तुरन्त एक  
दूसरे का हाथ प्रेम स बसकर दवाने के बाद अलग अलग हो गए ।

जब मरिघाना मोमघस्ती उठाने क लिए धूमि, जिस उसने गाली  
कमरे की सिङ्गपी की चौखट पर रख दिया था, तब उस कुछ-कुछ  
संकोच हा आया, उसने उस बुझा दिया, धँधेरे बराम्दे में होकर तब  
कदमा से वह अपने कमरे में वापस सीट आई, धँधेरे में ही उसने कपडे  
उतारे और विस्तर पर सेट गई—तब उसे कुछ आनखि का  
धनुमव हुआ ।



## सोसह

अगले दिन सबेरे जब नेष्चानोव सो बर उठा, तो पिछली रात की बातों की स्मृति से उसे किसी संकोच या सज्जा का अनुभव नहीं हुआ बल्कि इसके विपरीत उसे निर्मल और गम्भीर सुख का अनुभव हुआ, जैसे मानो उसने कोई ऐसा काम किया हो, जो उसे बहुत पहिले ही करना चाहिए था। सिप्यागिन से दो दिन की छुट्टी लेकर वह मार्क्सोव के यहाँ गया। जाने से पहिले उसे ने मरिप्राना से दो बातें करने का अवसर निकाल लिया। वह भी सज्जा या संकोच का अनुभव नहीं कर रहा था, उसने उसकी और शान्त और दृढ़ नाक से देखा और उसको, उसके राशि नाम से सम्बोधन किया। वह सिर्फ उत्सुक थी कि मार्क्सोव के यहाँ उसे क्या पता सगेगा और सौटकर सब कुछ उसे विस्तार से बता देने की उसने उससे प्रार्थना की।

‘इसमें भी कोई सन्देह की बात नहीं है।’  
नेष्चानोव ने उत्तर दिया।

'घौर फिर हमे परेधान होने की क्या जरूरत है?' नेजधानावे ने सोचा, 'हम सोमों की मित्रता में व्यक्तिगत भावना का गौण स्थान है—यद्यपि हम हमेशा के लिए एक हांगए हैं। उद्देश्य के नाम पर? हाँ, उद्देश्य के नाम पर !'

ऐसी कल्पना की नेजधानावे ने, और उसे जरा भी यह सन्देह नहीं हुआ कि उसकी कल्पना में कितना सच्चाई का अंश है और कितना झूठ का अंश।

मार्केंसाव को उसने उसी क्लान्त और चिह्नचिह्ने स्वभाव की न्यिस में पाया। उन्होंने साथ साथ बस नाम मात्र की भोजन किया और तब उसी पुरानी बग्घी में बैठ कर (उन्होंने एक दूसरा थोड़ा एक किसान से किराए पर लिया जो पहिले कभी नहीं जोता गया था—मार्केंसाव का थोड़ा धन भी संग्रह रहा था, ) व्यापारी फ्रास्वेव के कपड़े के बड़े कारखाने को जहाँ सोसोमिम रहता था, चल पड़े। नेजधानाव की उत्सुकता बढ़ गई थी। वह उस आदमी से, जिसके बारे में उसने इतना सुन रखा था परिश्रम प्राप्त करने के लिए उत्सुक था। सोसोमिम उनके आगमन की प्रतीक्षा में बैठा था। जब दोनों आगन्तुक कारखाने के फाटक पर उठरे और उन्होंने अपना नाम बताया, तो उन्हें तुरन्त 'कारखाने के सुपरिन्टेन्डेंट' के एक छोटे से बंगले में ले जाया गया। वह स्वयं कारखाने के मुख्य भाग में था। जब तब एक मजदूर दीड़ कर उसे बुलाने गया, तब तब मार्केंसाव और नेजधानाव तिब्बती के पास जाकर कारखाने को देखने लगे। ऊपर से देखने में कारखाना फसने-फूसन की स्थिति में था। काम का भार बहुत था। चारों ओर से काम की व्यस्तता का तेज गुलमपाड़ा, मशीनों की सड़सड़ाहट, करघों के चलने की 'धूँ-धूँ' की आवाज और पहियों की लया पट्टे की पट-पट, फटर-फटर की आवाज धारणी थी। भरे हुए ठैले और गाड़ियाँ भीतर-बाहर घा जा रही थीं। जोर जोर से घानेप लिए जा रहे थे, घंटियाँ, सीटियाँ की आवाज घा रही थी,

धूप से घटे, कमर में पेटी कैसे मजदूर काम कर रहे थे, या इधर-उधर घा जा रहे थे। उनके बालों पर सास खमाल धरे हुए थे। मजदूर सड़कियाँ सीट के कपड़े पहिने तेज बाल से इधर-उधर घा जा रही थीं। थोड़े ओतने के लिए ले जाए जा रहे थे हमारों मजदूरों की कार्यव्यस्तता के शोरगुल से चारों ओर का वातावरण भरा हुआ था। हर काम पूरी तेजी से और नीयत पूर्वक चल रहा था, लेकिन वहाँ केवल काम करने के समीके ही ही कमी नहीं थी, बरन् किसी भी काम में सफ़ाई का भी कोई धिन्ध नहीं दिखाई देता था। चारों ओर गन्धगी ही गन्धगी थी। मगठा था जैसे कोई उसकी देखभाल नहीं करता। कहीं कोई सिड़की टूटी थी, तो कहीं प्लास्टर गिर रहा था, दरवाजों के सस्ते टूटे हुए थे, एक दरवाजा तो बिल्कुल ही टूटा पड़ा था, मैदान के बीचो बीच कासी, गन्धी, चिकनी मिट्टी की कीचड़ से भरी हुई एक पोखर थी, उससे एक ओर हट कर थोड़ी दूर पर टूटी-फूटी रही इँनों का ढेर लगा था। बिद्यावन, कपड़े, डिब्बे, रस्ती के टुकड़े कीचड़ में सने पड़े थे, दुबसे पसले मरियल कुसे इधर उधर घूम रहे थे, सूँके भी नहीं रहे थे। एक ओर कोने में लगभग चार साल की उमर का एक सड़का, जिसका पेट फूसा हुआ था और सिर से पैर तक कातिल से पूटा हुआ था, बैठा ओर ओर स, बुढ़ी तरह से रो रहा था, जैसे मारों उसे सारे संसार ने छोड़ दिया हो। उसके पीछे उसी तरह कातिल से सव-पव एक सुप्रदिया धितकबरे बुधपीठे मन्वों से भिरी हुई गोमी ओर करमकस्ले ने बँठनों को सखोर रखी थी। कपड़ों के चियड़े एक ओर पड़े थे और चारों ओर एक धवीब दुर्गव फैसी हुई थी। सधमुब ही यह एक रसी फैक्टरी थी, जर्मन और फ्रेंच फैक्टरी नहीं।

नेग्धानोव ने मार्कोलाव की ओर देखा।

'मैने सोभोमिन की योग्यता के बारे में बहुत कुछ सुना था,' उसने कहना शुरू किया, 'लेकिन यह सब धम्यबस्था देखकर मुझे प्रापचय हो रहा है। मुझे इस सबकी भाषा नहीं थी।'

‘यह अभ्ययस्या नहीं है,’ मार्कोसोव ने स्लाई से उत्तर दिया, ‘यह तो स्त्री पूरुषपन है। यह सब होते हुए भी, इससे लाखों की पैदा हो रही और फिर उसे पुराने तरीके अपनाने पड़ते हैं और अपने को व्यवहारिक भावश्यकताओं तथा मालिक की इच्छा के अनुसार बनाना होता है। क्या तुम्हें अन्दाज है कि कास्वेब कैसा आदमी है?’

‘बिल्कुल नहीं।’

‘मास्को भर में सबसे बड़ा कज़ूस। पूंजीपति—यही है उपयुक्त शब्द उसके लिए।’

उसी समय सोलोमिन ने कमरे में प्रवेश किया। उसको देखकर फिर नेग्यानोव को निराशा हुई जैसी कि कैबटरी को देखकर हुई थी। पहिली दृष्टि में सोलोमिन एक फिनलैंड या स्वीडन वाली जैसा समता या वह सम्बा, दुबला-पतला, पीढ़े बन्धों का, छोटी-छोटी आँखों और मोर्हाँ वाला आदमी था, उसका चेहरा सम्बा और पीसा, नाक चौड़ी, बड़बड़ छोटी हरी आँखें, सफेद दाँत, बड़े-बड़े और झुर्रीदार ठुड़ी थी, नीचे का झुकी हुई। उसने कारीगर या मट्टी में कोयला भोंकने वाले की पोशाक पहिन रखी थी, एक पुरानी हरे रंग की जाकट, जिसकी जेबें झोले जैसी थीं, सेल से चीकट टोपी, गर्दन के चारों ओर सपेटा हुआ ऊनी मफलर और फटे हुए खूबे पहिन रहे थे। उसके साथ एक और आदमी था, जिसकी उमर पचास साल के करीब थी, जो एक साधारण किसानी बाट पहिने था, उसकी आदृति जिवियों जैसी थी और आँगे स्याह कानी और पैनी थीं, जिनसे उसने कमरे में घुसते ही नेग्यानाय को परगना शुरू किया - मार्कोसोव को वह पहिल से ही जानता था। उसका नाम था पावेन, वह सोलोमिन का दाया हाथ कहा जाता था।

सोलोमिन ने घागन्तुओं का बिना किसी उतावलेपन के स्वागत किया और दोनों में बिना कुछ बोले अपना उपेंदार चौड़ी हट्टी का हाथ मिलाया। बिना जाने ही मेज की दरज में से एक मुहर बन्द

‘नहीं, भग्नी ठहरो सोसोमिन ने उत्तर दिया। ‘वह रात के काम के बारे में पूछ रहा था,’ उसने अपने साधियों को बताया।

वे लोग बोप्रियोस्कोवो पहुँचे। वहाँ उन्होंने नास्ता किया सिर्फ व्यवहार की रखा के लिए, फिर सिगार सुलगाए और बात शुरू हो गई, प्रथम रात्रि में निरन्तर बसने वाली रूसी बात चीत, जिस बंग की बातें दूसरे लोगों में मुश्किल से ही मिलती है। यहाँ भी यद्यपि सोसोमिन ने नेष्चानोव की भाषा पूरी नहीं की। वह बहुत थोड़ा बोसा इसना कम कि कहना चाहिए वह करीब-करीब निरन्तर चुप ही रहा, लेकिन वह गौर से सुनता रहा और अगर उसने कोई बात बीच में कही या काटी, तो वह विवेकशील, गम्भीर और प्रत्यन्त संक्षिप्त थी। उसकी बातों से यह प्रकट हुआ कि सोसोमिन यह विस्थापन नहीं करता था कि रूस में सुरन्त अन्ति की स्थिति उत्पन्न होगई है, लेकिन दूसरों पर अपनी राय घोपना न चाहकर, उसने दूसरों को उसक लिए कोशिश करने से रोकने का भी प्रयास नहीं किया, और उनकी ओर देखता रहा, दूर खड़े एक समाधबीन की मजर से नहीं, वरन् उनसे कम्बे से कम्बा भिड़ाकर चलने वाले कामरेड की दृष्टि से। पीटसवर्ग के अन्तिकारियों से उसका बडा निकट सम्पर्क था और बहुत हद तक वह उनसे सहानुभूति भी रखता था, उनका हृमद्वेद था, क्योंकि वह स्वयं जनता का भादमी था। लेकिन वह भ्रान्दोसन से जनता के भलगाम का, भ्रान्दोसन के प्रति जनता की उदासीनता का भी अनुभव करता था, जिसके बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता था, और जिसके लिए बडी तैयारी की जरूरत थी जो न तो इन तरीकों से और न इन भादमियों से ही सम्भव थी। इसलिए वह भलग था, संघर्ष से दूर भागने या कामरता की प्रवृत्ति से नहीं, लेकिन एक विवेकी मनुष्य की तरह, जो अपने को और दूसरों को भी स्वयं के लिए बर्बाद करने की कोशिश नहीं करता। लेकिन वहाँ तक सुनने की बात है तो सुने क्यों न, और सीसे भी, अगर सम्भव है



तो। सोसोमिन एक पादरी का एकलौता सङ्ग था। उसकी पत्न बहिर्न थी। सभी की दादियाँ गाँव के पादरियों या पुरोहितों से हुई थीं लेकिन उसने अपने पिता, जो बड़ ही समझदार और गम्भीर स्वभाव के थे, की सम्मति से मठ का स्नान छोड़ कर गणित पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था, और मशीना से विद्येय रचित होने के कारण मशीन के कसपुर्जों में उसने विद्येय ध्यान दिया। वह एक अंग्रेज व्यापारी के व्यापार में नौकर हो गया, जो उसे पिता की तरह प्यार करने लगा और उसने उसे मैग्स्टर जाने की सुविधाएँ प्रदान की, जहाँ वह दो वर्ष तक रहा। वहाँ उसने अंग्रेजी भी सीख ली। वह हाल ही में माम्बो के एक व्यापारी के इस कारखाने में आया था और यद्यपि वह अपने मातहतों से कसकर काम मठा था और उनसे काम का ही घास्ता रखता था क्योंकि यही उसने इंग्लैंड में सीखा था, लेकिन फिर भी सारे मजदूर उससे स्नेह करते थे, 'यह हममें से ही एक है,' वे उसके बारे में कहा करते थे। उसका पिता उससे बहुत खुश था, यह उससे 'बड़ा ही होशियार बुद्धिमान सड़का बहा करता था, उस सिर्फ इतनी ही सिनायत थी कि वह घादी नहीं करता था।

मार्लसोव के घर पर रातभर खसने वाली बात थीत में, जैसा कि हमने पहिल ही कहा, वह सगमग बिल्कुल ही चुप रहा, लेकिन जब मार्लसोव कारखाने के मजदूरों से क्या आगाएँ हैं, इस पर बात करने लगा, तो अपनी मम बोलने की आदत के अनुसार अत्यन्त सजित रूप में ही उसने कहा कि रूस में कारखाने के मजदूर विदेश के कारखाने के मजदूरों जैसे नहीं हैं— वे बहुत ही पेश सोम हैं।

'और विज्ञान ? मार्लसोव ने पूछा।

'विज्ञान ? हाँ उनमें तो सब जबर हैरत सोम है ग्यामतोर से व, जो कर्ज देते हैं और उनकी सख्या बढ़ती जायगी, लेकिन वे सिर्फ अपना स्वार्थ जानते हैं, बाकी सब भेड़ हैं, धन्ये और जाहिन ।'

'तब हमें किससे आगा करनी व रूप ?

सोसोमिन मुस्कराया ।

‘समाप्त करो मिलेगा ही कोई न कोई ।’

वह भगभग लगासार मुस्कराता ही रहा अपने ही व्यक्तित्व जैसी निरासे ढंग की निष्कपट मुस्कान, लेकिन बिस्कुत धर्महीन नहीं ।

नेज्धानोव के साथ वह एक विशिष्ट ढंग से व्यवहार कर रहा था, इस नौजवान विद्यार्थी ने उसमें अपने प्रति यत्नि, बल्कि स्नेह उत्पन्न कर लिया था ।

उसी राती रात की बहस में नेज्धानोव एकाएक ओद्य में घायमा और एकदम से उबस पड़ा । सोसोमिन क्षान्ति से उठ कर सड़ा हुआ और अपने सम्बन्ध-सम्बन्ध कदमों से बढ़ कर उसने नेज्धानोव के सिर के ठीक पीछे की सिद्धकी को बन्द कर दिया - ।

‘कहीं तुम्हें ठंड नहीं लगजाय,’ उसने यत्ना की उद्विग्न व्यग्र दृष्टि के उत्तर में सरसठा से कहा ।

नेज्धानोव उससे पूछने लगा कि वह अपनी कैब्रेरी में कौन-कौन से समाजवादी भाषण भागू करन की कोशिश कर रहा है और क्या वह कारखाने के साम में मजदूरों का हिस्सा होने के लिए भी कुछ कर रहा है या नहीं ।

‘प्रिय साधो !’ सोसोमिन ने उत्तर दिया, ‘हमने एक स्कूल और एक छोटा सा अस्पताल खोला है और इसके लिए भी हमारे मासिक में भागू की तरह भगड़ा किया था !’

सिर्फ एक बार सोसोमिन को भी तैय्य आगया था और उसने अपने मजदूर हाथों से ऐसा जोर का पूँछा मेज पर मारा कि उस पर की हर चीज हिम उठी थी । उसे किसी कामूनी धम्याय, मजदूरों के साथ किसी दमनपूर्ण व्यवहार की याद बताई गई थी । -

जब मार्क्सोव और नेज्धानोव बहस करने लगे कि कैसे ‘कार्य’ किया जाय कैसे अपनी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत किया जाय,

सो सोलोमिन भी उरमुकठा से सुनठा रहा बल्कि धादर के साथ  
 सुनठा रहा, लेकिन स्वयं उसने एक शब्द भी नहीं कहा। यह वहरु  
 सवेरे चार बजे तक चलती रही। क्या-क्या उन्हीने बहस नहीं की।  
 मार्कोलोव ने दासों के बीच अथक मानी विस्त्याफोव और उसके पत्रों  
 का भी उस्सेब विव्या, जिनके बारे में दिसबस्पी बढ़ती जा रही थी।  
 उसने नेग्वानोव से उनमें से कुछ पत्रों को दिखाने का बल्कि उन्हें घर  
 मजाने देने का वायदा किया। क्योंकि वे बहुत मन्ने थे और साफ-साफ  
 सिन्धाघट में नहीं लिखे गए थे और उनमें बड़े महत्व की बातें भरी  
 थी और उनमें कविताएँ भी थीं, कुछ भावुकतापूर्ण नहीं, बरन्  
 समाजवादी भाषना से भरी हुई। विस्त्याफोव से मार्कोलोव सैनिका  
 सहायक मेजरों और जर्मनों पर चला गया और अन्त में तोप सेना पर  
 अपने लिखे सेना पर भागवा, नेग्वानोव ने हेडमे और वीरों के परस्पर  
 विरोध पर कहा, मूषा और कला में यथापवाद पर प्रकाश डाला,  
 जबकि सोलोमिन बैठा सुनठा रहा, सुनठा रहा और सिगरेट पीठा,  
 बैठा सोवठा रहा और अथ भी मुस्करा रहा था, लेकिन एक शब्द भी  
 न बोला। सगठा था कि यह औरों की अपेक्षा अच्छी तरह समझता  
 था कि मामल की जड़ में क्या है।

चार का घटा बजा नेग्वानोव और मार्कोलोव यजान से  
 बरीय-बरीय घूर हो चुके थे, जबकि सोलोमिन का एक शाल भी नहीं  
 झुटा था। मित्र भसम भसम हुए, सकिन चलग भसम होने स पहिले  
 दूसरे दिन सवेरे घहर जाबर प्रपार कार्य के सम्यन्ध में क्यापारी  
 गामुदिकन से मिलने का निदन्व्य हो गया। गोमुदिकन स्वयं बड़ा  
 उखाही का और उसने दूसरे साथी भर्ती करने का वायदा भी किया  
 था। सोलोमिन ने यह दांदा की, कि गोमुदिकन से मिलने जाना कुछ  
 सामदायक भी होगा या नहीं। जो भी हो अन्त में यह भी सहमत  
 होगया कि गोमुदिकन से मिलना सामन्दायक होगा।



सोलोमिन मुस्कराया ।

‘उलास करो मिसेगा ही कोई न कोई ।’

वह लगभग लगातार मुस्कराता ही रहा अपने ही व्यक्तित्व जैसी निरासे बंग की निष्कपट मुस्कान, लेकिन बिल्कुल अर्बहीन नहीं ।

नेग्दानोव के साथ वह एक विशिष्ट बंग से व्यवहार कर रहा था, इस नीजवान विद्यार्थी ने उसमें अपने प्रति दधि, बल्कि स्नेह उत्पन्न कर दिया था ।

उसी धांधी रात की बहस में नेग्दानोव एकाएक जोर में धावपा और एकदम से उबल पड़ा । सोलोमिन धाम्ति से उठ कर खड़ा हुआ और अपने लम्बे-लम्बे कदमों से बढ़ कर उसने नेग्दानोव के सिर के ठीक पीछे की सिड़की को बन्द कर दिया ।

‘कहीं तुम्हें ठंड नहीं लगजाय,’ उसने वक्ता की उद्दिष्ट व्यंग दृष्टि के उत्तर में सरलता से कहा ।

नेग्दानोव उससे पुछने लगा कि वह अपनी फेंकटरी में कौन-कौन से समाजवादी धादसों लागू करने की कोशिश कर रहा है और क्या वह कारखाने के धाम में मजदूरों का हिंसा होने के लिए भी कुछ कर रहा है या नहीं ।

‘प्रिय साथी !’ सोलोमिन ने उत्तर दिया, ‘हमने एक स्कूल और एक छोटा सा अस्पताल सोना है और इसके लिए भी हमारे मासिक ने धासू की तरह भयड़ा किया था ।’

सिर्फ एक बार सोलोमिन को भी तेज धावपा था और उसने अपने मजदूर धाधों से ऐसा ओर का झूसा मेज पर मारा कि उस पर की हर चीज हिल उठी थी । उसे किसी कानूनी धन्याय, मजदूरों के साथ किसी दमनपूर्ण व्यवहार की यात बतलाई गई थी ।

जब मार्कसोव और नेग्दानोव बहस करने लगे कि कैसे ‘कार्य’ किया जाय, कैसे अपनी योजनाओं को कार्यात्मक में परिणित किया जाय,

सो सोलोमिन भी उन्मुक्ता से सुनता रहा वल्कि घादर के साथ सुनता रहा, लेकिन स्वयं उसने एक शब्द भी नहीं कहा। यह बहुत सवेरे चार बजे तक चलती रही। क्या-क्या उन्हेनि बहुत नहीं की? मार्कोनोव ने घाता के बीच अथक यानी किस्न्याफोव और उसके पत्रों का भी उल्लेख किया, जिनके बारे में दिसवस्पी बढ़ती जा रही थी। उसने नेग्बानोव से उनमें से कुछ पत्रों को दिखाने का वल्कि उन्हे घर लजाने देने का वायदा किया। क्योंकि वे बहुत सन्धे से और साफ-साफ सिघावट में नहीं मिले गए थे और उनमें बड़े महत्व की बातें भरी थीं और उनमें कविताएँ भी थीं सुध्द भावुवतापूर्ण नहीं, वरन् समाजवादी भावना से भरी हुईं। किस्न्याफोव से मार्कोलाव सैनिकों, सहायक मेजरों और जर्मनों पर घना गया और अन्त में तोप सेना पर अपने निचे क्षत्ता पर धामया, नेग्बानोव न हेडने और योने के परस्पर विराय पर कहा, प्रभों और कला में ययार्यवाद पर प्रकाश डाला, जबकि सोलोमिन बैठा सुनता रहा सुनता रहा और सिगरेट पीता, बैठा सोचता रहा और अब भी मुस्करा रहा था, सबिन एक शब्द भी न बोला। सगता था कि वह औरों की अपेक्षा अच्छी तरह समझता था कि मामल की जड़ में क्या है।

चार का घटा बजा नेग्बानोव और मार्कोनोव ध्यान से करीब-करीब खुर हो चुके थे, जबकि सोलोमिन का एक बाल भी नहीं मुना था। मित्र अलग-अलग हुए, सबिन अलग अलग होने से पहिले दूसरे दिन सवेरे उठकर जाकर प्रचार कार्य के सम्यन्ध में व्यापारी गोमुस्किन से मिलने का निरयय हो गया। गोमुस्किन स्वयं बड़ा उत्साही था और उसने दूसरे साथी नर्ती करने का वायदा भी किया था। सोलोमिन ने यह दाँका की, कि गोमुस्किन से मिलने जाना कुछ सामान्यक भी होगा या नहीं! बो नी हो अन्त में यह भी सहमत होपया कि गोमुस्किन से मिलना सामदायक होगा।

## सत्रह

मार्कोसोव के प्रतिपि अभी सो ही रहे थे, कि एक सूचना वाहक उसकी बहन भीमती सिप्यागिन का पत्र लेकर उसके पास आया। उस पत्र में वासेन्तिना मिस्सालोवना ने धनेकों पारिवारिक बातें लिखी थीं, किताब वापस भेजने को लिखा था, जो वह उससे माँग कर लाया था,—घर बाद में पुनः करके उसने एक मजदूर लखर दी थी कि उसकी प्रिय मरिघाना शिक्षक मेग्घानोव से प्रेम करने लगी है—और शिक्षक उससे। वह गप्प नहीं हाँक रही है—उसने वह सब अपनी भाँसों से देखा है और अपने कानों से सुना है। पढ़ते ही मार्कोसोव का चेहरा रात की तरह काला पड़ गया। लेकिन उसने कन्हा एक शब्द भी नहीं उसने सम्देश वाहक को किताब देने का आदेश दिया और जब उसने मेग्घानोव को सीढ़ियों से नीचे भाँसे देखा तो उसने उससे सवा की ही भाँति अभिवादन किया—और बायदे के अनुसार किस्ल्याकोव के पत्र का बँडल भी दे दिया, पर वह उसके पास रुका नहीं और काम की देखा

भाल करने के लिए बाहर खला गया। नेज्मानोव भी अपने कमरे में वापस सीट घाया और पत्र पढ़ने लगा। नौजवान प्रचारक ने लगातार अपने बारे में और अपने जोड़ीसे कार्यों के बारे में ही सिखाया। अपने ही कथनानुसार उसने पिछले महीने ग्यारह जिलों में यात्रा की, नौ नगरों में, उन्तीस गाँव में, तिरपन ओपडिया में, एक फार्म पर और घाठ कारखानों में गया, सोलह रातें उसने सूखी घास के ढेर पर बिताई एक रात अस्पताल में, एक गाँवों की सार में (उसने प्रासंगिक रूप से सिखा कि पिसू उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके), वह मिट्टी की ओपडिया में गया, मजदूरों की बैरिकों में गया हर जगह उसने उन्हें शिक्षा दी उपदेश दिया, पत्रें बटि और उनके बारे में जानकारी प्राप्त की, कुछ तो उसने उसी जगह मोट कर लिए, कुछ स्मृति में रखे, उसने चोदह सन्धे पत्र लिखे, सत्ताईस छोटे और अठारह नोट्स लिए, जिनमें से चार पेश्विस से लिखे गए, एक खून से, एक मासिस और पानी मिलाकर और इतना सब कुछ वह कर सका, क्योंकि समय का व्यवस्थित उपयोग करना उसने सीख लिया था, उसके आदवा ये फिन्टिन जोसन, कैरिलियस, स्वलिस्की और अन्य लेखक और अंक विशेषज्ञ। सब फिर उसने अपने बारे में बात महीनी शुरू करदी, अपने जोरदार भाव्य के बारे में कि उसने फेरियर का यासना का सिद्धान्त समझ कर लिया है, और बताया कि वह सबसे पहिले अङ्क में पहुँचा है और कि वह दुनियाँ में बिना अपना कोई चिन्ह छोड़े दुनियाँ से नहीं जायगा, कि उस स्वयं आश्चर्य हो रहा है कि उस जैसे बार्डिस साल के सड़के में जीवन और विज्ञान की सारी समस्याएँ हल करती थीं और कि उस रूप में एक शक्ति सानी है, कि वह उसे हिता कर रहा देगा! दिक्ती॥ उसने पत्र के अन्त में लिखा। 'दिक्ती' शब्द उसके पत्र में अनेक स्थानों पर आया था और हमेशा दो विषयमाधिबाधक चिन्हों के साथ। एक पत्र में समाजवादी कविता थी जो एक सड़की का सम्बोधन करके लिखी गई थी। यह इन शब्दों से शुरू होती थी

प्रेम करो, मुझे नहीं, मेरे बिचारों का !

नेञ्चानोव को धन्वर ही धन्वर भाष्ययं हुआ, श्रीमान किस्त्याकोव के आत्मामिमान पर उतना नहीं, बितना मार्कोसोव की सरसता पर' पर सभी यह विचार भाया, 'भाइ में जाय ऐसी सुरक्षि ! श्रीमान किस्त्याकोव भी उपयोगी हो सकता है !'

तीनों मित्र सबेरे की धाय पीने के लिए भोजन घर में फिर मिले, लेकिन पिछली रात की बहस फिर नहीं शुरू हुई। कोई भी बात करने क मूढ़ में नहीं था, किन्तु सोसोमिन गम्भीररूप से खाम्त रहा, नेञ्चानोव और मार्कोसोव दोनों ही धान्तरिक रूप से परेष्ठान थे।

धाय के बाद वे सोग नगर के लिए चल पडे, मार्कोसोव का पुराना नौकर सदा की तरह अपने स्थान पर बैठा निराशा भरी दृष्टि से अपने मानिक का आते देखता रहा।

ब्यापारी गोब्रुरिकन, जिससे नेञ्चानोव का परिचय होता था, दशार्थों क एक धनी थोक ब्यापारी का लड़का था—और कैवोसियन मध का पुराना मानने वाला था। उसने अपनी कोशिशों से अपने पिता के धन को बढ़ाया नहीं था, क्योंकि वह, जैसा कि स्वियों में कहा जाता है, 'उठाने खाने वाला ऐसा ठकियत स्त्री डंग का धान्दवादी' था और ब्यापार की लगन उसमें बरा भी नहीं थी। उसकी उमर चाभीस साल की थी, भारी बदनसुरत, बदन बंधरे पर बेचक के दाम, और छोटी-छोटी सूअर जैसी धाँधें थीं उसकी। लड़कड़ाठे हुए और अपने हाथों को अलाते हुए पैर को झुलाते हुए और मूखों की तरह हँसते हुए और मूर्ख दम्नी यादू का सा प्रभाव डालते हुए वह, बड़ी जल्दी-जल्दी बातें करता। वह अपने को सुसंस्कृत घादमी समझता था, क्योंकि वह अर्पन कपड़े पहिनता था, और भित्तनधार था; हासाकि वह गन्दगी और अभ्यवस्था में रहता था। धमीरों से उसकी धान पहुँचान थी और बिपेटर देखने आया करता था, और साधारण धमिनेधियों को 'रक्षता' था, जिनके साथ यह असाधारण केश्व सी समने बाभी सुदशबसी का प्रयोग करके बात करता था। लोकप्रिय होने की



उसे सबसे बढ़ी चाह थी, कि गोमुदिकन का नाम सारे सभार में बिजली की तरह गुँज जाय। जैसे कभी सोदारोन या पोसलिन थे तो भव कार्पातन गोमुदिकन ही क्या रह जायें। इसी इच्छा के कारण, जिससे वह अपनी प्राकृतिक नीचता तक पर काबू पा चुका था वह, जैसा वह स्वयं कुछ-कुछ घातमस्ताबा क साथ कहता था, बिरोपीदन में घुस बैठा था। और इसी घातमस्ता के कारण उसका सम्बन्ध घातकवादियों से हो गया था। वह पहिले घपाशीजन का उच्चारण पोशीसन करता था किन्तु बाद में वह इसका धर्ष जान गया था।

यह सुनकर घोर बामपन्थी बिचारों को प्रगट करता अपने पुराने बिचारों का मजबूत उदाता, ईस्टर के दिनों में गोत्र छाठा ठारा खेतता, और पानी की तरह घैम्पेन पीता। और वह कभी मुदिन्य में नहीं पडा, क्योंकि वह कहा करता था 'मैंने हर घषिकारी को जहाँ जैसी जरूरत है, रिक्त दे रखा है, हर छेद मूँद रखा है, हर मुँह बन्द है, और हर जान बहरा है। वह विधुर था और निःसन्तान भी, उसकी बहुत क सड़क उसक चारा घार बन्दर पाटवे रहते थे, भीषतापूर्ण घापमूमी करते रहते लकिन वह उन्हें जाहित भवन्व्य नारर और बंगनी कहा करता और उनकी और घाँस उठा कर भी न देयता था। वह एक विद्याम परवर क मजान में रहता था जो बड़ा ही घम्पबन्धित और फूहड़ पड़ा था, किसी कमरे का तो सारा फनीचर विन्नी बना हुआ था, तो दूसरे में मिबान मामूली कुसियों क और घमरीनन घमड़े के सोफे के घलावा कुछ भी न था। हर जगह ठन्वीरें भगी हुई थीं, और सभी निकन्मी था—साग मैदानों इत्य, गुनाबी समुद्रों निनारा, मानर का 'धुम्बन' नामक बिभ्र, घोर साल पिढिनियों और बुदनी वाली मोठी मंगी औरत का विभ्र। यद्यपि गामुदिकन क कोई परिवार न था, फिर भी उसक घनेकों मौकर और घायित्त व जो वहाँ रहते थे। उदारता और दया से वह उन्हें महीं ग्ने हुए था, यन्नि अपनी गच्छि प्रदर्शन की इच्छा से ताकि वह जनता का नेता हो सके और

हुमा है। जिसके उत्तर में मार्केसोव ने कहा कि कोई बात नहीं है, इस स्वर में, जिसमें आमतौर से भोग तब उत्तर देते हैं, जब वे यह बाहिर करना चाहते हैं कि कुछ बात है तो, लेकिन तुम्हारे जानने के लिए नहीं। गोमुस्किन ने फिर कभी इसे, ठी कभी उसे कोसना शुरू कर दिया और फिर नमी पीढ़ी की प्रशंसा करने लगा 'ऐसे योग्य भोग,' उसने कहा, 'हमभोगों के बीच आज कल आ रहे हैं! ऐसे योग्य! भोह !'

सोलोमिन ने बीच में ही एक प्रश्न करके उसकी बात काट ली, कि वह बिस्वसनीय श्रीमान कौन हैं, जिसके बारे में उसने जिक्र किया था, और वह उसे कहाँ गया? गोमुस्किन सिसियानी हुई ही हुआ और उसने दो बार कहा 'भोह ! तुम खुद उसे देख लोगे, देख लोगे,' और यात बदसकर उससे उसके कारखाने के बारे में और उसके 'भूत' मासिक के बारे में प्रश्न पूछने लगा, जिसका उत्तर सोलोमिन ने हाँ-ना में ही दिया। तब गोमुस्किन ने सबके लिए स्लासों में शौम्पेन ठानी और नेज्धानोव के कानों पर झुक कर उसने फुसफुसाते हुए उससे कहा 'रिपब्लिक के नाम पर। और एक ही घूट में अपना स्लास खानी कर दिया। नेज्धानोव एक-एक घूट करके पीता रहा, सोलोमिन ने कहा कि वह सभरे के समय सराब नहीं पीता, मार्केसोव ने गुस्से और आवेष्ट से स्लास की आखरी बूँद तक पी डाली। वह मधीरता से बेचैन भगता था 'यहाँ हमभोग इसतरह अपना समय बर्बाद कर रहे हैं,' जैसे वह कह रहा हो, 'और असली मतभे पर वास्तु नहीं कर रहे हैं' उसने मेज पर एक घूँसा मारा और पूरी दृढ़ता से कहा, 'महाशयो ! और आगे बोलने आ ही रहा था "

पर उसी समय एक चिकना चुपड़ा सोमड़ी नुमा बेहरे का क्षय रोग से पीडित बेसा भावभी मारकीन की ब्यापारियां जैसी पोसाक पहिने, और अपने दोनों हाथों को पंखों जैसा फैलाए हुए, कमरे में आया। सभी को एक साथ ममस्ते करके उसने फुसफुसाते हुए गोमुस्किन के

पान में कुछ कटा 'बनो मैं धनी सुरस्त प्राया' गोसुदिन ने दीघता से उत्तर दिया। 'महाप्राया उमने पढ़ा, 'मैं प्राप सोगा से प्रायना परूंगा वि प्राप लोग थोड़ी देर के लिए मुझे क्षमा करें' मेरे बरफ काव्या ने मुझे धनी प्रापके सामने एक जरूरी काम बताया है (गोसुदिन ने 'जग्गी' पर जोर दिया) जिससे थोड़ी देर के लिए मेरा प्रापक घोष स अनुपस्थित होना आवश्यक हो गया है, लेकिन मुझे प्राणा है कि प्राप सोग प्राय तीन घंटे मेरे साथ भोजन करना स्वीकार करेंगे और तब हम सागा को जग अधिक फुलन और प्राजादी होगी।

न मोमोमिन ही जानगा पा और न मेजवानोव ही कि क्या उत्तर दिया जाय लेकिन मार्कोनोव ने सुरस्त उत्तर दिया, 'बेहरे और स्वर के उमो तनाब के साथ 'जग्गी' हम प्राएंगे, न प्राने से तो साग गड़बड़ पुटाला ही हो जायगा।

'मैं अत्यन्त प्राभारी हूँ गोसुदिन ने जल्दी से बहा और मार्कोनोव की घोर मुपत्ते हुए उमने बहा 'जो नी हा 'उद्देश्य के लिए मैं एक हजार प्यन दूंगा' इसमें जरा भी मन्देह नहीं।

और इतना बहुर उमने धपना दाहिना हाथ तीन बार हिलाया, उसका घेंगूठा और छोटी उँगली बाहर निकली हुई थी उसने बिनास के प्रतीक के रूप में।

वह मेहमाता के साथ दरवाजे तक गया और दरवाजे पर मड़क होकर उमने फिर पिल्लाने हुए बहा 'मैं तीन घंटे प्राप लोगों के प्राने की प्राणा परूंगा'

'मिदख ही तुम प्राणा पर सजते हो। किफ मार्कोनोव ने उत्तर दिया'

धरदा पर दोस्तो मोमोमिन ने, जब वे तीनों राइज पर प्राणए ता पटा 'मैं एा दिनाप की गादी सवर फैंकटो पापम जाता हूँ। हम भोजन के समय तक क्या करेंगे? यम, दफर उपर धूमकर धरप

लेकिन मरिषाना, यह भसी विस्वसनीय कामरेड यह पवित्र स्त्री सुन्दर सड़की, क्या वह उससे प्रेम नहीं करती? क्या उससे मेंट होना, उसकी मित्रता को भीतना, उसका प्रेम पाना अभीय सुखदायी नहीं? और यह जो दो व्यक्ति इस समय उसके सामने चले रहे हैं, यह मार्कोसोव, यह सोलोमिन, जिन्हे यह अभी भी बहुत कम जानता है, लेकिन फिर भी अपने को उनके उठना निकट समझता है, क्या यह स्त्री स्वभाव के, स्त्री जीवन के अच्छे उदाहरण नहीं हैं, और क्या उन्हें जानना उनका मित्र होना भी सुखदायी नहीं है? तो फिर क्यों यह अभीय प्रत्यक्ष सी असन्तोष मरी पीडादायक अनुभूति? कैसे और क्यों है यह निराशा? 'अगर तुम मनपुत्रा निराशावादी हो,' उसके होठों से फिर फुसफुसाया, तो क्या साक अच्छे अतिकारी बनोगे! तुम्हें तो चाहिए या कविताएँ करते रहते, घात-घात पर उद्विग्न होते रहते और अपने तुच्छ विचारा और अनुभूतियों को ही मन में पासते रहते और मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं में और तमाम जमीन आसमान को मिलाने में व्यस्त रहते, लेकिन अपनी स्मृण बहराहट, मनमौजीपन और भुञ्जलाहट को पौषपपूर्ण क्रोध, दृढ़ विचारों के आदमी का सच्चा श्रेष समझने की सुस मत करो। ओ हैमलेट, हैमलेट, तुम्हारी आत्मा की छाया से कैसे बचा जाय! हरषीय में, यहाँ तक कि आत्मनिन्दा में और धुणित मनोरंजन में किस तरह तुम्हारे अनुकरण से बचा जाय।

'मित्र अलेक्सी! इस के हैमलेट!' उसने एकाएक सुना, मन में उठने वाले भावों की अनुभूति के रूप में, परिचित चिपटी आवाज में। 'यह तुम हो मेरे सामने?'

नेज्जामोव ने अपनी आँसों ऊपर उठाई और आश्चर्य से सामने पाब्लिन को देखा!—पाब्लिन आदर्श ग्रामीण बेश में, घुरे रग का सूट पहिने था, इसके गसे में मफ़्लर नहीं था। एक बड़ा सिरफियों का नीले फीते से बँधा हैट उसके घिरके पीछे की ओर झटक रहा था और झूठा पर पाब्लिन हो रही थी!

वह एकदम सपक कर नेज्जानोव के पास धामा और उसका हाथ पकड़ लिए ।

'पहिले सा,' उसने कहना शुरू किया, 'हालांकि हम खुसे पार्क में हैं फिर भी पुरानी रिवाज के अनुसार मैं तुम्हारा आसिगन करूँ और तुम्हें 'शुभ' एक बार, दो बार, तीन बार ! दूसरी बात यह कि तुम्हें यह मानूँ होना चाहिए कि अगर आज तुम न मिले होते, तो कल तो तुम निदरघ्य मुझे देखत, क्योंकि मैं तुम्हारा निवासस्थान जानता हूँ और इस नगर में तुमसे मिलने के उद्देश्य से ही हूँ । मैं यहाँ कैसे आया, इस पर हम फिर, बाद में बात करेंगे और तीसरी बात यह कि तुम अपने साथिया से मेरा परिचय कराओ । सक्षेप में बताओ कि वे कौन हैं, और उन्हें बताओ कि मैं कौन हूँ । और फिर बसो वहीं जरा बैठ कर मौज-बहार की जाय ।

नेज्जानोव ने अपने मित्र के कथन का पाजन किया । मार्कोसोव और सोलोमिन का उससे परिचय कराया और संक्षेप में बताया कि वह कौन और क्या है, वहाँ रहता है, आदि आदि ।

'बहुत सुन्दर !' पाकिन्ग ने चीगल हुए कहा, 'यदि बसो में आप सब को इस नीचे नाइ स दूर से 'बस' हीलाकि काई ज्मादा भीड़ भाड़ या नहीं है, यहाँ पर, एक एकान्त जगह जहाँ में बैठता हूँ जब ध्यान मग्न अवस्था में होता हूँ जब मुझे प्रकृति के सौन्दर्य का ध्यानन्द मना जाता है । वहाँ एक बहुत सुन्दर दृश्य है । गवर्नर के निवास स्थान के सन्तरियों की पारीदार चौकियाँ, तीन पुलिस मैन, और एक भी बुल्ला नहीं ! मेरे इन रिमानों पर अचिर आश्चर्य मत करना, जिनसे मैं तुम सागा को धान्दित करने का इतना प्रयास कर रहा हूँ ? मैं अपने मित्र की राय में प्रतिनिधि हूँ । रुमी प्यंग का निःशन्देह उगी लिए संगड़ा हूँ ।

पाकिन्ग अपने मित्रों का 'एवांस स्थान पर ले गया, और वहाँ से दो भियमंगी औरतों का उग पर, उन्हें न जाकर बैठा दिया । वे

लेकिन मरिअाना, यह भसी विप्लवसनीय कामरेड यह पवित्र स्नेही सुन्दर सङ्गी, क्या वह उससे प्रेम नहीं करती ? क्या उससे भेंट होना, उसकी मित्रता को अीतना, उसका प्रेम पाना असीख सुखदायी नहीं ? और यह जो दो व्यक्ति इस समय उसके सामने चल रहे हैं, यह मार्कोसोव, यह सोलोमिन, जिन्हे वह भसी भी बहुत कम जानता है, लेकिन फिर भी अपने को उनके उतना निकट समझता है, क्या यह स्त्री स्वभाव के, स्त्री जीवन के अण्डे उदाहरण नहीं हैं, और क्या उन्हें जानना उनका मित्र होना भी सुखदायी नहीं है ? तो फिर क्यों यह अनीब अस्यष्ट सी असन्तोष भरी पीड़ादायक अनुसूति ? कैसे और क्यों है यह निराशा ? 'अगर तुम मनबुझा निराशावादी हो,' उसके होठों ने फिर फुसफुसाया, ता क्या आज अण्डे क्रान्तिकारी बनोगे ! तुम्हें तो चाहिए या कविताएँ करते रहते, बात-बात पर उद्विग्न होते रहते और अपने तुच्छ विचारों और अनुसूतियों को ही मन में पामते रहते और मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं में और समाम अमीन आसमान को मिसाने में व्यस्त रहते, लेकिन अपनी रुग्ण धबराहट, मनमौजीपन और कुंभमाहट को पीछपपूर्ण क्रोध, टङ्क विचारों के आधमी का सच्चा अ्रेम समझने की भूख मत करो ! ओ हैमलेट हैमलेट, तुम्हारी आत्मा की छाया से कैसे बचा जाय ! हरबीज में, यहाँ तक कि आत्मनिन्दा में और अुणित मनोरंजन में किस तरह तुम्हारे अनुकरण से बचा जाय ।

मित्र अलेक्सी ! उस के हैमलेट ! उसने एकाएक सुना, मन में उठने वाले भावों की अनुसूँब के रूप में, परिचित चिखती आवाज में । 'यह तुम हो मेरे सामने ?'

नेग्धानोव ने अपनी आँखें ऊपर उठाई और आश्चर्य से सामने पाकिसन को देखा ।—पाकिसन आदर्श आमीण वेद्य में, भूरे रंग का सूट पहिने था, इसके गले में मफलर नहीं था । एक बड़ा चिरकियों क नीले फीते से बँधा हैट उसके चिरके पीछे की ओर सटक रहा था और अूर्वों पर पालिश हो रही थी ।

वह एकदम सपक कर मेजघानोव के पास घाया घोर उसका हाथ पकड़ लिए ।

'पहिले तो,' उसने कहना शुरू किया, 'हालांकि हम खुसे पार्स में हैं फिर भी पुरानी रिवाज के अनुसार मैं तुम्हारा भासिगन कर और तुम्हें बूम एक बार, दो बार, तीन बार । दूसरी बात यह कि तुम्हें यह मामूम होना चाहिए कि अगर आज तुम न मिस होते, तो कस तो तुम निदचय मुझे देखते, क्योंकि मैं तुम्हारा निवासस्थान जानता हूँ और इस नगर में तुमसे मिलने के उद्देश्य से ही हूँ मैं यहाँ बैठ घाया इस पर हम फिर, बाद में बात करेंगे, और तीसरी बात यह कि तुम अपने साथियों से मेरा परिचय कराया । संक्षेप में बताया कि मैं कौन हूँ, और उन्हें बताया कि मैं कौन हूँ, और फिर यथा कहीं जग बैठ कर मीज-बहार की जाय !'

मेजघानोव ने अपने मित्र के कथन का पालन किया । माबेमाव और सोतोमिन का उससे परिचय कराया और संक्षेप में बताया कि वह कौन और क्या है, यहाँ रहता है, आदि आदि ।

'बहुत सुन्दर !' पाक्सिन ने धीरग हुए कहा, 'अब क्यों मैं यह सब को इस नीड़ भाड़ से दूर ले चूँ, हाँवाकि कोई जगह में भाड़ तो नहीं है, यहाँ पर, एक एकल जगह यहाँ में बैठा है, यह ध्यान मग्न अवस्था में होता है, अब मुझे प्राप्ति के संदर्भ का पालन होता है । यहाँ एक बहुत सुन्दर दृश्य है, यहाँ के स्थान पे सन्तरियों की पारी दार पीसिनी, और यहाँ एक भी कृता नहीं । मेरे इन रिक्तों पर प्रदिन प्रदिन चला करता, जिनसे मैं तुम लोगों का ध्यानित कर रहा हूँ ? मैं अपने मित्र का यद में निरुदेह उमी लिए सयदा है ।

पाक्सिन अपने मित्रों का दो भियमंगी घोरकों का

नौजवान आपस में 'विचार विनिमय' करने लगे जो धाम तौर से बरा मुश्किल बात होती है, खास तौर से जब पहिली ही मेंट हो और वह भी ऐसे विषय पर, जिससे कभी कोई लाभ होने की आशा न हो।

'उहरो!' पाकिस्तान ने नेज्घानोव की ओर घामुस होकर एका एक ओर से कहा 'मैं सुम्हे यह बताना हूँ कि मैं यहाँ कैसे आया। तुम तो जानते ही हो कि मैं हर गर्मी में अपनी बहन को कहीं बाहर ले जाता हूँ। जब मुझे यह पता लगा कि तुम कहीं इसी शहर के नजदीक में हो, तो मुझे याद आया कि इसी नगर में दो बच्चीबो गरीब दम्पति रहते हैं, जो हमारे सम्बन्धी भी हैं 'मेरी माँ की ओर से। मेरे पिता एक व्यापारी थे'—(नेज्घानोव यह संख्य जानता था लेकिन पाकिस्तान ने यह बात अन्य दो की जानकारी के उद्देश्य से कही थी)—'लेकिन मेरी माँ एक कुसीन घराने की थीं। और वर्षों से वह लोग हमें मिलने के लिए धुना रहे थे। मैंने भी 'यही सोचा। वे बड़े अच्छे लोग हैं, मेरी बहन को इससे बड़ी प्रसन्नता होगी—इससे अच्छा और क्या होगा? सो हम लोग यहाँ आ गए। और बैसा मैंने सोचा था, ठीक वैसा ही हुआ। मैं सुम्हे बताना नहीं सकता कि हमारा यहाँ आना कितना अच्छा हुआ। लेकिन कैसे-कैसे लोग हैं वे! तुम्हें सचमुच उनसे परिचय करना चाहिए। यहाँ तुम क्या कर रहे हो? खाना भाख कहाँ सामोगे? और उस अवह तुम क्यों भटक रहे थे?'

'हम लोग गोनुश्किन नाम के एक व्यक्ति के यहाँ भोजन करने जा रहे हैं 'जो यहाँ एक व्यापारी है', नेज्घानोव ने उत्तर दिया।

'कैसे बजे?'

'तीन बजे।'

'तुम उसे किस लिए 'किस लिए' मिल रहे हो'— पाकिस्तान ने भरपूर दृष्टि से सोमोमिन को देखा, जो झुंकुरा रहा था, और मार्कसोव को, जिसका चेहरा मस्तिन से मस्तिनतर होता जा रहा था



'अल्योशा, इन लोग से कह दो 'उन्हें मुझ से धकित रहने की आवश्यकता नहीं है मैं तुम्हीं में से एक हूँ - तुम्हारी ही पार्टी का'

'गोमुर्झकन भी हमारा ही साथी है', नज्घानोव ने बताया।

घोड़, अब मेरे दिमाग में एक क्षानदार विचार आया है! अभी तीन बजने में काफी देर है। सब तक चला मेरे सम्बन्धियों से मुसाफ़ात करलो ?

'क्या ऐसी ऊन जबूल बात करते हो। हम लोग भला कैसे चल सपन्ते हैं ?

उसकी तुम चिन्ता न करो। यह सब मैं अपने ऊपर ल भूँगा। कल्पना करो वह एक नखमिस्तान है? वहाँ राजनीति की एक भक्तन भी नहीं है, न साहित्य की, और न किसी प्रकार की आधुनिकता ही वहाँ प्रवेश पा सपी है। यह एक अनोखा छोटा सा मकान है, ऐसा जैसा तुम आज कल कहीं नहीं देखोगे, उसमें से सुगमि ही पुराने पन की आती है 'उसके लोग पुराने वातावरण पुराना 'यह तुम समझ लो, वह सब तरह से पुराना है, पैथेराइन द्वितीय पाठडर, फले, घठारपीं पठागी! जरा कल्पना करो एक पति-पत्नी, दोनों ही अत्यन्त बृद्ध, एक ही उमर क, पर एक भी मुर्ती नहीं, गाल फूले गाल, बने-बुने, मन्हें तोता का एक मुदर जोडा, सूत्र जैसा और भलननगाहत की हृद उन भोय, कि कोई सीमा नहीं इसकी। असीम मृदु स्वभाव क सागा में प्रायः नैसिष भावना का पूर्ण सोप होता है लेकिन मैं ऐसी सूभताओं में नहीं जाना चाहता, मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि हमारा प्यारा बृद्ध जाड़ा भमे स्वभाव का है। उनक कनी कोई सड़का नहीं हुआ, बजार भोने नाये! मगर मैं यही उन्हें कहा जाता है बेपार माने-नासे। दाना ही एक ही जैसी पोशाक पहिनते हैं, फीतेदार गाउन, और उतना अन्ध कि आज कल तुम्हारे देराने में नहीं आ सकता। दोनों बिस्कुल एक जैसे ही हैं, सिर्फ

बूढ़ा सिर पर मड़कीनी टोपी पहिनती है और बूढ़ा साधारण टोपी । हालाँकि वह भी बहुत कुछ वैसी ही होती है, सिर्फ उसमें फीसे नहीं होते । अगर यह अन्तर न हो तो आप यह फरक भी नहीं कर सकते कि कौन कौन है, खास तौर से इसलिए कि पति के दाढ़ी नहीं है । उनके नाम हैं फोमुस्का और फिमुस्का । मैं आप लोगों से कहता हूँ कि उन्हें आप लोग जरूर देखें, क्योंकि वे कौतूहल की दस्तु हैं, देखने योग्य । ये दोनों एक दूसरे को अत्यधिक प्रेम करते हैं, अगर कोई उनसे मिलने आता है तो कहते हैं, "बधा भान-उ हुमा, आपकी बड़ी कृपा हुई ।" ऐसे हैं यह विनम्र लोग । वे आपको प्रसन्न करने के लिए अपने सारे कौशल दिखा देंगे । सिर्फ एक बात की वहाँ घर्त है कोई सिगरेट नहीं पी सकता, इसलिए नहीं कि वे अनुदायक हैं, सिगरेट की सुगंध उन्हें बर्दाश्त नहीं होती, वस इसीलिए । तुम जानते हो उन के दिनों में कोई सिगरेट नहीं पीता था और वे केनरी (एक प्रकार की गाने वाली चिड़िया) को भी सहन नहीं कर पाते, क्योंकि उनक दिनों में यह चिड़िया भी बहुत कम दिखाई देती थी और यह एक बड़ा सौभाग्य है, तुम स्वीकार करोगे ! तो ? तुम चलोगे न ?

‘वास्तव में, कह नहीं सकता’, मेघानोब ने कहना शुरू किया ।

‘ऊहरो,’ मने अभी सारी बातें नहीं बताई है । एक बड़ी मबेदार बात तो रह ही गई वानों की भावाज भी एक सी है । अगर तुम्हारी भाँस बन्द हो तो तुम यह नहीं पहुँचान सस्य कि कौन योल रहा है । सिर्फ इतना अन्तर है कि फोमुस्का जरा अधिक जोर देकर योलता है । आपो मेरे मित्र । मैं जानता हूँ तुमभोग एक महान काम करने जा रहे हो और तुम लोगों क मन में द्रुम का एक सूफान उठ रहा है—धायद मयकर द्रुम लेकिन उस सूफानी समुद्र में अपने आपको फेंक देने के पहिले ही क्यों न एक गोता सगासो बन्द पानी में ? मार्केलोव ने टोका ।

‘क्या हर्ज है ? बन्द पानी तो जरूर है, लेकिन है साजा और घुड़ । टेगा प्रदेश में छाया है, पर उनमें सुर्यन्ध कभी नहीं आती, हालाँकि

उनमें कोई धारा तो नहीं चलती रहती है, पर उनका पानी कभी नहीं सूखता, क्योंकि उनकी तली में स्रोत हैं। और मेरे इन बड़े-बूढ़ों के मन में भी ऐसा ही स्रोत है और वह भी सूखतम। उन्हें देख कर मुझे अन्दाज हो जायगा कि सदी डेढ़ सदी पहिले किस साग हुआ करते थे। तो सलो अल्दी करते और मर साथ घाटा। नहीं तो अन्दी ही वह दिन और पड़ी घा जायगी—निश्चय ही दोनों का एक समय हागा—कि हमारे वह सोसे उड़ जायेंगे और जो कुछ पुराना है वह सब उनके साथ मिट जायगा। और वह जन्हा छोटा सा खुबसूरत मकान गिर जायगा, और वहाँ कुछ उग घामगा, मेरी माँ कहा करती थी कि यह वहाँ उगता है, जहाँ व भी मनुष्य रहत थे—अर्थात् विष्णु वरह्याँ, योग्यर धिरायल का पड़ आदि, वह सड़क भी वही न रहेगी साग उपर स घायेंगे-जायेंगे पर फिर वह कभी एसा उन्हें युवा तक देखने को नहीं मिलगा।

‘अच्छा ऐसी बात है!’ नग्नानोष तपाक स बोला ‘तो, सलो हमसाग अभी यहाँ सलें।

‘मैं भी तुसी-मुसी वहाँ चलने को तैयार हूँ’ सोलामिन ने कहा। इस सवमें मेरी रुची तो नहीं है पर बात सारी दिलचस्प है। अफिर अमर मिस्टर पाकिस्तन यह मिस्त्रास दिसा सलें कि हमारे जाने से वहाँ कोई निवत नहीं होगी तब फिर क्या।

‘आप साग चिन्ता न करें!’

पाकिस्तन ने सोगा को आदरसल किया, ‘वह तो बड़े लुग होंगे—वस इतना सा बात। सार्द दिग्गवे या प्रदर्शन की आदर्यकता नहीं है। मैंने आपरा बनाया कि देसारे बड़ गोले माने हैं। हम उनस गाना। गवायण। और आप भी भीमान सारेंताव। क्या आप सहमत हैं?’

सार्सेलोष ने मुझे से अपने कथे अण्णार। मैं वहाँ अवेसा तो रूंगा नहीं। अलिग, सला ही जाय।

सनी अषनी जमह ग उठ गये हुए।

वृद्धा सिर पर मंडहीसी टोपी पहिनती है और वृद्ध साधारण टोपी ।  
 हालाँकि वह भी बहुत कुछ वैसी ही होती है, सिर्फ उसमें फीसे नहीं  
 होते । अगर यह अन्तर न हो तो आप यह फरक भी नहीं कर सकते  
 कि कौन कौन है, खास तौर से इसलिए कि पति के दाढ़ी नहीं है ।  
 उनके नाम है फोमुस्का और फिमुस्का । मैं आप लोगों से कहता हूँ कि  
 उन्हें आप लोग जरूर देखें, क्योंकि वे कौतूहल की वस्तु हैं, देखने योग्य ।  
 वे दोनों एक दूसरे को अत्याधिक प्रेम करते हैं, अगर कोई उनसे मिलने  
 आता है तो कहते हैं, 'बड़ा आनंद हुआ, आपको बड़ी कृपा हुई।' ऐसे  
 ही यह विनम्र लोग । व आपको प्रसन्न करने के लिए अपने सारे कौसल  
 दिखा देंगे । सिर्फ एक बात की यहाँ बात है कोई सिगरेट नहीं पी  
 सकता, इसलिए नहीं कि वे अनुदायक हैं, सिगरेट की सुगन्ध उन्हें  
 बर्दाश्त नहीं होती, बस इसीलिए । तुम जानते हो उन के दिनों  
 में कोई सिगरेट नहीं पीता था और वे कनरी (एक प्रकार की माने  
 वाली चिड़िया) को भी सहन नहीं कर पाते, क्योंकि उनके दिनों में  
 यह चिड़िया भी बहुत कम दिखाई देती थी और यह एक बड़ा  
 सौम्य है, तुम स्वीकार करोगे ! तो ? तुम चलोगे न ?

वास्तव में, कह नहीं सकता, मेज़बानों ने कहना शुरू किया ।

'छूरो' मने अभी सारी बातें नहीं बटाई हैं । एक बड़ी मजेदार  
 बात तो खूबी गई दोना की आवाज भी एक सी है । अगर तुम्हारी  
 भाँस बन्द हो तो तुम यह नहीं पहँचान सकते कि कौन बोल रहा है ।  
 सिर्फ इतना अन्तर है कि फोमुस्का जरा भाँसक ओर देकर बोलता है ।  
 आपो मेरे मित्र ! मैं जानता हूँ तुमलोग एक महान कार्य करने जा रहे  
 हो और तुम लोगों के मन में बम्ब का एक सूफान उठ रहा है—शायद  
 भयंकर बड़ा लेकिन उस सूफानी समुद्र में अपने आपको फँस देने  
 से पहिले ही क्यों न एक गोता लगासो बन्द पानी में ?  
 मार्केलोब ने टोका ।

'क्या हर्ज है ? बन्द पानी तो जरूर है, लेकिन है छात्रा और घुड़ ।  
 टेया प्रदेश में तासाव है, पर उनमें दुर्गन्ध कभी नहीं घाठी, हासकि

उममें कोई धारा तो नहीं चलती रहती है, पर उनका पानी कभी नहीं सड़ता क्योंकि उनकी तली में स्रोत है। और मेरे इन बड़े-बूढ़ों के मन में भी एसा ही स्रोत है और वह नी घुदसम। उन्हें देख कर तुम्हें अन्दाज हो आता कि सदी बंद सदी पहिले कैसे लोग हुआ करते थे। तो बल्लो अन्दी करो और मेरे साथ आओ। नहीं तो अन्दी ही वह दिन और घड़ी या जायगी—निश्चय ही दोनों का एक समय हागा—कि हमारे वह छोटे उड़ जायेंगे और जो कुछ पुराना है वह सब उनके साथ मिट जायगा। और यह नन्हा छोटा सा झूबसूरत मकान गिर जायगा, और वहाँ कुछ उग जायगा, मेरी माँ कहा करती थी कि यह वहाँ उमता है, जहाँ व भी मनुष्य रहते थे—अर्थात् विष्णु बरह्मा, योगेश्वर चिरायते का पेड़ आदि, यह सबक भी वैसे न रहेगी, भोग उपर से जायेंगे-जायेंगे पर फिर यह कभी एसा उन्हें युगों तक देखने को नहीं मिलेगा।

‘अच्छा ऐसी बात है!’ नरनामोष तपाक से बोला, ‘तो, बसो हमसाथ अभी यहाँ चलें।’

‘मैं भी खुशी-खुशी वहाँ चलने का तैयार हूँ’ मोलामिन ने कहा। इस सबमें मेरी रुची तो नहीं है पर बात सती दिससस्प है लेकिन अगर मिस्टर पाकिस्तान यह विश्वास दिसा सके कि हमारे जाने से वहाँ कोई शिकस्त नहीं होगी तब फिर ‘क्या’

‘आप आग विश्वास न करें!’

पाकिस्तान ने लोगों को आश्चर्य किया, ‘वह तो बड़े खुश हागे—उस इननी सी बात। कोई शिकायत या प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है। मैंने आपसे बताया कि बेघारे बड़े मोले मान है, हम उनसे माना। गवायेंगे। और आप भी श्रीमान मार्फसाव। क्या आप सहमत हैं?’

मार्फसाव ने गुम्मे से अपने बंधे झकझोरे। मैं यहाँ अकेला तो नूँया नहीं! पसिए, क्या ही जाय।’

सनी अपनी जगह से उठ गड़े हुए।

बड़े मर्यकर सञ्जन है,' पाक्सन ने मार्कोसोय की ओर इशारा करते हुए नेञ्घानोव के कान में फुसफुसाया, 'टिङ्कियाँ खाते हुए खानबैप्टिस्ट की साक्षात् प्रतिमा की तरह टिङ्कियाँ, जिनमें शहद नहीं है। लेकिन वह,' उसने सोलोमिन की ओर सिर झुका कर संकेत करते हुए कहा, 'बढ़िया आवमी है। कैसी मीठी मस्त मुस्कान है उसकी। मैंने देखा है कि ऐसी मुस्कान उन्हीं लोगों की होती है जो और लोगों से महान होते हैं— और स्वयं उससे अनिभिन्न होते हैं।'

'क्या ऐसे लोग भी होते हैं?' नेञ्घानोव ने पूछा।

'बहुत तो नहीं, पर कुछ तो होते ही हैं,' पाक्सन ने उत्तर दिया।



## उभौस

फोमुस्ना और फिमुस्ना अर्थात् फोमा सावरे स्वेविय और एवफ्रीमिया पाइनोबना सुवोरोव दानों एव ही परिवार के थ दुद्ध स्सी बंध के और स० नगर के बरीब-बरीब सयस पुराने निवासी माने जाते थे । छोटी उमर में ही उनकी शादी हो गई थी और बहुत दिन हुए अभी मैं सोग नगर के बाहिरी भाग में स्थित अपने पैतृक लकड़ी के बने मकान में आकर रहने लगे थे और फिर न कभी उसे छोड़ कर ही नहीं गए और न अपना रहन-सहन अपनी आदतों ही बदलीं । उनके लिए समय ठहरा हुआ लगता था । उनके 'निपलिस्तान' की सीमा में किसी 'ममीनता' में प्रवेश नहीं किया था । उनके पास सम्पत्ति अधिक नहीं थी , लेकिन उनके विज्ञान वर्ष में अनेक बार उन्हें मुग्गे-मुगियाँ और अन्य सामान भेंट कर जाते थे, उसी तरह में जैसे 'मुक्ति' से पूर्व पुराने दिनों में कर जाते थे । एक निश्चित विधि पर गाँव का मुगियाँ भगान भूमि करके देने का जाता, और साथ में सात जगती मुग्गी का

‘बड़े भयंकर सज्जन हैं,’ पाकिस्तान ने मार्कोसोव की धीर इशारा करते हुए नेग्मानोव के कान में फुसफुसाया, ‘टिङ्गियाँ खाते हुए प्लानबैटिस्ट की साक्षात् प्रतिमा की तरह’ टिङ्गियाँ, बिनमें सह्य नहीं है। लेकिन वह,’ उसने सोलोमिन की धीर सिर मुका कर सकित करते हुए कहा, ‘बढ़िया भावमी है। कैसी मीठी मस्त मुस्कान है उसकी। मैंने देखा है कि ऐसी मुस्कान उन्हीं लोगों की होती है जो धीर लोगों से महान होते हैं— और स्वयं उससे अनिमित्त होते हैं।’

‘क्या ऐसे लोग भी होते हैं?’ नेग्मानोव ने पूछा।

‘बहुत तो नहीं, पर कुछ वो होते ही हैं,’ पाकिस्तान ने उत्तर दिया।





तथा बरान्से और गोदाम थे। उसमें गोन लम्मे थे और पीछे की ओर  
 छाटी सी घेरे की दीवाल थी। सामने की ओर एक छोटा सा कूटपरा  
 या और पीछे बाग और बाग में लमाम तरह के सामान के लिए गोशम  
 का नाम की अनेक कोठरियाँ थीं। ऐसा था उनका यह पूरा नीड़।  
 यह बात नहीं कि उन याहिरी कोठरियों में कोई बहुत सामान भरा  
 हुआ था कुछ सो गिर रही थी, लेकिन पुराने गिना में यह सब एने हो  
 ब्यबस्तिपत किया गया था और सब से ऐसे ही बना चला आ रहा था।  
 सुवारीय के परिवार में दो घोड़े थे काफी बड़े सूरे रंग के और स्पूम,  
 एक के सफ़ेद बाग थे वह लोग उन प्रचलन कहते थे। ये ज्यादा से  
 ज्यादा महीने में एक बार एक विविध प्रकार की गाड़ी में बड़े सज-सज  
 के साथ जाते और सार एहर को मासूम हो जाता। यह पृथ्वी के गोने  
 जैसी बिसरा भागे थे थोपाई भाग काट दिया गया हा लगती थी  
 उनमें पास-पास बड़े-बड़े मस्से जैसे घब्येदार विदेशी कपड़े की भ्रसर  
 सगी थी जिमसा अन्धिम टुकड़ा पायल रानी एलिजाबेथ के समय में  
 पुड़े कट प्रपवा लियोन में बुना गया था। सुयोगेव परिवार का बोषवान  
 बड़ा-बड़ा था जिमसे महीन के तेल की सी दुर्गन्ध आती रहनी उसकी  
 दाढ़ी ठीक घाँव के नीचे से गुरु हानी थी और उसकी मन्त्री नीहें दाढ़ी  
 से मिलती हुई नीचे को लटकी रहनी। वह अपना हर काम ऐम सप  
 हुए बंग से करगा कि उसको जरासी मुँघनी सूँघने में भी पाँच-मिनट  
 से मिनट अपनी पत्नी में पोड़ा गामने में और दो घंटे से भी अधिक  
 धरते उस प्रचलन को जोतने में लग जाते थे। उसका नाम था  
 पेरिफिट्रा। जब सुयोगेव दम्पति यन्पी में बैठकर घूमने निकलते और  
 पत्रार्थ प्रजाती तो व चौक उठने और नयनीन हा आते (धेमे तो उन्हें  
 बनाव पर भी उनना ही डर लगता था) और गाड़ी में सगे घमटे क  
 पीता को बसरर पकड़ लेते और ओर से चिल्लाते हि ईन्बर पाइँ  
 को "मैमुपम जैसी पाकि प्रानन कर और हम चिड़िया के पंग की  
 तरह हल्ले हा जायें, चिड़ियों क पंग की तरह !  
 धारा नगर उन्हें कुछ ननकी और मननी समन्ता, परोव-नरीव

एक जोड़ा, जिये वह बताता कि जंगल से मार कर लाया है हासकि वह जंगल बहुत पहिले ही नष्ट हो चुका था। वह लोग ड्राइंग-रूम के दरवाजे पर उसे बैठा कर घाय पिनाते, उसे प्रसन्न करते और एक मेड़ की खाल की टोपी और हरे रंग के चमड़े के बस्ताने में उसे विदा कर देते। सुबोधेव का घर पुराने जमाने की तरह दासों से भरा हुआ था। पुराना नौकर कैलिप्रोपिच, सूब मजदूर कपड़े की घास्फट पहिन्ता, जिसके कामर उठे रहते, उसके बटन लोहे के होते और वह धाकर सुरीली मय में गाता हुआ सा घोपणा करता कि 'मिज पर भोजन परोसा जा चुका है,' और अपनी मामकिन की कुर्सी के पीछे खडा होकर झपकने लगता, सब कुछ पुराने ढंग से। भोजन की मेज के बगल की मेज, जिस पर भोजन रखा होता की देखभाल उसके जिम्मे थी।

साग में तरह-तरह के मिच मसालों और नीरू की देख-भाल भी उसी के सुपुर्व थी। इस प्रश्न पर कि 'क्या उसने नहीं सुना है कि सभी दास अब मुक्त होगए हैं?' वह हमेशा उत्तर देता 'सोग-साग तो हमेशा ही कोई न कोई ऐसी ही बेसिर पैर की मूर्खतापूर्ण बात उड़ते रहते हैं। तुकों में ऐसी आबादी काफी है लेकिन धन्यवाद है ईश्वर को कि वह उस सब से बच गया है।' एक पुष्पा नाम की बौनी लड़की दिला बहलाव के लिए रखी गई थी और एक बूढ़ी नर्स वैसिलियेवना भोजन के समय आया करती। वह सिर पर एक बडा सा काना रमास बांधे रहती और मोटी धावाज में समाम तरह की बातें करती—नैपोलियन की, १८१२ के वर्ष की, ईसा विरोधियों की, सफेद हथियों की, या फिर अपनी हथेली पर ठोड़ी रखकर वह बताती कि उसने क्या सपना देखा है और उसका क्या दूम और अशुभ परिणाम है और तासों में वह क्या जीती। सुबोधेव का मकान नमर के अन्य मकानों से बिल्कुल भिन्न था। वह पूरा का पूरा बन्दूत की लड़की का बन हुआ था उसकी खिडकियाँ चौकोर थीं और उसमें अनेक पौडियाँ और गेसरियाँ

तथा बराम्दे और गोदाम थे। उसमें गोन भस्मे थे और पीछे की और छोटी सी घेरे की दीवाल थी। सामने की और एक छोटा सा कूटघरा या और पीछे बाग और बाग में समान तरह के सामान के लिए गोशाम के नाम की घनेक कोठरियाँ थीं। ऐसा या उनका यह पूरा नीड़। यह यात नहीं कि उन याहिरी कोठरियों में कोई बहुत सामान भरा हुआ था, कुछ तो गिर रही थीं लेकिन पुराने दिनों में यह सब एने ही व्यवस्थित किया गया था और सब से ऐसे ही बना चला आ रहा था। सुवासोव के परिवार में दो घोड़े थे काफी बड़े सूरे रंग के, और स्पून एक के सफेद दाग थे, वह लोय उन भ्रमस' कहते थे। वे ज्यादा स ज्यादा महीने में एक बार एक विचित्र प्रकार की गाड़ी में बड़े सब-घज के साथ जाते और सारे शहर को मासूम हो जाता। यह पृथ्वी के गोसे जैसी जिसका आगे से चौमाई भाग बाट दिया गया हो लगती थी, उसमें पास-पास बड़े-बड़े मस्से जैसे घध्वेदार विदेशी बपड़े की भासर मगी थी, जिसका अन्तिम टुकड़ा शायद रानी एन्जिआवेय के समय में मुट्टे कट घषवा लियोंज में बुना गया था। सुवोरोव परिवार का कोषबान बड़ा-बड़ा था जिससे मंगिन के सेल की सी दुर्गन्ध आती रहती, उसकी दाईं ठीक शान के नीचे से धुल होती थी और उसकी मन्वी नीहें दाईं से मिलती हुई नीचे को खटकी रहती। यह अपना हर काम एने सघ हुए बंग स करता कि उनको जरासी मुँघनी मूँघने में भी पाँच-मिनट दो मिनट अपनी पटी में फोटा घासने में और दो घटे से भी अधिक घनेज उस 'भ्रमस' को जोतने में लग जाते थे। उसका नाम था पैरिफिट्रग। जब सुवोरोव दम्पति दायी में बैठकर घूमने निरन्तर और पढ़ाई भजाती तो व बीच उठते और भयनीन हो जाते (बैमे तो उन्हें बसाब पर भी उसका ही डर लगता था) और गादी में सगे बमड़े के फीलों को परापर पनड़ सते और जोर से चिल्लाते हि ईश्वर भोजों को 'मैमुघान जैसी शक्ति प्रदान कर और हम बिड़ियों के पंग की तरह हन्के हो जायें बिड़िया व पंग की तरह !

सारा मगर उन्हें कुछ भजनी और मकरी समन्ता वरीब-करीब

एक जोड़ा, जिसे वह बताता कि जंगल से मार कर लाया है हालाँकि वह जंगल बहुत पहिले ही नष्ट हो चुका था। वह लोग ड्राइंग-रूम के दरवाजे पर उसे बैठा कर चाय पिलाते, उसे प्रसन्न करते और एक मेढ़ की छान की टोपी और हरे रंग के बमहे के दस्ताने भेंट कर उसे विदा कर देते। सुबोधेव का घर पुराने जमाने की तरह दासों से भरा हुआ था। पुराना मौकर कैलिग्रोपिच, खूब मजबूत कपड़े की वास्कुट पहिनता, जिसके कान्तर उठे रहते उसके बटन लोहे के होते और वह धाकर सुरेमी समय में गाता हुआ सा घोषणा करता कि 'मेज पर भोजन परोसा जा चुका है, और अपनी मानकिन की कुर्सी के पीछे सड़ा होकर ऋपकने लगता, सब कुछ पुराने ढंग से। भोजन की मेज के बगस की मेज, जिस पर भोजन रखा होता की देखमान उसके जिम्मे थी।

साग में तरह-तरह के मिच मसालों और नीयू की देख-मान भी उसी के सुपूर्द थी। इस प्रश्न पर कि 'क्या उसने नहीं सुना है कि सभी वास भव मुक्त होगे हैं?' वह हमेशा उत्तर देता, भोग-बाग ठी हमेशा ही कोई न कोई ऐसी ही बेसिर पैर की मूसलतापूर्ण बात उड़ाते रहते हैं। सुर्को में ऐसी आबादी काफी है लेकिन धन्यवाद है ईस्वर को कि वह उस सब से बच गया है।' एक पुष्पा नाम की बौनी लड़की दिसा बहसाव के लिए रखी गई थी और एक सुधी नर्स वैसिलियेवना भोजन के समय आया करती। वह सिर पर एक षड़ा सा फाग हमान धांधे रहती और मोटी आवाज में तमाम तरह की बातें करती—नैपोसियन की, १८१२ के वष की ईसा बिरोधियों की, सफेद हथियों की, या फिर अपनी हृदयेसी पर ठोड़ी रखकर वह बताती कि उसने क्या सपना देखा है और उसका क्या क्षुम और अक्षुम परिणाम है और छासों में वह क्या जीती। सुबोधेव का मकान नगर के अन्य मकानों से बिल्कुल भिन्न था। वह पूरा का पूरा वनूत की सनड़ी का यन हुआ था, उसकी खिड़कियाँ नीकोर थीं और उसमें अनेक पौड़ियाँ और गैसरियाँ

मरोड और पचिंग की दवाइयाँ सिखी थीं। व साग ठीक चारह बजे  
 भाजन करते थे और हमेशा पुराने बग का गाना—'हो, फकरी पा  
 छट्टा धागवा नमकीन करमकड़ा अचार, धवत केसर पड़ा मुँगे का  
 गोस्त, गहद मिलापर बनाए गए गरीफे आदि आदि। खान के बाद  
 सिफ एक घंटे के लिए व न्यक्की मते थे। उत्तर फिर घामने-सामने  
 बैठते और रत्नमरी का धवन पीते आगे फनी-कभी यह एक खानीत  
 भर्पापियाँ नामक मद्य निकलने वाला पेय पिया करते थे जो कि मरीच  
 करीब सब खोजल के बाहर उबल पड़ता जिससे डूढ़ा का बटा मजा  
 प्राता और बैसिप्रापिच का इससे बड़ा नज़रकट हातो। उस सारी  
 जगह साफ कग्नी हाती और यह दरतन रमाइए आर वैरा पर नाराज  
 रहता मिनको कि यह उन पर पदाय व आदिप्यार का त्रिमदार  
 ठहरना 'आदिर इसमें धारा ही क्या है ? सिफ फर्नाचर विाटना  
 है। उसक बाद फिर व साग कुछ पढ़ते थे या बानी पुस्तक की उद्यत  
 सूद पर हसत रहते या शाना मिसकर पुराने संग व युगल-गीत गाने।  
 (दोना की आयातें बिल्कूल एन सी थी जैसी पत्रिका, वीपती, हूड और  
 ग्नी ग्रासदार म न्यमी व बाद—मफिन वेसुरी नहीं) या य ताप  
 मेवत हमारा यही पुराने खेनफिरत्र पिक्ट या उबल उमा का वास्टन  
 तव नमोपर आती व काम का धाय पात व यमान का  
 उन्हाने बन इतना सी रियायत दे रमा थी। यद्यपि उस व हमेशा अपना  
 एक पमजायी समन्त थे और पट्ट कि इस चीना-नृग म साग  
 प्रयत्नर स पमजाग हाते आ रहे हैं। उनका नियम वा कि व न मा  
 कभी प्रागुनित युग की प्राताचना करते थे और न हा प्रतात का गुण  
 गान थी यह बात ना वह मानन वा हमेशा सैवार रहते थे कि दूसरे  
 साग और तरीक म रहते होंगे और प्रसिद्ध अर्थ नखीर स भी दाते  
 कि उन्हें अपने रहते-रहते बदलने व निर म कहा जाय।

खान बड़े बनिप्रापिय फिर भाजन समा दना त्रिममें कि ४८-४९  
 गान का रत्ना का अनिपार्य पा हा। और नी यसे मुद्गु गदा के

केवल नियम निषिद्ध मनोरंजनों से अपने आपको वञ्चित रखता था, बल्कि उन हल्के-फुल्के मनवहलावों तक से भागता था जो कि दूसरों की दृष्टि में अनिवार्य होते हैं। उसके नीचे ही अंकित था सूँझ और सर्दी से पीड़ित अवस्था में साइबेरिया में लिखा गया। टसिस नामक कविता भी एक सास नसूना, जिसमें निम्नांकित पंक्तियाँ थीं—

‘सब और शान्ति का है निवास,  
 हँस रही छूप में है शबनम।  
 खा घीवन थपकी नवल प्रकृति,  
 दे रही दिवस को नव जीवन।  
 एकाकी टसिस मन निराश,  
 उमन भाकुस, विरही उदास  
 प्रियतमा अनीता है सुन्दर  
 फिर कैसे हो टसिस प्रफुल्ल ?’

श्रीर फौजी कतान की जा १७१० में प्राया था, दिनांक ६ मई की एक आद्यकविता भी लिखी थी—

‘मैं नहीं कभी झूठूँगा  
 ओ सुन्दर प्राम।  
 मैं सदा करूँगा याद  
 कितना मधुर समय बीता था बह ?  
 कितना मुझको था स्नेह मिता,  
 तेरे स्वामी के कक्ष मध्य !  
 वे पाँच घिर स्मरणीय दिवस  
 जो उस समाज में बीते हैं,  
 जो हर प्रकार से धर्मवाद का पात्र रहा  
 जिसमें थी वृद्ध—पुषा—महिजाएँ भी अनगिन—  
 और वे शोग सभी बहुत दिखलस्य बहूँ ।’

एलबम के अन्तिम पृष्ठ पर कविताओं के स्थान पर पेट के दर्द,

मरोड़ और पेषिस की दबाइयाँ मिली थीं। वे साग ठीक चारु यजे  
 भोजन करते थे और हमेशा पुराने बंग का घाना—दही ककड़ी का  
 गढ़ा पोगवा ममकीन करमकड़ा घनार, दावत केसर पड़ा मुर्गे का  
 गोस्त, दाहद मिलावर घनाए गए शरीफे मादि मादि। खाने के बाद  
 सिर्फ एक घंटे के लिए वे न्दपी मते थे। उठकर फिर सामने-सामने  
 बैठे और रसमरा का सवन पीते और कभी-कभी वह एक चालीस  
 भर्षकियाँ नामक मद्य निफलने वाला पेय पिया करते थे, जो कि फरीव  
 फरीव सब बोलत क बाहर उबल पड़ता जिससे दूढ़ा को घटा मजा  
 माता और बेसिप्रापिच को इससे यड़ी न्दकाहट होती। उसे सारी  
 जगह साफ बग्नी हाता, और वह देरतक रसाइए और वैरा पर नाराज  
 रहता, सिमको कि वह उस पेय पणाय क आविष्कार का जिम्मेदार  
 ठहरता 'सागिर इसमें धारा ही क्या है? सिफ फर्नीचर बिगडता  
 है। उससे बाद फिर वे सोगे कृच्छ पड़ते थे या बीनी पुनका की उद्यन  
 इद पर हसत रहने या दाना मिसकर पुराने बंग क गुगल-नील गात।  
 (दोना की प्रायाजें बिल्कुल एव सी थीं जैषी, पतनी बापती, हुइ और  
 एगी गासतार स न्दपी के बाद—सकिन वेसुरे म्हा) या य ताग  
 खेतते हमेशा न्हो पुराने गेजभिनेत्र पिनेट या टबल टमाका वाय्टा  
 तय ममोपर आगी व घाम को पाय पाते - पतमान का  
 उहोंने यम इतना सी रियायत दे रगी थी। यद्यपि उस वे हमसा अपनी  
 एव कमजागी ममभूते थे और न्हउ कि इस 'बीनी-बूटी' म साग  
 प्रयास्व स बगबोर होते जा रहे हैं। उनका नियम या नि ध न ता  
 कभी प्राणुनिर पुग की प्राणाचना करत थे और न ही घठीत या गुग  
 गात, और यह बात भी यह मानत को हमेशा सैयाग रहत थ पि दूसर  
 ताग और तरीत स रहत हागे और प्रपिच कष्टे तरीने से भी बाते  
 कि उन्हें अपने रहन-सहन बदलने के सिग न कहा जाय।

साग यजे बेसिप्रापिच फिर भोजन लगा दना, जिमम कि ठट-ठू  
 गाग का रूता तो प्रतिगार्य पा टा। और नी यजे गुदगुद गद्ग क

पहिले तो वात घीत बड़ी उखाड़ी-मुखाड़ी चलती रही, लेकिन अस्दी  
 ही उसमें सजीवता आ गई। पाकिस्तान ने गोगोस की एक प्रसिद्ध मेयर  
 की कहानी सुनाई कि एक मेयर एक सवासाध मरे गिर्जाघर में प्रवेश  
 करने में सफल हुआ और कैसे एक मिठाई जो मेयर के मुँह में प्रवेश  
 करने में सफल हुई थी। वे लोग यह सुन कर तब तक हँसि बब  
 तक भाँसों से भाँसू न निकलने लगे। वे हँसि भी एक ही ढंग से बीच  
 बीच में चीखते हुए। हँसी का प्रवृत्त खौंसने में हुआ। उनका चेहरा  
 गरम होगया और तमतमाने लगा। पाकिस्तान ने यह जान लिया था  
 कि इस तरह के रूढ़ा पर गोगोल की कहानियाँ बड़ा प्रभावशाली  
 प्रसर करती है, लेकिन क्योंकि वह उन्हें प्रसन्न करने के लिए अधिक  
 उत्सुक नहीं था, उसने अपना तरीका बदला और कुछ ऐसा किया कि  
 शीघ्र ही दूबे-पूबी वाता में मजा सेने लगे। फोमुस्का ने अपना  
 नबकानीदार मु घनी का डिब्बा मागन्तुकों को दिखाया, जिसपर पहिले  
 छत्तीस तस्वीरें भसग-भसग मुद्रा में पहुँचानी जा सकती थीं। पर अब  
 वे काफी दिना पहिले मिट चुकी थीं लेकिन फोमुस्का उन्हें अब भी  
 पहँचान सकते थे और उन्हें घता सकते थे। 'देसा उसने कहा 'एक  
 निर बाहर निकाल रखा है और जिस स्थान पर वह सक्रिय कर  
 रखा ग यह स्थान विष्कूल बिरुना था। तब उसम मागन्तुकों का  
 ध्यान अपने निर के ऊपर दीवाल पर लटकती एक तस्वीर की ओर  
 दिलाया, वह तैल-विभ्र था। उसमें बर्फसि मैदान में हुस्के कुम्भीरी राग  
 के घोडे पर बैठे, उस सरपट दौड़ाते एष गिबारी का बिभ्र प्रतिष्ठ था,  
 जो भेडा का गोप पहिने था और ऊँट के यानों की सदरी पहिने था, और  
 मरमर म मुनहर बाम की पेटी बस था, जिसमें एष रेवमी बड़ा हुआ  
 दम्बाना और एष छुरा दासा हुआ था जिसकी सूँठ पौरी की थी।  
 गिबारी बगने में अबान और स्पुन लगता था उसक एक हाथ में भापू  
 था जिसमें सास भ्रवा लगा था, दूसरे हाथ में लगाम और चाबुक था।  
 पाड़े क पारा देर हुआ में उठे हुए थे और हर टापों व नासों को



बलाकार ने बड़ी खूबी से बनाया था यहाँ तक उनकी कीलें तक साफ नजर आती थीं। 'गीर कीजिए,' और अपनी मोटी उँगली सफेद धरती पर धोड़ों के पैरों के पीछे चार चर्च गोलाकार चिन्हों की दिखाते हुए फोमुस्का ने कहा 'वर्क पर टाप के चिन्ह—यह तक बलाकार ने बनाए हैं। टाप के यह चार ही चिन्ह दिखाई देते थे और पीछे की और कोई चिन्ह क्यों नहीं था—इस बात पर फोमुस्का सामान्य रहा।

यह धोड़ी देर चुप रहकर बिनम्र मुस्कान के साथ बोला 'आपको मामूम हो यह मैं ही हूँ।'

'क्या?' नेग्धानोव ने आश्चर्य प्रकट किया 'क्या आप चिकार भी सेसते थे?'

'जी हाँ। सेफिन ज्यादा दिना तक नहीं। एक बार सरपट दौड़ते हुए फौड ने मुझे गिरा दिया और मेरी बुरपी में चोट लग गई, इससे फिमुदरा घबड़ा गई और फिर इसने मुझे कभी चिकार पर नहीं जान दिया। अभी से मैंने चिकार पर जाना छोड़ रखा है।'

'आपने यहाँ चोट आई थी? नेग्धानोव ने पूछा।

बुरपी में फोमुदरा ने धीमी आवाज में कहा। उसका प्रतिपि एक दूसरे की चार देगन लग। चार्ड महाँ समन्त पारहा था कि यह बुरपी क्या चीज है, सरिम मार्बेन्ना इतना जानता था कि फज्जाक या फिरभगियन टोपी का ऊपर का बासदार मोटे रोगू का झन्डा बुरपी पहनाता है। सफिन फोमुदरा ने उसमें ता घाट गवाई नहीं होगी। लेकिन उस चार्ड का उममे मतलब पूछन का मन किसी का न हुआ।

मच्छा अब सुम ता रोगी धधार चुन फिमुदरा ने एका एक ही कहा, 'दमनिण धव मैं भी रोगे हीरूगी।'

एक पुरान बंग की छोटी सी टट-मेड़े पैरा वाली धाम्मारो में से जिसका गोम या दक्कन धाम्मारी के पिछवाड़े की तरह मुड जाता था, उमने एक चंदादार बांग के फम में मड़ी एक छोटी सी बाटर

कसर की तस्वीर निकाली, उस तस्वीर में चार साल की एक निर्बल  
 लड़की की तस्वीर बनाई गई थी। तूलीर उसके कन्धे पर था और  
 नीला रिबन उसके सीने पर लगा था। वह तीर की नोकों को अपनी  
 छोटी उंगलियों से बाँध रही थी। बच्ची के दाँत घुघराते थे और वह  
 मुस्कुण रही थी, और उसकी भाँस थोड़ी सी मेंढी थी।

फिमूदका ने यह तस्वीर प्रागन्तुकों को दिखायी।

‘यह मैं हूँ। उसने कहा।

‘भाप !

‘हाँ, मैं। अपने बचपन में। एक फोन्व कसापार मेरे पिता के पास  
 भाया करता था—बड़ा शानदार कसापार था। मेरे पिता के बन  
 दिवस पर उसने मेरी यह तस्वीर बनाई थी। और किटना मसा था  
 वह फोन्व। वह घाव में भी हमसे मिलने भाया करता था। अपने पैरों  
 को पिसता हुआ वह भाता, नमस्कार के लिए सिर झुकाता, फिर हवा  
 में एक झटके से ऊपर उठा सेता और मिसने वाले का हाथ घूमता  
 और जब जाता तो अपनी उंगलिया का घूमता और दौए जाएँ, घाने  
 पीछे झुकता। बड़ा मजेदार फ्रान्सीसी था।

सवने चित्र की फला की धारीफ की पाबिसन ने तो उसमें कुछ  
 कुछ समानता भी ढूँढ़ लेने का दावा किया।

तब फोमुदका ने आज के फ्रान्सीसियों पर बात फरनी दुरू बरबी  
 और कहा कि वे अब जरूर बड़े धैतान होते हैं।

बाहिर ऐसा क्यों फोमा सावरेस्तेविच ?

नय उनके कैस कैसे नामों का अग मुसाहिजा तो कीजिए।

‘जैसे ?’

जैसे नोभर्न—जै—सोरी। नाम तो है सन्तो जैसा सेविन बाम  
 डकैठा का।

फोमुदका ने बीच में भवसर बय पूछ लिया कि पेरिस में आज कत  
 बौन सा घासक है ?

उन्होंने बताया 'नैपोलियन', ता इसमें उन आचार्य भीर पीड़ा हुई।

ऐसा क्यों ?

'यह तो बड़ा हो गया होगा इसे उसने कहना धारम्भ किया लेकिन चारों ओर उत्तमन मरी दृष्टि से देखता हुआ रुक गया।

फोमुन्का फ्रेन्च बहुत कम जानता था और वास्टेयर उसने अनुवाद में पढ़ा था ( वह अपने गिरहाने गये हुए एक घक्क में कैडिट का पौडुसिधि अनुवाद रखता था ) लेकिन यह बात चीन के बीच-बीच में फ्रेन्च मुहायिरे कह जाता जैसे— यह तो महालय जी सन्दिग्ध है या प्रसत्य है !' इस बात पर बहुत से लोग हँसा करते थे। बाद में एक फ्रांसीसी विद्वान ने बताया था कि यह तो विधान मना में प्रवाग किया जाने वाला वाक्य था, जो उसरु देग में १७८६ मठ वाला जाता था।

यह देग हर कि बात चीन फ्रांस और फ्रेन्च पर चली गई है, फोमुन्का न अपना साहस बटार कर एक चीन क घारे में जो उसक दिमाग में बहुत देर से उठ रही थी, अिध वह पहिले ता मारोसाय से पूछना चाहती थी, लेकिन यह बड़ा उमजित लग रहा था उसने सम्भवत मातामिन से पूछा हाथा सदिग नहीं ! उसने साधा, 'यह सीधा साधा भादमी है यह फ्रेन्च नहीं जानता होगा। इसलिए उसने नेग्रानोष को सन्वाजन किया।

'एक बात है महालय ! मैं आपसे अनना चाहती हूँ उसने कहना धारम्भ किया, 'माफ कीजिएगा, मरा भतीजा मिला सैम्बानिष आप समन्धि कि मुक हकी योग्य का और मरे पुगने सैन्य का तथा मेरी पगानता का मजरा उड़ाता रहता है।

'मा देग ?

'क्या धरर कोई फ्रांसोमी मापा में प्रान करमा चाहता है "यह क्या है ?" ता उने मरी कहना चाहिए न "दे" न क स क "य ता ?"

'हाँ ।'

'और क्या वह यह भी कह सकता है "कि...से के से सा?"'

'हाँ । ऐसे भी कह सकता है ।'

'और सिर्फ, 'कि' से सा भी कह सकता है ?'

'हाँ, यह भी कहा जा सकता है ।'

'और बात एक ही होगी ?'

'हाँ ।'

फिमुस्का गौर से सोचती रही, और फिर उसने अपने हाथ नीचे गिरा लिए ।

'अच्छा, फिमुस्का, उसने अन्त में कहा 'मैं ही गमती पर थी और तुम्ही सही थे । लेकिन यह फ्रॉसीसी लोग ! बेघारे !'

पाकिस्तान ने उन बूढ़ों से कोई बहुत दुःखान्त गीत-कथा सुनाने का आग्रह किया इस पर दोनों हँसि और उन्होंने आश्चर्य किया आखिर उसके दिमाग में ऐसी घात आई कैसे ? लेकिन अल्वी ही गीत सुनाने को सहमत हो गए सिर्फ एक शर्त पर कि स्नान दुल्या हारपिस कीर्ई ( एक विशेष प्रकार की खीणा ) बजा कर उनका साथ देगी—कमरे के एक कोने में पिछानो रखा था । स्नान दुल्या हारपिस कोड पर बैठ गई । कुछ तार उसने भल मनाए ऐसे सोजले, ऐसे, बेसुरे स्वर मेज्घानोव ने अपने जीवन में पहिले कभी नहीं सुने थे लेकिन उन बूढ़ों ने तुरन्त गाना शुरू कर दिया

'क्या उस पीढा की अनुसूति करने के लिए',

फोमुस्काने शुरू किया

'जो प्यार में छिपी हुई है,

ईश्वर ने हमको हृदय दिया है,

प्यार से राग मिलने वाला ?'

'क्या ऐसा भी बिरही हृदय

फिमुरशा ने उत्तर दिया

'इस संसार में कभी था,  
जो कि दुख और येदना से मुक्त हो ?'  
कभी नहीं । कभी नहीं ।

फोमुद्रका ने कहा ।

'कमी नहीं । कमी नहीं ।'

फिमुरशा ने दुहराया ।

'बेदमा प्रेम का ही एक भंग है ।'  
सदा ! सदा !'

दानों में संग-संग गाया ।'

'सादा ! सदा !'

फोमुद्रका प्रवेशा ही गाता रहा ।

'बहुत खूब, बहुत खूब, बाह, बाह ! पाकिस्तान चिल्लाया, 'यह  
पहला छं हुमा अब दूसरा !'

'जरूर' फोमुद्रका ने उत्तर दिया, 'स्नानदुन्या सम्मोनोबना; अगर  
सिफ एव जोरदार भंकार हो जाय तो बैसा रहे ? मेरे एव छन्द के  
बाद ता एव भंकार हानी ही चाहिए ।'

स्नानदुन्या ने उत्तर दिया, 'तै रखा भंकार जरूर होगी !'

फोमुद्रका ने फिर गाना शुरू किया

'क्या कभी किसी प्रेमी ने प्यार किया है,  
और वह भी बिना उदासी और पीड़ा जाने हुए ?  
कौनसा ऐसा प्रेमी है कि जिसने भाह न भरी हो,  
और राया न हो और दुबारा फिर भाह न भरी हों ?

और फिर फिमुरशा ने कहा

'हृदय गार में न्यक गाना है,

कोई गुण नहीं है, मैं कम से कम वैसे मलपन में कोई अच्छाई नहीं देखता !'

पुपका ने कनफोडी गर्जन की, उसने जा कुछ मार्केसोब ने कहा उसका एक शब्द भी न समझ पा, लेकिन, काली भौंहों वाला भावमी, बुरा मसा कहता जा रहा है 'उसकी हिम्मत कैसे पड़ रही है। वास्तविकता न भी कुछ बुदबुदाया मुँह-ही-मुँह में फामुस्का ने अपने छोटे हाथ सीने पर बाँध लिए और अपनी पत्नी की ओर उगुल हाकर, 'फिमुस्का, मेरी प्यारी' उसने बँधे गले से कहा, 'सुन रही हो यह महाशय क्या कह रहे है ? मैं और तुम पापी हैं, कुकर्मों, और दुरात्मा हैं हम ऐसा मैं बूबे हुए हैं, ओह ! ओह ! हमें सबक पर निकास देना चाहिए और हमारे हाथ में एक भाइ दे देनी चाहिए अपनी आजीबिका कमाने के लिए । ओह ! ओह ! ओह ! ' यह दुल भरे शब्द सुनकर पुपका और भी जोर से गर्जी। फिमुस्का के नेत्र सिझुड़ गए, उसके हाठों के कोने सटक गए), वह बस अपनी भावना को प्रकट करने के लिए गहरी साँस ले रही थी।

अगर बोष में पाकिसन ने दकलन न दिया होता तो, कहा नहीं जा सकता कि इस का अन्त किस तरह होता।

'क्या मतलब है इस सबका ? ईमान से' उसने जोर से ईसते हुए और हाथ धुमाते हुए कहा, 'मुझे आश्चर्य है कि आप भोगों को धर्म नहीं पा रही है। मि० मार्केसोब तो थोडा मजाफ करना चाहते थे लेकिन उनका चेहरा ऐसा गम्भीर है कि लगा कि वह व्यंग कर रहे हैं और आप सब उनकी बातों में आगए। बस इतनी सी बात है। एथकीमियाँ पावसोबभा तुम तो बड़ी प्रिय हो, हम बस एक दो मिनट में ही भन जाने वाले हैं, तो तुम जानती हो तुम जाने से पहिले हमारे सब के भाग्य बता दो तुम उसमें बड़ी होशियार हो। बहन ! ठास तो साना !'

फिमुस्का ने अपने पति की ओर देखा, वह धन पूर्ण आश्वस्त मुद्रा में बैठे थे, वह भी आश्वस्त होगई।

'तादा,' उसने कहा 'लेकिन मैं तो सब कुछ भूल गई हूँ, भरखा हुआ मैंने उन्हें हाथ में ही नहीं लिया है।

लेकिन फिर भी उसने अपने हाथ ही स्नानदुप्या के हाथ से पुछने तादा की खस्ता बोझी ली।

फिस का भाग्य बताऊँ ?

'भोह, सबका,' पाकिस्तान ने कहा और अपने मन में कहा, 'कैसी जिन्दादिल बुद्धिया है।' उसे चाहे बिपर पुमाना सबमुष बड़ी प्यारी है 'हर एक का नानी हर एक का उसने जार स कहा 'हमें हमारा भाग्य, [सबामो हमारा परिम हमारा भविष्य'... सब कुछ हमें बताओ।'

फिमुदरा ताग फँटने लगी, लेकिन एकाएक उसने सारे शब्द फँक दिए।

'मुझे ताग का उपयाम करने की जरूरत नहीं है। उसने कहा मैं बिना उससे ही तुम में से सबका परिम जानती हूँ। और जैसा परिम है वैसा ही भाग्य है। वह, (उसने सोसोमिन की घोर संकेत किया) घाम्ठ स्वभाव का घादमी है, दड़, वह (उसने अपनी उगली माकंसोव कि घोर दिराई) गरम स्वभाव का है, पतरनाक घादमी (पुपान ने उसकी घोर जीभ निकाला) 'घोर रहे तुम (उसने पाकिस्तान की घोर देगा), तो तुम्हें कुछ बसाने की जरूरत नहीं है, तुम खुद ही जानते हो—'रसिबर मनुष्य! रह यह सम्मन' (उसने नेग्मानोव की घोर संकेत किया, घोर हिंस बिपाई)।

यह क्या?' उसने पहा, 'मुझे भी यथाइए रूपया, मैं वैसा घादमी हूँ।

'तुम वैम घादमी हो ? ' फिमुदरा ने धीरे स कहा 'भाप पर दया करनी चाहिए—बस।

नेग्मानोव पाँप गया।

‘दया का पात्र ? क्यों भला ?’

‘हां ! मैं तुम पर दया करती हूँ — वस इतना ही !’  
‘लेकिन क्यों ?’

‘घोड़ कारण हैं ? मेरी भाँस मुझे ऐसा बठाती हैं । क्या आप समझते हैं मैं बेपहचान हूँ ? घोड़, मैं आप से अधिक होशियार हूँ , तुम्हारे सारे लाल घासों के लिए मैं तुम पर दया करती हूँ यही तुम्हारा भाग्य है ।’

सभी चुप थे सब एक दूसरे की ओर देख रहे थे, और फिर भी चुप थे ।

‘धरदा, नमस्ते प्यारे दोस्ता’ पाकिस्तान ने कहा ‘हम लोगों ने आप लोमो का काफी समय लिया, शायद आप को थका भी दिया है, इन सज्जनों के जाने का समय आ गया है मैं इन्हे सड़क तरु छोड़ भाऊँ । नमस्ते और आपके इस हृपालु स्वागत के लिए, धन्यवाद ।’

नमस्ते, नमस्ते, फिर आना कोई तकल्लुफ की बात नहीं है, फोमुस्का और फिमुस्का ने एक स्वर से कहा । तब फोमुस्का ने कितनी गीत की टेक गुना गुनाते हुए कहा

‘अनेक वर्षों तक जिओ ।’

‘अनेक-अनेक वर्षों तक’ अप्रत्याशित रूप से कैलियोपिड ने पोखे से दरवाजा खोलते हुए कहा ।

और धारों ही सड़क पर भागए , उन्होंने लिङ्की में से पुपका की धायाज सुनी , ‘सूखें ’ उसने चिन्ताया, ‘सूखें !’

पाकिस्तान जोर से हँसा , लेकिन किसी ने भी उसका साथ नहीं दिया । मार्केलोव उन्मीश पर रहा था, कि उस अभी भीर कुछ राय पूण सध्व सुनने हंगि

सिफ सो-गेमिन बिरपरिचित सरसता से मुस्कुताया ।





बीस

‘अच्छा अब तक सा’, पाकिजन ने पहिले  
बात शुरू की ‘हम साग घठारवीं  
सदी में थे अब जरा पूरी दुलकी बाल से  
बीसवीं में से बसिए। मोलुसिकन इतना  
घागे बड़ा हुआ घादमी है कि उन्नीसवीं में उसे  
रखने स काम नहीं बलेगा।

क्या, क्या तुम उस जानते हा ?  
नगधानोब ने पूछा।

‘सारी दुनिया में उसका नाम के मंडे  
गड़ हुए हैं, और मैंने कहा ‘से बसिए’ क्योंकि  
मेरा मतनय था कि मैं भी तुम सागों क साथ  
बल रहा है।

‘यह बस ? क्यों तुम तो उसे जानते,  
नही या जानत हो।

‘बस बसे बसा ! क्या तुम मेरे तोत्रों  
का जानत थे ?

‘समिन, तुमने उनस हमारो परिचय जो  
कराया।’

और तुम मय परिचय कराया। तुम मुक्त  
म कुद धिगाने वाले घादमी नही, और

के शरम पर पहुँचा व्यक्ति होने के कारण फ्रेंच मोहन प्रणाली को पसन्द करता था और उसने एक रसोइया रख छोड़ा था जिसको क्लब से गन्धिगी के कारण निकाल दिया गया था), और जो सब से महत्व पूर्ण बात थी वह यह कि दौम्येन की भनेको बातों निकास कर बर्फ में ठंडी करने के लिए रख दी गई थीं।

मेकवान ने अपने बालाकी भरे ठौर-ठौरियों से तथा अल्दबाजी की उछल-कूद की अपनी विशेषता से मेहमाता का स्वागत किया। जैसा पाकिस्तान ने पहिले ही कहा था उसे देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उसके बारे में पूछा 'मेरा विचार है, यह भी हमारे ही साथी हैं?' और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही चिल्लया, 'होगे कैसे नहीं, जरूर होंगे।' तब उसने बताया कि यह अभी उस गवर्नर नामक विभिन्न बागु से मिस कर आया है, जो कम्युनिस्ट खुदा आने क्यों किसी न किसी धर्मार्थ संस्था की ओर से उसे परेशान किया करता है। 'यह कहना मुश्किल था कि गोमुस्किन गवर्नर के यहाँ आने में सुघ था या उन लोगों के सामने उसे गाँधी देने में। तब उसने अपने गए मर्ती किए कामरेड का परिचय कराया, जिसका परिचय कराने का वायदा उसने उन सबसे कर रखा था, और यह नया साथी और कोई नहीं यह पतला-बुबला मरियल सा नाटा लोमड़ीमुमा चहरे का मायमी ही था जो सबेरे उसके पास छन्दश लेकर आया था और जिसे गोमुस्किन ने यास्या नाम का अपना क्लर्क बताया था। 'यह वास्तुनी नहीं है,' गोमुस्किन ने बताया पाँचों उँपतियों से एक साथ संकेत करते हुए, 'लेकिन अपने उद्देश्य के लिए दिल से और आत्मा से अनुरक्त है। यास्या बिनभवा से मुजा, घमखि हुए, भँपते हुए, मजरे से हँसा। यह बताना असम्भव है कि वह कुत्सित मूल था या पुटा हुआ घूर्त और बदमाश! 'सम्प्रदा मोहन तैयार है बसिए।' बराबर धामी मेज पर से कुछ मूख बढ़ाने वाली चीजें मनमर के घाने के बाद सब साथ भाजन के लिए मेज पर बैठे। धारवा के सुरन्त बाद गोमुस्किन ने दौम्येन साने

का प्रादेय दिया। जमी हुई भ्रम के द्विमे के रूप में दागव बोतल के मुँह में स होकर ग्लासों में गिरि। 'अपने - कार्य की सफलता के लिए।' गोमुदिन ने विहाकर कहा और नीकरों की घोर मुन्ते हुए प्रांग मारी जैसे उठे बता रहा है कि बाहिरी लोगों के सामने व अरा सावधान रहें। नया रंगरुट वास्या अब भी खुप था और मद्यपि वह कुर्सी के छार पर बैठा था और ऐसे कुधामदाना और पिछलगुपन का प्राचरण कर रहा था जो उन विश्वासों के नितान्त विपरीत था जिनके लिए वह अपने मरुदर के घरों में दिसो-जान कुर्बान करने को तैयार था। अपने स्वामी के घरों को सायंक सा करता हुआ वह नादीदेपम से नराव पी रहा था। दूसरे, बहरहास बात कर रहे थे कहता बाहिए, उनका मेजबान बात पर रहा था— और पाकिस्तान, पाकिस्तान विरोध। नेम्घानोव अन्दर ही अन्दर मुड़ रहा था मार्केनाय गारात्र था और उसे गुम्मा मारहा था वैसा ही वैसा गुम्मा उसे सुवाघेव के यहाँ था रहा था। लेकिन थोड़ा निद्र रंग से मोलोमिन पर्यवेक्षक के रूप में सब देखता रहा।

पाकिस्तान मझे से रहा था! अपनी हाजिर जवाबी से उसने गोमुदिन का खुग कर दिया था जिसकी अपने में भी यह क्या न था कि वह लंगड़ा धारण अपने पड़ोस में बैठे मेघानोव से फुसफुसाहट में उसका ग्राका खींच रहा है। उसने तो निष्पत्त रूप से समझ था कि वह बाई बदा सीपा मड़ना है जिस अपना बनाया जा सकता है और अपनी प्रागिर्श में लिया जा सरता है और बुद्ध-बुद्ध इमी लिए वह उन पमन्द भी घाया था। अगर पाकिस्तान वहीं उसकी बगल में बैठा होता तो निश्चय ही उसने उसकी पसलियों में उँगली करदी होती या उसने अन्ये पर बारर खाँटा माग होता, बरारि यह उसकी घोर अपना गिर टिना टिना के मकिल कर प्रांग मार रहा था। - लेकिन उमा और नेम्घानाय के बीच में पहिले मार्केनाय बैठा था, गुलानी बादम पी तरह, और उगव या मोपामिन। जा भी हो

के घरम पर पहुँचा व्यक्ति होने के कारण प्रेम्भ भोजन प्रणामी को पसन्द करता था और उसने एक रसोइया रस छोड़ा था जिसको क्लब से गन्धिगी के कारण निकाल दिया गया था) और जो सब से महत्व पूर्ण बात थी वह यह कि दैम्येन की घनेकों मोतसे निकाल कर बर्फ में ठंडी करने के लिए रस दी गई थी।

मेहमान ने अपने आलाफी भरे सौर-सरीकों से तथा अत्यन्तजी की उल्लस-रूद की अपनी विशेषता से मेहमानों का स्वागत किया। जैसा पाकिस्तान ने पहिले ही कहा था उसे देखकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उसके बारे में पूछा 'मिरा विचार है, यह भी हमारे ही साथी हैं?' और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही, चिह्नमा, होंगे कैसे नहीं, बकर होंगे।' तब उसने बताया कि वह अभी उस गवर्नर नामक विधिभ अन्त्यु से मिल कर आया है, जो कम्बलस खुदा जाने क्यों किसी न किसी धर्माथ संस्था की धोर से उसे परेशान किया करता है। यह कहना मुश्किल था कि गोलुश्किन गवर्नर के यहाँ जाने में खुश था या उन लोगों के सामने उसे गामी देने में। तब उसने अपने नए भर्ती किए कामरेड का परिचय कराया जिसका परिचय कराने का कामदा उसने उन सबसे कर रखा था और यह नया साथी और कोई नहीं वह पलमा-दुवमा मरियस सा नाटा सोमडीनुमा बेहर का भादमी ही था जो सबेरे उसके पास सन्देश भेज कर आया था और जिस मोसुदिकन ने यास्या नाम का अपना क्लब बताया था। 'यह यातूनी नहीं है,' गोलुश्किन ने बताया पाँचा रँगलियो से एक साथ संकित करते हुए, 'लेकिन अपने उद्देश्य के लिए दिस से धोर आत्मा से अनुरक्त है। यास्या विनम्रता से भुला, घमति हुए, भँपते हुए, मसरे से हँसा। यह बताना असम्भव है कि यह कुत्सित मूय था या पुग्य हुआ धूर्त और बदमाश! 'सज्जनों भोजन पैमाने है वसिए। बराबर बामी मेज पर से कुछ भूख बढ़ाने वाली चीजें मनभर के घाने के बाद सब सोप भाजन के लिए मेज पर बैठे। धोरवा के सुरन्त बाद मोसुदिकन ने दैम्येन माने

का आदेश दिया। जमी हुई भाग के डिम्बे के रूप में शराव बोलन के मुह में से होकर आसों में गिरी। 'अपन - कार्य की सफलता के लिए।' मोनुस्किन ने चिन्ता कर कहा और नौकरों की ओर मुन्ते हुए प्रांग भारी जैसे उन्हें बठा रहा हो कि बाहिरी लोगों के सामने वे बरा सावधान रहें। नया रंगरुट घास्या अब भी चुप था और यद्यपि वह कुर्मी के छोर पर बैठा था और ऐसे खुशामदाना और पिछलगुपन का आचरण कर रहा था जो उन विस्वासों के नितान्त विपरीत था, बिनके लिए वह अपने संरक्षक के शब्दों में दिमो-जान कुर्वान करने को तैयार था। अपने स्वामी के शब्दों को सार्थक सा करता हुआ वह नादीदेपन से शराव पी रहा था। दूसरे, वहरहाल बात कर रहे थे, कहना चाहिए, उनका मेजबान बात कर रहा था— और पाकिस्तान पाकिस्तान विशेषतः। नेम्बानोव अन्दर ही अन्दर फुड़ रहा था मार्क्सोव गाराज था और उसे गुस्ता धारहा था वैसा ही जैसा गुस्ता उसे मुयोरोव के यहाँ आ रहा था। सबिन योङ्गा भिन्न ढंग से, सासाभिन पर्यवेक्षक के रूप में सब देखता रहा।

पाकिस्तान मने मे रहा था! अपनी हानिर जवाबी से उसने पासुस्किन को खुग कर दिया था जिसको सपन में भी यह स्थाल न था कि वह सँगड़ा छोरकर अपने पङ्गास में बैठे नेम्बानोव से फुसफुसाहट में उसका आवा सीच रहा है। उसने सा निदिपत रूप से समझा था कि वह कोई बड़ा सीधा सङ्गा है जिसे अपना बनाया जा सकता है और अपनी आगिर्दी में लिया जा सकता है और कुछ-कुछ इसी लिए वह उम पमन्द भी आया था। अगर पाकिस्तान कहीं उसकी योग्य में बैठा होता तो निदबय ही उसने उसकी पसलियों में उँगली बरदी होती या उसने अपने पर बसरर पीठा मारा होता, क्योंकि वह उसकी धार अपना सिर हिंसा हिंसा के नकेव पर प्रांग मार रहा था। लेकिन उसने और नेम्बानोव के दीप में पहिने मार्क्सोव बैठा था, फूफानी बादन पी तरह, और उसने बाद सातोभिन। जो भी हो

गोलुस्किन पाब्लिन के प्रत्येक शब्द पर विस खोल कर हँस रहा था, और कभी-कभी तो अपने पेट पर अल्पङ मारता हुआ और अपने नीसे मसूड़ों को दिखाता हुआ, वह पहिले ही हँस जाता था इस विश्वास में कि वह कोई ज़रूर हँसी की बात कहेगा। पाब्लिन ने तुरन्त साह लिया कि उस क्या पसन्द है और हर चीज को बुरा-भला कहने लगा (वह उसके स्वभाव के अनुरूप भी था)—हर चीज और हर किसी को, अनुदार दल वाला, उदार दल वालों, अफसरों, बैरिस्टरों, जनों, जमींदारों, जिला समितियों, स्थानीय असेम्बलियों, मास्को और पीटर्स बर्ग, सबको।

‘हाँ हाँ, हाँ, हाँ,’ योल्फ़स्किन ने कहा, ‘निश्चय ही, निश्चय ही। मिसाल के लिए हमारा यहाँ का मेयर पूरा गधा है। महा सूखें। मैं उसे मासक वधाऊँ पर उसकी समझ में एक नहीं आती, वह भी हमारे गवर्नर जैसा ही है।’

‘तुम्हारा गवर्नर भी सूखें है?’ पाब्लिन ने पूछा।

‘मैं तुमसे कसूता हूँ—वह यथा है।’

‘क्या तुमने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि वह गुराता है या मिममिनाता है?’

‘क्या?’ योल्फ़स्किन ने अफ़सोस के स्वर में पूछा।

‘क्या क्या तुम नहीं जानते? वन में हमारे महान नारमिक गुराते हैं, और बड़े सैनिक अधिकारी नाक से मोसते हैं, और जो बहुत बड़े उच्च पद पर हाते हैं वे गुराते भी हैं और नाक से भी मोसते हैं।’

योल्फ़स्किन जोर से हँसत-हँसते मोट-पोट हो गया कि उसने घाँसु लहने लगे।

‘हाँ, हाँ’ उसने कहा ‘वह मिममिनाता है वह फौजी गवामी है।’

‘ओह —ह ह तुम नाक के उखू! पाब्लिन अपने मन में तोष रखा था।’

‘हर चीज निकम्पी है, सड़ गई है, चाहे जहाँ बने जाओ  
गोमुरिकम ने घोड़ी देर बाद कहा ! ‘हर चीज सराव है, धारा बहरा  
हो बिगड़ा हुआ है !’

‘परम सम्मानित कापितन एडिच, पाकिन ने सहानुभूति के  
स्वर में कहा—(यह धनी नेग्मानोव के बान में फुसफुसा रहा था,  
‘वह अपने हाथ क्या इयर उधर नचाता रहता है, मानों मुँहों पर  
उसका बोट सग हो ?)—सम्मानित कापितन एडिच मुन्ध पर  
बिबास बीजिए ध्रापे-बढे तरीका से धय काम नहीं बनेगा !’

‘ध्रापे-बढे तरीकों से ! गोमुरिकन ठहाका मार कर हँस दिया,  
एकाएक हँसना बन्द कर घोर चेहरे की एक प्रजोद भयानक भीगमा  
बनाकर घोसा, ‘धय सिर्फ एक बात है जड से इन सब को खोद  
गिराना ! यात्सा, पिमो गन्दे फुत्ते, पिमो !’

‘घोर, मैं पी रहा हूँ, कापितन एडिच, बनकं ने ग्लास गले के  
भीचे उतारते हुए उत्तर दिया ।

गामुरिकन ने भी एक घोर ग्लाम खासी कर लिया ।

‘बना मामला है ! इसका पेट बना नहीं फटता ? पाकिन ने फूम  
फुसाते हुए नेग्मानोव से पूछा ।

‘इसे घादत है ! नेग्मानोव ने कहा ।

तबिन गिष क्लष ने ही नहीं लिया घीरे घीरे सनी पर शराव का  
गंगा धमर साने लगा । ने गानोव, माकेंनाय, मानोमिन भी धीर  
धीरे बात धीन में रम मेने मने ।

पहिले तो बुद्ध-बुद्ध धारन विरस्तार, बुद्ध धारम मन्त्राप के रूप में  
दि वह अपने धरिन या स्वर धायम नहीं गय सदा बुद्ध कर नहीं  
सना नेग्मानोव क दिमाग में यह बात पर परने लगी कि धब सनय  
ध्रागया है जब महज शरणा न गिलवाइ बन्द करना चाहिए, धय तो  
काम परने का समय ध्रागया है—उमने मंत्रिय निरन्ट ध्रात्राने उक  
का हवाना लिया धीर तब बिना ध्यान दिए कि वह अपनी ही बात

काट रहा है यह घोरों से पूछने लगा कि वह कौनसे ऐसे वास्तविक तत्व हैं जिन पर विश्वास किया जा सकता है, फिर खुद ही कहने लगा कि उसकी नजर में ऐसा कोई भी नहीं। समाज में कोई सहानुभूति नहीं है, जनता में कोई समझ नहीं है।

बाहिर है कि उसे कोई उत्तर नहीं मिला। इसलिए नहीं कि उसको बात का कोई जवाब नहीं था, बल्कि इसलिए कि हर कोई अपनी अपनी बपली बना रहा था। मार्केलोव अपनी बेजान क्रुद्ध भावावस्था में बराबर एकरस जिद्दी गुँज भरे रहा (‘सारे संसार के लिए जैसे वह बन्दगोभी काट रहा है, पाकिस्तान ने फख्सी कसी’)। उसकी कोई बात साफ साफ नहीं सुनाई पड़ रही थी, ‘तोप सेना’ शब्द केवल साफ समझ में आया। वह शायद उसके संगठन में उसमें जो दोष पाए, उन पर प्रकाश डाल रहा था। बात में ‘जर्मन’ और ‘सेना के प्रफसरों’ पर भी टीका टिप्पणी कर रहा था। सोलोमिन ने भी कहा कि इन्तबार के दो ही तरीके हैं इन्तबार करना और क्रुद्ध न करना, इन्तबार करना और भागे भी बढ़ना।

‘प्रगतिवादी लोग हमारे किसी काम के नहीं हैं’, मार्केलोव ने क्लान्त क्षुब्ध स्वर में कहा।

‘प्रगतिवादी अमर से काम धारम्भ करते हैं’, सोलोमिन ने कहा, ‘और हम नीचे से करने की कोशिश कर रहे हैं।’

‘कोई नाम नहीं, जहन्नुम में जाय, इसमें कोई नाम नहीं!’ गोसुदिकन ने एकाएक उत्तेजित होते हुए कहा, ‘हमें तुरन्त प्रयत्न करना चाहिए, तुरन्त।’

‘अर्थात् वास्तव में तुम लिङ्की में से क्रुद्ध पड़ना चाहते हो?’

‘मैं क्रुद्ध पड़ूँगा? गोसुदिकन ने भीसते हुए कहा। ‘मैं क्रुद्ध भी पड़ूँगा! और वास्तव भी! अमर में उससे कहेगा तो वह भी क्रुद्ध पड़ेगा! क्यों वास्तव? तुम क्रुद्ध पड़ोगे न, क्या बी?’

क्लर्क ने शैम्पेन का एक ग्लास और बढ़ाया।



‘जहाँ आप ले चलाने कापितन एहिद्वेष में आपरा साथ दूँगा । मैं  
दुवारा सोचने का भी साहस नहीं करूँगा ।

‘हाँ, तुम्हें करना भी नहीं चाहिए ? करना मैं तुम्हें भेड़े के सींगों  
जैसा मरोड़ दूँगा ।’

घोड़ी देर बाद ही पियक्कड़ों की भाषा में जिसे ऊतदसूस वक वक  
बहते हैं, धुरू हो गई । भयंकर कोसाहल मच गया ।

घरद की घान्त वायु में उडती गिरती बक की पहिली परतों की  
तरह घग्द गोमुदिन के भोजन-घर के गरम वातावरण में एक दूसरे  
से टकराने सङ्कसङ्काने घौर गिरने लगे—हर तरह के घग्द—प्रगति  
सरकार, साहित्य, टैक्स की समस्या, चर्च की समस्या, स्त्रियों की  
समस्या, घदानता की समस्या पुराउन घाद पादरी घर्ग, ययाय याद  
धून्यवाद साम्यवाद घन्तरांटीम घम बाद, उदारपंथी पूँजी घासन,  
संगठन, ऐसोसियेशन, घौर यहाँ तक कि स्यायित्व ! घौर इस कोसाहल  
में गोमुदिन के षोश को उभाड़ दिया, तथ्य का सारा निचोड़ इसी में  
मासूम दे रहा था उसके लिए । ‘यह विजय गर्व का घन्तुमव कर  
रहा था ! ‘यह बात है । हट जाओ नहीं ता मैं तुम्हें मार डालूँगा ।  
कापितन गोमुदिन घा रहे हैं !’ क्लर्क वास्या घाघिर उन्मत्तता की  
ऐसी स्थिति पर पहुँच गया कि नाक से धुर धुर करने लगा घौर प्लट  
स ही बात करने लगा । घौर एकाएक ऐसे षोश पड़ा जैसे उस पर  
बिसी में टोना घर दिया हो ‘इस पम्बन्त प्रीजिम्नत्रियम क क्या  
मानी है ?’

गोमुदिन एकाएक चौंक कर उठ पड़ा हुआ घौर उसने अपने  
तमतमाए साल चहरे को पीछे भटका जिस पर कि एक घजीब  
बर्बरता घौर दोगी, गुम घाराका घौर उन्नहन का मिनाडुला भाव  
था घौर षीमा में एक हजार का घौर स्याग करूँगा ! वास्या  
निकालो ! इसक उत्तर में वास्या में दबी घायाज में रहा ‘गया नाम  
य घम्बन्त !’

पाकिस्तान का बेहरा पीसा पड़ रहा था और उसे पसीना छूट रहा था ( क्योंकि पिछले १५ मिनट से वह पीने में ब्लॉक का साथ दे रहा था ), पाकिस्तान अपनी जगह से उछलते हुए और दोनों हाथ सिर के ऊपर उठाते हुए दूटी हुई आवाज़ से चिल्लाया, 'त्याग, यमिदान ! आपने कहा ! ओह उस पवित्र शब्द का कैसे पतन ! त्याग ! हे त्याग, किसी में तुम्हारी उच्चता तक पहुँचने की शक्ति नहीं, किसी में शक्ति नहीं है कि उन कर्तव्यों का पालन कर सके जो कि तुम उसे सौंपते हो, कम से कम इन लोगों में तो जो कि यहाँ मौजूद हैं और यह दुःख, यह भयम, रूपों का बोध, जो अपने फूलते हुए साम पर ऐंठता है ? झुटी भर स्वस फेंक कर त्याग की डींग मारता है। और बाहता है कि हम इसके कृतज्ञ हों, उम्मीद करता है कि हम उसे यश के हार पहनाएंगे—नीच यदमाश !' पाकिस्तान ने जो कुछ कहा उसे गोमुस्किन ने या तो सुना नहीं, या समझ नहीं और सम्भवतः उसकी बातों को मजाक समझा, क्योंकि उसने फिर एक बार और से चिन्ताकर कहा, 'हाँ ! एक हजार स्वस कापितन एन्ड्रिय वात का पक्का है !' एकाएक उसने अपनी धगल की जैब में हाथ डाला। यह तो यह रही रकम। इसे जैब में रखो, और कापितन को याद रखना। जैसे ही वह आदेश की एक विशेष स्थिति में पहुँचता तो अपने को अन्य पुरुष की कोटि में रखकर वह छोटे बच्चों की तरह यातें करने लगता। नेघानोब ने धराब से भीगे मेज के बपड़े पर बिजरे नोटों का घोन मिया। अब इसके बाव रकने का कोई काम नहीं था और अब धेर भी हो रही थी, वे सब उठ सके हुए, अपनी अपनी टोपियाँ उठाए और घब घब दिए। खुसी हवा में धाकार वे सभी एक उमस का अनुभव फरन सगे साथ तौर से पाकिस्तान।

'तो ? अब हम भोग कहाँ जा रहे हैं ?' वह बड़ी मुस्किन स कह पाया।

'तुम कहाँ जा रहे हो, मैं नहीं जानता,' सोसोमिन ने उतर दिया 'मैं तो घर जा रहा !'

‘अपने काम्नाएँ का ?’

‘हाँ ।’

‘घापी रात में घोर वह भी पैस ।’

‘तो क्या हुआ ? न तो रात में नेटिए हैं और न डॉकू, और मैं  
विरहस स्वल्प हूँ और चलने का योग्य हूँ । रात की ठंडप में चलना  
भी मजबूर होता है ।’

‘निश्चिन, यह तो तीन मील है ।’

‘भयंकर वह भार भी हो ता क्या हुआ ! अथवा ‘नमस्ते  
दोस्तो ।’

सोलोमिन ने अपने को ब बटन लगाए, टापी माथे पर भागे की  
छोपी, सिगार जलाया, और सम्ये कदम रखत हुए सड़क पर चल  
पड़ा ।

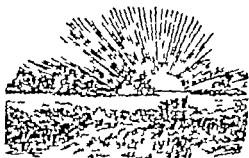
‘और तुम कहाँ जा रहे हो ?’ पाकिस्तान ने नेज्जानोत्र से पूछा ।

‘मैं इनच यहाँ जा रहा हूँ । उसने माफ़ेनोव की ओर संकेत किया,  
जो सीनेपर हाथ बांधे हुए एक-दम स्थिर खड़ा था ‘हमारे साथ  
बग़ी है ।’

‘ओह, अब तो ठीक है और मैं निश्चिन्तान जा रहा हूँ,  
फोसुता और फिमुता के पास । और तुम ता जानते ही हो, मैं तुमसे  
क्या कहूँगा ? पागलपन यहाँ है और पागलपन यहाँ है । सिर्फ़ वह  
पागलपन अठारवीं सदी का पागलपन है जो तुम्हारी इन बौद्धों सदी  
के पागलपन का बजाय नयी धारणा के अधिक निकट है । नमस्ते  
महागर्ग । मैं पीए हुए हूँ, मुझे नाराज मत होना । सिर्फ़ एक बात  
बहन की दबाव दो ! मरी बहन स्नानहुल्या में बदनर दमानु  
और भरी घोरत इन पृथ्वी पर दूसरी नहीं है और तुम देखत  
हो, वह क्या है—एक बुरी और उसका नाम स्नानहुल्या है । इस  
संगार में हमें ता लेना ही हाता है । हार्नानि यह ठीक ही है कि उसपर

यही नाम होना चाहिए। क्या तुम जानते हो कि सन्त स्नानदुस्मा कौन थी? एक घमर्तिमा दयालु स्त्री जो जेल जाती थी और कैदियों के धार्यों को भ्रष्टा करती थी और बीमारों की सेवा करती थी। भ्रष्टा तो नमस्ते! नमस्ते, भलेपत्नी—वह, जिस पर बया करनी चाहिए। और तुम! तुम अपने को एक भ्रष्टार कहते हो भोह! मनुष्य शोही! नमस्ते!

वह जंगलवाला हुआ और शिके खाता हुआ बिल पड़ा निम्नलिखित की ओर, मार्केलोव और नेज्यानोव बड़े की ओर चल पड़े, अहाँ उन्होंने अपनी बगधी छोड़ी थी। पहुँचकर बग्गी जोतने का धावेस दिया और भाग घन्टे बाद वे लोग सहफ पर बढ़े जा रहे थे।



## इच्छीस

आनमान में नीचे तक गहरा वादल छाए हुए थे लेकिन घघेरा बोई ज्यादा नहीं था। सड़क पर खुदा गाड़िया की लीजें पहँचानी जा सकती थीं। दौए-बाँए हर एक चीज छाया में थी और मनग-मनग चीजों की रेग्राटिवाँ आपस में मिनकर उलने हूए फासे धव्वे बना रही थीं। यह एक काली नयानक राश थी, विम्वृत्त आनाज क लता और बर्पा की गुगध स नीनी ठंडी मम हवा क न्येके दग म चल रहे थे। जब व बसुल की न्याड़ी को पार कर गए जा एक मौल स्तम्न बनाती थी ता व एक दूसरी सहर पर मुडे। इस सड़क पर कानी हौनना और ना मुदिकन हा मदा, यह पतनी दगर बहा-कहीं ता विल्कून ही मन्दन हा जाती थी कापवान और दोमी गति स दग्पी हौन रहा था।

हम माग वही सन्ता ता महीं चुन रहे हैं? मग्गनाज मे पहा जा मनी तक चुप बैठा था।

‘नहीं, हम रास्ता तो नहीं भूलेंगे !’ मार्कोलोव ने उत्तर दिया । ‘एक दिन मैं वो दुर्भाग्य एक साथ नहीं आते ।’

‘क्यों, पहिना दुर्भाग्य भला क्या था ?’

‘हुमने ब्यस ही अपना सारा दिन बर्बाद किया—क्या यह कोई दुर्भाग्य ही नहीं है ?’

‘ओ, हाँ हाँ हाँ वह शैतान गोमुस्किन ! हुमें इतनी धराव नहीं पीनी थी । मेरा तो सर दद कर रहा है ‘बड़े जोर से ?’

‘मैं गोमुस्किन की बात नहीं कर रहा था , उससे हम कम से कम कुछ पैसे तो ऋटक लाए , उसने यहाँ, हमारे जाने का कुछ तो साम हुमा ।’

‘पाकिपन हुमें अपने रिश्तेदारों के यहाँ स गया क्या भला वह उन्हें पहता था—तोता उस पर तो तुम कही पश्चाताप नहीं कर रहे ?’

‘उसमें तो पश्चाताप करने की कोई बात नहीं है’ ‘और न प्रसन्न ही होने की कोई बात है ! मैं उनमें से नहीं आ ऐसी छोटी मोटी बातों में दिलचस्पी लते हैं’ ‘मैं उस दुर्भाग्य की बात नहीं कर रहा था ।’

सब, फिर ?

मार्कोलोव ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह सिर्फ थोड़ा अपने क्रोमे की एक ओर को घुस गया जैसे वह अपने को सिकोड़ रहा हो । नेग्यानोव स्पष्ट रूप से उसका चहुरा नहीं देख पा रहा था , सिर्फ उसकी भूँछें झाड़ी तिरछी काली लकीरों के रूप में दीख पड़ रही थीं, लेकिन सवेरे से ही वह देख रहा था कि मार्कोलोव के मन में कुछ हो रहा है, लेकिन उसे न बुरेदना ही अच्छा था—कुछ पुँचली सम्पष्ट उतरेजना ।

‘बठाओ न , सर्जोमिहामाविच,’ काफी देर की चुप्पी के बाद उसने पूछा ‘क्या तुम ईमानदारी से किस्म्याकोव के उन पत्रों को, जो तुमने

भाज सबेरे मुझे पढ़न का दिए थे पत्र नरत हो ? तुम तो जानत ही हो—मेरे मूँके और सीधे छात्रों के लिए मुझे माफ करना—यह सप ध्यय की बकबात है !

मार्कोलोव साचा ।

'पहिनी बात सा यह है,' उसने राप पूरा स्वर में कहना शुरू किया, 'उन पत्रा के बारे में मैं तुम्हारी राय से विल्कुल भी सहमत नहीं। मैं उन्हें बहुत महत्वपूर्ण और सजग समझता हूँ। और दूसरी बात यह कि किम्पानोव महनत करता है और लोगों को अपना बना सता है और फिर इससे भी बढ़ कर यह विश्वास करता है, वह हमारे उद्देश्य में विश्वास करता है, वह दान्ति में विश्वास करता है। मैं तुमसे एक बात साफ कह देना चाहता हूँ अगस्ती दिमित्रियिच, कि मैं देखता हूँ कि तुम—उद्देश्य के प्रति लिए बड़े निष्ठाही हो, तुम उसमें विश्वास नहीं करते।

ऐसा तुमने किस साचा ? मर्यानोव के और से बिराध किया।

'तुम्हारी सारी बातें तुम्हारा सारा व्यवहार यह प्रकट करता है। भाज गोपुदिकन के यहाँ जिसने यह कहा था कि किन्हीं पर विश्वास किया जा सकता है कुछ पता नहीं ? तुमने। जिसने पूछा था कि एक भी बताओ ? तुम ! और जब यह तुम्हारा दोन्ना यह दाँत निपारन माना बन्द, यह नाइ, मि० पाकिगन घासमान की धार धाँध उठा कर एमान करने लगा—कि हममें से कोई भी त्याग के योग्य नहीं है, तो जिसने उस वक्तावा किया था कौन था जिसने महनति में फिर हिमाया था ? क्या वह तुम नहीं थे ? तुम अपने लिए चाह जा फहा और अपने लिए चाहे जा माओ, तुम्हारी मर्जी यह तुम्हारा मामला है सतिन मैं ऐम साता था भी जानता हूँ जो जीवन का मपुर बनाने वाली हर चीज का त्यागने के लिए तैयार रहते हैं और अपने धारणों के प्रति अफारार रहने के लिए प्रेम के सोनाग्य एक का त्याग देते हैं। अपने धारणों के माप कभी गहारी नहीं करते। ओह, भाज तुम उसका माय नहीं हो, निष्पथ ही।

हमारी भ्रैपद्विया , कोचवान ने कहा , 'भो, बड़े घसो मेरे घोरो, बड़े घसो !'

प्रकाश बार-बार दीखने लगा ।

'उस अपमान के बाद,' नेग्धानोव ने भास्त्रिकार कहना शुरू किया, 'तुम समझ सकते हो, सबों मिहालोबिच कि मैं अब तुम्हारे घर में रात नहीं बिता सकता , इसलिए, हासार्कि अप्रिय बात है, फिर भी मुझे कहना पड़ रहा है कि भर पहुँचकर तुम मुझे अपनी बग्गी दे दो ताकि मैं शहर तक वापस जा सकूँ । वहाँ से फिर मैं सबेरे भर पहुँचने का कुछ प्रबन्ध करूँगा , और फिर तुम्हें मैं वहाँ से सूचना भेज दूँगा, जिसकी तुम्हें निश्चय ही चाह है ।'

मार्केलोव ने तुरन्त कोई उत्तर नहीं दिया ।

'नेग्धानोव,' उसने नीचे पर निराश स्वर में कहा, 'नेग्धानोव ! ईश्वर के वास्ते मेरे घर चलो, ताकि मैं घुटनों के बस बैठ कर तुमसे माफ़ी माँग सकूँ ! नेग्धानोव ! सुन जाओ घनकती ! भूल जाओ, सुन जाओ मेरी मूर्खतापूर्ण बातों को ! भोह, काश कोई समझ पाता कि कितना दुखी है मैं !' मार्केलोव ने अपनी छाती पर धूँसा मारु और एक बराह उसके मुँह से निकली । 'अपेकती ! मुझ पर क्या करो ! मुझे अपना हाथ दो ! मुझे माफ़ करने से इन्कार मत करना !'

नेग्धानोव ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया—अनिच्छा से— फिर भी बढ़ा दिया । मार्केलोव ने उसे इतनी जोर से दबाया कि वह करीब-करीब चीख पड़ा ।

कोचवान ने मार्केलोव के घर की सीढ़ियों पर बग्गी साबर रोक दी ।

मार्केलोव थोड़ी देर बाद अपने कमरे में बैठा नेग्धानोव से कह रहा था 'मुनो, अपेकती , 'प्यारे भाई , उसने प्रेमासिद्ध सम्बोधन किया, ऐसा स्नेह सिद्ध सम्बोधन, जिसमें अपने सफल प्रतिद्वन्द्व के प्रति,



जिसका उसने अभी मृतक अपमान किया था, जिसे वह मार डालना चाहता था, टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहता था, अर्खंड धारम त्याग का भाव था और विनम्र विनय थी और एक प्रकार की अधिकार पूर्ण याचना भी

नेग्दानोव ने मार्केलोव को भी उसी स्नेहपूर्ण स्वर में सम्बोधन करना प्रारम्भ कर उस अधिकार पूर्णयाचना को स्वीकार कर लिया था।

‘सुनो अलेक्सी ! मैंने अभी कहा था कि मैंने प्रेम का सुग त्याग दिया है, उसे छोड़ दिया पूरी तरह चाकि पूरी तौर से अपने उद्देश्य की सवा कर सकूँ वह सब बकवास थी, बारी घोली थी ! मुझे वह सब कुछ कभी मिला ही नहीं। मेरे पास कुछ त्याग करने को था ही नहीं।—मैं अभागा ही पैदा हुआ और अभागा ही रहा और चायद यह ठीक भी था होना भी यही चाहिए था। क्योंकि मैं उसके मोम्य भी नहीं। मुझे कुछ और करना है। तुम दौना कर सबत हो प्रेम कर सकते हो और प्रेम लिए जा सकते हो और साथ ही साथ उद्देश्य की भी सेवा कर सकते हो तुम बड़े भाम्यशाली हो ! मैं सुमतो ईर्ष्या करता हूँ लेकिन यह भी मेरे भाम्य में नहीं। मैं ईर्ष्या भी नहीं कर सकता। तुम सुगी हो ! सुगी हो ! मैं नहीं हो सकता।

मार्केलोव ने यह सब एन नीची कुर्सी पर बैठे-बैठे दबो जुवान स कहा उसका सिर उथल हाथों के बीच में भुगा हुआ बगल वा निर्जीव सा सटका हुआ था। नेग्दानोव उमने सामने खड़ा था, स्वजित सतर्कता में अभिभूत सा हातांनि मार्केलोव उम सुगी यह रहा था, म यह सुगी दील रहा था और न सुन का अनुभव ही कर रहा था।

‘युवायस्था में मुझे घोगा लिया गया ‘मार्केलोव महता गया, वह बड़ी उत्तम गुन्दर सडकी थी फिर भी उसने मुझे घोगा दिया और बिसने लिए ? एन जमन के लिए ! एन उहायब मेजर के लिए ! जबकि मरिपाना—’

बहु रुक गया पहिली बार उसने उसका नाम लिया था और सगा कि उसके होठ बल उठे ।

‘मरिमाना ने मुझे घोसा नहीं दिया , उसने मुझे पहिले ही साफ-साफ बताया था कि यह मेरी परवाह नहीं करती, मुझे प्रेम नहीं करती और बरे भी क्यों ? उसने अपने को मुझे दे दिया है और, तो क्या हुआ ? क्या यह सुदमुस्तार नहीं है ?

‘मोह, डूरो, डूरो !’ नेग्मानोव चिल्लाया, ‘यह तुम क्या कर रहे हो ? अपने को दे दिया है ? मैं नहीं जानता कि तुम्हारी बहन ने तुम्हें क्या सिखा है , लेकिन मैं फसम सागर तुमसे कहता हूँ—

‘मैं नहीं कहता कि धारीरिक रूप से , मेरा मतलब है मन से यह तुम्हारी होगई है, हृदय से, आत्मा से’ मार्कोलोव न बात काट कर रहा । यह निश्चय ही किसी न किसी कारण से नेग्मानोव के इस बचन से आहत ही हुआ । ‘और उसने प्रणय ही किया ! रही मेरी बहन की बात निश्चय ही कोई बोट पढ़वाने का उसका इरादा नहीं है कम से कम, उस उसकी परवाह भी नहीं , लेकिन वह तुमसे पूरा करती है और मरिमाना को भी । वह भूट नहीं कह रही लेकिन, और छाओ उसकी बातों को !

‘हाँ, नेग्मानोव ने अपने मन में सोचा : ‘वह हमसे पूरा करती है ।

एव भले के ही लिए है, मार्कोलोव ने उसी स्थिति में रहते हुए कहना जारी रखा । मेरे लिए अब पीछे हटने के अन्तिम रास्ते भी बन्द हो गए, अब मेरे लिए कोई बाधा नहीं है ! कोई परवाह नहीं गोस्तिगिन भले ही काठ का उल्लू है , इससे कुछ नहीं बनता बिगड़ता । और किस्व्यादोव ने पत्र के बरबास हैं, पायद लेकिन हमें तो अपने मुख्य उद्देश्य पर ध्यान देना है । उसके अनुसार हर जगह तैयारी पूरी है । तुम्हें पायद बिदवाच नहीं हो रहा है ?

मेरघानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया।

‘तुम्हारा कहना ठीक है पायद वैशिन प्रगर उस समय का इन्तजार करे जब हर चीज पूरी तरह तैयार हो जाय तो वह समय सभी न चाएगा और हम अपना काम सभी गुरु भी न कर पाएंगे। अगर कोई धारम्भ में ही सारे परिणामों को परगने लग जाय तो निश्चय ही कुछ न कुछ सुर परिणाम हर एक काम में मिस ही आये। मिसाल के लिए जब हमारे पीछे के लोग ने रिगाना की मुक्ति का प्रास्तावक संगठन करना गुरु दिया था तब क्या ये देण सफ़र के कि इस मुक्ति का एक परिणाम होगा—महाजनो जमोशरी यम का जम जा किसानों को छः खदल में पीवाई मन मिट्टी मिनी राई पत्र में देगा और बदल में उगस कसू करेगा (भाबेंना ने एक उँगसी उगई) मजदूरी में पहिले पूरे छः खदल और फिर (भाबेंना ने दूसरी उँगसी भी उगई) पीवाई मन राई और पत्र (भाबेंना ने तीसरी उगसी भी उगई) ऊपर में उगया सूद भी।—वास्तव में, ये किसान को आगिरी बूद तक पूरा लसे है। हमारे मुष्टिवातामा ने इसरी बन्धना भी न की थी जब गुरु मानना होगा। और फिर अगर उन्होंने यह कल्पना कर भी ली है तो नी रिगानों को आजा कराना ही उनके लिए उचित था बजाय इस कि उगा परिणामा पर सांगते रहना ! तो मैंने तो निश्चय कर लिया है।

मेरघानोव ने गवने की गी हावत में प्रान सुन्दर दृष्टि से उधरी धार दगा, लजिन यह तो दूसरा धार फान में नजर गड़ाए हुए था। उधरी भाँह सिधुड़ा हुई थी गगना धौगा पर कुली हुई। वह धवन हाड बाग रहा था और सूँटे गवा रहा था।

‘जी मैंने तो निश्चय कर लिया है। उगने सुदराय और धपना धौवता पूरा धवनी जीर्ण पर मारया हुआ यह धौवता। मैं एव हनी एवभाव का धौवता है, तुम जानते हो मैं यरार में मरु धाय गी नहीं है।

तब वह उठ खड़ा हुआ, और सबसड़ाते हुए जैसे गिर रहा हो, वह अपने ध्यान-कक्ष में चला गया और एक मरिचाना की फ्रेम में बड़ी छोटी सी तस्वीर लिए वापस आया।

‘इसे देखो,’ उसने दुखी किन्तु स्थिर स्वर में कहा, यह मैंने कभी बनाई थी। मैं अच्छी तस्वीर नहीं बना पाता, लेकिन देखो, यह बिल्कुल वैसी ही लगती है—सजीव, (वह पेन्सिल की तस्वीर सबसुख सजीव लगती थी।) इसे देखो मेरे माई, यह मेरी अन्तिम बसीयत है। इस तस्वीर के साथ मैं तुम्हें अपने सारे अधिकार सौंपता हूँ वैसे तो कोई ये भी नहीं... लेकिन तुम तो सब कुछ जानते हो, अलेक्सी! मैं तुम्हें सब कुछ देता हूँ, अलेक्सी और उसे प्यारे माई, वह बड़ी अच्छी... बड़ी भली’

मार्कोसोव धम गया। उसके सीने की धड़कन साफ दिसाई दे रही थी।

‘ओ इसे। तुम मुझे नाराज तो नहीं हो! अलेक्सी? तो फिर देखो। अब मेरे पास कुछ नहीं है और मैं कुछ चाहता भी नहीं।’ नेज्बानोव ने चित्र लेलिया, लेकिन एक अजीब धनुमूर्ति ने उसके मन को दबोच लिया। उसे लगा कि जैसे उसे यह भेंट लेने का कोई अधिकार नहीं है कि अगर मार्कोसोव का पता चल जाय कि उसके मन में क्या था तो शायद वह यह चित्र उसे न देता। कामे रंग के बीसठे में सावधानी से जड़ सुनहले कागज पर दने गोस चित्र को सम्हाल कर वह अपने हाथ में धामे हुए था और समझ नहीं पा रहा था कि उसका क्या करे। ‘एक मनुष्य का सारा जीवन उसके हाथ में है,’ उसके मन में विचार आया। उसने अनुभव किया कि मार्कोसोव कितना धारम त्याग कर रहा है, लेकिन धारिर क्यों, क्यों। क्या वह चित्र वापस कर दे? नहीं! यह तो और भी क्रूरता होगी और फिर क्या वह कहए उसे प्यार नहीं? क्या वह उसे प्रेम नहीं करता?

मेग्जानीव ने किसी आन्तरिक भाव से प्रेरित होकर मार्क्सोव की घोर देखा। क्या वह उसके भावों को पढ़ने का प्रयास करता हुआ उसकी घोर नहीं देख रहा था? लेकिन मार्क्सोव फिर उसी कोने में एकटक देख रहा था और अपनी सूँघें कूतर रहा था।

बूढ़ा मौकर हाथ में मोमबत्ती लिए हुए कमरे में आया।

मार्क्सोव चौकता हुआ बोला।

‘सोने का समय हो गया है, प्रिय अनेक्सी!’ प्रातःकाल में शुभ विचार आते हैं। मैं तुम्हारे घर पहुँचने का प्रबन्ध कर दूँगा, प्रच्छन्न भव अमविदा मेरे दोस्त।

‘घोर तुम्हें भी ममस्ते मेरे बुजुर्ग। उसने एकाएक मौकर की घोर घूमते हुए और उसके कन्यों को धपपपाते हुए कहा भिरे लिए शुभ कामना करना।’

बहु वृद्ध ऐसा भीषणका सा रह गया कि मोमबत्ती उसके हाथों से छूट कर गिरते गिरते रह गई और उसकी धाँसे अपने मालिक पर झुक गईं जिनसे हमेछा की निराशा से भिन्न—कृष्ण घोर ही भाव प्रमट हो रहा था।

मेग्जानीव अपने कमरे में गया। बहु बड़ा दुःखी था। रात में घायब पीने से उसका सिर में अथ भी दर्द हो रहा था। उसके कान पूँज रहे थे, घोर धाँसों के सामने जिनगी उड़ रही थी हानार्कि उसने धाँसे बन्द कर रखी थीं। योमुदिक्रम क्लर्क वास्या फोमुस्का फिमुस्का, सब उसकी धाँसों के सामने नाच रहे थे घोर दूर पर मरिमाना की धाँसि अविद्वसनीय सी लग रही थी, पास नहीं आती थी। उसने जो कुछ कहा था या किया था सब उसे झूँठ लग रहा था और प्रेम ऐसा विषाऊ घोर फिन्सुस बफबास घोर जो करम करना चाहिए था, उरेस्य, जिसके लिए उपयोग करना चाहिए था, कहीं-भी नहीं दीख पड़ रहा था, ताने घोर सीखकों में भी अप्रपाय्य अथम ठम में डूबा हुआ

वह उठ कर मार्कोलोव के पास जाना चाहता था और उससे कहना चाहता था कि 'अपनी गैट वापस लेलो, वापस लेलो ! लेकिन वह उठने में असमर्थ था ।

'मोह ! कसा घृणित है यह जीवन !' वह आसिर पीस पड़ा ।

दूसरे दिन सुबेरे वह तड़के ही चल दिया । मार्कोलोव पहिले से ही सीढ़ियों पर किसानों से घिरा हुआ खड़ा था । पता नहीं उसने उन्हें एक साथ बुलाया था या वे अपने आप आए थे, मेग्धानोव नहीं समझ सका , मार्कोलोव ने बड़े ही संक्षिप्त रूप में और खलता से उसे नमस्ते की - 'लेकिन लग रहा था जैसे वह किसानों के सामने कोई अस्पष्ट महत्वपूर्ण ऐशान करन जा रहा है । बड़ा नौकर अपनी उठी भाषा भांगमा में सीढ़ियों पर खड़ा था ।

यन्त्री तेजी से नगर को पार कर गई, और खुले मैदानों में होकर बड़ी तेजी से बड़ी जा रही थी । घोड़े वहीं थे, सौकन कोचबान, शायद इसलिए कि मेग्धानोव एक आलीशान मकान में रूखा है, या और किसी कारण से बोटका की उम्मीद किए था - 'और हम सब जानते हैं कि जब कोचबान को बोटका मिल जाय या उसे मिलने की आशा हो, तो घोड़े बहुत तेजी से भागते हैं । वह पून का महीना था, पर बातावरण ताजा था , धने-धने बादल आसमान में फिर रहे थे , हवा तेज चल रही थी , पिछले दिन की सर्प से सड़क पर घूस दब गई थी , सरी के पेड़ों से टफरा कर हुआ सरसरा रही थी, हर चीज गतिशील थी, हरे जंगलों में दूर के डभाव से उत्सू की बोली सुनाई पड़ रहा था, जैसे बोली के पल हा और वह उनपर उड़ रही हो , और आसमान में उड़ रहे थे , पानी मक्सियो जैसी कोई चीज निर्मल खुले आकाश में सीधी रखा के रूप में रंग रही थी—यह किसान थे जो दूसरी बार अपने जेबों को जोत रहे थे ।

लेकिन मेग्धानोव ने यह सब कुछ नहीं देखा, उसने वह भी ध्यान

नहीं लिया कि वह मित्राग्नि की नागीर में होकर बन रहा है। वह अपने विचारा में ही गोया हुआ था।

जब उसने मसान की ऊपरी मंजिल की गिड़गो देनी तब यह चौरा यह मरिमाना की गिड़गो थी। हाँ उनमें अपने ग पहा और उसका मन में प्रेम की चमक भी उत्पन्न होगई यह ठीक पढ़ता था यह बड़ी अच्छी सड़की है धीरे में उमम प्रेम करता है।



## घाईस

उसने जल्दी-जल्दी अपने कपड़े बदले, घोर कोल्पा को पहाने गया। रास्ते में सिप्यागिन से भोजन घर में उसकी भेंट होगई। सिप्यागिन ने विमञ्जता से किन्तु उदासी से नमस्ते की और अपने मुह ही मुह में बुदबुदाकर पूछा, 'यात्रा सुखशायक छो रही ? और अपनी अभ्ययनशाला की ओर चला गया। उसने अपनी कूटनीतिक बुद्धि से यह निश्चय कर लिया था कि अब छुट्टियाँ समाप्त हो रही हैं और वह जल्दी ही इस शिक्षक को पीटर्सबर्ग रवाना कर देगा क्योंकि वह जान गया था कि उसके विचार 'निश्चित रूप से अधिक प्रतिकारी' हैं और इस बीच में वह उस पर कड़ी नजर रखेगा उसने सोचा, 'और जोमी हो।

बालेन्तिना मिसालोवना की गैरमान्यता के प्रति भावनाएँ, बड़ी तीव्र और स्पष्ट थीं। वह अब उसे किसी तरह सहन नहीं कर सकती थी—इसने—इस गान्धीन सड़के ने—उसका अपमान किया है। मरिघाना ने



समस्त नहीं समझा था। बालकिन्ना मिग्नालाबना ही थी, जो गैमरी में लड़ी उस पर और नेग्गानाव पर जामूसी कर रही थी। वह महान महिला भी इस ईर्ष्या द्वेष से ऊपर नहीं थी। नेग्गानोव की उन दो दिना की अनुपस्थिति में हालांकि उसने अपने मुह से मरिघाना से कहा था कुछ नहीं, लेकिन अपने हर व्यवहार से वह बार-बार उसे यह संकेत देती रही थी कि वह सब कुछ जानती है, और अगर वह उस भाषे में स भुणा और भाष मन से उन पर दया न करती हाथी तो उसकी दया अत्यन्त दयनीय हो जाती। उसका बहर पर कठोरता और आन्तरिक धृणा ब्यात की उसरी नोहे कटूता से ठनी हुई थी पर साथ ही जब वह मरिघाना की ओर देखती या उससे बात करती, तो उसका मन उसके प्रति दया से भर उठता, उसकी अनुपमम भाँपे बोमल उलझन और दुःख भरी सीन्तक साथ उस स्वामिमानीनी हठी सड़री पर जम जाती। जो अपनी समान उभाणा कल्पनाओं के बाद इतनी पठित हो गई थी कि उस चौंघेर कमरे में पुम्बन में भावक थी एक सुद सड़के के साथ।

बेचारी मरिघाना! उसका कठार गर्बनि होंठ किसी घादमी के पुम्बन का स्वाद अभी तक नहीं जानते थे।

बालकिन्ना मिग्नालाबना ने अपने पति को इस बाँध की बाना बान भी लखर नहीं होमे दी थी उसने सिर्फ उसकी उपस्थिति में मरिघाना से एक क्षण पूरा मुस्वान के साथ कुछ उभर विनिमय करके ही सन्नाय कर लिया था, जो किसी तरह अपने प्रसंगित धर्म के अनुपम में बिलुप्त नो न थे। बालकिन्ना मिग्नालाबना निर्दिष्ट रूप से धरन मार का माघे घटना का ब्यारा देते हुए पत्र लिखकर दुःख—का अनुभव कर रही थी। लेकिन मारी बातों को समझ कर उधन पचासाप करना ही उचित समझते और वह उमन कर लिया, यह साथ कर कि अगर उमन पत्र न मिगा हाता तो अच्छा हाता।

भोजन के समय नेग्गानाव का मरिघाना की एक भनक मिली।

उमे भगा जैसे वह दुवली और पीनी पड गई है, यह उस दिन बरा भी सुन्दर नहीं लग रही थी, लेकिन उसके कमरे में प्रवेश करते समय मरिचाना ने उस पर जो चढती नजर डाली, वह सीधी उसके हृदय में घुसती चली गई। और वासेन्तिना मिशालोवना ने उसकी ओर इस दृष्टि से देखा मानो यह मा ही मन बार-बार दुहरा रही हो, 'मैं तुम्हें बघाई देती हूँ।' और साथ ही साथ वह उसके बेहरे से यह पता लगाना चाहती थी कि मार्कोवोव ने उमे वह पत्र दिखाया है या नहीं। अन्त में उसने निश्चय किया कि उसने पत्र दिखा दिया है।

सिप्यागिन ने यह सुन कर कि नेज्दानोव उस बारखाने में भी गया था जिसका मैनेजर सोलोमिन है, उससे उस दिग्गजस्य कारखाने के घारे में प्रश्न-पर-प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। लेकिन उसके उत्तरों से सीधे ही समझ कर कि उसने वहाँ कुछ भी नहीं देखा उसने गीवीनी चुन्नी साथ ली। उसके बेहरे पर एक प्रकार का पक्षतावे का भाव था कि क्यों उसने ऐसे अधिकसित छोकरे से एमी मूल्यवान जानकारी रखने की प्रार्था की। जब वे लोग भोजन घर से चले गए तो मरिचाना को नेज्दानोव से इतना फुस-फुसा ने था अजसर मिन गया, 'पुराने भोजन पत्र का बगल में मेरी प्रतीक्षा करना असेक्सी मैं मौका लगते ही सीधी वहीं माऊंगी।' नेज्दानोव ने सोचा 'यह भी मुझे अनेक्सी कहती है, जैसे वह कहता था। और उसे यह निकटता कितनी मधुर लगी। हाँसाकि भयंकर भी। और कितनी आश्चर्य जा, और कितनी अधिश्वसनीय बात होती अगर, वह एकाएक उसे फिर मि० नेज्दानोव करके कन्हो लग जाती अगर वह उससे दूर हो जाती! उसने गदसूस किया कि यह स्मिति उसके लिए बड़ी दुःखदायी होगी। वह उससे प्रेम करने लगा है इसका निश्चय अभी उसे स्वयं भी नहीं था, लेकिन यह कि वह उसके लिए मूल्यवान है और उसके निश्चय है और आवश्यक भी—हाँ, सबसे अधिक आवश्यक—यह अनुभव उसके हृदय की सबसे भीची गहवाई तक में हो रहा था।

मरिचाना जहाँ नेज्जानाव का अपना इन्तजार करने के लिए कहा था, उस स्थान पर पहुँच सी आज पत्र के जीण मीगु पुरान पेड़ के अधिवासी चरु टपकता था। हवा कम नहीं हुई थी घनी धारों तथा चन्द्रकेतु रही थी, वादल तेजी से भागगत में क्षीय रहे थे और उनमें से जब एक न मूख का टुकड़ा चिया से हूँ जीव—जाना जा नहीं पर पुष्प रंग से रंग उठी। जब मूर्ख वादन के वादे से निकल आया तो प्रकाश के धमकते धब्बे यहाँ यहाँ जमान पर जाग-जाग से उचटन का करत हुए आपस में चर्च छोड़कर घबरा के भाग निकल हुए मानने लग पता की भरमनाश जीव गति बैनी ही था जब एक प्रकार का उत्सवो आनन्द उद्यम भाग्य गया था। इस तरह के आनन्द पुरुष बातावरण में भाषना का भावा पीड़ा से घाँसून घीर सारा हृदय में प्रवेश करता है और नेज्जानाव का हृदय उस समय ऐसा ही हो रहा था।

यह एक भोलेपत्र के तन से महार मुख गया और प्रतीक्षा करने लगा। यह सपमुच नग जानता था कि वह कैसा अनुभव कर रहा है और वह भावना भी नहीं जानता था। वह एकांत मारिचाना के यहाँ न भी प्रसिद्ध परगानी और हनुमन्त पत्र का अनुभव कर रहा था। जा तो हा यह पत्र का मारा धीमे उतारना था उतारना जाने का उम्मीद हो रहा था। जा जाना दो दिना का आरग में बाँध करी है, पचास गावगा के साथ उतार हृदय में घाँसून म हा गी। नेज्जानाव उन स्थापना दिना में भाग रहा था ता तत्र पाठ पर करी जाती है जब कि जहाँ सत्री में चलन जाना हास है और यह पाठ के गूँठि म फल कर साथ दा गर्द है और आनन्द का मारा है।

राज्याद में। ईशान की अनुभवा है।

यह एकांत की उता। पूरे पर तन में एक स्थापना यथा की एक कला गिना था। यह मरिचाना थी। नज्जिन पर उता यह नहीं था किम कि प्रताप के और छोड़कर धर्म तथा अकार का भार

सरक रहे हैं तब तक वह यह नहीं निश्चय कर पाया कि वह भा रही थी या जा रही थी। ठा वह भा रही थी। अगर वह पीछे की ओर जा रही होती तब वह धम्मे ऊपर से नीचे की ओर सरकते दीख पड़ते। थोड़ी देर और बीती कि वह उसके पास सड़ी थी, उसके सामने। स्वागत के भाव से उसका चेहरा चमक रहा था, उसकी भ्रात्यों में एक स्निग्ध चमक थी, एक हलकी किन्तु प्रफुल्लित मुस्कान उसके हाठों पर बिरेक रही थी। मेग्धानोव ने उसके फैरे हुए हाथों को पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया, लेकिन मुँह से एक शब्द भी न बोल सका उसने भी कुछ नहीं कहा वह बहुत तेज चल कर घाई थी इसलिए उसकी सांस फूस रहा थी, लेकिन यह देखा जा सकता था कि वह अत्यन्त प्रफुल्लित थी और वह भी उसे देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ था।

पहिने वही बोली।

अच्छा, ठो भव तुम अस्वी स बताओ तुमने क्या निश्चय किया ?  
मेग्धानोव आश्चर्य में पड़ गया।

‘निश्चय किया। क्या हमें अभी ही किसी बात का निश्चय करना था ?

‘ओह तुम मेरा मतलब समझते हो ! बताओ तुमने क्या-क्या बातें की, तुम किस-किस से मिले ? सोसायिनि से तुम्हारा परिचय हुआ ? मुझे सब कुछ बताओ, सब कुछ ! अच्छा एक मिनट ठहरो—बसो हम लोग वहाँ बसों, थोड़ा और आगे। मैं एक अगह जानती हूँ वहाँ आसानी में किसी की नजर नहीं पड़ सकती।

वह उसे अपने पीछे-पीछे घसीट ले गई। वह लम्बी सूजी भास में होकर आभाकारी की तरह उसके पीछे-पीछे चला गया।

वह उस उस स्थान पर स गई जहाँ एक बड़ा पेड़ पड़ा हुआ था जो भ्रात्यों से छिप गया था। वे दोनों उसके तने पर बैठ गए।

‘तो, अब बताओ मुझे,’ उसने दुहराया लेकिन वह स्वयं ही कहती थी ‘घोड़ तुम्हें देख कर मैं बिल्ली प्रसन्न हूँ मेरे प्यारे। मुझे लगता था कि यह दो दिन कमी नहीं कीलेंगे। जानते हो प्रलेक्सी? अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि कालेन्तिना मिखाइलोवना ने हमारी बातें सुन ली थीं।

‘उसने उनके बारे में मार्कोलोव को सिखाया’, नेग्मानोव ने कहा।  
‘मार्कोलोव को!’

एक मिनट को मरिमाना कुछ न बोल सकी और धीरे-धीरे एक घमसान पड़ गई, घम से नहीं, लेकिन किसी दूसरे अधिप शक्तिशाली भावावेश से।

‘दुष्ट, कमीनी औरत!’ उसने बुद-बुदाया धीरे से, उसे ऐसा करने का कोई अधिका नही था और कोई बात नहीं। मुझे बताओ, मुझे सब कुछ बताओ।

नेग्मानोव ने बात शुरू की मरिमाना अबल प्रस्तर प्रतिमा की तरह ध्यानावस्थित उसकी बातें सुनने लगी और तभी टोपती जब यह समझती कि वह बतान में जल्द बाजी कर रहा है, और घटनाओं को टाल रहा है। उसकी यात्रा के सभी घुसान्त उसके लिए समान दिसचस्वी थे नहीं थे। वह फोमुशका और फिमुदना के बारे में बातें सुनकर गूब हंसी, लेकिन उनमें उसे कोई दिसचस्वी नहीं आई। उनका भीयन उसके लिए बहुत दूर भी थी था।

‘यह तो ऐसा है, जैसे तुम मुझे नेबुपादन्वार के बारे में बता रहे हो’, उसने कहा।

लेकिन मार्कोलोव ने जो कुछ कहा मासुदिन ने भी क्या साधा (हालांकि जल्दी ही उसने जान लिया कि वह किस प्रकार का प्राणी है), और सबके ऊपर सोलोमिन ने क्या विचार है और यह कैसा है—यह बातें थीं, जिन्हें वह सुनना चाहती थी और हृदयगम करना चाहती थी। अब? अब?—यह प्रश्न मिरन्तर उसके मन से उठ रहा था

प्रसिद्ध भादेश के लिए ।' ('यद्यपि यह भूँठ है,' नेग्यानोव ने मन में सोचा ।)

'किस से ?'

'तुम जानती हो वासिली निकोलाइविच से । और फिर हमें प्रोस्त्रोवुमोव के साटकर घाने तक भी प्रतीक्षा करनी चाहिए ।'

मरिघाना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से नेग्यानोव की ओर देखा ।

'क्या तुमने कभी वासिली निकोलाइविच को देखा है ?'

'मैंने उसे दो बार देखा है सिर्फ एक भ्रमक भर, बस ।'

'वह कैसे है ? बड़े ही चौददार विधिष्ट भादमी हैं ?'

'मैं कैसे तुम्हें बताऊँ ? वही भव प्रधान हैं, और हर चीज पर नियन्त्रण करते हैं । बिना अनुशासन के हमारा काम नहीं चल सकता, भादेश का पालन आवश्यक है ।' (और यह सब व्यर्थ है, उसके मन में कहा ।)

'वह कैसे लगते हैं ?'

'धोह, मोटा, भारीभरकम, कासा - ऊँची उठी ठोड़ी रूखा सा चेहरा । सिर्फ उसकी आँखें बड़ी पैनी और चमकदार हैं ।'

'और वह बात कैसे करते हैं ?'

'वह बात उतना नहीं करते, जितना नियन्त्रण करते हैं ।'

'वह प्रधान कैसे बनाए गए ?'

'ओह ! वह बड़े दृढ़ चरित्र के हैं ।' वह किसी घात से पीछे नहीं हटते । अगर जरूरत हो तो वह किसी को भी मार सकते हैं । सोप इसीसे उनसे मन खाते हैं ।

'और सोसोमिन कैसा है ! थोड़ी देर की बुप्पी के बाद मरिघाना ने पूछा ।

'सासोमिन भी कोई खूबसूरत भादमी नहीं, बस उसका चेहरा

भोला, सरल और ईमानदार है। मैंसे बेहतर तुम्हें धार्मिक विद्यापियों में ही देखने को मिलेंगे, मने मोन माले।'

नेग्मानोव ने बिस्तार के साथ सोसोमिन का वर्णन किया। मरिषाना देर सभ नेग्मानोव के बेहरे पर टकटकी बांध देखती रही उस वसन कहा, जैसे धपन से कह रही हो 'तुम्हारा बेहरा भी प्रच्छ है, मेरा विचार है तुम्हारे साथ जीवन मयुर होगा प्रमेस्सी।

इस वाक्य ने नेग्मानोव के हृदय को स्पर्श किया, उसने पुन उसका हाथ पकड़ लिया और उसे धपने होठा के पास उठा रहा था कि 'मभी धपनी यह छिटता रहन दा' मरिषाना ने मुस्कराते हुए कहा—अब जब उसका हाथ छूना जाता, तब तब वह मुस्कराने लगती, तुम नहीं जानने मुझे मभी तुम्हारे सामने अपना एक पाप बताना है।

'क्या किया है तुमने?'

'मैं तुम्हारे पीछे तुम्हारे कमरे में गई थी और वहाँ तुम्हारी मज पर मैंने तुम्हारी बकिठामा की बापी देखी ' नेग्मानोव शोक पड़ा। उसे याद आया कि यह धपनी मोटबुक मज पर ही पड़ी भूल गया था?—और मुझे म्बीनार परना चाहिए कि मैं उसे पढ़ने की धपनी उल्लुनसा को नहीं रोड सही, और मैंने उस पढ़ासा। वे तुम्हारी बकिठामे हैं, क्या?

'हाँ, और तुम जानती हो मरिषाना, मैं तुम्हें छिटना प्रेम करता हूँ, इसका सचता उत्तम सन्नत यही है कि मैं तुमसे वायद करे भी माराज नहीं हुमा।

'अराभी? ता बिजना भी जरा पर हा तुम नाराज? लेकिन तुम मुझे मरिषाना पुनारण हा—यह छीक है मैं तुम्हें नेग्मानोव नहीं कह सकती' मैं तुम्हें धपेकना हो पुनार गो। और वह बकिठा जो इन पीछिया स गुरु होना है कि 'मिरे प्यारे, मर मरने क समय पना वह बकिठा तुम्हारी है।'

‘हाँ हाँ। लेकिन कृपया उस सबको खूने को मुझे दुखी मत करो।’

मरिघाना ने अपना सिर हिलाया।

‘वह कविता बड़ी ही कठोर है निराशा से भरी हुई। मुझे प्राया है, वह कविता तुमने मुझे जानने से पहिले लिखी होगी। लेकिन जहाँ तक मैं समझ सकती हूँ वह सच्ची कविता है। मुझे लगता है, तुम एक लेखक हो सकते थे, लेकिन निश्चिन्त रूप से मैं यह भी जानती हूँ कि साहित्य से अधिक जरूरी और अशुद्ध काम तुम्हारे पास है। उसमें पहिले व्यस्त रहना बड़ा अच्छा था—और कुछ करना सम्भव ओ नहीं था।

मेघानोव ने एक उड़ती सी पैनी मजदर उस पर डामी।

‘तुम ऐसा साचती हो? हाँ, मैं भी तुमसे सहमत हूँ। इसमें असफल होना और कामों में सफल होने से अच्छा है।

मरिघाना भाषाभिभूत होकर उठ खड़ी हुई।

‘हाँ मेरे प्राण तुम ठीक कहते हो!’ उसने कहा और उसका समस्त चेहरा सास मुक्त हो गया हर्ष की शक्ति से प्रभावित, स्नेह की उदार भावा से स्निग्ध हो उठा : ‘तुम ठीक कहते हो, अनेकसी! लेकिन शायद हम विस्तृत असफल नहीं होंगे हम सफल होंगे, तुम देखना—हमारा जीवन सार्थक होगा। हमारा जीवन व्यर्थ नहीं जायगा, हम जनता के बीच में जाकर जीवित रहेंगे। क्या तुम कोई काम जानते हो? नहीं? और, कोई बात नहीं, हम काम करेंगे, हम उनकी सेवा करेंगे, अपने भाइयों की जैसा भी कुछ हम जानते हैं। मैं खाना पकाऊँगी और सिलाई करूँगी कपड़े धोऊँगी, अगर जरूरत पड़ी तो तुम देखना, देखना तुम और उसमें भले ही कोई लाभ न हो, पर मुक्त होया, मुक्त होया।’ मरिघाना की आवाज रुक गई, लेकिन उसकी धारें दूर क्षितिज पर टिकी थीं उत्सुकता से, उस पर नहीं जो उसके सामने विस्तृत था बल्कि दूसरे मनबोले, अनजाने क्षितिज पर



जो उसकी बत्पना का खिचिज था—उसकी धाँसे धमक उठीं

नेग्गानाथ उसके सामने मुँह गया ।

'भोह मरिघाना !' उसने फूसफुसाया 'मैं तुम्हारे पास नहीं हूँ ।

उसने एकाएक अपने को झपटोरा ।

'धर पर घसने का समय हो गया । बरना ये हमारी तलाश करेंगे, यद्यपि बाधन्तिना मित्रालोचना धर मुझम निराश हा चुकी है । मेरा क्यास है । उसकी नजर में मैं बर्षा हा चुकी हूँ ।

मरिघाना ने यह शब्द इनन धानायुक्त धीर सुनी बेहद स बह कि नेग्गानाथ भी मुहुराए बगैर नहीं रह सता । उसने उसरी धोर देखा धीर दुहराया बर्षाद कर दिया ।

'मिथिम यह कुरी तरह पायस हो गई है,' मरिघाना बहती गई 'क्योंकि तुम उसक बत्पना पर नहीं मुँह । मेरिन बह सब फिसी काम का न रहा, एक बात है जो मुझे बह देनी चाहिए तुम देखत हो मेरा यहाँ रहना धर धमम्भव हो जायगा 'मुझे भाग जाना होगा ।'

'भाग जाना होगा ? नेग्गानाथ ने दुहराया ।

'हाँ, भाग जाना होगा - तुम भी यहाँ नहीं रहोगे या रहोगे ?

हम साथ-साथ चलेंगे—हमें साथ-साथ काम करना चाहिए  
तुम मेरे साथ चलीगे न ?

'धरती क धार तक । नेग्गानाथ ने कहा, उगरे स्वर में प्रेम का आवेग था धीर एव कृपणता का भाव था । 'धरती के धार तक । उस समय निष्पय ही वह उखा साय जहाँ यह चारूती, घना जाता, बिना पीछे मुड़ कर दंगे, गोचर ममझे ।

मरिघाना ने उस ममझ निवा धीर धानायुक्त दीर्घ निश्वास ली ।

'तो मेरा हाथ परड़ा घनना धम धूमना धन धीर धरवार परड़े दूँ एव साथी का तरह, मित्र पी तरह—ही लेन ही ।

वे साव-साव विभोर, ध्यान मग्न, प्रसन्न मन बर की ओर बस पड़े। हरी घास उनके पैरों को गुदगुदा रही थी, हरी पत्तियाँ उनके स्पर्श से चिहुर उठतीं, प्रकाश और छाँह के चकते उनके कपड़ों पर खेल रहे थे और वे प्रकाश के इस खेल पर और वायु के हर्ष दायक झोंकों पर और पत्तियों की टात्ती धमक पर तथा अपनी दोनों की जवाही पर मुस्कराते हुए बने आ रहे थे।



भाग २



## तेईस

फैक्टरी को घेरें हुए ऊँची चहार दीवारी के फाटक को जब सोलोमन ने खेजवाला से चारमील की यात्रा करने के बाद पटराटाया तो आसमान पर से रात का धपेरा हट रहा था और सबेरे का सुनहला प्रकाश उसकी अगह लेवा आ रहा था। चीकीदार ने उसके लिए तुरन्त फाटक खोला और तीन सैंडी कृशों के साथ जो अपनी यासगर पूर्व जोर आर से हिता रहे थे उसे उसके छोटे से बगसे तक पहुँचाया। वह अपने अफसर के स्वाम्य और सफसतापूर्वक पर सौटने पर स्पष्ट ही प्रसन्न दितायी दे रहा था।

'आप आज ही कैसे सौट आण बासिली फैशेतिब ? हम तो सन सबरं उन आपक आने की आशा नहीं करते थे।'

'मोह तैसे ही, गायगिला, रात में चलना बड़ा मुहाना होता है।' सोतामिन और उसके मातहर्ता में आपस में बड़े मपुर सम्बन्ध थे, ये उसे अपना अफसर मानकर उमका आर

करते थे और अपने मात्मीय के रूप में उसके साथ समानता का व्यवहार करते थे, इस वह उनकी नजरों में आश्चर्यजनक विद्वान्ता। 'वासिती फ़ैदोविच जो भी कहते हैं', वह कहा करते, 'वह हमेशा ही होता है। क्योंकि ऐसा कोई अभ्ययन नहीं जो उनसे बचा रह गया हो और कोई ऐसा नहीं जिसकी वह समानता न कर सकें।' एक दिन एक अंग्रेज कारखानेदार फैक्टरी देखने आया था, पता नहीं सोसोमिन अंग्रेजी बोलता था, इसलिए या वह संभवतः उसके ज्ञान से प्रभावित हुआ था, निरन्तर उसके कंधे टपटपाता रहा था, और हँसता रहा और उसे सीवरपूज करने का मिमन्त्रण दे गया था और उसने टूटो-फूटी स्त्री भाषा में मजदूरों से कहा था, 'यह बड़ा अच्छा आदमी है, यहाँ तुम्हारे बीच में, बहुत अच्छा।' मजदूर खुब खुसकर उसकी बातों पर हँसते थे, कुछ गर्ब के साथ, वह अनुभव करते हमारा आदमी ऐसा है! हममें से एक।

और संभवतः वह उन्हीं में से एक था, और उनका अपना था।

दूसरे दिन सघेरे सोसोमिन का चहुँता पकेल, उसके कमरे में आया, उसे अगाया और हाथ मुह घोने को पानी दिया, कुछ बातें बतवाईं, और उससे कुछ प्रश्न पूछे। तब उन्होंने साथ साथ अल्दी-अल्दी चाय पी, और सोसोमिन ने अपनी काम के समय पहनने वाली जाकेट पहनी और कारखाने में चला गया, और उसका जीवन एक बड़े पहिए की तरह फिर पूर्ववत् घूमने लगा।

लेकिन एक नया अवरोध अभी प्रतीक्षा में था।

सोसोमिन के कारखाने में वापस आने के पाँच दिन बाद, एक सूख सूरत और धानदार चार घोड़ों की दगधी पर बैठ कर हड़के हरे रंग की बर्दी पहिने एक चपरसी कारखाने में आया। पकेल उसे सोसोमिन के धंगले पर सेगया। उसने सोसोमिन को एक सीसबन्द पत्र दिया उस पर लिखा था 'बोरिस ए. ड्रीविच सिप्यागिन की ओर से। इस पत्र में, सुगन्ध आ रही थी, इत्र की नहीं, मोह नहीं! लेकिन कोई अभी

तीव्र धरित्री सुगन्धि । पत्र अन्य पुरुष में लिखा था, सिनेटरी द्वारा नहीं परन्तु सिप्यागिन द्वारा ही । भरज्जानो जागीर व विद्वान् भ्रामी ने पहिले ही उसका इच्छित नाम मीठी थी कि वह उस पत्र लिख रहा है, जिसका उसका व्यक्तिगत रूप से परिचय नहीं था, लेकिन जिसके धार में सिप्यागिन ने बहुत कुछ सुन रखा था । तब उसने साक्षात् को अपनी जागीर में धान की लागत दी थी क्योंकि शायद उगकी सलाह सिप्यागिन के बड़े उद्योग के लिए बड़ी लाभप्रद हो । और इस घाटा में कि सोलोमिन उसके मिमत्रण से स्वीकार कर लेगा, वह उसके पास अपनी बम्बी भेज रहा है । और अगर किसी कारण से धान घाने का व्यवहार न हो, तो सिप्यागिन ने बड़ी विनम्रता से अपनी सुविधा का कोई अन्य दिन निर्दिष्ट करने की प्रार्थना की थी और वह सहर्ष अपनी गाड़ी उसकी सेवा में भेज देगा । उसके बाद वही साधारण व्यवहार की रस्मी बातें थी और अन्त में पत्र प्रथम पुरुष में हो गया 'और मुझे धारा है आप मेरे साथ भाजन परन से इन्वार न करेंगे बिल्कुल साधारण ढंग से—सम्प्रा कालीन पोशाक' में नहीं । (बिल्कुल साधारण ढंग से वस्त्र रेखांकित से ।) उमी पत्र के साथ उस प्रागन्तुक पत्र-वाहक ने एक और पत्र दिया, जो ने धानोय का था और गुला या और बड़ा संक्षिप्त था, 'कृपया मामो, सुन्हारी यहाँ यहाँ जल्दत है और तुम बड़े काम के साक्षि हो सकते हो, मुझे यह कहने की जरूरत नहीं कि मिस्टर सिप्यागिन के लिए नहीं, हमारे लिए ।

सिप्यागिन का पत्र पढ़कर साक्षात् ने गोबा बिल्कुल साधारण ढंग से । और भला मैं बैस जा सकता था ? मेरे पास तो जीवन में अभी 'सम्प्रा कालीन सूट' रहा ही नहीं और फिर मैं यहाँ जाऊँ ही क्या ? कस्यगत । महज समन की बर्बादी है । लेकिन नेघानाक का पत्र पढ़कर उसने अपनी गिर गुजाया और सामता हुआ गिद्धरी के पास लक गया ।

'आप क्या उत्तर देने की कृपा कर रहे हैं ? बाहन ने विनम्रता से पूछा ।

सोसोमिन बोड़ी देर खिड़की पर खड़ा सोचता रहा और घन्ट में अपने बालों को पीछे की ओर भटकते हुए और नापे पर हाम फेंरते हुए उसने कहा, 'मैं अभी चमता हूँ। बरा कपड़े बदल लूँ।'

बाहक विनम्रता प्रकट करके चला गया और सोसोमिन ने पवेश को बुलवाया, उससे कुछ बातें कीं, एक बार कारखाने का चक्कर लगाया, और फिर एक लम्बे गले का बासा कोट पहिन कर, जिसे एक प्रान्तीय दर्जी ने बनाया था और एक पुराना हेट लगा कर, जिसके सगाते ही उसका चेहरा भजीव सा लगने लगा था, वह गाडी में बैठ गया, तब एकाएक उसे याद आया कि उसने दस्ताने तो लिए ही नहीं हैं और पवेश को पुकारा, जो दौड़कर सफेद चमड़े के दस्ताने लाकर उसे दे गया, जो हास ही में धोए गए थे, जिनमें से सिरे पर हर रैपली बाहर निकल रही थी। सोसोमिन ने दस्ताने जेब में रखे और कहा अब गाड़ी हाँकी जा सकती है। तब बाहक निर्वक खीघ्रता के साथ हाँकने की साद पर उछल कर चला और कोचवान ने घोड़ों की रातों को भटकारा, घोड़े बुलकी दौड़ने लगे।

अब धीरे-धीरे वे लोग सोसोमिन को सिप्यागिन की आगीर की ओर ले जा रहे थे, तब उभर सिप्यागिन अपने ड्राईगूम में एक राजनीतिक पुस्तिका को लिए बैठा, उसके बारे में अपनी परती को बता रहा था कि उसने उसे यह जानने के लिए बुलाया था कि क्या वह उसे ब्यापारी के कारखाने से फुससाकर अपने कारखाने में बुला सकता है, क्योंकि उसके कारखाने की हासत वास्तव में बहुत म्बराव थी और उसमें धामूल सुभार की आबश्यकता थी। सोसोमिन धान से मना भी कर सकता है या धाने का और कोई दिन निश्चित कर सकता है यह सिप्यागिन उस समय सोच भी नहीं सकता था, हासार्कि उमने स्वयं अपने पत्र में उसे दिन निश्चित करने की छूट दी थी।

'सिक्नि हमारी तो बागज की मिलें हैं कपड़े की नहीं।' बालेन्तिना मितालोवना ने कहा।



'यह एक ही बात है, मशीनों दोनों में ही है और वह मशीनों का शरीर है।'

'लेकिन वह ती शायद विशेषज्ञ है।'

'मेरी प्यारी, पहिले तो स्व में कोई निवेदन नहीं है और, मैं फिर, फिर कहता हूँ कि वह मशीन का शरीर है।'

वालेंटिना मिलासोयना मुस्मुराई।

'मार्डिपर जरा ध्यान रखना तुम एक बार तो नींबूबाना से गन्ना खा चुके हो, अब दुबारा भी नहीं खूब न कर बैठो।'

'तुम्हारा मतलब नेज्पानोव से है? लेकिन मैं समझता हूँ कि मैंने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया किसी तरह, वह सोल्टा के लिए बड़ा प्रयत्न शिवाय है। और फिर तुम तो जानती ही हो मैं बहुत सोच समझ पर काम करता हूँ। मेरे इस प्रश्न के लिए माफ़ करना यानी एक ही बात दो बार नहीं होती।'

'तुम समझते हो, नहीं हाजी? लेकिन मेरा इरादा है कि दुनिया में हर चीज दुहरती है? और साथ ही वे जा लोगों के स्वभाव में हैं और साथ ही वे नींबूबाना के।'

'क्या कहना चाहती हो तुम?' राभीनी रंगिना से पुस्तिरा को मज पर फरत हुए सिप्यागिन न पूछा।

जरा धीरे धीरे देगो।

'श्रीमती सिप्यागिन ने जबाब दिया।

'हूँ! सिप्यागिन ने कहा, क्या तुम उक्त बिबाधों की ओर सन्नित कर रहे हो।'

'जी हाँ, उही महामय की ओर—हाँ,।'

'हूँ! क्या उन इतरत में (उमने अपने मासे पर हाथ फर ) यहाँ कोई मामला गौड लिया है? एँ / एह।'

‘अपनी भाँसैं खानो !’

‘भरिआना ? ऐं ?’ (दूसरी ऐं ?) पहिली की अपेक्षा अधिक भानुनासिक थी)

‘मैं तुमसे कहती हूँ अपनी भाँसैं खोलो !’

सिप्यागिन की भौहें ठन गई ।

‘सैर, उसके विस्तार में हम भोग पीछे जायेंगे । इस समय तो मैं एक बात कहना चाहता था यह व्यक्ति यहाँ कुछ संकोच का अनुभव करेगा यह स्वाभाविक भी है, वह बड़े लोगों के समाज से अपरिचित है न ! तो हम भोगों को उसके साथ जरा मिश्रता का व्यवहार करना होगा चाकि वह चाँके न । मैं तुम्हारे लिए नहीं कह रहा हूँ, क्योंकि तुम तो खुद ही होशियार हो, तुम्हारा तो कहना ही क्या है, अगर तुम चाहो तो जरा देर में ही किसी को अपना बना सकती हो, तुम में वह झुकी है । मेरा मतलब और लोगों से है, जैसे हमारे वह मित्र !’

उत्तने एक फ़ैशनबिल सूरे रंग के हूट की ओर संकेत किया जो बिना दरवाजे की आसमारी पर रखा था । वह हूट कालोमियेस्सव का था, जो उसी दिन सवेरे वहाँ आया था ।

‘वह बड़ा मुँह फट है, तुम तो जानती ही हो, उसे ऐसे लोगों से ऐसी जबरदस्त घृणा है, जिसे मैं तो ठीक नहीं समझता ! कुछ दिनों से मैं देख रहा हूँ कि वह बड़ी अस्वी उतेजित हो उठता है और भगाड़ पर उतर आता है । क्या उसका वह मामला ठीक नहीं चल रहा है ? क्यों ?’ (सिप्यागिन ने एक अनिश्चित दिशा में अपना सिर झुकाया लेकिन उसकी पत्नी ने उसे समझ लिया) ।

‘<sup>१३</sup> तुमसे फिर कहती हूँ, अपनी भाँसैं खोलो ?’

‘न उ० कर खडा हो गया ।

‘<sup>१४</sup> ? विस्तृत दूसरे ढंग की थी और एक दूसरे ही स्वर

में 'अधिक धीमें ।) 'सब कह रही हो ? मैं अपनी धाँसे ज़ादा न  
 खाल बैठूँ, हम सागं का अधिक सावधान रहना चाहिए ।

'यह तुम्हारी मर्जी है, लेकिन यह तुम्हारा नया मौजबान अंग  
 मात्र प्राप्ता है, ता उसक लिए तुम्हें चिन्तित हाने की आवश्यकता महा,  
 पूरी सावधानी रखी जायगी ।

घोर बाद में हुआ यह कि कोई सावधानी नहीं रखी गई थी ।  
 सोनामिन को जरा भी संकाय घोर उद्दिग्गता का अनुभव नहा हुआ ।  
 जब नौकर ने धाकर उसके धाने की सुचना दी, सिप्यागिन एवदम उठ  
 पड़ा हुआ घोर इनने जोर से चिल्लाकर धाला कि हास में भी सुनाई  
 पड़ जाय 'उन्हें यहाँ से धामा यहाँ से धामा । घोर वह भी ट्राईंग  
 म्म के दरवाजे तन गया धार ता उसक सामने खड़ा हा गया ।  
 सोनामिन दरवाजा पार भी न पाया था कि सिप्यागिन ने  
 जिसस उसको परीच-परीच टनकर हा हो गई, उसरी धार अपने दोना  
 हाथ बढ़ा दिए घोर बढ़ा मिलनसारता से मिर हिनात हुए मुस्युरा  
 पर धारमन्त सोअन्यता से फटा 'यह बढ़ा ही अश्या रहा सचमुच ।  
 मे क्रिडना धानारी है । घोर उस धारन्दिना मिलातायना से पास  
 से गया ।

'यह मेरी पत्नी पत्नी है' उसरी पाठ पर धरना हाय दबाते हुए,  
 जैसे यह उन धारन्दिना मिलातायना की घोर पड़ा रहा हा, उसने  
 स्वर में धामतता सागर कहा 'घोर यह है प्रमुख इन्जीनियर घोर  
 धीनकर, धारिसा पैराल्यपिप सोनामिन ।'

धीमजे सिप्यागिन उठकर खड़ी हा गई घोर धरनी मुग्ध धीमों  
 को ऊपर उठाकर पहिउ तो उसरी धार मुम्बरार्ड—मामूनी तीर से—  
 जैसे निहा दास्य से मुम्बरारा जाता है तब धरना कुहनी से धाम  
 का हाथ बढ़ाया । उसरी कुहना उसक स्तना को स्पर्श कर रही थी  
 घोर उसरी मिर उसक हाथ की धार भूता हुआ था - 'कुछ निवेदन  
 करने की अंगमा में । सोनामिन ने पाँउ पत्नी दातां का धरनी धारसे

अपने ऊपर बस लेने दीं। उसने दोनों से हाथ मिलाया और बैठने के पहले ही धामन्त्रण पर बैठ गया। सिप्यागिन ने किसी के स्वागत की सी परेशानी में उससे पूछा 'क्या आप कुछ खाना पसन्द नहीं करेंगे?' पर सोलोमिन ने जवाब दिया कि उसे कुछ नहीं चाहिए, यात्रा से वह खरा भी नहीं बका है और तुरन्त उनकी सेवा के लिए प्रस्तुत है।

'आपका मतलब है कि हम आपसे तुरन्त फैक्टरी देखने को चलने का अनुरोध कर सकते हैं?' सिप्यागिन ने गदगद स्वर में कहा, जैसे उसे अपने प्रतिधि से इतनी धिनय और छुपा पाने पर विश्वास करने का साहस नहीं हो रहा हो।

'तुरन्त' सोलोमिन ने उत्तर दिया।

'श्रीह आप कितने अच्छे हैं! क्या मैं गाड़ी खाने का आदेश दूँ? या शायद आप पैदल ही चलना पसन्द करेंगे?'

'बस, यहाँ से कोई सास दूर तो नहीं होगी, आपकी फैक्टरी?'

'यही कोई आबा मील होगी।'

'तब गाड़ी क्यों मँगवाते हैं?'

'बड़ी खुशी है! लडके, मेरा हैट मेरी छड़ी, तुरन्त! और तुम भीमतीजी हमारे लिए अच्छा भोजन तैयार करवाना। मेरा हैट।'

अपने आगन्तुक की अपेक्षा सिप्यागिन अधिक घबड़ा उठा था। फिर एक बार दुहराते हुए, 'सिकिन मेरा हैट कहाँ है?' यह महान सम्मानित व्यक्ति लिभवाड़ी स्कूली लडके की तरह कमर से बाहर निफ्रसा। जब वह सोलोमिन से बाँट कर रहा था, उस बालेन्तिना मिस्तासोवना इस 'नवागन्तुक नौजवान' की और गुप्त रीति से तत्पर सजलीनता से देख रही थी। वह आराम कुर्सी पर आराम से घान्त बैठा था। उसका नंगे हाथ (उसने अपने दस्ताने नहीं पहने थे) उसकी जाँघों पर रखे थे, और वह सहज भाव से यद्यपि उल्लुङ्गता से फर्नीचर और सस्वीरो को देख रहा था। 'यह मामला क्या है? मिस्तासोवना ने सोचा, 'यह है तो एक सामान्य मनुष्य ही निश्चितरूप से सामान्य

मनुष्य 'सेविम' किंतुना स्वाभाविक रूप से व्यवहार करता है।

मोनोमिन सभमुख स्वाभाविक रूप से व्यवहार कर रहा था, उसकी तरह स मरीं आ सरम ता हाते हैं, पर कुछ उसी व्यग्रता से व्यवहार करता है, माना कह रहे हैं, 'मिरी प्रार दत्ता, समन्ता में कैना प्रादमी है', लेकिन उस प्रादमी की तरह जिनका भाव प्रार बिषाग धकिन्नापी है, बिना उन्मत्त के थोमती सिप्यागिन उसका वात पीन करना चाहती थी लेकिन प्रादवप है कि उन्हें कहने का कुछ उपयुक्त मिन ही नहीं रहा था।

हे नगवान ! उमन सावा, 'क्या मैं इस कारागार से प्रभावित हो रहा हूँ ?

'बारिम एन्ड्रुव आपक यह कृतक हागे उमने कम्प में कहा 'कि आपने कतना पीमती समय उन्हें देना स्वीकार कर लिया

मिमी का कार्ड वात कहा, थामती आ मानामिन से उतर दिया और मुझे बाद बहुत दूर से आ घाना भी नहीं पडा ।

अब प्रागे क्या बात बनाए, बारमिना सिजातादना इनी भाष में पडी थी कि उसा समय दरवाजे पर थमर पत्रि हाप में छिट लिए जा गए ।

आदा पूनत हुए उमने यहा कैंगम्बुथे से कहा 'बासिनो कैंगम्बुथिप ! वेवार है अमन का

सातानिन उदार गडा हा गया, वातन्दिना निग्यातादना का नमन्त का प्रार सिप्यागिन के पीछे-पीछे बाहर चला गया ।

'इन्तर प्रादा, इपर ! मर माय बासिनो कैंगम्बुथिप !' सिप्यागिन १ पुरार, ३३ यह था जंगम से आ रहे हा और सातानिन का यह प्रदर्शक की चकरव हा। फिर से ! यही सोदिनी है, बासिनो कैंगम्बुथिप !

'अब प्रार मुझे मर सिता के नाम से हा पुरारन का कृपा कर रहे

हैं, सोसोमिन ने ध्यानभंग कर कहा, 'तो मैं फैंदोत्येबिच नहीं, फैंदोतिच हूँ ।'

सिप्यागिन ने चौंकते हुए उलट कर अपने कंधा पर से उसे देखा ।

'भाहू ! सबमुच, क्षमा कीलिए वासिली फैंदोतिच ।'

'ओह, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं ।'

रास्ते में उन्हें फालोमियेस्सेव से भेंट हो गई ।

'कहाँ बस दिए ?' उसने सोसोमिन की ओर कनसियाते हुए सिप्यागिन से पूछा, कारखाने को ? यही हैं वे सञ्जन ?'

सिप्यागिन ने अपनी आँसों विसिफारित की ओर भेतावनी देते हुए बोड़ा सा सिर हिलाया ।

'हाँ, कारखाने' अपने पापों और अत्याचारा को इन महाशय इन्जीनियर को दिखाने । मैं तुम्हारा इनसे परिचय कराऊँ मिस्टर फालोमियेस्सेव, यहाँ हमारे पड़ोसी हैं, और आप, मि० सोसोमिन । '

फालोमियेस्सेव न बेमासूम धीर पर दो बार सिर हिलाया, सोसोमिन की ओर नहीं बल्कि बिना उसकी ओर देखे । लेकिन उसने फालोमियेस्सेव की ओर देखा । उसकी अर्धनिमित्त आँसों में किसी चीज की धमक थी ।

'मैं भी आपके साथ बस सकता हूँ ? फालोमियेस्सेव ने पूछा । आप जानते हैं कि मुझे हिदायतें पसंद हैं ।

'हाँ, हाँ, क्या नहीं ।

भयन के घेरे से निकल कर व लोग सड़क पर आ गए । सभी धीरे धीरे कदम भी नहीं भले होंगे कि उन्होंने सम्ना धुस्त सयादा और पेट्टी पहिने पाँव के पादरी को देखा । यह अपने घर जा रहा था, जिसे 'पोप का घर' कहा जाता था । फालोमियेस्सेव अपने बोना साथियों का साथ छोड़कर सम्ने कदम रखता हुआ पादरी के पास जा पहुँचा । पादरी को इसकी आवाज भी नहीं थी । वह उनकी ओर बिना ध्यान दिए धसा

जा रहा था इसलिए जरा चौंके पड़ा। कामोमियेस्लेव ने उससे आशुर्बाद माँगा पानीसे से बिपबिप उसके साथ हाथ को चूमा और सोलोमिन को मोर घूमकर उस पर एक नमस्कार भरी दृष्टि डाली। वह स्पष्ट 'एक दो बारों' जानता था और उससे प्रति, उस दौरान विद्वान के प्रति अपनी घृणा व्यक्त करना चाहता था और उस पर अपना रीढ़ पालित करना चाहता था।

'इस दिखावे की जरूरत भी क्या थी?' सिप्यागिन ने अपने मुँह ही मुँह में कहा।

कामोमियेस्लेव ने नाक से सन्द किया।

'कमी-कमी थोड़ा बहुत दिमाग भी आवश्यक होना है।

य लोग कारणाने पहुँचे। वहाँ उन्हें एक नाटा स्त्री मिला जिसकी राम्बी दाढ़ी थी और नयनी दाँत सगे थे जो पिछले जर्मन मुपरिन्टेनडेन्ट की जमठ पर नियुक्त हुआ था। वह नाटा स्त्री, अस्थायी सौर पर एयजी था। वह स्पष्ट ही अनाड़ी था और विश्वास लेने के तना पार-पार दुःखी रहे के 'हो सकता है और 'ठीक ऐसा ही।' के अलावा और कुछ नहीं कर सकता था।

कारणाने का निरीक्षण आरम्भ हुआ। कुछ मजदूर सोलोमिन को मूरत से जानते थे। उन्होंने उसे नमस्ते किया और उनमें से एक य जमने कहा, 'ओहा, प्रियोरी तुम! तुम यहाँ हो?'

सोम ही उत्तरे देल मिभा रि कारणाने का प्रबन्ध अत्यन्त पराव है। घन विप्लव में व्यय यथा है रहा है। मालें रही हैं और बहुत तो ता आतावदा है और बहुत ता पदरी मशीनें, नहीं हैं। सिप्यागिन निरन्तर सोलोमिन की राय जानने के लिए उत्तरे धर की पार ही दा रहा था। उत्तरे कुछ मजदूरों प्रश्न नी लिए और जानना चाहा कि वह मम य जन कारणाने की व्यवस्था को बदलने तो कुछ हुआ ही होगा।

‘ब्यवस्था ठीक है’, सोसोमिन ने उत्तर दिया ‘लेकिन इससे कुछ वेदा हो सकता है, इसमें मुझे सन्देह है।’

सिप्यागिन ने ही नहीं, कालोमियेस्तेव ने भी अनुभव किया कि कारखाने में सोसोमिन अजनबीपन का अनुभव नहीं कर रहा था। कारखाने की हर चीज उसके लिए जानी पहिचानी सी लग रही है। और वह मामूली सी मामूली बात को समझता है—जैसे कि वह यहाँ का स्वामी हो। उसने मशीन पर ऐसे हाथ रखा, जैसे कोचवान थोड़े की गर्दन घपघपाता है, उसने एक पहिए में अपनी उँगलियाँ डालीं और और उसका चमना घन्ट हो गया या चक्कर काटने लगा, उसने थोड़ी सी छुबदी का जिससे कागज बनता था अपने हाथ में लिया और तुरन्त उसक सारे बोपों को बतता दिया। सोसोमिन ने बहुत कम कहा और उस नाटे रूसी की ओर तो देखा भी नहीं, और चुपचाप ही कारखाने के बाहर बसा प्राया। सिप्यागिन और कालोमियेस्तेव उसके पीछे-पीछे निकल आए।

सिप्यागिन ने किसी का अपने साथ चमन का नहीं कहा वह निश्चित रूप से बातों को भींचे, उन्हें किटकिटा रहा था। वह बड़ा वैचैन था।

‘मैं आपसे बेहरे से देखता हूँ’, उसने सोसोमिन का सम्बोधन करते हुए कहा कि आप मेरे कारखाने को देखकर पुरुष नहीं हैं, और मैं पुरुष भी जानता हूँ कि वह अत्यन्त ही असन्तुष्ट जनक स्थिति में है, और घाटे में चम रहा है, और, आप सब कुछ साफ साफ कहने में संकोच मत कीजिए - कि इसकी क्या-क्या महत्वपूर्ण कमियाँ हैं? और उन्हें सुधारन के लिए क्या-क्या करना चाहिए?’

कागज बनाना मेरे क्षेत्र का काम नहीं है’, सोसोमिन ने उत्तर दिया, ‘लेकिन एक बात मैं आपको बतता सकता हूँ—उद्योग धन्धे जमीरदारों के बस के रोग नहीं हैं।’



'आपका मतमव है कि यह उनके लिए अपमानजनक बातें हैं?'  
फालामियेलेव ने बीच में पूछा।

सोलोमिन ने मुग पर परिचित शीर्ष मुस्कान प्रगट हो गई।  
'बोह, नहीं। आप भी क्या समझ बैठे! उसमें अपमानजनक की  
क्या बात है? और अगर हा भी तो जागीरदार सोग उससे चिढ़ते  
भी नहीं।

'तुं? आपका मतमव ?

मेरा मिर्क इतना मतमव है, सोलोमिन ने घीरता स कहा  
जागीरदार इस तरह स व्यवसाय क घादी नहीं होते। इसक लिए  
व्यवसायिक बुद्धि की आवश्यकता होनी है, हर काम एक प्रसग ढंग  
से करना होता और उसके लिए ट्रेनिंग की जरूरत होती है।  
जागीरदार उमे नहीं समझते। मैं देखता हूँ कि वे लोग जैसे भी जो भी  
हो बपड़े क कारखाने गोल रह हैं, लेकिन प्रन्त में यह सब कारखाने  
व्यापारिया क हाथ में चले जाते हैं। यह बड़ा दुग का विषय है।  
क्योंकि व्यापारी और नी सून भूमा होते हैं। लेकिन कोई धारा  
नहीं है।

आपका मतमव है फालामियेलेव ने कहा कि धारिक मामल  
हमारे वर्ग के लोगों की धारण स बाहर हैं ?

नहीं बलिव धीर द्यने विपीक ! जागीरदार सो इसके लिए  
अपन्त उनपुक हैं। रल की पट्टिया स लिए मुविधा प्राप्त करने, धेन  
स्थापित करने, अपने लिए टैपम की छूट मांगने, या इन्ही तरह की  
धोर बातों में जागीरदाग की समता कोई नहीं कर सकता। स  
अपार पन समा कर मत है। मैंने अभी उपर सजित विमा, जब  
आपने उनके दुग मानन की शूपा दी थी। लेकिन मैं सो कस  
कारखाना स उद्योग स नियमित एवं प्रमित विनाम की बात कर रहा  
हूँ। नियमित एवं प्रमित विनाम में, इस लिए यह रहा है कि व्यक्तिगत  
होटल और मामूला दुगान गाग लना और किमाना का गेहूँ या रुपया

सौ फीसदी या एक सौ पचास फीसदी मूद पर उधार देना, जैसा कि बहुत से जमींदार करते हैं, को मैं नियमित अवसायिक उद्योग-धन्धा नहीं कह सकता।

कामोमियेस्सेव ने कोई जवाब नहीं दिया। वह स्वयं उन नए महाजनी जमींदार वर्ग के अस्तुष्टों में से ही था जो कर्ज वांटने वाले जमींदार थे, जिनके बारे में मार्बेल्सोय ने मेण्डानोव से अपनी बातों में जिक्र किया था। यह वर्ग सबसे अधिक निर्दयी होता, वह कभी किसानों को अपने योरोपीय सुगन्ध से सुवासित कक्ष तक में भी नहीं घुसने देता था और उनसे सीधे बात न करके एक दसाल के द्वारा किसानों से भेन-देन करता था। जब वह सोसोमिन की निष्पक्ष बातें सुन रहा था तो अन्दर ही अन्दर मुलंग रहा था। 'सेमिन चुप था, इस धार सिर्फ उसके चेहरे की शिराओं का तनाव उसके हृदय की बात को प्रगट करने की गहारी कर रहा था।

'सेमिन, यासिली फेदोतिच, मुझे धामा दीजिए, धामा दीजिए, रिप्यागिन ने दुरू किया। 'आप जो कुछ कह रहे हैं, वह सही धामोचना थी, पिछले दिनों में जब जमींदार बिम्बुस दूसरी ही सुविधायी का सुल भोगते थे' और दूसरी स्थिति में थे। लेकिन आश्चर्य, सुधारों के इस औद्योगिक युग में जमींदार अपनी शक्ति और योग्यताओं को इस तरह के कामों में क्यों नहीं लगा सकते? वह सब क्यों नहीं समझ सकते जो एक निरान्त प्रपद यनियाँ भी समझ सेता है? वह अपक नहीं है, और किसी हृद तक व प्रगति और विकास के प्रतिनिधि अपने को कह सकते हैं।

बोरिस गड्डिच ने अपनी बात बड़े ढंग से कही, उनकी इस धारा प्रवाह बहूता का पीटर्सबर्ग में बड़ा प्रभाव पड़ता—अपने विभाग में—और ऊँचे सरकिस् में भी। 'सेमिन सोसोमिन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

'जागीरदार यह सब नहीं कर सकते', उसने दुहराया।

'क्या नहीं ? क्यों ? कालोमियस्लेव ने मगभग चीखने हुए पूछा ।

'क्योंकि य हमेना महज अफसर ही बने रहेंगे ।

'अफसर ? कालोमियस्लेव द्रोह से मुन्बुराया । 'भाप नहीं अनुभव कर रहे कि आप क्या कह रहे हैं मैं समझता हूँ मि० सोमोमिन । सोमोमिन अब भी पहिल की ही तरह मुन्बुराया रहा ।

आपने यह कैम साचा मिस्टर कालोमियस्लेव ? (कालोमियस्लेव आपने नाम की उस बिरुति पर निश्चित रूप से खिड़ गया ।) 'नहीं, मैं जो कहता हूँ उस पूरी तरह समझता हूँ ।'

तब स्पष्ट कीजिए कि आपकी अन्तिम तल से आपका क्या मतलब है ।'

'निश्चय ही मेरे विचार में हर अफसर बाहर का आदमी होता है, और हमारा ही गेमा ही हागा रहा है, और अब जागीरदार बाहर का होगा है ।

कालोमियस्लेव और भी हँसा ।

'मैं क्षमा चाहता हूँ जनाय मैं इसका खिर पूँछ कुछ भी नहीं समझ सया ।

'तब और भी बुत्ता हुआ । जग कोणित कीजिए' क्षापद समझ में आ जाय ।

'जनाय !

'हजरत, हजरत', सिप्यागिन ने अन्दी त बीच में टोका किसी को कड़त हुए की मो नगिमा में । आर आप श्रुपया, अगर आप श्रुपया " " । और आजन निश्चय ही तैजार हो गया हागा, श्रुपया मेर गाय बनिए ।

वारन्तिता मिगानायना ! कालोमियस्लेव ने पाँच मिनट बाद उमर कमरे में धुगत हुए बिमार का खर में पड़ा ।

“तुम्हारा पति जो कुछ कर रहा है, वह निश्चय ही हृद से बाहर है ! एक धून्यवादी पहलें से ही जमा रक्ता है और अब वह दूसरे को साख्हा है और यह उससे भी चार हाय भागे है !”

“कैसे, कैसे ?”

“विश्वास करो, वह न जाने क्या-क्या उपदेश दे रहा है, और फिर—एक बात तो देखो वह तुम्हारे पति से पूरे एक घंटे तक बात करता रहा और एक बार भी उसने उनसे ‘महामहिम’ नहीं कहा !”



## 1 घीबोस

भोजन से पहिले सिप्यागिन ने अपनी पत्नी को प्रसन्न आचेइरी में बुसाया। वह उससे प्रकसे में घात करना चाहता था वह परेशान दिखार्ह पड़ रहा था। उसने उसे बताया कि निद्रितरूप से कारखाना एक परेशानी का कारण बनता जा रहा है, और यह सोलोमिन उसे बड़ा योग्य आदमी लगा है, यद्यपि साधारण ठेठ, और उन्हें उसके साथ बड़ी सावधानी से व्यवहार करना होगा। 'आह! अगर वहीं हम उसे अपने यहाँ आने के लिए मना सके, तो कितना अच्छा हो।' उसने दो बार दूहराया। सिप्यागिन कालो मियत्सेव की उपस्थिति से बेहद वैचैन था 'मैजान उसे यहाँ से आया। वह हर तरफ शून्यवादी देखता है, और उनका दमन करने के प्रतिरिक्त और, कुछ नहीं सोचता। वह अपने घर जानर ऐसा करे। कम्बस्त अपनी खुशान पर भी काबू नहीं रग सकता।

वासतिना मित्तालोचना ने कहा कि वह इस नए प्रतिपि व साथ यथासम्भव अच्छा

पसन्द करेगे " ' सिप्यागिन ने चीखते हुए वीयर साने का आवेष्ट किया। वालेन्तिना मिखालोवना की ओर उद्युक्त होते हुए सोलोमिन ने धीरे से कहा, 'भीमती जी आप नहीं जानतीं घायद, कि मैंने इंग्लैड में दो साल बिताए हैं और अंग्रेजी समझ सकता हूँ और बोल भी सकता हूँ, मैं आपको यह पहिले ही से इसलिए बताए दे रहा हूँ कि घायद कहीं आप अपने पति से भेरे घामने कोई आपसी बात करना चाहें।' वालेन्तिना मिखालोवना हँस पड़ी और उसे आश्वासन देने लगी कि इस सावधानी की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह अपनी तारीफ के अतिरिक्त और कुछ नहीं सुनेगा मन में उसने सोचा सोलोमिन की बातें बड़ी भजीब होती हैं, लेकिन अपने तरीके में स्निग्ध और विनम्र।

धम आखिरकार फालोमियेस्सेव बोल ही पड़ा।

'तो आप इंग्लैड में भी रहे हैं, 'उसने धुक् किया और घायद आपने यहाँ क तौर तरीके भी सीखे होंगे। मुझे जानने की आज्ञा दीजिए, क्या वे अनुकरण के योग्य हैं ?'

'कुछ थे कुछ नहीं।'

बात कुछ साफ नहीं हुई, फालोमियेस्सेव ने कहा, सिप्यागिन के इशारा की ओर ध्यान न देते हुए कहा। 'लेकिन आज ही सबेर अन्य लोगों के बारे में बातें कर रहे थे। 'निःसन्देह आपका वहाँ के मद्र जागीरदार के जीवन का अध्ययन करने का अवसर तो मिला होगा ?'

'जी नहीं मुझे ऐसा कोई अवसर नहीं मिला मैं बिल्कुल ही दूसरे बातावरण में मद्रा सेबिन उन लोगों के विषय में मैंने अपनी राय जरूर कायम की है।

'तो क्या आप यह समझते हैं कि इस तरह के मद्र जागीरदार हमारे बीच में मिलना असम्भव है और हमें बिसा यन्त्रे की इच्छा भी किसी तरह नहीं करनी चाहिए ?'

‘पहली बात तो यह, कि मे इसे सचमुच ही असम्भव समझता हूँ, और फिर, ऐसा होने की कामना करना भी किसी काम का नहीं।’

‘क्यों, जनाव?’ कासोमियेस्सेय ने कहा। ‘जनाव’ सिप्यागिन के सन्तुष्ट करने के लिए कहा गया था जो यज्ञ भेचैन हा रहा था और पैर से कुर्सी में नहीं बैठ पा रहा था।

‘क्योंकि आगले बीस-तीस साल में आपका यह भद्र जागीरदार बन नहीं रहेगा।

लेकिन क्या, ऐसा क्या होगा जनाव?’

‘क्योंकि उस समय तक जमीन-जमीन बार्ता की हो जायगा, बिना किसी वर्ग या स्तर भेद के।

‘और व्यापारी?’

‘शायद अधिकांशतः व्यापारी भी।

‘यह कैसे होगा?’

‘उनके जमीन खरीदने से, मरा मतलब है व जमीन खरीदेंगे।’

‘जमींदारों से?’

‘हाँ, जमींदारों से।

कासोमियेस्सेय धोखता करन की सी हुई ही हुआ। आपने एसी बात पहिले भी कही थी, मुझे याद है, मिलों और कारखानों के बारे में और अब आप यही बात जमीन के बारे में भी कह रहे हैं।’

‘हाँ, अब यही बात मैं सारी जमीन के बारे में कह रहा हूँ।

‘और आपका यही सुग्री हागी?’

‘वित्तुस्त नहीं, बस कि मैंने पहिले ही स्पष्ट कर दिया है, क्योंकि जनता की स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा।’

कासोमियेस्सेय ने धीरे से अपना एक हाथ उठाया। ‘जनता के अन्दर के लिए वैसी चरमंठा है।’

‘वासिनी कैशोतिष !’ सिव्यागिन ने पूरे जोर से चीख कर कहा ।  
‘आपके लिए बीयर आगई है । उसने धीरे से कहा ।

सकित कान्मोमियेस्सेव चुप नहीं हुआ ।

‘ब्यापारियों के प्रति भी आपकी भाई भण्डी राय नहीं है, लेकिन  
वे भी तो जनता से ही आए हैं या नहीं ?’

‘तो ?’

‘मैं समझता था कि जनता से सम्बन्ध रखने वाली हर चीज या  
जनता से प्राप्त चीज आपकी मजदर में भण्डी होगी ।

‘मोह नहीं, जनाब । आप ऐसा समझ कर गसती पर रहे हैं ।  
हमारी जनता में बहुत सी बुराईयाँ हैं । हानाँकि हमेशा वही ही बोपी  
नहीं होते । हमारे बीच में ब्यापारी वर्ग डाकुओं का एक गुट है, वह लूट  
के लिए अपनी सम्पत्ति का प्रयोग करता है । वह क्या करे ? यह  
चूमा जाता है और वह पूसता है । रही जनता की बात—

‘जनता / कान्मोमियेस्सेव न मुँह बनाते हुए पहा ।

‘जनता सोई पड़ी है ।

‘और आप उसे जगाएँगे ?’

‘यह कोई अनुचित तो होगा नहीं ।’

‘आहा ! आहा ! तो यह है—

‘माफ करना भाई, माफ करना मुझे’, सिव्यागिन ने बरबरा से  
बीच में दस्तक देते हुए कहा । उसने अनुभव किया कि रेखा खींचने का  
समय आ गया है । पहना चाहिए बहस को रोक देने का । और  
उसने रेखा खींच दी । उसने पहस बंद कर दी । कन्साई पर से अपने  
दाहिने हाथ को हिलाते हुए अर्थात् कुतूही मेज पर ही टिफो रखी उठने  
एक सन्या और विस्तृत ब्याख्यान दे बागा । एक तरफ तो उठान खुद  
दस की सारीफ बी, तो दूसरी ओर उदारदल की भी । उदारदल की  
कुछ भविष्य, अपने की ही उनमें शामिल करते हुए , उसने जनता का



पल लिया, पर कुछ उगक दाया पर भी प्रकाश टाला, सरकार में पूर्ण विश्वास प्रगट किया और अपने आप से ही प्रश्न किया कि क्या सय अधिकारी उसका उद्देश्यों को ईमानदारी से पूरा कर रहे हैं। साहित्य के महत्व को स्वीकार किया लेकिन कहा कि बिना पूरी सावधानी के उसका उपयोग अहित कर है। उ। पहिले तो पूर्व की साचेक की और उसके कुछ सीपन की बात बही फिर उसमें भी रंका प्रगट की पहिले की बात की। पहिले का उदासीनता से फिर जैसे जाम पडा हा। अन्त में उसने तीन क नाम टोस्ट प्रस्तावित किया— धर्म, कृषि, और उद्योग धन्धा क नाम पर।

‘गण्ड की रक्षा म। कालामियत्सव न पट्टया से जाड़ा।

विद्वान और दयालु अधिकारिया की रक्षा न सिप्यागिन ने संसाधन किया।

टोस्ट चुप्पी में पिया गया। सिप्यागिन क दगत में बैठे नेम्बानोव ने का सिप्यागिन क लिए एक प्रकार से वहाँ नहीं था, परर कुछ प्रगदतानुषक ध्वनि को भरिन उस पर फिरी न ध्यान नहीं दिया, अतः यह फिर चुप हो गया। धार नोज सन्तापप्रद अन्त को प्राप्त हुआ। फिर किसी बहस से उसमें भाषात नहीं पट्टया।

धालेन्दिना मितालोचना न अत्यन्त महक मुम्बान क साथ सानोमिन को एक रूप काफी दी। उसने उन पिया और अपने हृद को सनाउ करने की इच्छा से देग द्वाया कि, सिप्यागिन ने वडा कोमगता से उसका हान पनडा और उते अल्दी से अपनी अल्पवयगाता से तिया से गया और उसे अत्यन्त बढ़िया गिगार दिया और उससे प्रस्ताव किया कि वह उगक दारमामे में अरुद्ध वजन पर आशय। ‘आप वहाँ पूरा तर्क से मामिन्न होंगे, मामिन्ती कैदीतिष, सम्पूर्ण मास्टर। गिगार सानोमिन ने स्वीकार कर लिया, और प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। गिगार हा सिप्यागिन ने जोर दिया उतना ही वह अपनी अत्यावृत्ति पर अडा रहा।

‘ना विल्कुल मत करो, प्रिय वासिली फ़ैदोतिच । कम से कम यह तो कहो कि मैं कम तक इस पर विचार करूँगा ।

‘लेकिन इससे कोई अन्तर तो पड़ेगा नहीं । मैं आपका प्रस्ताव नहीं स्वीकार कर सकता ।’

‘कम तक ! वासिली फ़ैदोतिच ! अपने निश्चय को बदलने में आपका नुकसान क्या होता है ?

सोलामिन ने स्वीकार किया कि निश्चय ही इससे उसका कोई नुकसान नहीं होगा वह अभ्ययनघासा से बाहर चला गया और फिर अपने हेट की उलाश करने लगा । मेज़मानोव जो उस समय तक उससे एक बात भी नहीं कर पाया था, उस समय उसके पास भाया और उससे जल्दी-जल्दी फुसफुसा कर बोला खुदा के वास्ते अभी न आओ, वरना हमारे घात हा ठकना असम्भव हो जायगा ।’

सोलामिन ने अपना हेट छोड़ दिया । सिप्यागिन ने उसे ड्राईगस्म में ऊपर नीचे घूमठ देखकर, चीककर कहा ‘भाप रात को हमारे साथ ठहुरेंगे निश्चय ही ?’

‘मैं पूरी तरह से आप की मर्जी पर हूँ । आप जैसी आज्ञा दें । सोलोमिन ने उत्तर दिया ।

भरिमाना पी कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि ने, जो खिड़की के पास सड़ी थी, सोलोमिन को विचारमग्न कर दिया ।



## पञ्चोस

मरिघाना ने अपने मन में सोलोमिन की एक  
 प्रसन्न ही तस्वीर बना रखी थी। पहिली  
 नगर में वह उस प्रजीव सा व्यक्तिवहीन  
 व्यक्ति मगा। उसने सोचा—उसने उस  
 जैसे मूरे माला माल पतल-दुबल गरीर मान  
 अपनेको व्यक्ति दखे हैं। सजिन जितना ही वह  
 उस ध्यान स देखती जितना ही वह उसकी  
 बातों को गौर स सुनती उतना ही उसके मन  
 में उसका ऊपर विद्वान की भावना बलवती  
 होती जाती—

घान्त, गम्भीर स्वभाव का यह प्रादमी न  
 सिर्फ मूठ बोलने या योगी अपारने वाला ही न  
 था, बरन् उस पर विश्वास भी किया जा सकता  
 था, परवर की दीवान भी तरह। वह  
 गद्गरी मही बरगा किसी क साय, और इसस  
 भी अधिप बहु दूरता की भावना का समझता  
 और उसको सहाय देता। मरिघाना ने देखा  
 कि यह उसी की भावना नहीं है, बरन् जितने  
 भी वही उत्पन्न प, सभी उमके मार में ऐसा  
 ही अनुभव पर रह थे। उसने उसी बातों

घनाय बच्चे बैसा है' 'दस बार प्रयास करो, क्योंकि एक बार तो सफलता मिल ही जायगी', 'वहाँ भ्रम होगा वहाँ बटखरे तो मिल ही जायँगे', 'संत एगोर विथस तक बलूत के पत्ते फाड़िङ्ग के बराबर बड़े हो जायँ, तो कागज को महिमा की दाघत के समय तक खलिहान में घनाय हो जायगा।' इसमें सन्देह नहीं कि वह कभी-कभी इन कथावर्तों को गलत स्वेमान करता था, जैसे, 'घन्त तक बड़ई को छुटा रहने दो।' या घन्टे घरों से पेट भर जाता है। लेकिन वह समाज, जिसमें ऐसी असंगत बातें होती हैं, अधिकांशतः यह सन्देह भी नहीं करता कि कहने वाले ने भारी भूल, की है, और सचमुच राबकूमर कोविन्स्किन को घन्तवाह देते हैं, यहाँ रूसी का भड़े ढंग से प्रयोग करने में अभ्यस्त हैं। और सिप्यागिन इन सब कथावर्तों को बड़े प्रशंसात्मक ढंग से भारी भावाज में कहता, पीटर्सवर्ग में ऐसे वाक्य उचित अवसर पर पढ़े जाने पर ऊँचे स्तर की महिमाएँ कहतीं, 'बहुत घूस बहा दानदार बात है।' समाज प्रगति के और उच्चवर्ग के लोग उसमें जोड़ देते 'इसका जनता से निकट सम्बन्ध है।

वालेन्तिना मिशालोयना ने सोलोमिन को प्रभावित करने की पूरी कोशिश की, लेकिन उसकी कोशिश की प्रत्याशित असफलता ने उसे निराश कर दिया, सभी जय वह कामोमियेत्सव के वगम से गुजर रही थी, तो फुसफुसाए बिना न रह सनी कि, 'मैं तो घाब घाई !

जिसका उत्तर उसने व्यंग में दिया, 'नहीं और परो छुछामद !'

घाघिरकार विनग्रता और मिलनसारिवा के सामान्य निष्ठावे के बाद, एकाएक हाथ मिसान के राय बैठ समात हान के समय बनावटी मुस्मान के साथ क्लान्त प्रतिनि और क्लान्त मतिवेष प्रथक हुए।

सोलोमिन, को दूसरी मंजिल पर स्थित सबसे सुन्दर घयन कक्ष में ले जाया गया जिसमें ब्रिज्जी ढंग का स्नान प्रसाधन और साथ में एक स्नानागार भी था। यह सीपा मेग्घामोव के पास गया।

नेग्रानाब ने उस गत को ठहरना स्वीकार करने पर धन्यवाद दिया।

‘मैं जानता हूँ यह तुम्हारा त्याग है

‘क्या छिड़ून को दात करत हा। सामानिन ने सयत स्वर में जबाब दिया ‘बडा त्याग हे। मैं तुम्हारी दात टान कैसे सकता या।

‘क्यों /

‘क्योंकि मैं उन्हें पसन्द करना हूँ।

नेग्रानाब प्रसन्न भी हुआ और चिन्तित भी। मोसामिन ने उसका हाथ दबाया। फिर वह एक कुर्सी पर बैठ गया निगाह जमाया और शाना कुहनियाँ कुर्सी की पीठ पर टिका कर उसने कहा, धृष्ट्या, सब यथासा मात क्या है /

नेग्रानोय मोसामिन के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया लेकिन ऊपरने सिफार नहीं जलाया।

‘तुम पूछते हो मानजा क्या है / मामला यह है कि मैं यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।

‘जानी तुम इस मरान को छोड़ देना चाहते हो? ता इसमें सुभीषत की बात क्या है? तुम्हारा फिर पुन कामना करता हूँ।

‘छाड़ना नहीं नागना चाहता हूँ।

‘क्यों? क्या व तुम्हें जबरस्ती गारत है? तुम गाबद कुछ पैतन देगी से कुर हा? धार गया है, ता तुम्ह कहने मर की देर है मुझे क्या मान दे हाग तुम्हारी।

‘मोसामिन तुम मनी दात समन्त नहीं रहे हा नाई मैंने कहा भाग जाना—छोना नहीं—क्याकि मनी म मैं मरनेना नहीं आ रहा हूँ।

मोसामिन म फिर ऊपर उठाया।

‘सिम्के माय

‘उस लड़की के साथ जिसे तुमने आज देखा था  
‘वह लड़की ! उसका चेहरा तो सूवसूरत है । तुम दोनों प्रेम करते  
हो, क्यों ? या सिर्फ तुम दोनों ने इस घर में जहाँ तुम दोनों ही  
बुझी हो, साथ साथ भागने का निश्चय किया है ?  
‘हम आपस में प्रेम करते हैं ।

‘घोह !’ सोलोमिन थोड़ी देर के लिए चुप हो गया । ‘क्या वह इन  
सोर्गों की रिश्तेदार है ?’

‘हाँ । लेकिन वह पूरी तरह से हमारे विचारों को मानती है और  
हर तरह के काम के लिए तैयार है ।

सोलोमिन मुस्कराया ।

‘और तुम तैयार हो नेज्घानोव ?’

नेज्घानोव की भीठों में तनाव आ गया ।

‘ऐसा प्रश्न क्यों ? मैं तैयार हूँ, यह मैं अपने कार्यों के द्वारा साबित  
कर दूँगा ।

‘मैं तुम पर सन्देह नहीं करता, नेज्घानोव । मैंने तो सिर्फ पूछा  
क्योंकि सिवाय तुम्हारे और कोई तैयार नहीं है ।

और मार्कोसोव ?’

‘हाँ सचमुच मार्कोसोव भी है लेकिन वह, मैं समझता हूँ पैदा ही  
तैयार हुआ था ।

तभी किसी ने दरवाजे पर हल्के से, पर जल्दी-जल्दी टाटखट की,  
और बिना उतरा की प्रतीक्षा किए, उसे खोल लिया । यह मरिघाना  
थी । वह सीधी सोलोमिन के पास आ गई ।

‘तुम्हें विद्वान्त है, उसने कहना शुरू किया कि तुम्हें यहाँ इस  
समय देमकर, आपको प्राचर्य नहीं हुआ होगा । ‘इन्होंने (मरिघाना  
ने नेज्घानोव की ओर संकेत किया) आपको सब कुछ बता ही दिया

होगा। मुझे अपना हाथ दीजिए, और मुझ पर विश्वास कीजिए, यह एक ईमानदार सड़की आपके सामने खड़ी है।'

'हाँ, यह तो मैं जानता हूँ', सोलोमिन ने गम्भीरता से कहा। जब मरिघाना आई थी तो वह अपनी कुर्सी पर से उठ कर खड़ा हो गया था। 'मैं भोज के समय तुम्हारी घोर देह रखा था और सोच रहा था, 'कैसी ईमानदार सड़की है इस महिला की।' नेज्धानोव मुझे सचमुच तुम लोगों की योजना के बारे में बता रहे थे। लेकिन तुम लोग भागना ही क्यों चाहते हो ?

'क्योंकि उद्देश्य मेरे दिल में बस गया है -- आश्चर्य मत कीजिए, नेज्धानोव ने मुझे सब कुछ समझा दिया है वह काम कुछ दिनों में ही शुरू होने वाला है और मैं इस अभिजात्य वर्गीय मकान में रहूँ। जहाँ सब घोर धोखा झूठ और फरेब है ? जनता किससे मैं प्रेम करती हूँ सतरे में हा और मैं—'

सोलोमिन ने उसे हाथ के सिकठ से रोक दिया।

सैल में मत घाघो बैठ जाओ, और मैं भी। और तुम भी बैठ जाओ नेज्धानोव। अगर उसके प्रतिरिक्त तुम्हारे भागने का और कोई कारण नहीं है, तो मैं कहूँगा कि तुम्हारे भागने की कोई आवश्यकता नहीं है अभी। वह काम, तुम जितना जल्दी समझते हो उतना जल्दी नहीं शुरू होने जा रहा है। उसमें अभी और गम्भीर साव-विचार की आवश्यकता है, बिना सोचे समझे कदम उठाना उचित नहीं है। मेरा विश्वास करो।

मरिघाना बैठ गई और उसने अपने को अपने बंधे पर पड़े पान में लपेट लिया।

'लेपिन मैं तो यहाँ, अब एक क्षण भी नहीं रह सकता। यहाँ सभी मेरा अपमान करते हैं। आज उस मूर्ख बूढ़ी अनाभहारोवना ने कोन्या के सामने मेरे पिता की घोर सक्ति करते हुए कहा कि सेव करनी सेव के पेट से दूर नहीं गिरता। कोन्या को भी यह सुनकर आश्चर्य हुआ

घोर उसने पूछा, इसके क्या मानी हैं। घोर बालेन्तिना मिखासोवना का तो कहना ही क्या है।

सोलोमिन ने फिर उसे रोका, पर इस बार मुस्कान से मरिमाना को भगा कि वह कुछ कुछ उसी पर हँस रहा है, लेकिन उसकी मुस्कान में कमी किसी को आघात नहीं पहुँचाया होगा।

‘तुम्हारा मतसब क्या है! मैं नहीं जानता वह भद्राजहारोवना कौन है घोर न जाने तुम किस सेय के पेठ की बात कर रही हो — लेकिन जो भी हो, अगर कोई मूर्ख घोरत तुमसे कोई सुर्भवापूर्ण बात कह जाती है घोर तुम उस सहन नहीं कर सकती, तो तुम जीवन में क्या करोगी? सारी दुनियाँ ही मूर्खों से भरी पड़ी है। नहीं, यह कोई कारण नहीं है। क्या इसके घसावा भी घोर कोई बात है?’

नेज्बानोव ने भारी आवाज में कहना शुरू किया, ‘मुझे निश्चय है कि मिस्टर सिप्यागिन एक या दो दिन में स्वयं ही मुझे घर से बाहर कर देंगे। निश्चय ही उनके कान भरे गए हैं। वह बड़े तिरस्कार के साथ मुझ से पेच घाते हैं।’

सोसोमिन नेज्बानोव की घोर भूमा।

‘अगर तुम निकास भी दिए जाओगे तो मागमा किस लिए?’

नेज्बानोव तुरन्त कोई उत्तर न दे सका।

‘मैं तुम्हें पहिने ही बटा रहा था—’ उसने कहना शुरू किया।

पर मरिमाना ने बात पूरी की ‘उन्होंने पहिने ही बटाया कि मैं उनके साथ जा रही हूँ।’

सोसोमिन ने उसकी घोर देसा घोर सुत का अनुभव करते हुए सिर हिसाया।

‘ठीक है, ठीक है, सो तो ठीक है, लेकिन मैं तुमसे फिर कहता हूँ यह सोचकर छोड़ना चाहते हो कि पीछ ही शान्ति धारम्भ होने जा रही है तो—’



'यही सब जानने समझने के लिए ठा हमने आपको जाने के लिए भिखा था, मरिघाना ने बीच में कहा 'यह जानने के लिए कि स्थिति क्या है।'

'अगर यह बात है, तो मैं फिर कहता हूँ कि तुम पर एक सक्ते हो—बाकी दिना ठक।' सातोमिन ने स्वर में वन दस हुए कहा और फिर तुम सात इस लिए नागना चाहते हो कि तुम शाना एक दूसरे से प्रेम करते हो और यहाँ हकर तुम शानों का सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है तो—

'तो क्या।

तो मेरे लिए तुम लोगों का धमाई देने का काम रह जाता है, जैसा कि पुरानी कहावत है, स्नेह और धानीवाद देने का। अगर जरूरत हो तो मैं अपनी पत्नी भर तुम्हारी महायत्ना करने का तैयार हूँ क्योंकि तुम शाना को मैं पहिंसी ही नजर में लेने लगता हूँ, जैसा तुम शानां भरे सग नाई कहन हा।

मरिघाना और मेघधानोव दोनों ही उमक दौए-वौए जाकर खड़े हो गए और दोनों ने उनके हाथ अपने हाथ में ल लिए।

'हमें पताचो हम क्या करें' मरिघाना ने कहा। मान सा अन्ति धमी दूर है तो उमकी सैयारी ठा फरती ही है, यह भी तो इस घर में करना असम्भव है, इन परिस्थितिमा में। हम दही उत्सुकता के साथ जाने का और सब कुछ फगन का सैयार हूँ। धान हमें बडा गर दीजिए कि हमें वही जाना धार क्या करना है। हमें भेजिए। आप हमें भेजेंगे न, क्यों, भेजेंगे न।

'कहाँ।

'बिघाना में' जनता में, नहीं तो और हम वही जानें।

'जंगल में', मेघधाना ने सोचा। पाकिवन के शब्द उसके मन में खरीब उठे। सोमोमिन ने मरिघाना की ओर ध्यान से देखा।

‘तुम खनटा को जानना चाहते हो?’

‘हाँ, हम सिर्फ जानना ही नहीं चाहते बल्कि प्रभावित करना उनकी सेवा करना चाहते हैं।’

‘बहुत ठीक, मैं वायदा करता हूँ, तुम उन्हें जानोगी। मैं तुम्हें उन्हें प्रभावित करने और उनकी सेवा करने का भवसर दूँगा। और तुम नेग्धानोव, जाने को तैयार हो इसके लिए और उनके लिए?’

‘हाँ, मैं तैयार हूँ’, उसने जल्दी से दुहराया। ‘बगदाध का रथ’ पाकिस्तान का एक और कथम उसे याद हो आया, वह बढ़ता आ रहा है, विघ्न रथ और यह रही उसके पहियों की चरमराहट’

‘बहुत ठीक’, सोलोमिन ने सोचते हुए दुहराया। लेकिन तुम कब आगना चाहते हो?’

कम ही?’ मरिघाना ने जल्दी से कहा।

‘बहुत ठीक—लेकिन कहाँ?’

‘सू’ धीरे ’ नेग्धानोव ने फुसफुसाया। ‘गैसरी में कोई धारहा है।

घोड़ी दर के लिए सभी चुप हो गए।

‘तुम कहाँ जाना चाहते हो?’ सोलोमिन ने फिर पूछा, घीमी माबाज में।

हम नहीं आते, मरिघाना ने उत्तर दिया।

सोलोमिन ने नेग्धानोव की ओर देखा उसने भी नकार में सिर हिला दिया।

सोलोमिन ने अपना हाथ पैसाया और सावधानी से मोमबत्ती का तुम मचड़ दिया।

‘मेरे बच्चों, मैं और क्या बताऊँ मेरे फारखाने में आ जाओ!’ उसने अन्त में कहा, ‘वहाँ जड़ी गन्धगी है लेकिन बहुत सुरक्षित है।

मैं तुम्हें छिपा भूंगा। मेरे पास एक छोटा सा स्थान है। योई तुम्हारा पता नहीं लगा पायेगा। तुम्हें सिर्फ वहाँ पहुँच भर जाना है। और हम तुम्हारे साथ गद्दारी नहीं करेंगे। वहाँ तुम्हें जनता भी खूब मिल जायगी। यह बहुत अच्छी बात है। जहाँ लोग बहुत होते हैं, छिपना आसान होता है। क्यों इससे काम चलेगा न, ऐ, क्या ?

'हम कैसे आपकी धन्यवाद दें ! नेग्घानोव ने कहा, जब कि मरिघाना ने जो पहिल कारखाने का विचार सुनकर सम्पदा गई थी, जल्दी से कहा हाँ हाँ। आप कितने अच्छे हैं ! लेकिन आप हमें वहाँ क्या-दिन तो नहीं रोकेंगे, मैं समझती हूँ। आप हमें जल्दी ही जनता के बीच भेजेंगे।'

यह तुम पर निर्भर करता है। लेकिन अगर तुम लोग घादी करना चाहोगे, तो कारखाने में तुम्हारे लिए बड़ी आसानी होगी। वहाँ पड़ोस में ही एक पादरी रहता है, जो मेरा भतीजा होता है—जोसिम बड़ा मितनदार और उदार है। उसे तुम्हारी शादी कराके बड़ी प्रसन्नता होगी।

मरिघाना मन में मुस्करा उठी और नेग्घानोव ने एक बार फिर सोलोमिन का हाथ दयाया, और थोड़ी देर की घाम्ठी के बाद फिर पूछा, 'लेकिन आपका मासिक, तो आपसे इस पर कुछ नहीं कहेगा ? यह आपको लिए तो कोई मुसीबत नहीं लड़ी कर देगा ?'

सोलोमिन ने नेग्घानोव की ओर जिज्ञासा पूर्ण दृष्टि से देखा।

'मेरी चिन्ता मत करो'—अपने समय धर्नाद करना होगा। जब तक कारखाना ठीक चलता है, तब तक मेरे मासिक को, मैं क्या करता हूँ, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। तुम्हें और तुम्हारी प्रेमिका का उलस करने या चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सिर्फ मुझे पहिल से यह बात दो कि तुम लोग कब और किस समय आयोगे ?'

नेग्घानोव और मरिघाना एक दूसरे की ओर देखने लगे।

‘परसों तड़के, या उसके अगले दिन’, नेज्घानोव ने भ्रन्त में कहा।  
 ‘हम इससे अधिक और नहीं टाल सकते। उम्मीद है कि कल तो वे  
 सोग मुझे घर से निकाल ही नहीं देंगे।’

‘ठीक है’ सोलोमिन ने सहमति प्रगट की, और अपनी कुर्सी  
 से उठ खड़ा हुआ। ‘मैं हर दिन सबेरे तुम लोगों का इन्सज्जार करूँगा।  
 ‘और मैं पूरे सप्ताह घर से बाहर नहीं जाऊँगा। इस बीच मैं सब  
 प्रबन्ध हो जायगा।’

मरिघाना उसके और निकट धा गई (वह कमरे से बाहर जाने को  
 उद्यत थी)। नमस्ते प्रिय दयामु यासिसी फ़ैदोतिच यही आपका  
 नाम है न?’

‘हाँ।’

‘नमस्ते कम से कम जब तक हम फिर मिलेंगे और  
 धन्यवाद—आपको धन्यवाद।’

‘नमस्ते नमस्ते मेरे प्यारे बच्चे।’

‘और नमस्ते नेज्घानोव कल तक उसने कहा और मरिघाना  
 ज़ली से बाहर चली गई।

दोनों नौजवान थोड़ी देर तक निश्चल खड़े रहे।

‘नेज्घानोव’ सोलोमिन ने आदिरदार कहना शुरू किया, पर  
 रुक गया। ‘नेज्घानोव’ उसने फिर कहना शुरू किया ‘इस सड़पी  
 के बारे में मुझे घनाघो जा कुछ तुम बता सकते हो। उसका भय  
 तन या जीवन कैसा रहा है? यह कौन है? और यह यहाँ  
 कैसे आई?’

नेज्घानोव ने, जो कुछ वह उसने घारे में जानना था सक्षेप में  
 बताया।

भ्रन्त में फिर उसने कहना शुरू किया, ‘नेज्घानोव तुम उस

लहकी की सैर खबर रखना, क्योंकि अगर कुछ उसे हो जाता है तो तुम्हीं उसके दोषी होगे। नमस्ते।'

वह चला गया, और नेज्जानोव कमरे के बीच में थोड़ी देर शान्त रहा, तब स्वयं से ही बुदबुदाया, माह! न सोचना ही अच्छा है और वह धीमे मुँह विस्तर पर गिर पड़ा।

जब मरिघाना अपने कमरे में पहुँची तो उसे मेज पर एक छोटा सा पर्चा मिला जिस पर लिखा था 'मुझे तुम्हारे लिए कुछ है। तुम अपनी यर्बानी के रास्ते पर जा रही हो। साधा तुम क्या कर रही हो। तुम धीरों बन्द करके जिस मुश्किल में अपने को भटक रही हो?—फिसके लिए, और फिस लिए?—ना०।

कमरे में एक अजीब मोहक सुगंध व्याप्त थी जाहिर था कि अभी अभी वासेन्तिना मिखाइलोवना वहाँ से गई थी। मरिघाना ने कसम उठा ली और उसके नीचे लिखा 'मुझ पर दया मत करो! ईश्वर जानता है कि हम दोनों में से किसको दया की अधिक जरूरत है। मैं तो सिर्फ इतना जानती हूँ कि मैं तुम्हारी जगह नहीं हूँगी—म०। उसने पत्र मज पर ही रख दिया। उसे निश्चय था कि उसका यह पत्र वासेन्तिना मिखाइलोवना के हाथों में पहुँच जायगा।

दूसरे दिन सवेरे सानोमिन, नेज्जानोव से मिलकर और सिप्यागिन व प्रस्ताय को अन्तिम रूप से अस्वाकृत करके, अपने फारखाने वापस चल दिया। वह रास्ते भर ध्यान मग्न रहा। ऐसी स्थिति उसके साथ कभी-कभी ही आती थी। बग्गी के भटकों से उसे आमतौर पर अपकी सी घाने जगती थी। पर उस समय वह नेज्जानोव और मरिघाना के धारे में सोचता रहा। उसने सोचा कि अगर वह प्रेम में पड़ा होता, यह—सोमोमिन—था उसका चेहरा कुछ दूसरा ही होता या यह कुछ और ही ढंग से बात करता, कुछ और ही ढंग से दीपता। 'लेकिन, उसने सोचा, 'जब ऐसा भरे साथ कभी हुआ ही नहीं, तो मैं कैसे बता सकता हूँ, कि अगर ऐसा होता तो मैं कैसे समझता।'

उसे एक आयरिण लड़की की याद आ गई, जिसे उसने एक दुकान पर देखा था, उसे याद आया कि उसके नाम कैसे खानदार और सगभग काले थे, उसकी आँखें नीली और विरोनियाँ धनी थीं और उसमें कैसी व्यक्ति और नासना मरी आँखों से उसको देखा था और वही देर तक देखती रही थी। और वह कैसे उसके दरवाजों के आगे चक्कर काटता रहा था, कितना उत्तेजित हो गया था वह और कैसे वह इस उमर में पड़ा कि उससे परिचय करे या न करे? उन दिनों में वह सन्दन में रह रहा था। उसके मासिक ने उसे कुछ रुपया देकर अपने लिए कुछ सामान खरीद करने का भेजा था। सोलोमिन ने एक बार तो मन में सोचा था कि वह लन्दन में ही रुक जाय और अपने मासिक का रुपया वापस भेज दे। ऐसा सगढ़ा प्रभाव था जो उस पर उस मनमोहक पीली ने डाला था — (उसे, उसके नाम का पता चग गया था, जब एक दूसरी दुकानदार लड़की ने उस इसी नाम से पूछा था।) उसने अपने पर जैसे-जैसे संयम किया, और अपने मासिक के पास वापस भेजा गया। पीली मरिघाना से फर्ही अधिक धूम्रमुरठ थी भेषिन इस लड़की की दृष्टि में भी वैसी ही व्यथा और चिन्ताकुसता था सामना थी और यह रूसी थी ।

‘लेकिन मैं यह सब क्या सोच रहा हूँ?’ सोलोमिन ने बुलबुलिया, ‘दूसरा की प्रेमिकाओं के बारे में सोचना। और उसने अपने फोट के बाहर को भटका जैसे वह इन बेरार के विचारों को भटकार देना चाहता हो तभी वह फेक्टरी के पास पहुंच गया और उसे अपने अपने के सामने स्वामिभक्त पवेल की मस्तक दिखाई पड़ी।



## छब्बीस

सो लोमिन की प्रस्वीकृति ने सिप्यागिन को बड़ी छोट पढ़ुवाई—इतनी कि वह एकाएक इस राय पर पहुँचा कि यह घर पर तैयार स्टवन्सन इतना अच्छा बारीगर नहीं था और नभे ही वह पूरी तरह से दर्मनाक रूप से निकम्मा न हा संकित भास्य भादनी की तरह बड़ा ऐंठू पा और धपन को बड़ा सीसमारखी समझा था। 'यह सभी सही जब वे, यह समझने लगते हैं कि उन्हें कुछ भासा है, तो फिर उनका दिमाग साठवें भासमान पर चढ़ जाते हैं। बकवासी कालो मियस्सम ही ठीक है। इस प्रकार की उत्तजित और कटुतापूर्ण मानसिक स्थिति में जब नेता—उस एक नामक—ने नेग्मानाव का दया तो वह उसके प्रति और भी सहानुभूति रहित और रुपा हो गया। उसने मोन्वा को कहला दिया कि उसे भाज धपने मास्टर से पढ़ने की जरूरत नहीं है—उस धात्मनिर्भर होना सीसना चाहिए। और उसने ध्वयं मास्टर को बर्दान्तगी का धादेश नहीं दिया

कि मैं चुप रहूँ और तुम्हारी करतूतों पर परवा डालूँ? क्या यह तुम्हारे योग्य है? मैं एक चरित्रवान स्त्री होने के नाते अपने घर में यह सब बर्बाद नहीं कर सकती।'

वालेन्तिना मिखाइलोवना एक आराम कुर्सी पर गिर पड़ी, जैसे कुछ के भार से ढबी जा रही हो।

मरिआना पहली बार मुस्फुराई।

'मैं आपके गुणा पर विगत, वर्तमान और भविष्य में—शंका नहीं करती,' उसने कहना शुरू किया, 'और ऐसा मैं पूरी गम्भीरता के साथ कह रही हूँ, लेकिन तुम्हारा दुःखी होना व्यर्थ है, मैंने तुम्हारे घर में ऐसा कोई काम नहीं किया जो सज्जा करने की बात हो, वह नौजवान, जिसका तुम बिना बर ही हो, है, निश्चय ही मैं उससे प्रेम करने लगी हूँ।'

'तुम मौम्यियर मेज्जानोव से प्रेम करती हो?'

हाँ मैं उनसे प्रेम करती हूँ।

वालेन्तिना मिखाइलोवना अपनी कुर्सी पर सीधी बैठ गई।

'हाय भगवान! मरिआना! वह तो एक सामान्य विद्यार्थी है, जिसका न कोई भ्रष्टा कुल है और न परिवार, और फिर वह तो उमर में तुमसे भी छोटा है! (इन शब्दों के कहने में विद्वेषपूर्ण आनन्द का भाव था।) 'इसका परिणाम क्या निकलगा? और तुमने उसमें ऐसी क्या खूबी देखी? वह तो बस एक साधारण छोटा लड़का है।'

'पहिले तो उसके बारे में तुम्हारी यह राय नहीं थी, वालेन्तिना मिखाइलोवना!'

'घोह, मुझ पर दया करो, मेरी बात रहने दो --। बात तुम्हारी हो रही है—तुम्हारी और तुम्हारे भविष्य की। जरा सोचो सो! तुम्हारा उसका क्या मतलब है!'

'वालेन्तिना मिखाइलोवना मैं मानती हूँ कि मैंने उस दृष्टि से इस पर नहीं सोचा था।



‘आह, ऐं? क्या? उससे मैं क्या समझूँ? तुमने अपने दिल की बात मानी है, हमें अनुमान करना चाहिए। लेकिन इसका अन्त तो घाबी में ही होगा, है न?’

‘मैं नहीं जानती। मैंने उसके बारे में सोचा ही नहीं।’

‘तुमने उसके बारे में सोचा ही नहीं? क्यों, तुम कहीं पागल तो नहीं हो गईं?’

मरिआना घोड़ा दूसरी एक ओर घूम गई।

हमें यह बातें यहीं धन्द कर देनी चाहिए, वासेन्तिना मिखालोवना इसका कोई नतीजा नहीं निकालेगी। हम कभी एक दूसरे को नहीं समझ पाएंगे।

वासेन्तिना मिखालोवना आवेष्ट में उठ खड़ी हुई।

‘मैं नहीं कर सकता मुझे इस बात की बात नहीं करना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है मुझे तुम्हारे लिए उत्तर देना है — वासेन्तिना मिखालोवना कहना चाहती थी ‘ईश्वर के सामने, मरिआना यह हफसा गई, और बोली, सार संसार को। मैं एसी बेहया बातें सुनकर चुप नहीं रह सकती! और फिर मैं तुम्हें समझ क्यों नहीं सकती? आज्ञास के छोकरे-छोकरिया का ऐसा अहंकार! नहीं! मैं तुम्हें पूरा समझती हूँ, तुम इन नए विचारों से प्रभावित हो गई हो, जो तुम्हें निरिपस रूप से नाश की ओर लेजाएंगे? लेकिन तब बहुत देर हो चुकी होगी।’

‘शामद, लेकिन उसका विश्वास रखा कि मैं अपनी बर्बादी में भी तुमसे सहायता के लिए एक उंगली भी नहीं फैलाऊंगी।’

‘फिर यही अहंकार, आह, ऐसा नारी अहंकार! मरी बात पर ध्यान दो मरिआना, अपने स्वर को एकाएक बदलते हुए उसने कहा वह मरिआना जो अपनी ओर खींचने वाली ही थी, मरिआना मरिआना एक कदम पीछे हट गई। मरिआना! तुम जानती हो मैं

इतनी बूझी नहीं है और न इतनी मूर्ख ही, कि हम सोचों के लिए एक दूसरे को समझना मुश्किल हो। मैं भी अपनी जबानी के दिनों में जनतन्त्रवादी समझी जाती थी तुम्हारी ही तरह। मेरी बात पर ध्यान दो। मैं जो महसूस नहीं करती, यह नहीं कहूंगी। मैंने आज तक कभी तुम्हारे प्रति माँ की ममता का अनुभव नहीं किया और उसकी शिकायत करना भी तुम्हारे स्वभाव में नहीं है लेकिन मैं मानती रही हूँ और आज भी मानती हूँ कि तुम्हारे प्रति मेरे कुछ कर्तव्य हैं और मैंने हमेशा उन्हें पूरा करने की कोशिश की है। धायद तुम्हारे लिए जिस घर का मैंने अपना देखा था, और जिसके लिए बोरिस एन्ड्रिविच और मैं दोनों ही कोई भी त्याग करने को तैयार रहते वह पूरी तरह तुम्हारे बिचारों से भेल नहीं खाता लेकिन अपने हृदय से मैं—

मरिघाना मे वासन्तिना मिश्रालोचना की और— अद्भुत प्राँसो, गुलाबी होठों, गोरे हाथों, और अंगुठियों से सजी हुई उँगलियों की और जिन्हें वह सुन्दरी अपने रेघमी गाउन की ऊपरी चोली से सटाए हुए थी— देखने लगी और बीच में उसकी बात काट कर बोली

‘तुम योग्य घर की बात कहती हो, वासन्तिना मिश्रालोचना? तुम्हारा मतलब उसी हृदयहीन अपने कुत्सित फूड़ मित्र मि० कालोमिएस्सेव से है?’

वासन्तिना मिश्रालोचना न अपनी चोली पर से उँगलियाँ हटा सी।

‘हाँ, मरिघाना बिकन्त्यबना, मेरा मतलब वासामिएस्सेव से ही है—वह सुचिन्तित, और यज्ञ ही अन्ध्र गौश्रधान है। निश्चय ही अपनी पत्नी को सुखी रखेगा, और उससे और कोई भी स्त्री, पागल औरत को छोड़कर, पापी करने स मना मही करेगी।’

‘क्या किया जाय ? लगता है वह पागल औरत में ही है।’

लेकिन उसमें बुराई क्या है ? कौनसी ऐसी बड़ी बुराई तुमने देखी  
उसमें ।

घोह काई भी नहीं । बस मैं उससे धृणा करती हूँ और  
गुध नहीं ।

वानेन्तिना मित्रालोचना ने अधीरता से अगम-अगम अपना सिर  
हिलाया और फिर एक आराम कुर्सी में पसर गई ।

अच्छा भाड़ में जाने दो उसे । और तो तुम नेज्बानाब से  
प्रेम करती हो ?

हाँ ।

और तुम उससे किस तरह पर चुनी हुई हो ?

हाँ बिल्कुल ।

और अगर मैं तुम्हें मना करूँ ता ?

तो मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगी ।

वानेन्तिना मित्रालोचना एकदम अपनी कुर्सी से उछल पड़ी ।

आह, तुम मेरा कहना नहीं मानोगी । घोह सचमुच ही । और यह  
मुझसे वह सड़की कह रही है, जो मेरे एहसाना से सनी हुई है

असली मैंने अपने घर में रखर परवरिष की है—यह मुझसे ऐसा  
कहती है मुझसे कहती है

‘एक घास और—यह भी एक तिरन्तुत पिता की सड़की,  
मरिप्राना ने सीनेपन से कहा । ‘बहो जीवापो कोई बात मन में दबी न  
रह शाय ।

‘बहुरास बात गुध भी हो पर उसमें गब करने की तो कोई बात  
है नहीं । एक सड़की जो मेरा साथी-पहनती है—

यह जाना मत दो मुझे, वानेन्तिना मित्रालोचना । कौस्या के  
लिए अगर कन्ध पढ़ाने बापो रत्नों तो ज्यादा राख पड़ जाता  
तुम जानती हो मैं उस फेंच पढ़ाती हूँ ।

वासुदेविना मित्रालोचना ने अपना हाथ ऊपर उठाया, जिसमें उसने इन से बसा हुआ एक रेशमी रुमा, जिस पर एक कोने में नाम कड़ा हुआ था, से रखा था और कुछ प्रस्तुत देने की कोशिश की, लेकिन मरिघाना आवेग में दिमा रूके रहती ही गई

‘तुम्हें हजार बार बोलने का हक होता, अगर तुम जो कुछ अभी अपने एहसान गिना रही थीं, जो त्याग और कृपा की बातें कर रही थीं, उनके बजाय कह सबने की स्थिति में होतीं, ‘सड़की जिसको मैंने प्रेम किया।’ लेकिन तुम इतनी ईमानदार हो कि ऐसा झूठ नहीं बोलोगी। मरिघाना बाँप रही थी, जैसे बुझार चढ़ा हो। ‘तुमने हमेशा मुझ से धुरा की है। इस समय भी अपने पूरे दिन से, जैसा तुमने अभी इसी समय कहा तुम प्रसन्न हो—हाँ प्रसन्न हो—कि मैं तुम्हारी भविष्यवाणियों को सही सिद्ध कर रही हूँ कि मैं अपने लिए बचनामी मोल से रही हूँ, तुम्हें सिर्फ इस बात की चिन्ता और दुःख है कि यह सब बदनामी तुम्हारे इस अभिजातीय सुसंस्कृत परिवार पर आ सकती है,

‘तुम मेरा अपमान कर रही हो’ वासुदेविना मित्रालोचना गुस्स से हकलाने लगी। ‘कृपया कमरे में बाहर चली जाओ।

लेकिन मरिघाना अपने को संयत न कर सकी।

‘तुम्हारा यह परिवार, तुम कहती हो तुम्हारा सारा परिवार और प्रता अहारोचना और सभी मेरे कृत्या को जानत हैं। और सभी मयभीत और नाराज हैं। लेकिन क्या तुम समझती हो कि मैं तुमसे कुछ पूछूँगी या इन लोगों से पूछूँगी? क्या तुम समझती हो कि मैं उनका नेक समाहों की कोई भीमत समझती हूँ? क्या तुम समझती हो, तुम्हारे सहारे रहना जैसा तुम कहती हो, मेरे लिए मधुर और सुखद रहा है? मैं इस सुपी जीवन की अपेक्षा गरीबी का जीवन लाख-दर्रें अच्छा समझती। क्या तुम नहीं देखतीं कि तुम्हारे परिवार बासां में और मेरे बीच एक गहरी खाई है। ऐसी खाई जिस कोई नहीं पाट

सकता ? क्या तुम-तुम तो एक ममम्भदार महिला हो, यह सब नहीं समझती ? और अगर तुम मुझसे झुगना करती हो तो क्या तुम यह नहीं समझ सकती कि मेरा तुम्हारे बारे में क्या भाव है ? उसको मैं विधिष्ठता नहीं प्रदान करती, क्योंकि वह तो साफ है ।

‘दूर हो जाओ मेरी आँखों के सामने स दूर हो जाओ !’  
 बालेन्तिना मिलासावना ने बुहरामा और उसने अपना सुन्दर छोटा पैर जमीन पर पटकता ।

मरिघाना ने दरवाजे की ओर बन्म बढ़ाया ।

‘मैं यहाँ अपनी उपस्थिति से तुम्हें जल्दी ही मुक्ति दे दूँगी । लेकिन क्या तुम जानती हो, बालेन्तिना मिलासावना ? ऐसा कहा जाता है कि रासिन के ‘बजाये मैं रोयल क मुँह स भी यह, ‘दूर हो जाओ !’ कोई बहुत प्रभाव डाली नहीं हो सका था और तुम छो उससे बहुत पीछे हो । और एक याद और, तुमने क्या कहा था — ‘मैं धड़ी खरित्रवान और सच्ची हूँ । मु हर्मिया मिदूर बमसो भसे ही, लेकिन मैं पक्का जानती हूँ कि मैं तुमसे कहीं ज्यादा खरित्रवान और सच्ची हूँ ! अन्धा नमन्ते !’

मरिघाना बेजी ने बाहर निकल गई और बालेन्तिना मिलासावना अपनी कुर्सी से उठ्यन पड़ी वह चीगना चाहती थी, वह चिछाना चाहती थी लेकिन क्या चीखे, वह नहा समझ पाई, और आँसू भी उसका आदेश पर आए नहीं ।

उसे अपने हाथ क रुमान स अपना पंखा करने स ही समतोप करना पड़ा, लेकिन जिस क्षण स वह बसा हुआ था उसन उसकी स्नापुष्पा पर और ना धमक जाता । वह बहुत दुग्गी, और अपमानित अनुभव कर रही थी । उनन अभी जा बृछ मुना था उसकी मुन्नाई क कण-कण क प्रति वह नचन थी, लेकिन कोई उमक बार में ऐसी धन्यामपूर्ण भागगा कैसे बना सकता है । क्या मैं एसी घृणित थीव हूँ । उमने सोना और उमने पीछे में अपनी मूरत देखी, जो उसक सामने

बासेन्तिना मिखाइलोवना ने धपना हाथ ऊपर उठाया, जिसमें उसने इन् से बसा हुआ एक रेडमी रमाल जिस पर एक बौने में नाम कड़ा हुआ था, से रक्षा था और कुछ प्रत्युत्तर देने की कोशिश की, लेकिन मरिभाना आवेष्ट में बिना फ्ले कहती ही गई

‘तुम्हें हजार बार बोलने का हक होता अगर तुम जो कुछ अभी अपने एहसान गिना रही थीं, जो त्याग और कृपा की बातें कर रही थीं, उनके बजाय वह सबने की स्थिति में होतीं ‘लडकी जिसको मैंने प्रेम किया।’ लेकिन तुम इतनी ईमानदार हो कि ऐसा झूठ नहीं बोलोगी। मरिभाना कांप रही थी जैसे बुझार बड़ा हो। ‘तुमने हमेशा मुझ से घृणा की है। इस समय भी अपने पूरे दिम से ऐसा तुमने अभी इसी समय कहा, तुम प्रसन्न हो—हाँ प्रसन्न हो—कि मैं तुम्हारी भविष्यवाणियों को सही सिद्ध कर रही हूँ, कि मैं अपने लिए बदनामी मोल ले रही हूँ, तुम्हें सिर्फ इस बात की चिन्ता और दुःख है कि यह सब बदनामी तुम्हारे इस भूमिजातीय सुसंस्कृत परिवार पर धा सकती है,

‘तुम मेरा अपमान कर रही हो’ बासेन्तिना मिखाइलोवना गुस्से से हकसाने लगी। कृपा बमर में बाहर बसो जाओ।’

लेकिन मरिभाना अपने को सयत न कर सकी।

‘तुम्हारा यह परिवार तुम कहती हो तुम्हारा सारा परिवार और धन्य जहारोवना और सभी मेरे बुद्धिया को जानते हैं। और सभी मयभीत और माराज है लेकिन क्या तुम समझती हो कि मैं तुमसे कुछ पूछूँगी या इन लोगों से पूछूँगी? क्या तुम समझती हो कि मैं उनका एक सप्ताहों की कोई भीमत समझती हूँ? क्या तुम समझती हो, तुम्हारे सहारे रहना ऐसा तुम कहती हो, मेरे लिए मयुर और सुगद रहा है? मैं हम सुखी जीवन की अपेक्षा करती हूँ या जीवन साय-दुःखें प्रच्छन्न समझती। क्या तुम नहीं देखती कि तुम्हारे परिवार वालों में और मेरे बीच क्या गहरी गार्ड है। ऐसी गार्ड जिस कोई नहीं पाट

सकता? क्या तुम-तुम तो एक ममभदार महिला हो, यह सब नहीं समझती? और अगर तुम मुझे धुणा करती हो तो क्या तुम यह नहीं समझ सकती कि मेरा तुम्हारे बारे में क्या भाव है? उनको मैं बिसाष्टता नहीं प्रदान करती, क्योंकि वह ता साफ है।

‘दूर हो जाओ मेरी भाँसों के सामने से, दूर हो जाओ!’  
 बालेन्तिना मिखाइलोवना ने दुहराया और उसने अपना सुन्दर छोटा पैर जमीन पर पटखा।

मरिघाना ने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया।

‘मैं यहाँ अपनी उपस्थिति से तुम्हें जल्दी ही मुक्ति दे दूँगी। लेकिन क्या तुम कामती हो बालेन्तिना मिखाइलोवना? ऐसा कहा जाता है कि रासिन के बजाए मैं रासिन के मुँह से भी यह, ‘दूर हो जाओ!’ काई बहुत प्रनाय वाली नहीं हो सका था और तुम तो उससे बहुत पीछे हो। और एक बात और, तुमने क्या कहा था—‘मैं बड़ी परिश्रम और मजदूरी हूँ। मुझमिया मिदूक बनना मत ही लेकिन मैं पक्का जानती हूँ कि मैं तुमसे कहीं ज्यादा परिश्रम और मजदूरी हूँ। प्रच्छा नमस्ते।’

मरिघाना तेजी से धाड़र निकल गई और बालेन्तिना मिखाइलोवना अपनी कुर्सी से उठकर पड़ी वह चीखना चाहती थी, वह चिल्लाना चाहती थी लेकिन क्या चीखे वह नहीं समझ पाई, और धीमे भी उसके आदेश पर आए नहीं।

उसे अपने हाथ के सम्मान से अपना पंगा करने से ही संतोष करना पड़ा लेकिन जिस दर से यह बना हुआ था उतन उसकी स्नायुषा पर और नी घनर जाता। यह बहुत दुखी, और अपमानित अनुभव कर रही थी। उनमें सभी जो बृद्ध मुना या उसकी सच्चाई के कारण-कारण के प्रति यह नवन थी, सानि कोर्टे उमरे बारे में तेजी से बन्धनपूर्ण आग्रह के बना मकता है। ‘क्या मैं ऐसी श्रुतिगत जीव हूँ। उसने सोचा और उमन शीघ्र में अपनी सूरत देखी, या उसके सामने

दो सिद्धकियों के बीच टंका हुआ था। सीधे में एक सुन्दर बेहरा दिखाई पड़ा, कुछ विकृत सा, सास धम्मे पड़ा हुआ, लेकिन फिर भी मोहक बेहरा, सुन्दर, म्लिग्य मखमली भाँस। 'मैं ? धुणित ?' उसने फिर सोचा 'ऐसी भाँसों के होते हुए ?'

लेकिन उसी धवसर पर उसका पति कमरे में घाया घोर उसने फिर से अपना बेहरा स्माल में छिपा लिया।

'क्या हुआ है मुम्हें ?' उसने अग्र होते हुए पूछा। 'यह क्या है वास्वा ?' (यह नाम उसी का दिया हुआ था जिस वह स्वयं भी लभी लेता, जब वे दोनों एकान्त में यात चीत करते होत और वह भी देहात में रहने के समय।)

पहिले तो उसने बात टासी, बोली कि कोई बात नहीं है, लेकिन थोड़ी देर बाद ही बड़े ही रोवील और मामिक ङंग से अपनी कुर्सी पर घूमकर और उसके कन्धों के ऊपर गले में हाथ डालकर (वह उस पर मुका लड़ा था) उसकी खुसी मास्केट में मुँह छिपाते हुए उसने उसे सब कुछ बता दिया। बिना किसी मपट भाव का गुप्त मन्तव्य के उसने मारघाना की, अगर माफ करने की नहीं, तो वम से कम कुछ हृद तक उसके पक्ष को संगत सिद्ध करने की कोशिश की, उसने सारा दोष उसकी अवानी, उसके उत्तेजनात्मक स्वभाव और उसकी धारमिक शिक्षा की कमियों को दिया उसने कुछ हृद तक, और वह भी किसी दुहरे मन्तव्य से नहीं, अपने को भी दोष दिया। भिरी बेटी होती तो उसके गाय एसा अभी न हुआ होता ! मैंने उसकी धीर ही तरा से देखमास की होती। मिप्यागिन न उसकी आता की भ्यान, सहायुभूति और कणोरता से सुना जब तक कि वासेन्तिना मिमालोवना ने अपने हाथ उसके बंध और सिर उसके सीने पर से अलग नहीं कर लिए, तब तक वह उसी तरह उग पर मुका लड़ा रहा, उसने उसे देखी कहा, उसके माथे की नूमा घोर कहा कि घर के स्वामी के नासे उसकी क्या स्थिति है और उत क्या करना चाहिए, यह सब



उसकी खूब समझ में खूब आगया है, और वहाँ से एक सहृदय किन्तु दक्षिणासी चरित्र के व्यक्ति की गौरीपूर्ण सजगता से, जिसे एक दुखदायी किन्तु अनिवाय नतम्य करने का निश्चय करना है, वह कमरे से बाहर चला गया।

भोजन के बाद लगभग घाठ बजे, मजधानाव अपने कमरे में बैठा अपने मित्र सिद्धिन्त को पत्र लिख रहा था 'प्रिय म्सादिमीर, मैं तुम्हें यह पत्र तब लिख रहा हूँ जब मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। इस मकाम से मैं बर्खास्त कर दिया गया हूँ और इसे मैं छोड़कर आ रहा हूँ। लेकिन यह कोई खास बात नहीं है। मैं यहाँ से प्रेम्सा नहीं आ रहा हूँ। वह सड़की भी जिसके घारे मे मैं तुम्हें पहिले लिख चुका हूँ, मेरे साथ आ रही है। जीवन में अपने भाव्य की समनता के कारण हम दोनों एक हो चुके हैं, अपने विचारों और कार्यों तथा अपनी भावनाओं से हम भी एक हो चुके हैं। हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं, कम के कम मैं तो यह निश्वास करता हूँ कि मैं जिस रूप में प्रेम प्रेम का अनुभव कर रहा हूँ, उससे मित्र और किसी रूप में प्रेम की उत्तेजना और वासना का अनुभव, कर सकता मेरे लिए सम्भव नहीं है। लेकिन मैं तुमसे भूँठ बोझूंगा अगर मैं यह कहूँ कि मेरे अन्दर भय की कोई छिपी हुई भावना नहीं है, और मैं दिन में एक अजीब घुटन का अनुभव नहीं कर रहा हूँ। भविष्य अंधकार मय है और हम दोनों साथ-साथ इस अंधकार में आगे बढ़ रहे हैं। मुझे तुम्हें यह समझन की जरूरत नहीं है कि हम किस मार्ग पर आ रहे हैं और हगने क्या काम करने का निश्चय किया है। अरिघाना और मैं सुख के लोबी नहीं हैं, हम जीवन का सुख प्राप्त करना नहीं चाहते, बल्कि साथ-साथ सपर्य करना चाहते हैं, जब स कंधा मिलानर, एक दूसरे का सहारा देते हुए। हमारा उद्देश्य हमारे सामने स्पष्ट है, लेकिन उद्देश्य प्राप्ति होगी बस, किस मार्ग से, हम नहीं जानते क्या हम अगर हम दर्दी और मदद नहीं, तो कम से कम काम करने की स्वतन्त्रता या

सकेगें ? मरिघाना बड़ी पामदार और ईमानदार लड़की है। अगर यही किस्मत में लिखा है कि हम मिट जायें, तो मैं उसके नाश का जिम्मेदार होने के लिए सन्ताप नहीं करूँगा क्योंकि अब उसके लिए और कोई जीवन सम्भव ही नहीं रहा है। लेकिन ब्लादिमीर, मेरा दिल भारी है। शकामों में मैं पीड़ित हो रहा हूँ निश्चय ही उसके प्रति अपनी भावना की छाया से नहीं, लेकिन मैं नहीं जनता। सैर, भय पीछे जाने का समय नहीं रहा। वहीं से हमारे लिए अपना दोस्ती का हाथ बढ़ाओ और हमारे लिए धैर्य, धारम त्याग की शक्ति और प्रेम और प्रगाढ़ प्रेम की कामना करो, और धो, हमारे लिए अनजानी क्सी जनता लेकिन हम दोनों जिसे अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करते हैं, अपने कसेबसे के खून के हर कतरे से जिसे प्रेम करते हैं, वह क्सी जनता, हमसे उदासीन न होना। हमें प्रहण करना, हमें रास्ता दिखाना, सिखाना, हम तुमसे क्या आशा करें। विदा, ब्लादिमीर विदा।

पत्र लिख चुकने के बाद नेज्मानोव गाँव को चल दिया। पहले दिन अभी सबेरा होने में देर थी, जब नेज्मानोव जंगल के बाहर सिप्यागिन के बाग के पास ही खड़ा था। उससे थोड़ा पीछे भ्रष्टी की घोट में एक छोटी सी दो घोड़ों की गाड़ी जुती लगी थी। गाड़ी के भीतर सीट के नीचे एक भूरे बाला बाला सूड़ा किमान घास के ढेर पर सोया पड़ा था। उसने अपने पिगली सगे घोवरका। स अपने सिर को ठक गया था। नेज्मानोव टकटकी बाँधे धूर-धूर पर उत्सुक दृष्टि से सड़क पर बाग के सिरे पर लगी सरपत की भाड़ियों की ओर जा रहा था। रात ही पीपी स्विचता भय भी हरसोज पर छाई हुई थी। अपनी समय से एक दूसरे को मात्र देने के लिए मन्द-मन्द टिमटिमाते छोटे-छोटे तार आकाश की घबल गहराइया में जोग हुए एक दूसरे से अधिक चमकने की होश-हाशी में लग थे। जैसे हुए बादला के गोम निचले किनाग के सहाय पूर्य की धार से पीपी चमक पैम रही थी,

तड़के की ठंडी हवा के झोंके भी धार रहे थे। एकाएक नेग्यानोव चौक पड़ा और सतर्क होगया वहीं पास में पहिले तो हल्की भरभराहट हुई और तब दरवाजे की धपधपाहट की ध्वनि हुई, और फिर एक घाल में लिपटी एक नारी मूर्ति अपने नंगे हाथ में एक पोटसी लिए सरपत की झाड़ियों की स्मर परछाइया में से सड़क की मुलायम धूल पर टढ़ किन्तु धक्क धक्क कदमों से धौंठे क बल सड़क को विरधे पार करती हुई जंगल की ओर मुड़ी। नेग्यानोव उसकी ओर दौड़ा।

‘मरिभाना ?’ वह फुसफुसाया।

हाँ, मैं ही हूँ ! ऊपर स नीचे तब लिपटे हुए घाल में से क्रोमल स्वर में उत्तर आया।

‘इधर से मेरे पीछे-पीछे आओ नेग्यानोव ने पोटसी वाले हाथ को घटपटे ढंग स पकड़ते हुए कहा।

वह कांप उठी जैसे उस कोहरे से ठंड लगी हो। वह उसे गाड़ी के पास ले गया और किसान को उठाया। किसान जल्दी स उद्यम पड़ा और कोकवान की जगह पर तुरन्त बैठ गया अपने सबादे में हाथ बढ़ाकर उसने रासों पकड़ लीं। थोड़े हिले उसने सोने से भारी पड़ी आवाज में उन्हें बढ़ावा लिया और तिकठिकाया। नेग्यानोव ने मरिभाना को रस्सी की सीट पर अपना ओकरमोट बिछा कर बैठाया। उसने उसक पैर भी एक कम्बस स ढक दिए। क्योंकि सीट के नीचे की घास सीसी हुई थी। तब स्वयं भी उसकी घगल में बैठने हुए उमने किसान से कहा तुम जानते हो वहीं से खलो। किसान ने रासों को भटकारा, थोड़े हिनहिनाए और उन्होंने फुरफुरी सी एक भटका देत हुए गाड़ी झड़ी में से सड़क पर घा अपने पुराने पहिया पर खड़खड़ाती सपा हिचकोलें गाती सड़क पर चल पड़ी। नेग्यानोव ने मरिभाना को सहारा देने के लिए उसरी कमर में हाथ टाल दिए मरिभाना ने अपनी ठंडी जगलियों से घाल को बाड़ा ऊपर हटाया और उसकी ओर थोड़ा

घूम कर मुस्कुराते हुए उसने कहा, 'कितनी ताजगी है, कितना सुहाना लगता है, भस्पोशा !

'हाँ' किसान ने उत्तर दिया, 'गहरी भोस पड़ेगी अभी !

सबमुझ ही बड़ी भोस पड़ रही थी कि गाड़ी के पहियों से टकरा कर सड़क के किनारों पर लगे सरपत की पतियों पर जमी भोस की बूँदें टपक पड़ती, और हरी घास हल्के नीले रंग की भग रही थी।

भरिमाना ठंड से फिर काँप उठी।

'कितनी ताजगी, कितना नयापन !' उसने फिर दोहराया किमोर स्वर में। 'और भाजादी भस्पोशा भाजाती !'



## सतराईस

सोलामिन का जैसे ही बताया गया कि एक श्रीमान् और श्रीमती एक छाटी सी गाड़ी में आए हैं और उसे पूछ रहे हैं, वह भाग कर कारखान के फाटक पर घामा। भ्रामन्तुओं को नमस्ते बिना किए ही, सिर्फ अपने क बार सिर झुकाते हुए उसने गाड़ीघान से माड़ी फाटक के भीतर हाँक से चलने को कहा और सीधी अपने छोटे से घर के सामने से जाकर खड़ी करवा दी। उसने मरिभाना को गाड़ी में से उतरने में मदद की। नेजधानोब उसके पीछे ही गाड़ी क बाहर दूद पडा। सोलामिन उन दोनों को एक समझे धँधरे सनरे मार्ग में से होकर और फिर संकरी धुमावदार सीढ़ियों पर से होकर, अपने मकाम की दूसरी मजिल के पीछ के हिस्से में ले गया। वहाँ उसने एक नीचा सा दरवाजा खाना और तीनों ने ही एक छोटे से किस्तू साफ-सुंदर कमर के भीतर प्रवेश किया, जिसमें दो लिङ्कियाँ थीं,

‘स्वागत है ! सोलामिन न अपनी सदैव

की अचूक मुस्झान के साथ कहा, जो आज हमेशा से अधिक घामा युक्त और दीप लग रही थी।

‘यह है तुम लागे के रहने का क्वार्टर, यह कमरा और यह देसो, एक उसके बगस में है। देखने में तो कोई सास नहीं है, पर कोई बात नहीं, काम बसेगा, इसमें भी आराम से रहा जा सकता है, और यहाँ तुम्हारी जामूसी करने वाला भी कोई नहीं होगा। खिडकी के नीचे मकान मालिक के दृष्टों में फूल बाग है, लेकिन मैं इसे ‘रसोई बाग’ यानी साग-सब्जी का बाग कहता हूँ यह यहाँ दोबास तक फैला है। बड़ा निर्जन स्थान है। खैर, बुधारा स्वागत करता है प्रिय देवी जी और तुम्हारा भी मेम्बानोब। तुम दोनों का स्वागत है।

उसने उन दोनों से हाथ मिलाए। वे स्थिर सड़े थे। उन्होंने अपने सवादे भी नहीं उठार थे, और शान्त, अथ अधिक अर्ध हृषित भावतिरेक से वे अपने सामने देख रहे थे।

‘तो अथ घोसो ? सोलोमिन ने फिर कहना शुरू किया ‘अपना सामान उठाओ ! तुम सोगों के पास क्या-क्या सामान है ?’

मरिघाना ने अपनी पोटनी दिखा दी, जिसे यह अथ भी अपने हाथ में पकड़े हुए थी।

‘मेरे पास तो अथ यही है।

और मेरा अथ और असेना अथी गाड़ी में ही है। लेकिन मैं अथी आकर साता हूँ।

‘ठहरो ठहरो सोलोमिन ने दरबाजा खोला। ‘पवेश ! सीढ़ियों के अंधेरे में उसने चिन्हाया, ‘देखो तो बाहर गाड़ी में कुछ सामान है’ उसे ऊपर से आघो।’

‘अथी साया। उन्हें पवेश की आवाज सुनाई पड़ी।

सोलोमिन मरिघाना की ओर उन्मुख हुआ, जिसने अपना हाथ उठार दिया था और अथ अपने सवादे के अटन सोल रही थी।

‘कोई दिक्कत तो नहीं आई किसी बात में ! उसने पूछा।

'विल्कूल नहीं' हमें किसी ने भी नहीं देखा। मैं मि० सिप्यागिन के लिए एक पत्र छोड़ आयी हूँ। मैं अपने साथ पहिने का कोई कपड़ा नहीं साईं आसिस्ली कैनेविष, क्योंकि आप हमें मेजने जा रहे हैं - ' (मरिभाना किसी कारण से अनठा के पास' कहकर बात पूरी करने का निश्चय नहीं कर पाई) 'और मेरे किसी काम के भी न हावे, लेकिन मेरे पास जरूरत का सामान खरीदने को पैसा है।

'वह सब बाद में करती रहना और भव, सोसोसिन ने, पबल की और इशारा करके कहा जो नेग्यानोब का सामान लेकर आ गया था और बोला 'अपने प्रमद दोस्त स तुम लोग का परिचय कराता हूँ तुम सोम उस पर पूरी तरह विश्वास कर सकते हो जैसे मुझ पर। तुमने तात्याना स समावर से लिए कह दिया है? उसने घीमे स्वर में पबेस से पूछा।

'वह अभी यहाँ हाजिर हाती है, पबेस न उत्तर दिया और कीम और सब कुछ।

तात्याना इसकी पत्नी है, सोसामिन ने बताया और वह भी इतनी विश्वसनीय है, जितना यह। जब तक तुम सरा इस सबकी धादी नहीं हो आती देबीजी, तब तक वह तुम्हारा काम कर देगी।

मरिभाना अपना लवादा काने में रखे घमड़ क सोफे पर फेंकती हुई बोली 'मुझे मरिभाना पुकारा, आसिस्ली कैनेविष—मैं देबीजी नहीं होना चाहती। और मैं यह भी नहीं चाहती कि कोई मेरी सेवा करे। मैं यहाँ मौकर रखन क लिए नहीं आई हूँ। मेरे वस्त्रों की और मत देखिए मेरे पास—वहाँ—इनके अतिरिक्त और कुछ या ही नहीं। यह सब बदल देना होगा।

दालजीनी के पैर के रंग के वस्त्र की वह पात्रारु बड़ी सादी थी लेकिन पीटर्सबर्ग के दर्जी की सिस्ली थी कमर और कंधों पर जो थुपटें बड़ी सुन्दर लगती थीं और पूरे तरह स कैनेविष लगती थीं।

‘खैर नौकर नहीं, लेकिन सिर्फ मदद के लिए ही सही, अमरीकन बंग से। खैर तुम भाय तो पोभो। अभी सवेरा है और तुम दोनों थक गए होंगे। मैं तो अब कारखाने में काम-पाम देखने जा रहा हूँ, बाद में हम फिर मिलेंगे। जा तुम्हें चाहिए, पबेल या तात्याना से बोल देना।’

मरिघाना ने अपने पाना हाथ धीघ्रता से उसकी ओर बढ़ा दिए।

‘हम कैसे आपको धन्यवाद दें, बासिली फ़ैदोतिष?’ उसने उसकी ओर भावावेश से गदगद होते हुए देखा।

सोलोमिन ने स्नेह से उसका एक हाथ पपपपाया। नहीं, नहीं इसमें धन्यवाद की तो कोई बात नहीं लेकिन नहीं यह सय नहीं है। मैं कहता हूँ कि तुम्हारे धन्यवाद से मुझे अपार आनन्द हो रहा है। तो तुम अब भागाव हो। नमस्ते, फ़िनहाम के लिए। पबेल वसा मेरे साथ भाओ।’

मरिघाना और नेज्बानोव अकेले रह गए।

बहु अचकित उसके निकट बढ़ आई। और उसकी धार जिस भाव से उसने सोलोमिन को देखा था उसी भाव से उसे देखती हुई, सिर्फ उसमें पाया अधिक हर्ष और प्रसन्नता का और अधिक सुख का भाव था, बोली ‘औ मेरे प्राण! हम अपना नया जीवन आरम्भ कर रहे हैं आसिरकार। तुम विश्वास नहीं करोगे, उस दिनोने महसूस के मुकाबिले कितना प्यारा है यह छोटा-सा मकान, जहाँ हमें कुछ दिन बिताने हैं। बोना मेरे प्रियतम तुम सुज हो न?’

नेज्बानोव ने उसके हाथ लेकर अपने सीने पर दबाए।

‘मैं खुश हूँ, मरिघाना, कि मैं यह नया जीवन शुरू कर रहा हूँ, तुम्हारे साथ! तुम मेरा मार्गदर्शक धारा होगी मेरा प्राण, मेरा सहाय, मेरी शक्ति’

मेरे प्यारे प्रत्योशा। लेकिन यको। जरा मैं नहा धाकर अपन



को लाया कर सूँ। मैं अपने कमरे में जाऊँगी और तुम तब तक यहीं ठहरो। वस एक मिनट

मरिघाना दूसरे कमरे में चली गई, और दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया, पर एक मिनट याद आधा दरवाजा खोलकर, उसकी संभ में से सिग बाहर निकाल कर बोली 'और माह! सोमोमिन भी कितना भसा है!' और फिर दरवाजा बन्द कर लिया और अन्दर से अटखनी सगाने की आवाज आई।

नेग्यानाब खिड़की के पास चला गया और बाहर वाता में देखने लगा एक पुराने अरपन्थ पुराने सेव के पेड़ म न जाने क्या उसका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया, उसने अपने को झरझोरा, घंगड़ाई सी और अपना बरुत सोलने लगा निकासी कुछ भी नहीं, वस किसी ध्यान में खोमया

घाड़ी देर बाद मरिघाना आए अंदर की आबनी और धरीर में स्फूर्ति सिण हुए कमरे में आ गई और घाड़ी देर बाद पक्क की बीबी आर्याना समोवर पार श्रीम तथा श्रीमरोस सेनर कमरे म आ गई।

जिप्सी जैसे अपने पति की तुलना में वह एक बिचिष्ट स्त्री स्त्री थी, भाव बहन, भूने वास जिनको सस्ती से उमेठ कर जुड़ा बांधा गया था, जो एन सींग जैसा लग रहा था, और मिर पर कोई टोपी नहीं थी, मानी नेरिन सुन्दर मुद्राकृति, और अरपन्थ भली सूरी आँसों। उसने साफ हल्की छींट की पाधार पहन रखी थी। उसके हाथ यद्यपि बड़े थे, पर साफ, सुन्दर और सुडान थे। उसने दान्तिपूर्वक अभिवादन किया, और एक सशित सम्बोधन के बाद, बिना किसी प्रदर्शन के उसने कहा, 'आप लोग स्वस्थ हैं', फर्से-फुसे, और धाम बनान में लग गई।

मरिघाना उसके पास गई।

'सामो मैं भी तुम्हारा हाथ बटाऊँ आर्याना, मुझे सिर्फ एक लीखिया दे दो।'

'कोई जरूरत, नहीं है मेमसाहब, हमारा तो यह काम ही है। वासिनी फैब्रोविच ने मुझसे सब कह दिया है। अगर किसी चीज की जरूरत हो, तो कृपया मुझ से कह दीजिएगा, आपकी सेवा करके हम सब को बड़ा भ्रामन्व होगा।'

'वात्याना, कृपया मुझे मेमसाहब मत बहो' यद्यपि मैंने एक अमीर महिला की सी पोशाक पहन रखी है, लेकिन फिर भी मैं बिल्कुल बिल्कुल मैं

वात्याना की पैनी सतर्क मजर ने मरिघाना को चुप कर दिया।

'घोर नहीं तो मला क्या होंगी आप!' वात्याना ने दृढ़ भावना में पूछा।

इसमें झूठ नहीं कि मे जन्म से तो अमध्य पनी धराने की महिला है लेकिन मैं अब उस सबसे अपने को मुक्त करना चाहती हूँ और सब जैसी बन जाना चाहती हूँ 'साधारण - आम स्त्रियों जैसी।

'ओह, तो यह बात है। अब समझी मैं। तूम भी उन्ही में से हो जो अपना समानीकरण करना चाहते हैं। सबके समान बनना चाहते हैं।' आज फस उसकी संख्या काफी है।

क्या कहा तुमने वात्याना? समानीकरण करना चाहते हैं?

हाँ वही एम्प आज फस हम लोगों के बीच बामू है। आम लोगों के समान होना इसके मानी है, समानीकरण। निश्चय ही यह, यह अच्छा काम है—किसाना को अच्छी बातों की शिक्षा देना। लेकिन बरा मुश्किल काम है। मुश्किल। ईस्वर तुम्हें सफल करे।'

'समानीकरण!' मरिघाना ने दुहराया। सुनते हा अत्योक्षा? हम और तुम अब समानीकृत जीव हैं। सबके समान हो गए हैं।

नेग्मानोव हँसा और उसने दुहराया भी।

समानीकृत जीव।

घौर यह तुम्हारे क्या लगते हैं—तुम्हारे पति या माई ? तात्याना ने अपने बसुर हाथों से साबधानी से प्यालों को धोते हुए, अपनत्वपूर्ण मुस्कान के साथ पूछा ।  
 'नहीं मरिघाना ने उत्तर दिया 'यह न तो मेरे पति हैं और न माई ।

तात्याना ने ऊपर देखा ।

सब सगता है आप लोग स्वच्छन्द जीवन व्यतीत कर रहे हैं । आज कम यह भी खूब चल रहा है । पहिले यह नास्तियों में खूब चलता था, लेकिन लेकिन मानकल यह घौरा म नी चलन सगा ह । जहाँ भी इस्वर की कृपा है, घालि घौर सुख स रहा जा सकता है । घौर उसके लिए पारो की नी जरूरत नहीं है । यहाँ हमार यहाँ कारखाने में ऐसे बहुत से हैं । घौर वह लोग बुर नहीं हैं ।

तुम बैसी अच्छी जाने करती हो तात्याना । स्वच्छन्द जीवन । मैं उस बहुत पसन्द करती हूँ । अच्छा भव मेरा एक काम कर दो मेरे लिए अपने जैसे कुछ पपड़े खरीदो या इससे भी साधारण । घौर जून मोझे घौर रुमाल भी । हर चीज वैसी ही वैसी तुम्हारे पास है । मेरे पास उनके खरीदने का काफी पैसा है ।

'जरूर मेम साह्य हम सब प्रबन्ध कर देंगे जो गलती हुई माफ कीजिएगा । भय मेग साह्य नहीं करूँगी पर यह तो बताइए फिर करूँगी क्या ?

'मरिघाना !

'घौर पिताजी का क्या नाम है ?

सैनिक तुम मेरे पिता का नाम क्या पूछ रही है ? सिफ मरिघाना पुकारो, बेश ही उस में तुम्हें तात्याना पुकारता है ।

'बात एक ही है और नहीं भी है, फिर भी बता दीजिए ।  
 अच्छी बात है, मर पिता का नाम विक्कन्ड था और तुम्हारे पिता का नाम ?

‘मेरे पिता का नाम भोसिप था ।

‘तो फिर मैं तुम्हें तात्याना भोसिपोवना कहा करूँगी ।’

‘और मैं तुम्हें मरिघाना बिकेन्त्येवना । यह ठीक रहेगा ।’

‘हमारे साथ एक प्याना था नहीं पीयोगी तात्याना भोसिपोवना ?’

‘इस पहिली सुलाकाठ के समय वो तो सकती है, मरिघाना बिकेन्त्येवना, पर मैं छोटा प्यासा ही खूँसी, यद्यपि यगोरिच नाराज होंगे ।’

‘यह यगोरिच कौन है ?’

‘पबेल मर पति ।’

‘बैठ जाओ तात्याना भोसिपोवना ।

‘बकर, बकर मरिघाना बिकेन्त्येवना ।

तात्याना कुर्ची पर बैठ गई और चीनी की बेसी के साथ चाय पीने लगी । यह चीनी की बेसी को लगातार अपनी उँगलियों के बीच उमटती-मुलटती जा रही थी और बिस तरफ से बेसी को कुतरती उधर अपनी छाँसे धुमाँसी जाती थी । दोनों में बातें होने लगीं । तात्याना बिना किसी संकोच के उत्तर देने लगी और प्रश्न पूछने लगी । उसने अपनी घोर से बनेका घाँसे बटाई सक्रिम उसने अपने पति को वासिली फेदोविच से दूसरा स्थान दिया । यद्यपि वह कारखाने के जीवन से ऊँच उठी थी ।

‘यहाँ न तो शहर ही है और न ठेठ गाँव ही’ ‘अगर वासिली फेदोविच न होते, तो मैं यहाँ एक मिनट भी न उठरती ।

मरिघाना ध्यान से उसकी बातें सुनती रही । मग्धानोव बोड़ा एक घोर हट कर बैठा, अपनी सँगिनी की घोर देख रहा था और उसकी दिलबस्त्रिया पर उसे बरा भी आश्चर्य नहीं हुआ रहा था मरिघाना के लिए यह सब नयी बात थी, लेकिन उस ऐसा सम रहा था जैसे उसने

साथाना जैसी सैफ़ा स्त्रियाँ देखी हैं और उनमें सैफ़ा धार धारों की हैं।

‘क्या तुम जानती हो, साथाना घोसीपावना’ मरिघाना ने कहा, तुम समझती हो हम जानता को मिला देना चाहते हैं, नहीं, हम उसकी सेवा करना चाहते हैं।

‘कैसी सेवा? उन्हें मिलित करो, यही उनकी सबसे बड़ी सेवा होगी। मिसाल के लिए मुझे ही म लो। जब एंगोरिच से मेरी शादी हुई थी तब मेरे लिए पद्माना-सिखना कासा प्रकर भेस बराबर था, लेकिन अब मैं पढ़ सिल गई हूँ। ईस्वर मसा करे बासिमी फेदोविच का। उन्होंने स्वयं मुझे नहीं पढ़ाया, बल्कि एक बड़े मास्टर को मुझे पढ़ाने के लिए रस दिया था, और उसने मुझे पढ़ाया तुम दम रखी हो, मेरी उमर अभी कम है, पर औरों के लिए मैं प्रीढ़ भीरत हूँ।’

मरिघाना थोड़ी देर चान्त रखी।

‘मैं कोई काम करना सीखना चाहती हूँ साथाना घोसीपावना’, उसने फिर कहना शुरू किया, ‘मैं सीना प्रकृत नहीं जानती, हाँ, अगर खाना पकाना सीखू तो मैं रसोइयन प्रकृष्टी बन सकती हूँ।

साथाना सोच में पड़ गई।

‘रसोइयन क्यों? रसोइयन या प्रमीर घर में होता है या फिर व्यापारियों के यहाँ होते हैं, गरीब प्राम्दमी ता अपना खाना अपने आप बनाता है। और किसी संस्था के लिए खाना पकाना मजदूरा के लिए—तो, वह सबसे प्रमिष्ठम बात है।’

‘लेकिन यह भी ता हा सफ़ा है कि मैं काम करने घनी घर में प्रीर दोस्ती करने गरीबा स। करना मैं उन्हें जानूँगी कैसे? हमारा तुम जैसे ही लोग मिलत रहें त्मा नाग्य नहीं हाया।

साथाना ने अपना व्यास्ता दरदरी में टपट दिया।

‘यह ठेकी नीर है’ नीरध निम्बाम घोशन हुए उसने कहा, ‘बह

उतना आसान नहीं है, मैं, जितना जानती हूँ, सब बता दूँगी, लेकिन मैं कोई ज्यादा समझदार नहीं हूँ। हमें इस सब के बारे में यगोरिच से बातें करनी होंगी वह ऐसा आदमी है। वह हर तरह की कितारें पढ़ता है और वह पलक मारते ही सब कुछ देख-समझ सकता है। उसने मरिघाना को धीरे देखा, जो एक सिगरेट बना रही थी

धीरे' एक धीरे भी बात है, जो मैं कहना चाहूँगी, मरिघाना बिकेन्त्येवना, अगर तुम मुझे जमा करो अगर तुम सबकुछ ही सबकुछ समान होना चाहती हो, तो तुम्हें यह सब छोड़ना होगा। उसने सिगरेट की धीरे संकेत किया। 'क्याकि रसोइयन क काम में यह सब नहीं जसेगा, हर एक ताड़ आयगा कि तुम एक पक्षी किसी जवान माहला हो। हूँ।

मरिघाना ने सिगरेट सिड़की के बाहर फेंक दी।

म अब नहीं पाऊँगी 'इस छोड़ना कोई मुश्किल नहीं है। जनता की स्त्रिया सिगरेट नहीं पीती, इसलिए म भी नहीं पीऊँगी।

यह तुमन ठीक वहा, मरिघाना बिकेन्त्येवना। आदमी तो हमारे पास में पीते हैं, पर स्त्रियाँ—नहीं भोह, वासिस्ती फेदोविच आ रहे हैं। यह उन्हीं क पेरों की भावाज है। तुम उनसे कहना, वह सब कुछ तुम्हारे लिए, बड़ी अच्छी तरह प्रबन्ध कर रगे।

उसने ठीक कहा था, दरवाजे पर सोलोमिन की भावाज सुनाई पड़ी।

क्या मैं भीतर आ सकता हूँ ?

आइए, आइए' मरिघाना ने कहा।

'यह मरी ब्रियेडी आदत है सात्सामिन ने भीतर आते हुए कहा। खैर, कैसा लग रहा है? अब तो नहीं रहे हो? मैं देखता हूँ, तात्याना के साथ तुम लोग की साथ साथ रही है। तुमने हमकी बातें सुनी यह बड़ी समझदार धीरेत है। मेरा मामिल आज मुझ से मिलना'

घागया है' जब कि आज उसकी विल्कुल भी जरूरत नहीं थी। और वह भोजन के समय तक ठहरेगा। कोई धारा नहीं है। वह नास्तिक जो है।

'कैसा धार्मिक है वह?' कोने में से उठते हुए नेग्यानोव ने पूछा।

'बोह, ठीक ही है उसकी नजर बड़ी पैनी है। घागली पीढ़ी का व्यक्ति है। भरमस्त मिलनसार और बर्फ पहनता है, लेकिन हर एक चीज का सूक्ष्म आंकने में पुराने लोग से जरा भी कम नहीं। वह अपने हाथों से सारी धमकी उधेड़ सेगा और कहेगा, "घाड़ा घसी इधर और पसंदो यहाँ इधर सभी घोड़ा सजीव भाग बाकी बना है इसको भी मैं प्राप्त करूँगा। और मेरे साथ तो वह रेखम की तरह भुसायम है, मैं उसके लिए जरूरी जो हूँ। मैं सिर्फ तुमसे यह कहने आया था कि आज शायद मैं तुम लोगों से न मिल पाऊँगा। तुम्हारा भोजन तुम्हारे पास यहीं आ जायगा और बाहर बाँक में मत निकलना। क्या सोचती हो तुम मरिघाना — क्या सिप्यामिन तुम्हारी उलाश करेंगे?"

'मेरा क्या मतलब है, कि नहीं परेंगे मरिघाना ने उधर दिया।

लेकिन मेरा बिश्वास है कि वे जरूर करेंगे, नेग्यानोव ने कहा।

'और कोई बात नहीं, सोसोमिन ने कहा, 'तुम्हें अभी जरा होशियार रहना चाहिए फिर जो चाहे सा करना।

'हाँ, सिर्फ एक बात है, नेग्यानोव ने कहा, 'भाकेंसोव का मेरा पता मासूम हो जाना चाहिए, उसे बता देना जरूरी है।

'क्या ?

'उम मासूम होना ही चाहिए कि मैं कहाँ हूँ। उद्देश्य की मीय है। न जाने क्या क्या जरूरत है। मैंने पावदा किया है। पर वह किसी से बहेगा या नहीं !'

'अच्छी बात है। पवस की मेज देंगे।

‘घीर क्या मेरे पहनने के लिए कोई कपड़ा तैयार होगा?’ नेम्भानोव ने पूछा।

‘अपने रूप परिवर्तन के लिए, तुम्हारा मतलब है? जरूर। यह पूरा स्वांग है। पर कोई बुरा नहीं है, भाव्य से। नमस्ते, तुम लोग घराम करो अब। तात्याना आओ।

सरिआना घीर नेम्भानोव फिर अकेले रह गए।





## घटठाईस

पहिले तो दोनों ने फिर एक दूसरे के हाथ धाम लिए, और सब मरिघाना ने कहा, 'साप्रो मैं तुम्हारा बमगा ठीक कर दूँ', और उसने उसका बकस और जैसे में से सामान निकासना शुरू कर दिया। मेग्मानोव ने हाथ बटाना चाहा, लेकिन उसने कहा कि वह सब झकली ही करेगी।

'क्योंकि मुझे अपने को उपयोगी बनाने की आवश्यकता है।' और सचमुच उसने, वे खूंटियाँ गाड़ीं, जो उसे मेज की दरज में मिल गई थीं उन पर कोट टाँगा, बिड़कियों के बीच में रखे एक पुराने बकस में कपड़े रखे।

'यह क्या है? उसने एकाएक पूछा, पिस्तौल? क्या भरी हुई है? यह तुमने काहे को रख छोड़ी है?

'भरी नहीं है लेकिन इसे मुझे दो। तुम पूछ रही हो, यह मैंने क्यों रख छोड़ी है? शान्ति के प्रवसर पर पिना पिस्तौल के कैस काम चलेगा?' वह हँस पड़ी और अपने काम में जुटी रही। उसने हर चीज निकास कर

साफ की धौर करीने से रस्ती। दा ओड़ी जूते भी निकाल कर सोफे के नीचे रख दिए। कुछ किटाबें, कागजों का एक बंडस धौर कविताओं की एक छोटी सी कापी बडे डंग से, कोने म रस्ती तीन पायां वाली मेज पर सजा दी धौर कहा कि यह तुम्हारे पढ़ने लिखने की मेज है धौर दूसरी गोल मेज को उसने खाने की धौर चाय पीने की मेज बनाया। यह सब कर चुकने के बाद उसने कविताओं की कापी को अपने मुँह तक दोनों हाथा से ऊपर उठा लिया धौर उसके सिरों पर से होकर नेज्धानोव की धोर बेसबर मुस्कुराती हुई धोली 'हम साथ-साथ कभी इसे पूरा पढ़ेंगे फुर्सत से, क्यों ठीक है न ?

'यह कापी मुझे दो। मैं इसे बसा दूँगा। नेज्धानोव ने स्वर में बल देते हुए कहा। 'यह सब किसी काम की नहीं है।'

'अगर ऐसा है, तो फिर इसे अपने साथ क्यों लाए थे ? नहीं, नहीं मैं तुम्हें इसे जमाने नहीं दूँगी। हालाँकि कहा मही जाता है कि लेखक हमेशा यही धमकी देते हैं लेकिन अपनी कृतियों को जमाते कभी नहीं। और जो नी हो मैं इसे अपने पास रखूँगी।

नेज्धानोव ने विरोध करना चाहा लेकिन मरिघाना कापी लेकर दूसरे कमरे में भाग गई धौर उसे छिपाकर खाली हाथ वापस लौट आई।

वह नेज्धानोव के पास बैठ गई, धौर फिर एकाएक सुरन्त उठ बैठी। तुम मेरे कमरे में नहीं गए धमी तक। क्या तुम उसे देखना नहीं चाहोगे ? वह भी तेना ही अज्बा है। घाघो मैं तुम्हें लिखाऊँ।

नेज्धानोव उठकर छाड़ा हा गया धौर मरिघाना के साथ उसके कमरे में गया। उसका कमरा जैसा उसने बताया था उसके कमरे स थोड़ा छोटा था लेकिन उसमें का फर्नीचर नया धौर साफ सगता था लिखकी में फूला का गुप्तदस्ता रखा था धौर काने में सोहे का एक परसंग।



नज्जानाव समा गया और भाड़ा एक तरफ घूम गया ।

‘जब मैं तुम्हें वैसा बताऊँगा ’

‘हाँ, तब । लेकिन तुम खुद ही देख रहे हो कि तुम वैसा प्रेम मुझ से प्रती नहीं करते मोहूँ ही प्रत्योद्या तुम सचमुच ही एक सच्चे भावमी हो । खैर, भावो भव हम दूसरे महत्वपूर्ण विषया पर बात चोत करें ।’

‘लेकिन तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ मरिघाना !’

‘मैं उस पर सन्देह नहीं करती — और मैं प्रतीक्षा करूँगी । मोहूँ, मैंने प्रती तुम्हारी भज पूरी तरह से ठीक नहीं की, और यह प्रती कुछ बंधा रखा है कुछ कड़ा-कड़ा ।’

नेज्जानोव अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा ।

‘उसे रहने दो, मरिघाना कृपया उस मत छुमा ।’

मरिघाना ने घूम कर उसकी ओर देखा और आश्चर्य से उसकी मोहूँ टन गई ।

‘क्या यह कोई रहस्य है ? कोई भेद ? तुम्हारा भी कोई भेद है ?’

‘हाँ ही’, नेज्जानाव ने कहा, और मनमने स्वर में, स्पष्टीकरण के लिए कहा, यह एक चित्र है ।’

मनपाहे रूप से यह पाठ उसकी मुँह से निकल गया । मरिघाना जो फागज लिए खड़ी थी, सचमुच उसमें उसका वही चित्र था जो मार्कोलाव ने नेज्जानोव को दिया था ।

‘एक चित्र ? उसने हर अक्षर पर जोर देते हुए पूछा । ‘स्त्री का ? उसने वह बंधन उसे दे दिया, लेकिन नेज्जानोव ने सरपकाते हुए उस लिया । वह उससे हाथ से सिचक ही पड़ा और नीचे गिरकर पुन गया ।’

इ यह तो मरा चित्र है ! मरिघाना ने सीधता से चीखते हुए

रहा था कि हमें ऐसा व्यवहार करना चाहिए, जिससे किसी को सन्देह न हो—'

एकाएक मरिघाना हँस पड़ी।

'मुझे याद आया, भस्पोशा, जैसे मैंने हम दोनों को "समानीकृत जीव" कहा था।'

नेज्जानोव ने भी मुस्कुरा दिया, और उसने भी बुझाया 'समानीकृत' और फिर विचारों में डूब गया।

मरिघाना भी ध्यानमग्न थी।

'भस्पोशा !' उसने कहा।

'क्या ?'

'मैं समझती हूँ कि हम दोनों ही कुछ मिश्रक का अनुभव कर रहे हैं। नौबतान लोग, नवयिवाहित', उसने स्पष्ट किया, 'अपनी सुहागरात ७ दिन उन्हें कुछ ऐसा ही अनुभव होता होगा—धानन्द, सस्वीय और सुख-सुख मिश्रक।'

नेज्जानोव मुस्कुराया—अर्द्धस्ती की मुस्कान।

'तुम अच्छी तरह जानती हो मरिघाना, कि हम उन प्रयोगों में सम्मिलित नहीं हैं।

मरिघाना उठकर नेज्जानोव के ठीक सामने खड़ी हो गई।

'यह तुम पर निर्भर करता है।

'सो कैसे ?'

'भस्पोशा, तुम जानत हो कि जब तुम ईमानदारी से मुझ से कहोगे—और मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगी, क्योंकि तुम सचमुच एक ईमानदार भावमी हो—जब तुम मुझे बताओगे कि तुम मुझे वैसा प्रेम करते हो—वैसा प्रेम जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के जीवन पर अधिकार देता है—जब तुम मुझे यह बताओगे, मैं तुम्हारी हो जाऊँगी।'

नेग्मानाब दमा गया और बाड़ा एक तरफ घूम गया ।

‘जब मैं तुम्हें वैसा बताऊँगा ...’

‘हाँ, सब ! लेकिन तुम खुद ही देख रहे हो कि तुम वैसा प्रेम मुझ  
से अपनी नहीं करते घोड़, हाँ, प्रत्योक्षा तुम सचमुच ही एक सम्भे  
पादमी हो । खैर, आगे अब हम दूसरे महत्वपूर्ण विषय पर बात  
चीत कर ।

‘लेकिन तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ मरिघाना !’

‘मैं उस पर सन्देह नहीं करता ... और मैं प्रतीक्षा करूँगी ।  
घोड़ मैंने अपनी तुम्हारी मजबूत पूरा तरह से ठीक नहीं की और यह अपनी  
कुछ बर्बाद रखा है, कुछ कड़ा-कड़ा ।

नेग्मानोब अपनी कुर्सी पर से उछल पड़ा ।

‘उस रहने दो मरिघाना कृपया उस मत छूपा !’

मरिघाना न घूम कर उसकी ओर देखा और आश्चर्य से उसकी  
नीचे उन मद ।

‘क्या यह कोई रहस्य है ? कोई मेद ? तुम्हारा भी कोई मेद है ?’

‘हाँ हाँ’, नेग्मानाब ने कहा, और धनमन स्वर में, स्पष्टीकरण  
के लिए कहा ‘यह एक चित्र है ।

धनयाह रूप से यह शब्द उसका मुँह से निकल गया । मरिघाना  
जो कागज लिए खड़ी थी, सचमुच उसमें उसका वही चित्र था जो  
मार्केलाब ने नेग्मानोब को दिया था ।

‘एक चित्र ! उसने हर अवसर पर जोर देते हुए पूछा । ‘स्वो  
का । उसने वह बर्बर उसे दे दिया लेकिन नेग्मानोब ने सफ़फ़ाते  
हुए उस लिया । वह उसका हान से तिसक ही पड़ा और नीचे गिरकर  
गुल गया ।

हैं ‘यह ठीक मरा चित्र है ! मरिघाना ने शीघ्रता से चीखत हुए

कहा। 'ता मुझे अपना चित्र बने का तो अधिकार है।' उसने उस नेज्मानोव से ले लिया।

'यह तुमने बनाया है ?'

नहीं मैंने नहीं ?'

'तब किसने ? मार्कोलोव ने ?'

'तुमने सही अनुमान लगा लिया' उसी ने !

'यह तुम्हें कैसे मिला ?'

'उसने ही मुझे दिया।'

'कब ?'

नेज्मानोव ने मरिघाना का बताया कि कब और कैसे मार्कोलोव ने उसे यह चित्र दिया था। जब वह बोल रहा था ता मरिघाना ने पहिल तो उसकी आर देखा, फिर चित्र की ओर और दोनों के मन में एक ही विचार उत्पन्न हुआ 'अगर वह कहीं इस कमरे में होता तो उसे कहने का अधिकार हाता।' "लेकिन न मरिघाना ही और न नेज्मानोव ने ही यह विचार जोर से प्रगट किया सम्भवत इसलिये कि दोनों ही एक दूसरे के विचारा को जानते थे।

मरिघाना न चित्र को बड़ी सावधानी से फिर कागज में लपेट कर मज पर रख दिया।

'बहु अच्छा भावमी है ! उसमें बुद्धिवाया भव वह कहाँ है ?'

कहाँ ? अपना घर। मुझे कत या परसा, उससे मिलने और उससे किताबें और पत्र सने जाना है। वह उन्हें मुझे स्वयं ही देना चाहता था लेकिन जब मैं वहाँ से चलने लगा तो शायद वह उन्हें देना भूल गया।

'और क्या तुम समझते हो अस्थोशा कि यह चित्र देकर उसने सब कुछ त्याग दिया ?' पित्तुल्ल सब कुछ ?'

‘मैं तो ऐसा ही समझ ।’

‘और तुम्हें उम्मीद है कि वह तुम्हें घर मिल जायगा ?’

‘हां ।’

मोह ! — मरिघाना ने प्रीति मुका ना और हाथ नीच कर लिए ।  
प्रीति तात्याना हमारे लिए भाजन ना रही है’ उसने एकाएक कहा ।  
‘कैसी भली औरत है यह ?’

तात्याना कांटा-धुरी, मेज के ऊपर और प्लेट तथा वस्त्रियाँ  
लकर आई ! वह मेज पर धीव लगाते समय बताती जा रही थी कि इस  
समय फैक्टरी में क्या हा रहा है ।

मालिक मास्का से रेल द्वारा भ्रामा और सारा फैक्टरी में भूमता  
रहा, लेकिन जानता प्रानता कुछ भी नहीं है, वह सिर्फ राव गाठने के  
लिए ऐसा करता है, सिर्फ दिवान के लिए । लेकिन वासिनी फरासिच  
उससे गार के बन्ध की तरह व्यवहार करता है । मालिक ने साचा था  
कि यह उस थोडा डोट पिलाएगा, लेकिन वासिनी फरासिच ने पहिल  
से हा उस कस दिया ‘मैं यह सब अभी छाड दूंगा । उसने कहा सो  
सुरन्त ही महाशय ने प्रपना स्वर बदल दिया । भव वे दोना भोजन कर  
रहे हैं, साय-साय मालिक के साय उसका कोई साचो भी प्राया है  
उसने सार काम को बडा पसन्द किया है । वह जैसे घान्त रहता है और  
प्रपना सिर हिलाता है, उससे लगता है कि वह नी कोई रहस्य प्रायमी  
है । और वह मोटा भी है, बहुत माटा ! मास्का का एक विचिष्ट ‘धून  
धूसा !’ प्राह, यह सही कहावत विल्सुत सही है ‘रुच के हर हिस्त  
से बाल मास्का की प्रार है, हर चीज बुलक कर यही जाता है ।’

‘यह सय तुम जैसे देव-समझ ली हा ! मरिघाना ने पूछा ।

‘ज्या मरी प्रागे सज है, तात्याना ने कहा । भ्रामा तुम्हारा  
भाजन तैयार है । तुमया इससे हित हागा । मैं यहाँ पोड़ी दर बेठू गी,  
और तुम्हें देखू गी ।



मरिघाना और नेञ्घानाब खाना-खाने बैठे तास्याना खिड़की की चौकट का सहारा लेकर खड़ी रही और अपना हास अपने हाथ पर टिका लिया।

‘मैं तुम्हें देख रही हूँ’ उसने फिर कहा ‘और कैसे मासूम हो तुम वार्ता। तुम्हें देखना इसना भानन्ददायक है कि मेरा दिल धड़कने लगता है। और मेर प्यारो। तुम लोग अपनी शक्ति से अधिक बड़ा भार अपने ऊपर ले रहे हो। तुम्हीं जैसे लोगों को ही चंगुल में फँसाने के लिए, जार के दरोगा हरबम उत्सुक रहते हैं।’

‘हमारी भसी तास्याना, हमें खामखा बराभा मत’, नेञ्घानोब ने कहा। ‘तुम यह कहावत जानती हो अगर तुम कुकुरमुत्ता होना चाहते हो तो तुम्हें सबके साथ बोलची में जाना ही पड़ेगा।’

‘जानती हूँ खानतो हूँ, लेकिन भाजकल बोलचिया इतनी गहरी हैं कि उनमें से बाहर सरक घाना कठिन है।’

‘तुम्हारे कोई बच्चा है? मरिघाना ने बात बदलने के लिए पूछा।

‘हाँ एक लड़का। वह खूबन जाता है। एक छोटी सी लड़की भी थी, लेकिन वह भव नहीं रही। उसके साथ एक बुधटना होगई, वह पहिए के नीचे भागई। और अगर वह तुरन्त मर जाती तो भी अच्छा होता, लेकिन नहीं, वह बहुत दिना तक जीती रही तकचीफ सहती रही, सभी से मेरा दिल बड़ा कमजोर होगया है। इससे पहिले में बैठी ही कठोर थी जैसे पेड़।’

‘क्या क्या तुम अपने पति पबेल यगोरिच का प्रेम नहीं करती?’

‘ओह! यह तो बात ही और है एक लड़की को भावना। तुम अपनी कहाँ, क्या तुम अपने भादमी का प्रेम करती हो?’

‘हाँ।’

‘बहुत!’

‘हाँ।’

'हौं ? ' ठाल्याना ने नग्घानाव की धार दत्ता धौर तव मरिघाना की धौर, पर कहा कुछ भी नह्राँ ।  
 मरिघाना ने फिर वात बदसी । उसन ठाल्याना को बवापा कि उसने सिगरेट पीना बन्द कर दिया है । ठाल्याना ने उस पर प्रसन्नता प्रगट की । तव मरिघाना ने उसस फिर रुपड़ा क वारे में पूछा धौर उसे पाद दिनाइ कि उसने नोजन बनाना सिखान का वायदा किया ।

'मोह, धौर एक वात धौर क्या तुम मेर लिए कुछ मोटा मामूली रा सा सकती हो ? मैं धपने लिए कुछ माजे धपन धाप बनाना हवीं हूँ ' त्रिक्कुल सादे ।

ठाल्याना न जवाब दिया कि सब कुछ धौर-धीरे हा जायगा धौर साफ करत बननों का बटोर कर वह शान्त त्विर मुद्रा में कमरे स गई ।

'धव बानो क्या किया जाय / नग्घानाव की धार उन्मुख हाकर मरिघाना ने पूछा धौर उस उधर का धवसर न देकर बोली, 'क्या चाहते हा ? जब हमारा वास्तविक काम कस स ही गुरू हागा तो हम यह धाम साहित्य सर्वा में क्या न लाएँ ? धाधा तुम्हारी कविताएँ पढ़ें ! मैं बड़ी सस्त धातोबिका सिद्ध हूंगी ।

काधर देर तक तो नेग्घानाव राजी न हुपा धौर बाद को यह मान गया धौर धपनी कविताएँ सुनान सागा । मरिघाना उसक पास बैठी रही धौर पढ़ते समय उसका बेहस देखती रही । उसने ठीक ही कहा यह सचबुध ही बड़ी सस्त धालाषिका सिद्ध हुई । कुछ कविताएँ उस प्रकृत्ये लगीं उसन छाटे गीत पसन्द किए, त्रिनमें जैसा कि उसने कहा उपदेशात्मकता नह्राँ थी । नग्घानाव न पढ़ा नी धच्छी तरह नह्रीं पा । गा कर, जागध पढ़ने का उसमें उत्साह ही नह्रीं बा । पर वह एव नी नह्रीं पढ़ना चाहता था कि पढ़न से नाय हा न प्रगट हा धवत हुपा

वह बाहर चली गई लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसने दरवाजा थोड़ा सा खोला और झुक कर बोली 'नमस्ते !' और फिर और कोमल स्वर में, 'नमस्ते !' और फिर अटसनी बन्द करनी ।

नज्जानोव सोफे पर पड़ गया और उसने अपने हाथों से धीरे-धीरे बकली " थोड़ी देर बाद ही वह तेजी से उठा, उसके दरवाजे तक गया, और खटखटाया ।

'क्या है । भीतर से आवाज आई ।

'कल तक नहीं, मरिमाना "बल्कि कल !'

'कल,' कोमल मधुर स्वर ने उत्तर दिया ।



## उत्तीस

दूसरे दिन सुबरे फिर नेग्मानोव ने मरिप्राना  
के कमरे का दरवाजा सटखटाया ।

उसके पूछने पर कि कौन है ? उसने कहा,  
'मैं हूँ । क्या तुम बाहर आ सकती हो ?'

एक मिनट ठहरो अभी आई ।'

वह बाहर आई, और नेग्मानोव को देखते  
ही घास्वर्य से धीस पड़ी । पहिल क्षण ठो वह  
उसे पहिचान ही नहीं सकी । उसने एक लम्बा  
घापरेंगार पीस रंग का सूती कोट पहन रखा  
था, जिसमें छोटे-छोटे बटन सगे थे और उसके  
ऊपर एक ऊँची सी बास्केट पहिन रखी थी,  
उसने प्रपन बास रूसी ठँग से बीज में स भाँग  
निकाल कर काड़े थे, गदन में नीले रंग का  
रुमास लपेट रखा था, हाथ में एक टोप था,  
जिसका ऊपरी भाग टूटा हुआ था, पैरों में  
उसने बिना पौसिघ के ऊँचे जूते पहिन  
रखे थे ।

'प्रोह, तुमन सो गजब ही कर दिया !'  
मरिप्राना ने धीसखत हुए कहा, 'कैस'  
प्रजीब और नयानक सपथ हो !' और उस

झपटकर गाड़ मालिगन में कस लिया और जोर से उसे घूम लिया।  
 'लेकिन ऐसा भेप क्या बना लिया है तुमने? तुम एक गरीब छटे  
 बुकानदार लगते हो' या फेरी वाले, या फिर निकाले हुए घरेलू  
 नौकर से लगते हो। यह घाघरेदार फाट क्यों पहिन रखा है, किसानों  
 की फतूही क्यों नहीं पहिनी?'

'यही तो बात है,' नेज्दानोव ने गहना शुरू किया, जो अपनी वेश  
 भूषा में सचमुच एक फेरी वाला लग रहा था और स्वयं भी ऐसा ही  
 महसूस करने के कारण वह सन्नोच और पीड़ा का अनुभव कर रहा  
 था। वह इतना झटपटा और संकोच का अनुभव कर था कि अपने सीने  
 पर वह अपनी रंगसिमा ऐसे चला रहा था, जैसे मानों अपने को झड़  
 रहा हो।

'फतूही में तो मैं तुरन्त पहचान लिया जाता, पवेश ने ऐसा ही  
 कहा, और यह कपड़ा उसके शब्दा में ऐसा लगता है जैसे  
 मैंने कभी और कोई कपड़ा पहना ही न हो।

'क्या तुम सचमुच अभी बाहर जा रहे हो' काम तुक करने के  
 लिए?' मरिप्राना ने गहरी दिनचस्पी से पूछा।

हां, मैं फोशिश करूँगा, यद्यपि वास्तव में

'वहें सुधनसीव हो।' मरिप्राना ने कहा।

यह पवेश सचमुच ही बड़ा विचित्र भावनी है' नेज्दानोव कहता  
 गया वह नजर ठालने ही सब कुछ जान समझ सेता है लेकिन  
 एकाएक एसी मूढ़ता बना लगा जैसे उसे इस सबसे कोई सराकार ही  
 नहीं है और किसी बात में नहीं पड़गा। यह स्वयं उद्देश्य के लिए  
 काम करता है—और हमेशा ही उसका मखौस भी उड़ाता रहता है।  
 उसने भर लिए मार्क्सोव के यहाँ से पुस्तिकाएँ और पर्चे ला दिए हैं,  
 वह उसे जानता है और उस सर्जी मिहामोविच नाम से पुकारता है।  
 लेकिन सामाजिक के लिए वह प्राग-पानी से नी लस आने को तैयार  
 रहता है।

घोर तात्याना का भी यही हान है' मरिमाना ने कहा। 'क्या वास है कि सभी लोग उम्र इतनी थका करते हैं ?

नज्जानोव ने उत्तर नहीं दिया।

पवेल न कभी पुस्तिकाएँ लाकर दो हूँ' मरिमाना ने पूछा।

'घोह ! यही हमारा वाली कोई नयी नहीं। 'भार भाष्या की कहानी" और कुछ घोर ऐसी ही साधारण जानी हुई बातें। और, न कुछ स ता मन्थी ही हैं।

मरिमाना ने इधर उधर उत्सुकता से देखा।

सिम्बिन सात्याना का क्या हो गया ? उसने तो तड़क ही घाने का बायदा किया था।

'वह हाँजिर है तात्याना ने हाथ में एक छोटा सा बंडस लिए कमरे में माने हुए कहा। वह धग्वाजे पर लड़ा भी घोर उमने मरिमाना की बात सुन सी थी।

'तुम्हें चल्नी करने की कोई ऐसी जरूरत नहीं है यह कोई ऐसी चीज नहीं है।

मरिमाना उससे निम्न क निग उतकी घोर सपकी।

'तुम से घ्राइ !'

तात्याना ने घपन हाथ का बंडस भयपपाया।

हर चीज इसमें है बिल्कुल तैयार' "तुम्हें वस पहिने की दर है और नया धग धारण कर बाहर जाना भर है, सागभाग तुम्हें देखते रह जायेंगे।

घोह, इधर घामो इधर घामा तात्याना घासीपावना मरो प्यारी - ।

मरिमाना उम घाने कमर में न गई।

ने-घानाव घवना रह गया। उसने कमरे में लकी सहमी पास से

दो तीन चक्कर लगाए। (किसी कारण से उसने कल्पना कर रखी थी कि छोटे बुकानदार कुछ इसी तरह स चलते होंगे), उसने अपनी मास्तीन और टोप को ध्यान से सूँघा, और उसकी महि चढ़ गई। उसने बिड़की के पास सटके एक छोटे धीरे में अपनी सूरत देखी और अपने सिर को एक झटका दिया। वह सचमुच बड़ा अनाकर्षक लग रहा था। 'चलो यह और भी बढ़िया है', उसने सोचा। फिर उसने कुछ पैसे लेकर अपने धाघरे की जेबा में ठूस लिए और छोटे बुकानदार के बोलने के सहजे का अनुकरण करते हुए कुछ धब्बे कहें। 'ठीक, मेरा क्या है, वह ऐसे ही बोलते हाने, उसने सोचा, 'लेकिन इस सब अभिनय की क्या क्या जरूरत है? मेरी बेपसूपा स्वर्ग ही प्रगट कर देगी कि मैं क्या हूँ। सभी उसे एक जर्मन कौवी की याद आ गई जो सारे रूस को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पार करता हुआ भागा था और वह रूसी भाषा भी टूटी-फूटी ही बोल पाता था, लेकिन धन्यवाद है एक व्यापारी की टोपी का जिस पर बिल्सी की सास चढ़ी थी और जो उसने एक घर में खरीद ली थी, उसकी बबह से घर जगह उसे व्यापारी ही समझा गया और वह सीमा पार करने में सफल हो गया।

उसी समय सोमोमिन ने कमरे में प्रवेस किया।

'ओहो! असेकसी भाई, उसने चीखते हुए कहा, तुम अपना पार्ट याद कर रहे हो। माफ करना मित्र इस वेश में तुम्हें देखकर कोई तुमसे सम्मानपूर्वक नहीं बोल सकता।'

'ओह, कृपया' मैं यही तो चाहता हूँ कि तुम मुझे इसी नाम से पुकारो।

'लेकिन यह तो अभी बहुत जल्दी है। धायद तुम अपने को धम्यस्त करना चाहते हो। तो ठीक है। लेकिन बाहर जाने के लिए अभी तुम्हें थोड़ा रुकना होगा, अभी मेरा भासिक मया नहीं है। वह अभी पडा सो रहा है।'

'मैं बाद में बाहर निकसूँगा।' नेज्जानोव ने उत्तर दिया, जब तक

मुझे पार्टी की कुछ हिंसायें नहीं मिलती तब तक मैं वहीं घास-पड़ोस में जाकर किसानों से मिलूँ-जुलूँगा।

‘यह तो ठीक है। लेकिन एक बात मैं कहना हूँ तुमन धनकसी नाइ’ मैं तुम्हें धनकसी कह सकता हूँ न?’

‘लेखी तुम साहो ता’ नेजधानोव न मुस्कुरात हुए कहा।

‘नहीं, बहुत नहीं पढ़ना चाहिए। सुनो? कहा जाता है कि धनकी ससाह धन से भी धनकी होती है। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे पास पैसे और पुस्तिकाएँ भी धनकी हैं। मुम उन्हें जिन चाहे बाँट सकते हो— वस कारखाने में नहीं।’

‘क्यों?’

‘क्योंकि पहिले तो यह तुम्हारे लिए खतरा मोल लेना होगा और फिर दूसरी बात यह कि मैंने अपने मालिक से यह वायदा किया है— कि यहाँ कोई गड़बड़ी नहीं होगी। कारखाना उसका है, तुम जानते हो और तीसरी बात यह कि हमन यहाँ कुछ शुरू कर दिया है—तुल्ल बनैरह और हो सकता है तुम्हारे इस काम से वह सब नष्ट हो जाय। जैसा चाहो करो और जहाँ जाना चाहो जाओ—मैं तुम्ह नहीं रोहूँगा लेकिन मेरे कारखाने के मजदूरों को हाय मत लगाना।’

‘सावधानी कभी बुरी नहीं है।’ क्यों ठीक बात है न? नेजधानोव ने उ पपूर्ण हल्की सी मुस्कान के साथ कहा।

सोसागिन के मुँह पर बही सुपरिचित दीर्घ मुस्कान व्याप्त हो गई।

‘यही तो धनकसी भाई एही तो, वह कनी बुरी नहीं होती।’

‘यह कौन है? और हम कहाँ हैं?’

धम्मिम बाक्य मरिधाना का देखकर कहा गया था, जो धपने कमरे दरबाजे पर एक पुरानी धनेक बार की पुनी छोटे की साधारण ताक पहिन, कवा पर पीन रंग का रुमाल डाल और सिर पर सात



रुमान बाँधे सजी थी। सरल स्नेह पूर्ण प्रशंसा में माझावित तात्याना उसकी पीठ के पीछे स भ्रूंक रही थी। मरिमाना इस सारी पोशाक में और भी कम उन्न की और सुन्दर लग रही थी। यह पोशाक उसे नेज्घानोव के लम्बे घाघरे दार कोट की अपेक्षा अधिक भा रही थी।

‘वासिली फेंदोसिच कृपया हँसो मत उसने कहा और लाज से गुला बाँस कं फूम सी लाम हो उठी।

‘कैसा सुन्दर जोड़ा है?’ तात्याना ने तारी बजाते हुए कहा। ओ, मेरी प्यारी महीला, ओ नाराज मत हो, तुम बड़ी अच्छी हो, बड़ी ही अच्छी—मेरी नन्ही मुझी विट्टो क्या कहने हैं तुम्हारे।

‘और, सचमुच ही यह बड़ी सुन्दर लग रही है’, नेज्घानोव ने सोचा, ‘ओह ! मुझे यह कितनी प्यारी लगती है।’

‘और जरा देखो तो इसकी बात,। इसने अपनी सोने की घण्टी मुझे देदी है और मेरी चाँची की खुब खेती है। तात्याना ने कहा।

‘अनता की सड़कियाँ वहीं सोने की घण्टी पहनती होंगी’, मरिमान ने कहा।

तात्याना ने निश्वास भरी।

‘उसे मैं सुरक्षित रखूँगी।’

‘अच्छा बैठ तो जाओ तुम दोनों सोसोमिन ने कहा, जो निरन्तर मरिमाना की ओर अपने सिर को थोड़ा मुकाए हुए दस रहा पा, ‘पुराने अमाने में भाग-भाग कहीं यात्रा पर जाने से पहिले थोड़ी देर साथ बैठा करते थे और तुम दोनों के सामने एक दीप और कठिन मार्ग है।

मरिमाना जो अब भी लाज से सिखुरी हो रही थी, बैठ गई, नेज्घानोव भी बैठ गया और सीलामिन भी और सबके अन्ध में तात्याना भी कमरे क एक किनारे पर रखे नकरी क एक टुकड़े पर बैठ गई।

नातामिन ने वारा-वारी मे सब की भोग देना

भाषा पीछे हटो ।

घोर देखो ।

वैठे हूँ यहाँ हम सब

कितनी अच्छी तरह - ,

उमने अपनी भाँगों को नचाने हुए कहा घोर एकाएक ठहाका मार कर हँस पड़ा इतना कि बुरा मानने के बजाय सब मधुर आनन्द से विभोर हो उठे ।

मकिन नेज्जानोव एकाएक उठ बैठा ।

‘मैं तो चला’, उसने कहा, ‘यह सब बड़ा आनन्द दायक है मद्यपि— इन फण्डा में इस थोड़ा सा सजा है। तुम चिन्ता मत करो’, उसने सोसामिन की ओर उन्मुख होकर कहा ‘तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे मजदूरों को नहा दूँगा। मैं जरा घास-पड़ोस के बेहात में जाकर कुछ बात चीन कर आऊँ यद्यपि, घोर वापस आ जाऊँगा और फिर आकर सारा हाल बताऊँगा तुम्हें मरिषाना शत है अगर कोई बचाने की बात हुई तो तुम कामना के रूप में अपना हाथ बा जरा मुझे।’

‘एक प्यासा थाय भी गुण करगी’ तात्याना ने कहा ।

वहीं ! अगर पीने की तपियत हागे तो कहीं किसी सराय या हाटल में बैठ कर पी लूँगा ।

तात्याना ने अपना सिर हिलाया ।

‘मात्रकस सराय घोर हाटल तो सड़का के किनार ऐसे नरे पड़े हैं जैसे भेड़ का माल पर मखियाँ। गाँव नी बड़े बड़े हैं तात्या तोनो

रज्ज्या मसविश फिर मिलने तक क्या मैं तुम्हारे लिए शुभ कामनाएँ कर सकता हूँ’, नेज्जानोव ने छोटे दुकानदार का पार्ट धदा

करते हुए कहा। लेकिन वह दरवाजे पर पहुंचा ही था कि गेलरी में से निकलकर पवेल ठीक उसके नाक के नीचे आकर खड़ा होगया और एक लम्बी पतली मूँठवार छड़ी उसके हाथ में धमा धी, और बोसा 'कृपया इसे साफ ले जाइए अलैक्सी विमिनिच' घसते समय इस पर मुक कर घसना और छड़ी को अपने से जितनी दूर रखोगे उतना ही ज्यादा प्रभाव पड़ेगा।'

नेज्दानोव ने छड़ी लेनी और बिना बोले बाहर चला गया, और पवेल उसका पीछे-पीछे। तात्याना भी जाने को हुई, लेकिन मरिआना ने उसे रोक लिया।

'रुको थोड़ी देर, तात्याना मोसीपोवना', मुझे तुम्हारी जरूरत है।'

'लेकिन मैं अभी आई समोवर लेकर। तुम्हारा कामरेड विना चाय लिए ही चला गया—वह इतनी जल्दी में था' लेकिन तुम क्या बाचत रहती हो ? धीरे-धीरे सब बातें साफ होआयंगी।'

तात्याना बाहर चली गई, सोलोमिन भी खड़ा होगया। मरिआना उसकी घोर पीठ करके खड़ी थी, जब वह उसकी घोर घूमी—यह देखकर कि वही देर तक वह चुप है—तो उसने देखा कि यह एकटक उसकी घोर निमोर्ता से देख रहा है, ऐसे भाव से जैसा उसने उसकी आँखों में पहिले कभी नहीं देखा था, एक भिंसासा, कुछ जानने का भाव, लयभंग कौतूहल का। वह फिर समुजा गद घोर लजा गई। और सोलोमिन भी अपनी धोरी पकड़ जाने पर सजा गया और हमेशा से अधिक तेज आवाज में बोलने लगा

'सूब, बहुत सूब' तुमने अपने नए रास्ते पर चलना आरम्भ कर दिया आसिर !'

'बड़ा शानदार आरम्भ है, वासिली फेरोविच। इस आरम्भ कैसे कोई कह सकता है। फिर भी कभी-कभी मुझे यड़ा बेतुका सा लगता

है। भलैकसी ने ठीक ह्रा कहा था, हमलोग सधमुच ही स्वांग का अभिनय कर रहे हैं।

सोसोमिन फिर अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

'लेकिन मरिघाना मैं तुम्हें क्या देना चाहता हूँ -- तुमने अपने इस नए धारम्भ की कैसी कल्पना मन में कर रखी थी? इस धारम्भ के बारे में यह पेशबन्दी बनाकर उस पर भंडा गाड़ कर और 'प्रभातम्ब के नामपर धुरी' भिन्ना देना भर ही काफी नहीं है। और न यह स्त्रियों का ही काम है। तुम सब आज किसी सूक्या का कुछ भली बात सिखाना शुरू करोगी, और यह काम तुम्हारे लिए कठिन होगा क्योंकि लूकेर्या जल्दी तुम्हारी बात समझेगी नहीं और वह तुमसे शर्माएगी और साबेगी कि तुम जा कुछ सिखाना या पढाना चाहती हो उससे उसका ता कोई लाभ हाना नहीं और दो या तीन हफ्ते बाद तुम किसी और लूकेर्या से सर मारोगी और या तो किसी बच्चे को पढ़ाओगी या धा, इ-ई, या उसक कपड़े धोओगी या बीमारा को दवा बाँटोगी यह हाया तुम्हारा धारम्भ।'

'लेकिन यह काम ता धार्मिक संस्थाया की समाज सेविकाएँ पहिले स ही कर रही हैं, बासिसी केवोविच! तब फिर उसकी क्या जरूरत है? मरिघाना न अपनी भार इशारा करते हुए एक भस्वष्ट भंगिया स बात कही। 'मैने ता कुछ और ही सपने देखे थे।'

'तुम स्वांग करना चाहती थी, अपना बलिदान करना चाहती थी?'

मरिघाना क नेत्र चमक उठे।

'हाँ हाँ हाँ!'

और नेग्धानोव?

मरिघाना ने अपने कंधे मिचकाए।

‘भाप हुमेसा इतने चुप रहत हैं पर मुझ्से बात करमे में इतने मुखर हो जाते हैं सो क्यों ? भाप नहीं जानते कि इस सबस मुझे कितना आनन्द होता है ।’

‘क्यों है ऐसा ? —सोमोमिन ने उसक बोना छोटे मासूम कोमल हाथ अपने बड़े धीरे धुरधुरे हाथा में ले लिए—क्यों ?—हो सकता है इसलिए, कि तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो । नमस्ते ।’

वह चला गया मरिमाना थोड़ी देर तक तो वहीं स्थिर खड़ी उसको आते देखती रही और सोचती रही, फिर तात्याना के पास चली गई, वह अभी तक समोवर लेकर नहीं आई थी । उसक साथ जाकर उसने चाय पी बतन मीने और मुर्गी के बर्बा का घेरा और एक छोटे बच्चे के बाला की लटों का भी कषा करके सुलभ्यमा ।

शोजन के समय तक वह कमरे में घापस आ गई । उस नग्नानाम का अधिक देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा । वह लौटा—थका हारा और घूमघूमरित । और माकर सोफा पर भदाक से गिर पड़ा । वह सुरन्त उसके बगल में बैठ गई ।

‘बाला, बोलो ! मुझे बताओ !’

‘तुम्हे वह दो नाइनें याद है, उसने दूटती सी भावाब में कहा

“यदि यह इतना दुखद न होता वा, निश्चय ही यह सब पूरी तरह हास्यास्पद हो जाता ।”

‘तुम्हें याद है ?’

‘हाँ, याद है ।’

‘मेरे भाज के अनुभव पर यह पछिपी विस्कुल फिट बैठती है । लेकिन नहीं ! निश्चित रूप से इसमें उपहास का अंश अधिक है । पहिली बात तो यह कि मैं पन्की तरह स यह समझ गया है कि अमिनय करने से आसान काम कोई नहीं किसी ने मुझ पर सन्देह करने की कल्पना तक नहीं की । लेकिन एक बात मैंने पहिले स नहीं सोची थी—कि एक कहानी गढ़न की भी तो जरूरत थी” — व पूछत

ह—तुम कहीं से घा रहे हो, क्या करते हो—और जवाब के लिए अपने पास कुछ नहीं। खैर यह भी कोई ऐसी बात नहीं। सिर्फ किसी घराबस्ताने में घराब पीने का प्रस्ताव भर करने की देर है और जितना चाहो झूठ बोला।

और तुमने "झूठ बोलना" मरिघाना ने पूछा।

हैं मैंने झूठ बोला और जितना अच्छी तरह हो सका उतना झूठ बोला। और दूसरी बात यह है कि जितने भी लोग से मैंने बातें की वे सभी असन्तुष्ट हैं, पर तमाशा यह कि कोई भी यह सोचन की तकलीफ करने को तैयार नहीं कि इस असन्तोष को दूर कैसे किया जाय। लेकिन प्रचार में बड़ा मनाड़ी साबित हुआ है दा पुस्तिकाएँ मैंने याही एक कमरे में डाल दीं—और एक गाड़ी में उनका परिणाम क्या निकसेगा ईश्वर ही जाने। मैंने चार भाद्रमिया का भी पुस्तिकाएँ दीं। एक ने पूछा कि क्या यह कोई धार्मिक पुस्तक है, और फिर सी नहीं बूझते न कहा कि यह पढ़ना नहीं जानता और पूँकि उसके कवर पर चित्र था सो वह उस अपने बच्च के खलने के लिए लगया, और तीसरे ने धुरू में ता मुझसे सहमति प्रगट की प्राप सही कहते हैं बिल्कुल सही है और फिर एकाएक बकन लगा अजीब डग से और उसने भी अन्त में फिताव नहीं सी। चौथे ने जकर एक फिताव लेनी और मुझे उसक लिए बहुत बहुत प्रयवाद भी दिया लेकिन मैं विस्वास स जानता हूँ कि जो कुछ मैंने उसस कहा, वह सब नी उसकी समझ में साफ-धूल नहीं प्राया हागा। फिर कम्बस्त एक पुत्ते ने मुझे काट लिया एक किशान प्रौरत ने अपनी मूर्खपड़ी क टटूर क दरवाजे पर स ही मुन्क पर एक जलता पैसा फेंका और गालियों की बोझार कर दी बदमाश, धैतान मुन्के, मास्को के मोफर नाखपीटे, तेरा नाख हा! कहीं हूवने को भी जगह नहीं है तुम्हे?" और एक सैनिक भी जो दुट्टी प्राया हुआ है मुन्क पर चिन्हा कर पड़ा, 'ठहरो हो धनी मैं तुम्हें गोली मारता हूँ, मेर दास्त, और मना यह कि उसन मेरे ही पैसा स राव पी पी।'

‘घोर कुछ ?’

‘घोर कुछ ? मेरी एबी में एक छाता पड़ गया है। मेरा एक जूता डूरी तरह बड़ा है। और भव में झुका है, सराय की टेबली से मेरा सिर बर्त के मारे फट कर दो खाँप हुआ जा रहा।’

‘तो क्या तुमने ज्यादा पीसी है ?’

‘नहीं, कोई बहुत ज्यादा तो नहीं—सिर्फ थोड़ी थोड़ी साय देन के लिए, लेकिन मैं पाँच सरायखानों में गया। लेकिन वह सब गन्धियाँ ! घाफ। मैं उसे सहन नहीं कर सकता—यह गन्दी बोडका—भरा भी नहीं। लेकिन हमारे किसान यह बोडका भी कैसे पते हैं, मेरी तो समझ से बाहर की बात है। अगर सबके समान हान के लिए बोडका पीना ही जरूरी है तो भाई मुझे तो भाफ किया जाय।’

‘तो किसी ने तुम पर सन्देह नहीं किया ?’

‘किसी ने भी नहीं। हाँ बस एक सराय वाला जरूर था—तगड़ा, पीसा कंजी घाँस वाला—उसने तो जरूर मुझे कुछ कुछ सन्देह भरी दृष्टि से देखा था। मैंने उसे अपनी पत्नी से कहूँ सुना इस साल वाला वाले छाकरे पर जरा नजर रखना उस मेंड़े पर।’ (तब तक मैं नहीं जानता था कि मेरी घाँस भेंड़ो है) ‘यह कोई धूत है। बेस रही हो कैसा मनन करता हुआ सा पी रहा है ?’ उस प्रसंग में मनन करता हुआ सा’ से क्या मतलब में नहीं समझ लेकिन यह कोई भसी बात तो होगी नहीं यह निश्चय है। रिवाइजिंग इन्स्पैक्टर’ में कुछ कुछ गोगोस क ‘मोबीटोन’ की घौसी म, सुन्हे मार है ? शायद उसने यह सब इसलिए कहा क्योंकि मने बोडका मेज क नीचे सुड़का दी थी। एक कसाप्रेमी घोर सौन्दर्य प्रेमी व्यक्ति क लिए यकार्य जीवन से सम्पर्क स्थापित करना बहुत कठिन है, सचमुच बहुत ही कठिन।

‘कोई बात नहीं घगली बार सही,’ मरिघाना ने नेग्यानोव को सान्त्वना दी। ‘लेकिन मुझे खुशी है कि तुम अपने प्रथम प्रयास को विनादो रूप में ल रहे हो। तुम सचमुच उकताए नहीं ?’

'नहीं मैं उकसाया नहीं, सब बात तो यह है कि मजा आया। लेकिन यह निश्चय है कि प्रब में इस सब पर सोचना शुरू करूँगा और जितना सोचूँगा उतना ही दुख और पीड़ा का अनुभव करूँगा।'

'नहीं, नहीं! मैं तुम्हें सोचने ही नहीं दूँगा। प्रच्छन्न प्रब मेरी सुनो मंने क्या क्या किया। भोजन अभी आता ही होगा, तब तक मैं तुम्हें बताऊँ कि मने वर्तन माँजे सूख साफ चमाचम वही बतन बिनमें तास्याना ने सूप बनाया था मं तुम्हें सब विस्तार के साथ खाते समय बताऊँगी।

और उसने ऐसा ही किया भी। नग्धानोव उसकी बात सुनता रहा और उसकी ओर टकटकी बाँधे ऐसे देखता रहा देखता रहा कि मरिमाना को बीच में कई बार बात करना बन्द करके उससे पूछना पड़ा कि वह ऐसा क्या उसकी ओर देख रहा है लेकिन वह मौन रहा।

भाजन के बाद मरिमाना ने जोर जोर से कुछ पढ़ने का प्रस्ताव किया लेकिन उसने पहिसा पृष्ठ ही समाप्त किया कि नेग्धानोव एकाएक उठ बैठा और उसके पैरों को अपने हाथों के घालिगन में ले भायावेध में न जाने क्या-क्या कहता रहा—'बेतरतीव, अनर्गलन! मैं मरमाना चाहता हूँ मैं जानता हूँ कि मैं जल्दी ही मर जाऊँगा' ... वह हिली तक नहीं और न उसे रोका ही, उसने चुपचाप धान्ति से उसके प्राकस्मिक घालिगन में अपने को समर्पित कर दिया और प्यार भरी दृष्टि से उसकी ओर देखती भी रही उसका सिर को सहसाठी रही। उसका कपड़ा की सिक्किन में उसका सिर निरन्तर हिल रहा था। मरिमाना के घान्त स्निग्ध व्यवहार ने उब नड़ा प्रभावित किया। अगर मरिमाना ने उसके उस प्राकस्मिक भावावेध का विरोध किया होता या घामर इतना और ऐसा प्रभाव न पड़ता। वह उठ बैठा और धीरे धीरे जोर 'मुझ माफ कर दो मरिमाना' जो कुछ आज और बतल हुआ, उसके लिए मुझ माफ कर दो। मुझसे फिर कहो कि तुम



उस समय तक मेरा इन्तज़ार करोगी, जब तक कि मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य न बन जाऊँ , और मुझे माफ़ कर दो, 'माफ़ कर दो ।'

'मैंने तुमसे घायल किया है' और मैं उसे कभी बदल नहीं सकती ।

'अभ्युत्थान , नमस्ते ।'

नेल्सोनोव बाहर खड़ा गया , मरिआना ने अपने को अपने कमरे के भीतर वन्द कर लिया ।



## तीस

एक पल्लवारे के बाद, उसी स्थान पर नेज्जानोव अपने मित्र सिलिन को तिरैरी मेज पर बुका पत्र लिख रहा था। मेज पर मोमवती का हल्का पीला प्रकाश छिटका हुआ था। रात काफी से ज्यादा बीत चुकी थी। सोफे और फण पर कीचड़ से सने बपठे विसरे पड़े थे जिनसे प्रकट था कि जल्दी में उतार कर फेंके गए हैं। लिङ्की के पीछा पर बर्पा की चौछार पड़ रही थी और हवा के जोर जोर के नाके घा रहे थे।

प्रिय स्लाविमीर — मैं बिना अपना पता लिख तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ और यह पत्र भी किसी भावमी के द्वारा बुर से डाक घर में डाला जायगा क्योंकि मैं यहाँ छिप कर रह रहा हूँ और इसका पता सग जाना सिर्फ मेरी ही जिन्दगी की बर्बादी का कारण हो जायगा वरन् तिली और नी जिन्दगी की बर्बादी का कारण भी हो जायगा। तुम्हारे लिए बरा इतना ही जानना काफी है कि मैं पिछले पन्नेह दिना से एक बड़े कारखाने में रह रहा हूँ,

मरिघाना भी मेरे साथ है। हम लोग सिप्यागिन के यहाँ से उठी दिन भागे थे जिस दिन मैंने पिछली बार तुम्हें पत्र लिखा था। यहाँ हमें हमारे मित्र ने रहने का स्थान दिया है। मैं उसे वासिनी क नाम से पुकारूँगा। वह यहाँ का सबसे बड़ा अधिकारी है—और बड़ा शानदार और प्यारा भावमी है। इस कारणने में हमारा निवास अस्थायी है। अन्ति भारम्भ होने तक हम लोग यहाँ ठहरेंगे—हालाँकि अब तक जो कुछ हुआ, उससे तो अनुमान होता है कि यह समय शायद ही कभी आए। आदिमीर मेरा दिल गारो हो रहा है, बहुत भारी। पहिले तो मैं तुम्हें यह बताऊँ कि यद्यपि मैं और मरिघाना साथ साथ भाग आए हैं लेकिन अब तक हम दोनों में बहुत मारि फा ही रिस्ता है। वह मुझसे प्रेम करती है और उसने कहा है कि वह मेरी ही आसानी भगर भगर में ऐसा अनुभव करता है कि मैं उसे प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हूँ।

आदिमीर, मैं नहीं समझता कि मैं अधिकारी हूँ! वह मुझ में विश्वास करती है, मेरी ईमानदारी में—मैं उसे धोखा नहीं दूँगा। मैं जानता हूँ कि मैंने उससे अधिक कमी किसी को प्यार नहीं किया और न कभी करूँगा। वह निश्चय ही बड़ी सुन्दर है। लेकिन फिर भी मैं कैसे अपने साथ उसकी किम्मत को बाँध सकता हूँ? एक जीवित प्राणी को—एक भाग के साथ? नहीं, लाल के साथ नहीं—एक अर्धमृत जीव के साथ! कैसे किसी की आत्मा इसे गवारा करेगी? तुम कहोगे भगर चाह तीर्थ है तो आत्मा उसमें क्या करेगी। यही तो बात है कि मैं एक लाल हूँ, एक ईमानदार मनी मानुस लाल, भगर तुम चाहो तो कह सकते हो। रूपमा यह मत कहना कि मैं हमेशा ही बड़ा मायुक्त हो जाता हूँ और कहने में अतिशयोक्ति करता हूँ मैं तुम्हें जो कुछ भी लिख रहा हूँ वह सब सत्य है! अक्षरत सत्य। मरिघाना बड़ी ही आत्म केन्द्रित स्वभाव की जीव है और अब वह अपनी सक्रियताओं में ही व्यस्त है, जिनमें वह विश्वास करती है “ जब कि मैं ?

'और प्रेम और व्यक्तिगत सुख की बातें बहुत ही गई। पिछले पन्द्रह दिनों से मैं निरन्तर जनता में जा रहा हूँ, और घोष। उससे अधिक निकम्मी और बेहूदा बात सोच नहीं सकते। हालाँकि उसमें भी बोध मेरा ही है 'कार्य' में नहीं। मैं मानता हूँ कि मैं जनता का भादमी नहीं हूँ, उनमें का, उनका एक मयना। मैं उनके हृदय को नहीं छू पाया। मैं उन पर अपना प्रभाव जमाना चाहता हूँ, लेकिन कैसे? उसे कैसे किया जाय? ऐसा लगता है कि जब मैं जनता के बीच में होता हूँ तो सिर्फ़ हमेशा उनका सामने झुकता हूँ और उनकी बातें सुनता हूँ और जब ऐसा मौका आता है कि मैं उनसे कुछ कहूँ, तो सब बेकार ही जाता है। मेरी बात उनके दिल में धर नहीं कर पाती। ऐसा लगता है कि मैं निकम्मा हूँ। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे किसी भनाड़ी अभिनेता को गलत पाठ दे दिया जाय। घाम बुढ़ी और कर्णधरपरायणता का यहाँ प्रश्न नहीं उठना, और वही बात भविष्यवासी के साथ है और लोग झुक कर सरस पाते हुए मेरा उपहास भी करते हैं। यह सब फोड़ी माल का भी नहीं है। यह सब याद करके जी मचसता है, जो त्रिपड़े पहिन कर म जाया हूँ घोष। बासिनी क गन्ध में इस 'स्वयं' पर आता हूँ, उन्हें देखकर ही जो मचनान सयता है। लोग कहते हैं कि जनता की बात सीजने का गिण पहिने उनका परिवार और भादता को जानना जरूरी है याहियात। निहायत याहियात बात है। भादमी को जो कुछ यह कहता हूँ पहिन उस पर खुद विवास होना चाहिए, फिर हर एक से जो चाहे सो कह सकता है। मुझे एक बार एक संकीर्णभावाणी नेता का उपदेश सुनने का भयसर मिला। मया वताऊँ, क्या-क्या बेहूदी याहियात बातें उसने उछालीं, सब हीय पोष, किताबी और निकम्मी बात, सरन किशानू मुद्राविरा में और वह भी युद्ध स्त्री म नहीं यलिक दबत स्त्री में और वह मेरा बार बार बार एक ही बात पर जोर दिण जाय मेडक की टट टट की तरह। "जाग कम हो गया है, जाग कम हो गया!" सकिन सभी उसकी भांगे धमक उठी, उठते धावाय दन और गारी हा गई, मुद्रियां तन गई—यह आर स नीये ठक फौलाद का सा तन रहा था। थोताभा

को उसकी बात समझ में नहीं आ रही थी, लेकिन वे उसकी पूजा करते थे। और उसके आदेशों का पालन करते थे। जब कि मैं एक अपराधी की तरह बोलना शुरू करता हूँ—और सारे वक्त माफी सी मांगता रहता हूँ। मुझे उन रुकीर्णतावादीयों के पास जाना चाहिए, उनको कमा महान नहीं है। लेकिन उनमें विश्वास भीतने की क्षमता है, विश्वास! मरिघाना को उन पर विश्वास है। वह सबेरे उसके से ही वास्थाना, नाम की एक नली और होशियार किसान औरत, के साथ दिन भर काम में व्यस्त रहती है। वह हमारे बारे में कहती है कि हमें सबक समान होना है, यानी हमारा समानोदरण होना है और हमें समानीकृत लोग कहती है, और, तो मरिघाना इसके साथ दिन भर व्यस्त रहती है और एक मिनट को भी नहीं बैठती, वह एक चीटी की तरह है। यह सुघ है कि उसके हाथ साल और घुरघुरे हाते जा रहे हैं और भाषा लगाए है कि किसी दिन अगर जरूरत पड़े तो फाँसी के तख्त पर झूलने से भी न हिचकेंगी। फाँसी के तख्ते के इंतजार में उसने पूरे पहमने छोड़ने की भी कोशिश की, वह कहीं नंगे पैर गई और नंगे पैर ही वापस आई। मैंने बाद में सुना कि यह काफी देर पैर घोंटी रही। मैंने देखा है कि वह बहुत सम्हाल-सम्हाल कर चलती है—नंगे पैर चलने की आदत न होने से उसके पैर सूज गए हैं। लेकिन वह नंगी सुघ नजर आती है, इतनी सुघ कि जैसे उस सजाना मिल गया हो जैसे सूर्य उसके ऊपर चमक रहा हो। हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि मरिघाना लाजवाब है। और जब मैं उससे अपनी भावनाओं की बात करने लगता हूँ तो मुझे कुछ लज्जा का अनुभव होने लगता, जैसे मैं किसी ऐसी चीज पर हाथ डाल रहा हूँ जो मेरी नहीं है, और अब उसकी दृष्टि, मोह वह अजीब अद्वापूर्ण निर्विरोध दृष्टि “मुझे ग्रहण करो” जैसे कह रही हो। “लेकिन याद रखना! और फिर इस सब की क्या जरूरत है? क्या धरती पर इससे अच्छी, इससे महान् और कोई दूसरी बात नहीं?” दूसरे क्षण में, “अपना बदबूदार

कोट पहिनो और जनता क बीच में जाओ।  
बीच में चला जाता हूँ।

और ने जनता के

प्रोह, एस घबराए पर मैं अपनी घबड़ाहट सुकुमारता, भावुकता, नकचड़ापन और संकोची स्वभाव को जो मैंने अपने प्रमिजात्यवर्गीय पिता से पाया, किस्ताना कोसता हूँ। मुझे बीच में डकेलने का उन्हें क्या अधिकार था, मुझे ऐसे स्वभाव देकर जो जिन परिस्थितियों में मुझे रहना है, उनके लिए विस्तृत अनुपयुक्त हैं? मुर्गों के बच्चे को पकड़ कर पानी में डकेल देना। एक कलाकार को कीचड़ में। एक प्रजातन्त्रवादी जनता का प्रेमी जिसे बोडका पच्ची धाराव की तीव्र गंध ही वीमार कर देती है?

देखो तो मैं कैसा हो गया हूँ—अपने पिता को ही भया-भुरा कहने लगा। लेकिन जनवादी तो मैं अपने से ही डूपा हूँ उसमें तो उनका कोई हाथ नहीं पा।

सच आदिमीर, मेरी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं है। प्रजीव अजीब निफन्मे विकृत विचारा से मन ग्रस्त है। तुम मुझ से पूछोगे कि क्या ऐसा भी हो सकता है कि इन पिछले पन्द्रह दिना में मुझे कोई भी ऐसा भला सजीव आदमी नहीं मिला जिससे मुझे सान्त्वना प्राप्त होती भल ही बह कितना भी जाहिल क्या न हा? भय क्या नहूँ? पन्द्रह दिना में बहुत से मिला लेकिन सब बेकार हूँ एक आदमी प्रपस्य भला और धानदार मिला लेकिन मैं और मरो कितानें उसके किसी मसरफ के नहीं है। उसका नाम पयेल है यहाँ कारणाने में ही काम करता है—यह यासिली का दाहिना हाथ है, बड़ा ही होशियार बड़ा ही तेज कारखाने का नाथी मैनेजर मेरा स्थान है मैंने तुम्ह पहिल भी उसके बारे में लिखा है—उसका एक दोस्त है, एक किसान, एमिजार उसका नाम है 'बड़ी साफ समझ है उसकी और स्वतन्त्र विचारा का है, किसी भी तरह जास म न फँसन वाला लेकिन हम मितव है, लेकिन ऐसा सावा है जैसे हम दोना क बीच में एक दीवाल

है, उसके चेहरे पर मेरे लिए वस 'नहीं' है ! एक और भावमी स में मिला 'वह जरा गरम मिजाज का है। 'तब फिर, 'अनाव' वह कहता है, "यह कोई साबुन की बटिया नहीं है, लेकिन यह तो बतानो क्या तुम अपनी सारी जमीन बे रहे हो, या नहीं ? तुम्हारा मतलब क्या है ? 'भेने उत्तर दिया मैं जमींदार नहीं हूँ ! (और मुझे याद है मैंने यह भी कहा था, 'ईश्वर तुम्हारा भला करे ?')। लेकिन अगर तुम हम जैसे ही साधारण भावमी हो, तो फिर तुमसे क्या लेना-देना, फिर तो बेकार हो ? वस मुझे मकेला छोड़ देने की कृपा करो !'

एक बात और मैंने देखी है कि अगर कोई ध्यान से बात सुनता भी है, और तुरन्त किताब ले खता है, तो तुम निश्चय समझ लो कि वह कोई या तो घूर्त है, या सुर्त है या फिर सी० ग्राई० डी० है और अगर कोई ब्रह्मा वातूनी पढ़ा लिखा व्यक्ति मिल जाता है, तो वह सिधा न कुछ रटे रटाए वाक्यों को वार-वार बुराने क और कुछ नहीं करता। एक न तो मुझे बुरी तरह बाता में उलझ लिया, उसके लिए हर चीज "उत्पादन" है। तुम उससे कुछ भी कहो, वह यही कहता रहेगा, 'निश्चय ही एक उत्पादन !' भोफ, घैठान की भात, जहन्नुम में जाय ! एक यास और तुम्हें याद है, एक वार काफ़ी दिन पहिल 'फालतू' जन—हैमनेटों क वार में बड़ी चरवा भी ? ऐसे ही 'फालतू' लोग आज बल किसाना में खूब मिलत हैं। उनकी यात करने का सहजा ही अपना धनग है और फिर उनका बाधा सीकिमा पहम वाना जैसा है, जैसे क्नेदिरु हो गई हो। बड़ दिलचस्प लोग, हमारी और बड़े तैयार मन से भाते हैं लेकिन अन्ति के उद्देश्य के लिए विस्तुल निकम्मे—ठीक पहिले जैसे हैमनटा की ही तरह। तब फिर कोई क्या करे ? एक गुत प्रेस खोले, लेकिन क्या ? जैसी भी हैं, किताबें काफ़ी हैं, हर तरह की 'भगवान को याद करो और हाप में कुल्हाड़ा सम्हाला', और कुछ 'कुल्हाड़ा सम्हाला' तरह की। किसाना क जीवन पर उपन्यास लिखे, लेकिन वे छपग नहीं सम्भवतः। या पहिले

कुम्हाड़ा सम्हालें ? लेकिन किसक विरुद्ध किसके साथ और किस लिए ? ताकि राष्ट्रीय सैनिक राष्ट्रीय राष्ट्रपति से गोली मार द। लेकिन यह तो सीधी-साधी भात्म हत्या है। उसमें तो अपने माप अपनी भात्म हत्या कर लेना प्रच्छा होगा। कम से कम मैं यह तो जानूँगा कि मुझे कब और कैसे मरना है और अपने मन से तै करूँगा कि शरीर के किस भाग का मध्य किया जाय। सचमुच मैं तो यह सोचता हूँ कि अगर कहीं भी स्वतन्त्रता संग्राम छिड़ जाय तो मैं उसमें शामिल हो जाऊँ। किसी को आज्ञा करने के लिए नहीं (दूसरों को आज्ञा देने का विचार अब कि अपने ही लोग आज्ञा नहीं हैं, मजाक है!) वल्कि अपने जीवन का किसी प्रकार में मन्त करने के लिए।

‘हमारा मित्र वासिली, जिसने हमें अपने यहाँ पनाह दी है, बड़ा ही सुखी व्यक्ति है, वह भा हमारे ही खेने का है और एक प्रकार से बड़ा ही दान्त स्वभाव का व्यक्ति है। वह किसी जल्दी में नहीं है। उसक लिए मैं किसी और का दोषी ठहरा सकता हूँ... पर उसे नहीं। और ऐसा मगठा है, जैसे उसका सारा भूत विश्वासा पर आधारित नहीं है बरन् चरित्र पर है। वासिली का चरित्र ऐसा है कि आप उसमें कहीं भी छिद्र नहीं पा सकते। और निःसन्देह वह सही भी है। वह हमारे साथ काफी उल्ला-बैल्ला है खासतौर से मरिघाना के साथ। एक बड़ा मजीब सत्य है। मैं मरिघाना को प्रेम करता हूँ और वह मुझे प्रेम करती है (तुम इस बात पर मुन्कुरा रहे हो, मैं देख रहा हूँ, मफिन कसम से बात ऐसी ही है!) मफिन हमें आपस में बहुत कम कटा को होता है, लेकिन उसक साथ वह चर्क करती है बहुत करती है और उसकी बातों को सुनती है। मैं उसमें ईर्ष्या नहीं करता वह उस कहीं काम दिाने की काशिया कर रहा है, कम से कम वह उसे इसके लिए बार बार काबली रहती है पर जब मैं उन दोना का देखता हूँ तो मेरे दिल में पीड़ा होती है, पर फिर भी जब साथी अगर मैं घादी के लिए एक बार भी इजारा भी कर दूँ तो वह तुरन्त



तैयार हो जायगी, और पावरी जोसिम साहब का पधारेंगे और सब कुछ हो जायगा, पलक मारते ही। लेकिन इस भी मेरा कोई मना न होगा, कोई परिवर्तन न होगा इसका तो कोई इनाज ही नहीं है! मेरा जीवन वो टूँक हो गया है, प्यारे ब्लादिमीर याद है तुम्हें हम लोगों के उस पियककड़ दर्जी मित्र की, जो अपनी पत्नी की सिकायत किया करता था।

‘फिर भी मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि यह सब ऐसा ही बहुत दिन नहीं चमगा, मैं महसूस करता हूँ कि कुछ तैयार हो रहा है

‘भया मैंने यह माँग नहीं की और सिद्ध नहीं किया है कि हमें “अमल” करना है? अब हम अमल करने जा रहे हैं।

‘मुझे याद नहीं आता कि मैंने तुम्हें अपने एक और मित्र के बारे में लिखा था या नहीं—एक सचला व्यक्ति सिप्यागिन का रिश्तेदार। सम्भव है वह ऐसी मछली पका डामे जिसे सम्भवतः आसानी से निगला भी न जा सके।

‘मैं यह पत्र पहिले ही समाप्त करना चाहता था लेकिन फिर भी। और। यद्यपि मैं कुछ करता नहीं, विल्कुल भी कुछ नहीं कविताएँ पसीटता रहता हूँ। मैं उन्हें मरिघाना को नहीं सुनाता, वह उनकी और कोई विशेष ध्यान भी नहीं देती लेकिन तुम कभी कभी उनकी तारीफ भी करत हो और फिर खास बात तो यह है कि तुम उनकी इधर उधर चर्चा नहीं करते फिरोगे। मेरा हिस में एक आम बात दखी है जो सब में है। और उस पर यह कविता है

नीद

काफ़ी दिन से मैं अपने बेघ में नहीं था  
लेकिन मुझे देखने सायक कोई परिवर्तन नहीं मिला—  
हर जगह वैस ही भावमी सुलठापूर्ण गठिरोष  
बिना छतों के मठान, बहनी दीवारें,

घोर वैसे ही गन्दिमी घोर बदल घोर मरीची घोर ऊब ।  
घोर वैसे ही दास्ता पूर्ण निगाहें, पल में प्रयत्ना पूरा पल में  
निरीह !

हमारी जनता स्वतन्त्र कर दी गई घोर स्वतन्त्र जुवा  
पहिल की ही तरह ऐसी नटकती रहती है जैसे कि बिना प्रयोग की  
हुई चाबुक ।

सब कुछ, सब कुछ पहिल जैसा ही है घोर कबल एक चीज में  
यारुप एशिया सार संसार का हमने निरावरण कर दिया है !

नहीं ! मेरे प्रिय देगवासी प्रय तक कभी भी  
ऐसी भयंकर नीद में लीन नहा हुए थे ।

हर चीज का रूपा है सब जगह, गाँव में घोर कस्ब में  
यैतगाड़ी में स्तज म रात हो दिन हो बैठे हुए घोर खड़े हुए -  
भ्यापाचे अधिकारी सब का रहे हैं अपन पहर पर पहरेशार

वफ़ीली सर्वों में घोर जलती हुई गर्मी में साया उड़ा है ।  
घोर बन्दी साया हुआ है घोर जब खरटे नर रूपा है ,  
किसान गहरी नीद में है सोत हुए ही बह फलल काटते हैं घोर

पह सोत हुए ही बरसामनो करते हैं , पिता सोया हुआ है, माँ  
घोर वन्ध सब साए पड़े हैं ! कोड़े मारने वाला सोया हुआ है घोर  
वह नी जा कोश का रूपा है !

कबल जार का घरखाना कभी भी नूपकी नहीं लता  
घोर अपने घरख क प्यान को कसकर पकड़े हुए,  
उत्तरी धूष क ऊपर अपना नास घोर काक्यास क ऊपर अपने  
घरण रख हुए हैं ।

घनन्त निद्रा में सोया पड़ा है हमारा देश, पबिन रूच ।  
'रूपया मुन्के माफ करना मुम्हें एसा भ्यादापूरा पत्र लिखन का  
दावना कि घनन्त में भी पाड़ा का मना

धीरे यद्यपि सोलोमिन ने काफ़ा देर पहिल हाथ मुँह धोकर कपड़े बदल लिए थे, पर उसका चेहरा भी म्लान और पीसा हो रहा था, उसके ऊपर के दाँत थोड़े-थोड़े पीख रहे थे वह भी कुछ कुछ निमित्त, उखड़ा उखड़ा सा—उतना ही जितना एक सुसन्तुलित स्वभाव का व्यक्ति लग सकता है,—लग रहा था।

तो मार्कलोव अपने पर समय नहीं रख सका, उसने कहना शुरू किया, 'इसके परिणाम घातक हो सकते हैं, सासतोर से उसके लिए और दूसरा के लिए भी।'

'मे बहाँ की स्थिति देखने जाना चाहता हूँ । नेग्मानोव ने कहा।

और मे भी', मरिमाना ने भी दरवाजे पर प्रगट हाते हुए कहा।

सोलोमिन धीरे से उसकी ओर घूमा।

'मैं तुम्हें जाने की सलाह नहीं दूँगा, मरिमाना। तुम अपने को छतरे में डाल सकती हो और हम सब का भी ध्यर्ष ही और बिल्कुल अनावश्यक रूप से। अगर वह चाहता ही है तो सिर्फ नेग्मानोव का स्थिति देखने के लिए, जाने दो और अगर वह भी न जाय, तो सबसे अच्छा!—लेकिन तुम क्या जायागी?'

'जब वह आयगा तो मैं यहाँ पीछे नहीं रहना चाहती।

'तुम उसका रास्त में वाधा पैदा कर दोगी।'

मरिमाना ने नेग्मानोव की ओर देखा। वह अचल खड़ा था, उसका चेहरा भी उदास और मूर्ति की तरह स्थिर था।

'लेकिन अगर वहाँ छतरा हुआ तो?' मरिमाना ने पूछा।

सोलोमिन मुन्कुराया।

'चिन्ता मत करो' जब छतरा आया, तो मैं तुम्हें जाने से नहीं रोकेगा।'

मरिमाना ने चुपचाप अपने सिर पर से रुमाल उतार लिया और बैठ गई।

तब सालामिन नेग्धानाव की धार उन्मुख हुआ।  
क्या तुम सचमुच जाना ही चाहते हो? अरा मेरी धार तो देखो,  
नहीं। इस सब में भ्रफनाना का प्रंश ज्यादा है। जय साषधान रूना,  
यद्यपि तुम्हारा साथ कोई न कोई जायगा। और जितना जल्दी ही सक  
यापस या जाना। यापदा करत हान? नेग्धानोव, वापदा करते  
हो न?

‘हाँ।

निश्चिन्त रूप से, हाँ?’

जब यहाँ सनी तुम्हारा कहना मानते हैं, मरिघाना और सनी—

तो

।

नेग्धानाव न्दक के साथ बिना नमस्ते किये ही वाहर चला गया।  
पलन भी उसके पीछे-पाछे सपका। उसके कूदा में सगी साह की कोलें  
सलते में गह कर रही या। ता क्या उनी का नेग्धानाव के साथ  
जाना या?

सालामिन मरिघाना के पास बैठ गया।

‘तुमने नेग्धानोव के अन्तिम शब्द सुने?’

हाँ मैं उसकी धय ता धापकी बात ज्यादा मानती हूँ, इससे वह  
नाराज है। प्रोर वास्तव में यह उही नी है। मैं उस प्रेम करती हूँ,  
लेकिन प्राता धापनी मानती हूँ। वह मरे लिए प्रियतम है ‘लेकिन  
धाय निकटतम।

सालामिन ने सजमता से उसका हाथ धपयपाया।

‘यह बड़ी ही दुसदायी बात है, उसने अन्त में कहा। अमर  
सने नाकमाव या हाथ है—या उस का खतम हो समझे फिर।’

मरिघाना काँप उठी।

‘खतम?’

‘हाँ’ वह कनी काइ कान धपूर मन से नहीं करता और न दूसरों  
सामने धपने को धिनायगा ही।

‘खतम?’ मरिघाना फिर पुन्कुदाई और उसके गाना पर धामुषों

को धारा वह बली । ओह, वासिली कैवोविच ! मुझे उसने लिए बहुत दुःख है । लेकिन वह विजयी क्यों नहीं हो सकता ? क्या जरूरी है कि वह सतम ही हो जाय ?

‘क्योंकि ऐसे विद्रोहों में पहल करने वाला शहीद हो जाता है, अगर सफल हो जाते हैं तो भी और इस काम में, जिसका संगठन यह कर रहा है न सिर्फ पहला, और दुसरा ही, लेकिन दसवाँ और बीसवाँ भी शहीद हो जाएगा ।’

‘तो फिर हम उसे देखने के लिए कभी जीवित नहीं रहेंगे ?’

‘तुम काहे का सपना देख रही हो ? कभी नहीं । अपनी भाँसों से हम इसे कभी नहीं देखेंगे इन जीवित भाँसों से । आत्मा से ! आत्मा की और बात है । उस तरह से तो उसे देख कर हम जरूर इस समय भी सम्बुद्ध हो सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं । इसके लिए कोई बाधा भी नहीं ।’

‘तो फिर आप सामोमिन—

‘क्या ?’

‘तो फिर आप भी उसी रास्ते पर कैसे चल रहे हैं ?’

‘क्योंकि कोई दूसरा रास्ता नहीं है, सही-सही कहा जाय, तो यही बात है । मेरा लक्ष्य भी वही है, जो मार्कोलोव का है, लेकिन हमारे रास्ते अलग अलग हैं ।’

‘बेचारा सर्वो मिहासोविच ! मरिआना ने दुखी स्वर में कहा ।

सोमोमिन ने फिर उसे स्नेह से पपपपाया ।

‘छोड़ो छोड़ो, अभी कुछ निश्चय नहीं है । देखो पबल क्या खबर जाता है । हमारे काम में बड़े साहस की जरूरत है । प्रियीजी कहावत है, “मृत्यु का नाम कभी मत लो ।” अश्वी कहावत है । स्विस्यों से अश्वी, “जब संकट आए तो दरवाजे चौपटा खोल दो ।” पहिस से दुःख करना व्यर्थ है ।

सोमोमिन उठ कर दड़ा हो गया ।

‘और मेरे लिए जो काम प्राप्त करना चाहते थे उसका क्या हुआ?’ मरिघाना एकाएक पूछ बैठी। ‘आसू भव भी उसके गालों पर घमक रहे थे, लेकिन उसकी आंखों में भव कुछ न था।’

सोनामिन फिर बैठ गया।

‘क्या तुम सचमुच इतनी जल्दी यहाँ से जाना चाहती हो?’

‘मोह ऐसी बात नहीं है। लेकिन मैं कुछ उपयोगी होना चाहती हूँ।’

‘मरिघाना तुम यहाँ भी बहुत उपयोगी हो। हमें छोड़ो मत, थोड़ा धीरे प्रतीक्षा करो। ‘क्या बात है?’ सोनामिन ने तात्याना की ओर देखते हुए पूछा जो अभी भीतर भाई थी।

‘कोई स्त्री जात की बीज प्रलेपनी विमिश्रित को पूछ रही है’, तात्याना ने हँसते हुए धीरे मुँह बनाते हुए कहा। ‘मैंने उससे साक्ष्य कहा कि वह यहाँ नहीं है विन्कून नहीं है और हम ऐसे किसी भावना को जानते भी नहीं। लेकिन वह तो—’

‘कौन है वह?’

‘उसने इस पर्चे पर अपना नाम लिखा दिया है और वासी, कि मैं इस से जागरूक दिखाना, यह मुझे भीतर बुना लगा, और अगर प्रलेपनी विमिश्रित सचमुच ही इस समय पर पर नहीं है, तो वह उसका इन्तजार कर सकती है।’

पर्चे पर बड़े अक्षरों में लिखा था, ‘मगुरिना।’

‘उस भीतर ज भावों’ सोनामिन ने कहा। ‘अगर वह यहाँ आती है, तो, तुम पुरा तो नहीं मानागे मरिघाना? वह भी हम में से ही है।’

‘विन्कून नहीं।’

थोड़ा दूर में ही मगुरिना फनर के दरवाजे पर दिखाई पड़ी, उसी पार्श्व में जिसमें हमने उसे पहिले अन्वेष के भारन्त में देखा था।



## इकतीस

‘क्या नेग्मानोव घर पर नहीं हैं?’ उसने पूछा, और तब सोलोमिन को वहाँ देख कर, वह उसके पास गई और उसे अपना हाथ देती हुई बोली ‘कैसे हो सोलोमिन?’ मरिभाना पर उसने सिर्फ एक तिरछी उड़ती नजर डाली।

‘वह जल्दी ही लौटकर आजायगा,’ सोलोमिन ने उत्तर दिया। लेकिन पहिले यह तो बताओ कि तुम्हें यह कैसे पता लगा कि वह यहाँ है - - ?’

‘मार्केलोव से। हालाँकि शहर में दो-तीन आदमी पहिले से ही जानते हैं।’

‘सच?’

‘हाँ। किसी ने बात फैला दी है। और फिर लोग यह भी कहते हैं कि नेग्मानोव खुद ही पहचान लिया गया है।’

‘यह सब स्वांग याही बेकार गया। सोलोमिन बुदबुदाया। उसने सस्वर कहा, ‘आओ म तुम दोनों का परिचय कराऊँ, कुमारी सिनत्स्की, कुमारी मशुरिना। बैठ जाओ!’

मधुरिना अनियादन सूचन में थोड़ा मुझी धीर बैठ गई।  
न नम्रग्यानान के लिए एक लस नाई थी और सोमोमिन तुम्हारे

लिए एक पुवानी सन्देश।

कैसा सन्देश ? किसका ?

'एक व्यक्ति का तुम जानते हो उसे -- तुम्हारे यहाँ कैसी स्थिति है ? -- क्या सब तैयार है ?

'कुछ भी तैयार नहीं है।

मधुरिना अपनी छोटी पाँखें जितना हो सकती थी उतनी फाड़ कर दखने लगी।

'कुछ भी नहीं ?

'कुछ भी नहीं।

तुम्हारा मनलव है, विल्कुल कुछ नहीं ?

विल्कुल भी कुछ नहीं।

क्या यही मुझ जाकर उधर देना है ?

विल्कुल नहीं उसका दना है।

मधुरिना थोड़ी देर साबती रही तब उसने अपनी जेब से एक सिगरेट निकाली।

'भाषित वे सकत हा जरा नुम्हे ?

'यह सो।

मधुरिना ने सिगरेट जलाई।

'उन्हें तो कुछ धीर हा पाया थी विल्कुल इससे मित्र,' उसने कहना धारमन किया। 'धीर धारों धीर तैयारी हो रही है, धीर तुम पुप बैठे हो। और यह तुम्हारा मानना है, तुम जानो। मैं यहाँ देर तक इकट्ठे न किए नहीं पाई है। मुझ सिर्फ नेग्यानोव से मिलना है धीर से एक पत्र देना है।

तुम कहाँ जा रहा हो ?

आह, यहाँ से बहुत दूर।



वह घास्त्व में जिनेवा जा रही थी, लेकिन उसने सोलोमिन को बताने की जरूरत नहीं समझी। उसने उसे पूरी तरह से बिस्वासीय न समझा, और फिर एक 'वाहिरी' व्यक्ति भी वहाँ बैठा था। मधुरिना जो जर्मन का एक शब्द भी नहीं जानती थी, एक व्यक्ति को, जिसे वह बिल्कुम भी नहीं जानती थी, दूरी का एक टुकड़ा देने के लिए, जिस पर ग्रैगुर की एक बेल चित्रित थी और दो सौ उनहत्तर खान देने के लिए, जिनेवा भेजी जा रही थी।

'ग्रोस्त्रोदुमोव कहाँ है? क्या वह तुम्हारे साथ है?'

'नहीं। वह यहीं पास पास है' वह रास्ते में कहीं रुक गया है। लेकिन वह जरूरत पड़ते ही भाजायगा। पिमेन ठीक है। उसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं।'

'तुम यहाँ कैसे आईं?'

'गाड़ी में घीर कैसे आती? मुझे जरा दूसरी दियासलाई दो' सोलोमिन ने उसे एक दूसरी दियासलाई बजाकर दी।

'वासिसी फ़ैदोविच!' एकाएक दरवाजे पर सफ़ियो ने घीमी आवाज में पुकारा। 'कृपया इधर आइए।'

'कौन है? क्या चाहिए?'

'कृपया इधर आइए,' आवाज ने आग्रहपूर्ण स्वर में दुहराया। 'कुछ मज्जीय मजदूर आये हैं और उन्होंने मज्जीय बकवक लगा रखी है और पबल यगारिष भी यहाँ हैं नहीं।'

सोलोमिन उठ कर बाहर गया।

मधुरिना मरिमाना की मोर एकटक देखने लगी और इतनी देर तक देखती रही कि मरिमाना घबरा उठी।

'नाफ़ करना,' उसने एकाएक कर्कश दखे स्वर में कहा, 'मैं जय बड़ी उजड़ स्वभाव की हूँ मैं नहीं जानती कि बात कैसे करनी चाहिए। नायज मत हाना और अगर न चाही तो मेरी बात का उत्तर

भी मत देना । क्या तुम्हें वह लड़की हो जो सिप्पागिन के यहाँ से मागी थी ?

मरिमाना कुछ सरूपका सी गई और अनिश्चय ही फिर भी उसने उत्तर दिया, 'हाँ ।'

'नेज्जानोव क साय ?

'हाँ ।'

'अगर तुम्हारी इच्छा हो तो मुझे अपना हाथ दो । माफ करना मुझे, कृपया । तुम जरूर अच्छी होगी क्योंकि वह तुम्हें प्रेम करता है । मरिमाना ने उसका हाथ दयाया ।

तुम नेज्जानोव को खूब अच्छी तरह जानती हो ?

'हाँ, जानती हूँ । मैं पीटसवर्ग में उससे मिला करती थी । इसीलिये तो मैंने यह सब कहा । सर्जी मिहालोविच ने भी मुझे बताया था ।'

'ओह माकॅलोव ! तुम उससे अपनी बल्बी हो मिली थी ?

'हाँ । अब वह चला गया ।

'कहाँ ?

'जहाँ का आदेश दिया गया ।

मरिमाना ने निस्वास नहीं ।

आह, कुमारी मधुरिना मैं उसक लिये डरती हूँ ।

'पहली बात तो यह कि, मैं "कुमारी" नहीं हूँ । तुम्हें यह सब धारतें छोड़नी होंगी । और, दूसरी बात यह कि -- तुमसे अभी कहा, तुम उसक लिये डरती हो । यह सब तो नहीं बसगा । तुम्हें अपने लिये भी नहीं डरना होगा और दूसरा क मिए भी नहीं । यद्यपि मेरे लिए यह आसान है, तभी बात करना । मैं बंदसूरत हूँ । लेकिन तुम तुम विश्चय ही चौन्दर की प्रतिमूर्ति हो । इससे यह सब तुम्हारे लिए और ही अजि है । ( मरिमाना नीचे की ओर देखने सभी धार छोड़ा दूसरी ओर घूम गई । ) 'सर्जी मिहालोविच ने मुझ कहा था उस मानूस था कि मुझे नेज्जानोव का एक पत्र देने जाना है ।'

“कारखाने मत जाना” उसने मुन्से कहा “पत्र मत ले जाना, इससे वहाँ सब कुछ मड़वड़ हो जावगा। वहाँ से दूर रहना। वे दोनों वहाँ सुखी हैं उन्हें सुखी रहने दो। उनके बीच में विष्म मत बनो!”  
 में विष्म न बनने में खुश होती मेडिन इस पत्र का क्या करे ?

‘तुम इसे जरूर दो,’ माँ आना न जोर देते हुए कहा। ‘लेकिन मोह, वह कितने कृपानु है, सर्जो मिहालोविच ! क्या हो सकता है कि वह मारे जायँ, मधुरिना - या सापबेरिया भेज दिय जाँ ?’

‘तो क्या ? क्या लोम सापबेरिया से वापस नहीं आते ? और रही मुत्सु की बात ! जीवन किसी के लिए मधुर है या किसी लिए कष्ट, दुखदाई। उसका जीवन भी साफ की हुई चीनी का नहीं बना है।’

मधुरिना ने फिर मरिआना पर एक उत्सुक और जिज्ञासु दृष्टि डाली।

‘हाँ, तुम निश्चय ही सुन्दर हो’, उसने जिस्साया, ‘एक सुन्दर नन्हीं चिड़िया ! मैं देखती हूँ कि धलैकसी के घाने में अभी धर है वह खस तुम्हें क्यों न दे दू ? इन्तजार क्या करू ?’

‘हाँ मैं उस दे दू गी, तुम विश्वास करो।’  
 मधुरिना ने अपने हाथों पर अपने गाल टिकाये और वही देर तक चुप बैठी रही।

‘मुझे साफ-साफ बताओ’, उसने कहना शुरू किया ‘माफ करना क्या तुम सचमुच उसे बहुत प्यार करती हो ?’

‘हाँ।’  
 मधुरिना ने अपना भारी भरकम सिर झुकाया।

तो, वह तुम्हें प्रेम करता है, भव इसकें पृथने की जरूरत नहीं। मैं जा रही हूँ, नहीं तो मुझे बहुत देर हो जावगा। तुम उससे कह दना में यहाँ आई थी उस मरी भलाई बना। कहना मधुरिना आई थी। तुम मरा नाम तो नहा भुसागो न ? नहीं न मधुरिना। और सब जरा ठहरो, मन कहाँ रख दिया उस ?

मगुरिना कड़ी हुई, एक धार हूमी, जैसा मैं सत बूड़ने का सहाना  
 रती सी, लेकिन इसी वीष उमने एक छाटे स मुड़े हुए कागज को  
 पने मुँह में रख लिया और उसे निगल गई। 'आह गजब हो गया।  
 सी श्रुतवा हुई! वहीं मैंने तो तो नहीं दिया उस? सचमुच खो  
 ना। जैसा दुर्भाग्य है! गजब हो गया। धपर उसे कोई पा गया  
 !! नहीं, यहाँ तो कही नहीं है। ता आखिर नहीं हुआ, जा  
 र्जी मिहासोविच ने चाहा था।

फिर देखो, मरिघाना ने प्लसप्लसामा।

मगुरिना ने निराशासूचन में अपने हाथ हिलाए।

'नहा! क्या फायदा है? वह तो खो गया अब।

मरिघाना उसके पास गई।

अच्छा तो, मरा धूम्यन सो।'

मगुरिना ने एकाएक मरिघाना का अपनी बाहों में भर लिया और  
 उसे एक स्त्री की पच्छि स अधिका पच्छि स उस अपने सीने पर बीच  
 सया।

'मने यह और किसी के लिए नहीं किया होता, उसने भर स्वर  
 स कहा, यह मेरी आत्मा के विरुद्ध है - यह पहला अवसर है।  
 उससे कह दना जरा धार सायभान रह - और तुम भी सावधान  
 रूना। ध्यान रखना। यह आह भी तुम्हारे लिए अब जल्दी ही सफ्ट  
 प्रस्त हा जायगा, बहुत संकट प्रस्त। यहाँ स। नकल जाना, तुम शाना  
 ही, जब तक अच्छा, नमस्त।' उसने मुझर तब स्वर स कहा।  
 लेकिन एक और भी बात है - उससे कह दना - - नहीं कोई  
 जरूरत नहीं इससे कोई फायदा नहीं।

मगुरिना दरवाजा का जोर स बन्द करती, हुई बाहर चली गई,  
 और मरिघाना कमर के वीष में झकेला खड़ी रह गई, साबती हुई।

'क्या मतलब है इस सबका?' अन्ततः उसने कहा, यह स्त्री उस  
 मुझसे ज्यादा प्रेम करती है। और उससे संकटा स क्या मतलब है?

और सोलोमिन इतना यकाएक यहाँ से क्या घसा गया और अभी तक वापस भी नहीं आया ?

वह इधर उधर टहलने लगी। एक मजीब अनुभूति—त्रास, भय और भुँम्साहट और भौचक्यकेपन—के मिल-जुले प्रभाव ने उसे अभिसूत कर दिया। यह नेज्जानोव के साथ क्या नहीं गई? सोलोमिन ने उसे रोक लिया और अथ खुद न जाने कहाँ है? और उसके चारों तरफ बाहर क्या कुछ हो रहा है? मगुरिना ने निश्चय ही वह प्राणान्त्रक पत्र नेज्जानोव के प्रति सहानुभूति के कारण ही नहीं दिया लेकिन वह अनुयायन हीनता का ऐसा गम्भीर अपराध कर कैसे सकी? क्या वह अपनी उदारशीलता दिखाना चाहती थी? उसे इसका क्या अधिकार था? और वही क्या उसके इस कार्य से इतना अधिक प्रभावित हुई? और क्या संभव है वह इसका प्रभावित हुई? एक बदपूरत औरत एक नीजवान के प्रति भावपित हुई आखिर इसमें विधय यात क्या है? और मगुरिना ने यह कैसे सोच लिया कि उसके कर्तव्य की अपेक्षा नेज्जानोव के प्रति मरिभाना का प्रेम अधिक महत्व का है, अधिक वकिशाली है? जायद मरिभाना न ऐसे त्याग की कभी कामना नहीं की थी। और उस क्षण में क्या हो सकता है! तुरन्त अमल के लिए आह्वान? तो फिर?

‘और मार्कोसाव? वह संकट में है और क्या हम उसके लिए कुछ कर रहे हैं? उसने अपने से पूछा। ‘मार्कोसा। हून दोना को बचाना चाहता है, हमको मुसी होने का एक अन्सर दे रहा है, चाहता है हम चलन न हा यह सब क्या है? उदारशीलता या तिरस्कार?’

‘और क्या हम उस घुणित मकान से इसीलिए भागे थे कि हम साथ साथ रहें कबूतरा की तरह साथ मारते फिर और गुडरगू-गुडरगू करते रहें?’

उस थे मरिभाना के विचार और उसके इन विचारा में उसी

उत्तमिष्ठ भुङ्क्ताहट का जोरदार हाथ था। और फिर उसके प्रहम् का  
 से नी आयात पतुंषा था। मरा सभी ने उस प्रकसा छोड़ दिया—  
 सभी ने ?

इस 'भाटी' औरत ने उसे पुन्हर कहा, एक नन्हीं चिडिया  
 पुडिया क्या नहीं कह दिया ? और नग्धानोव प्रकसा क्यों नहीं गया,  
 पयेल क ताव क्या गया ? जैसे उसकी देखनाल करने क लिए पिंती की  
 जरूरत हो ? और प्राखरकार इस मोलानिन को विचारपारा क्या है,  
 वास्तव म ? यह अन्तिफागी से नहा है, विल्कुल नी नहीं। और क्या  
 यह सम्भव है कि मोगा ने यह माचा हा कि मैं अन्ति क प्रति गम्भीर  
 नहीं पी ?

एम ये विचार जो मरिमाना के उत्तमिष्ठ मस्तिष्क में एक क बाद  
 एक एक दूसरे से उलभे हुए तूफान की तरह, एन दूसरे का पीछा कर  
 रहे थे। अन्तत वह अपने छोटा को नीचकर आदमी की तरह अपने  
 सीन पर हाथ बांधकर, सिद्धकी क पास कुर्सी पर सतर भ्रमल, चौकशी  
 जैसे फिती नी लख उठ खड़ी हागी और सोच में डूबो ली बैठ गई।  
 सात्याना क पास जाकर वह काम नहीं करना चाहती थी वह सिर्फ  
 एक काम करना चाहती थी—सिर्फ प्रतीक्षा ! और यह श्यमता और  
 भुङ्क्ताहट नरी अनुसाहट से प्रतीक्षा परती रही। कभी-कभी उस  
 अपने मूँ स्वयं ही बड़ा अजीब सा लगता समझने में न धान  
 योग्य। तन्नि दसम कोई अन्तर नहीं पडा। एक बार उसके मन में  
 यह नी भाव उठा कि कहीं उसके इन भावा क मूल में ईर्ष्या की  
 नावना ता नहा है। तन्नि नभुरिना की मूरत याद करके, उसने सिर्फ  
 अपने अंधे मिचनान और हाथ का तन्किल करत हुए उस विचार का  
 अपने मन से निहास दिया।

मरिमाना को काफी दर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। आखिर उसने  
 दो प्रान्मिया क सीढ़ी पर चढ़ने की पदचाप मुनी। उसने दरवाजे की  
 ओर प्राने फरा पदचाप नञ्गीक प्राती गई। दरवाजा खुला और

पवेल के हाथों का सहारा लिए हुए दरवाजे पर नेम्बानोव दिखाई पड़ा। वह मरणात्मक रूप से पीला पड़ गया था। सिर स टोपी गायब थी। उसके बास बिखरे हुए थे। उसकी आँखें ठीक सामने की ओर स्थिर दृष्टि से देख रही थी, पर किसी को देख नहीं पा रही थीं। पवेल उस कमरे में साया (नेम्बानोव के पैर लटकड़ा रहूँ) और उसे सोफा पर लिटा दिया।

मरिभाना उधल पड़ी।

‘यह क्या हुआ ? क्या हुआ उसे ? क्या बीमार है ?’

पवेल ने नेम्बानोव को लिटाते समय अपने कंधे पर से मुड़कर देखते हुए मुस्करा कर उत्तर दिया।

‘भाप चिंता न करें, जल्दी ही ठीक हो जायगा यह सब घादत न होने के कारण हुआ है।’

‘लेकिन हुआ क्या है ?’ मरिभाना न जोर देकर व्यग्रता से पूछा।

‘वह थोड़ा बेहोश हो गया है, और कुछ नहीं। सासी पेट धराब पीने के कारण, वस।’

मरिभाना नेम्बानोव के पास गई। यह सोफे पर लेटा था, उसका सिर उसके सीने पर झुका हुआ था, उसकी आँखें धीरे धीरे स्थिर थीं—उसके मुँह से धराब की हवा आ रही थी, और नखों में बेहोश था।

‘प्रसैकसी !’ मरिभाना के होंठों से निकला।

उसने बड़े प्रयत्न से अपनी बोम्बिल पलकों को उठाया और मुस्कराने की कागिदा की।

‘साह ! मरिभाना ! यह हकलाया ‘तुम हमारा फहा करती थीं—स—मानीकरण, अब देखो, अब मैं सचमुच सबक समान हो गया हूँ। क्योंकि बनता दुमेदा पीती है, सा—’

उसका स्वर टूट गया, फिर कुछ प्रस्पष्ट सा बुन्दुदाया घाँस बंद  
 ही धीरे से गया। पवेल ने सोफे पर उसे ठीक से सुना दिया।

‘बिना मत करा, मरिघाना बिकल्पवना’ उसने बूहराया, वह कुछ  
 टि सोभेगा और फिर बिल्कुल ताजा हाफर जगेगा।’

मरिघाना पूछने ही जा रही थी कि यह सब कैसे हुआ, लेकिन  
 उसका प्रश्न पवेल को रोक में, और वह झकेली रहना चाहती थी  
 क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि पवेल उसके सामने ही नेग्मानोव को  
 ऐसी स्थिति में देखे। वह खिड़की की ओर घूम गई, जबकि पवेल  
 ने स्थिति को देखकर सामयानी से उसके सम्बन्ध कोट के घायर से  
 उसके पैर ठक दिये, एक तकिया उसके सिर के नीचे तमा दिया एक  
 क्षण फिर बुन्दुदाया, ‘कुछ भी नहीं हुआ है।’ और पजे क बल वाहर  
 बला गया।

मरिघाना ने घूम कर देखा। नेग्मानोव का सिर तकिया में धँस गया  
 था। उसके सफेद शहर पर एक शबल स्वरता ब्याप्त थी एसी जैसी  
 किसी मरणान्तक रागी के शहरे पर हाठी है।

‘यह सब कैसे हुआ / मरिघाना सोचने लगी।’





## बत्तीस

यह सब ऐसे हुआ कि पबेल फ सग माड़ी में  
वैठे ही नेज्मानोव' एकाएक तीस जोष  
से भर उठा, और जैसे ही माड़ी कारखाने के  
पेरे से बाहर निकल कर सड़क पर 'ट' घर  
की ओर बल पड़ी कि नेज्मानोव राह बसखे  
किसाना को रोक कर उन्हें सम्बोधित करता  
हुआ, छोटे छोटे असंगत वाक्यां में चिड़ाने  
लगा? ए, तुम तो सो रह हो? उठो! बक  
भागया है! टैक्स का नाउ हो! जमींदार का  
नाउ हो।' कुछ किसान आश्चर्य से उसकी  
भार देखते कुछ मनमुनी कर मपना रास्ता  
लते—ब उते पीना हुआ समझते, एक ने ता  
अपन घर पहुच कर यही तक कहा कि उते  
रास्ते में एन फ्रान्सीसी मिला था जा न जाने  
क्या अजबसुल बक रहा था कि कुछ समझ में  
नहीं आया! नेज्मानोव जानता था और  
समझता भी था कि यह कैसी-कैसी अनर्गम  
अनबलूख और मूखता पूर्ण बातें बक रहा है,  
सेकिन धीरे-धीरे उसने अपनी मान्दिर स्थिति  
का एसा कर लिया था कि यह यही नहीं

अनुभव कर रहा था कि क्या कहने काय्य धार क्या नहीं। पबेन न उसे  
 शान्त करने की कोशिश की, उम्र टाका नी कि इस तरह विज्ञान रहना  
 बेकार है कि जल्दी ही 'ट' गहर की सीमा पर पहिल बड़े गाँव 'नासब'  
 टिग' में व लाग जल्दी ही पहुँच जायेंगे वहाँ व चारों भाता का पता  
 लगा सकते हैं। मन्दिन नेग्मानोब ने उम्रकी एक न मुनी और  
 उमाता यह कि उसका बहुत मादबर्जनक रूप उ उमास और दुखी  
 था, लपनग निराशा स बनान्त। उनका थोडा मान मडोल और ठगड़ा  
 था उसकी नीर सा गहन क बाल छूटे हुए थे। व, गदन का ताने  
 अपनी लगाम का घागे की भार ढटटना मगला शाना टोंगा को घाग  
 सोना उनाइ कर फरता एम तब म शोड़ा जा रहा था तैन मानों यह  
 उन महत्त्वपूर्ण शक्ति का पन्नास्वल पर न जान की जल्दी में था।  
 'लावेन्सिया' गाँव स बाहर हा नग्मानाब ने एक युने खलिहान में  
 घाठ किचाना का बैश प्रावस म बाँध करते देखा। यह तुरन्त गाड़ी में  
 स बाहर उधन पड़ा और विज्ञाना हुआ और ऊपर का हाथ हिसाता  
 हुआ उनकी धार दोड़ा। उसकी प्रत्यट नफसुरी विसाहट में स,  
 'प्राजादी'। घागे बड़ो। कन्वे स कम्पा मितारर।' स्वट मुताई पड़  
 रहे थे। विज्ञान जा निन्दान म यह निश्चय करने क लिए जमा हुए  
 थे, कि खतो का प्रनात्र स क्षेत्र मरा जाय नन ही ऊपर स दिशाव नर  
 क लिए ही चही (वह सबकी सामूहिक खषा थी और खानो पड़ी था),  
 नेग्मानोब का धार चौक कर दखन तगे लगता था तैस उसकी चीखा  
 को ध्यान स मुन रहे थे। लकिन उनका समक में घायद ही कुछ भा  
 रहा था, क्योंकि जब यह उनक पाव स— 'प्राजादी' चिन्ताता हुआ  
 निरना, तो उनस एक न जा रायद उनमें तबस ज्यान सप्तत था  
 हवा में तम्नीर विचार शीलता की मयिमा स सिर हिलाया और  
 टिप्पणी की, 'क्या यह नबंकर बातें नहीं हैं। एक दूसर ने कहा 'काई  
 क्शन लाता है। तिस पर पहिल बाल किचान न कहा 'निश्चय ही—  
 मान-सा ही यह प्रपन गन का नहीं छड़ना। प्राजकत व हने हमार  
 पैसा क बदन में यही ता दत है।' नग्मानाब न, जब वह सौट कर

गाड़ी में घाबर पवस की बगल में बैठा तो स्वयं अपने बारे में सोचा, 'या खुदा ! कैसी बय्य सूखता है ! हममें से कोई भी जनता को आन्दोलित करना नहीं जानता—क्या ऐसी ही बात नहीं है ?' और, अब सोच विचार का समय नहीं है । बस, भागे बढ़ते जाओ ! तुम्हारे दिन में बर्द होता है ? तो होने दो ।

ब साग गाँव की सड़क पर हाकर जा रहे थे । एक शराबखाने के सामने किसानों की काफी भीड़ जमा थी । पवस ने नेज्मानोव को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वह गाड़ी में से कूद पड़ा और जार से चिल्लाते हुए 'भाइयो ! यह भीड़ के बीच में पहुँच गया भीड़ ने उसके लिए रास्ता फर दिया और उनके बीच में खड़ा होकर उसने बिना किसी की और देखे उपदेश देना शुरू कर दिया, एस भायुक ओश में एक सगसा था, जैसे वह रो रहा है ।

लेकिन यहाँ उसका जो परिणाम निकला वह बिल्कुल ही भिन्न था । एक नहीम सहीम दाढ़ी बिहान किन्तु भयानक मुख वाला भादमी, छोटा शीफ्ट कोट, ऊँचे बूते और भेड की साज की टोपी पहिने, नेज्मानोव के पास गया और उसके कंधा को पूरी शक्ति से थपकत हुए उसने कहा 'धानाज ! तुम बड़े धानदार भादमी हो । और गरबतों भावाज में कहा पर षोडा रुको ! क्या तुम नहीं जानते कि सूखे शब्द मुँह का बनते हैं ? इधर भाओ ! यहाँ क्या बात करना ! यह नेज्मानोव को होटल के भीतर खींच ले गया सारी भीड़ भी उनके पीछे पीछे भीतर घुस पड़ी । 'मिहेइइ !' दानव सा वह अचान गुराया, 'जल्दी करो ! उठो दो गिलास लाओ ! जल्दी ! मेरी अपनी प्यारी शराब । मैं अपने एक मित्र को दावत दे रहा हूँ । यह कौन है, उसका यश क्या है और यह फर्हा स भाया है, खुदा जान जो भी हो, लेकिन वह इन प्रमीरा पर दिन खोलकर बरस रहा है । 'सो पीओ ! उसने नेज्मानोव की ओर घूमते हुए और एक भरत हुआ गिलास जिसका भ्रम बाहर गिर रहा था, उसे देते हुए कहा, पीओ—मगर तुम्हारे

हृदय में हम जैसे लोगों के प्रति जरा भी मगाव है ! 'बढ़ामो !' सब एक साथ कहा । नेग्मानोव ने गिलास को कसकर पकड़ लिया (वह एक प्रकार के स्वप्नलोक में पहुँच गया था), और चित्लाया 'तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये जवानो !' और उसने एक सौंसे में सारा गिलास, उसने हताश वीरता के प्रामेय में जिसमें वह अपने को गालिया की बोझ में भँक सकता था चाली कर दिया । - लेकिन उसके अन्दर क्या हो रहा था ? कोई चीज उसकी रोड़ में होकर पैरों तक बछीं सी चीरती चली गई और उसका गला चीना और पेट जलने लगा, घाँसा से माँसुषां की धार बह गई । - एक प्रकार की खुमारी ने उसे अकथ कर दिया । उस मतली सी घाने लगी । वह धड़ी मुदिन्न से अपने को संभाल पा रहा था वह अपने पूरे और स चित्लान लगा । वह अपने मस्तिष्क में होने वाले उद्वेजन को दवाने की भरसक कोशिश कर रहा था । दरारखान का अंधरा कमरा जैसा एकाएक गर्म हो गया था, लोगो की भीड़ से उसकी हवा में उमक नर उठी थी । नेग्मानोव धोसन लगा अंतहीन ज्वल-ज्वल चित्लाता हुआ यह गुस्ता और निराशा से, अपने हाथो को हवा में हिमाता सामने लड़े सागा की बाढ़िया को घूमता । पानव जैसे सहीम गहीम नौजवान का भी उसने घूमा । उसने भी नेग्मानोव को घूमा, और उस इतनी जोर से अपनी बाहा में भींचा कि उसको हड्डियां चरचरा उठीं । और उसने अपनी दानवी वर्चरता का प्रदर्शन भी कर दिया । 'मैं उसकी गदन मरोड़ दूँगा !' वह गुर्गाया, मैं उसकी गर्दन मरोड़ दूँगा ! अगर किसी ने मरे मित्र की धार घाँस उठाई ! और नहीं तो मैं उसका भेजा निकाल दूँगा मैं उसकी धोख निकाल दूँगा ! मैं इत पर तुला हुआ हूँ, जानते हो मैं कसाद रहा हूँ ! ऐसे कामो में भर हाथ बड़ माहिर हूँ !' और उसने अपना भाड़ा पूँसा हवा में चाला और तब, क्या मनाल था किसी की ! फिर चित्ला म आबाय लगाई, पोपो !' और नेग्मानोव फिर उस पडुए जहर को एक सौंसे में गटव गया, सकिन्न इस दूतरी बार ! बढ़ा भवानक था फट कर । एसा लगता था जैसे

मोषरे घाँकते अन्दर ही अन्दर उसे फाँड़े डाल रहे हैं। उसका सिर बस रहा था, उसकी घाँसों के सामने हरे गोले मयकंर रूप से चक्कर काट रहे थे और उसके कान गुँजने लगे थे। आह मयानक ! फिर एक तीसरा गिलास क्या यह संभव था कि वह उसने खाली कर दिया हो ? अनेक नीली नाके चारों ओर से उस पर झुकी सी दीख रही थीं। उत्सुक भीड़ व्यथ हो उठी, लोगों के सिर उसकी ओर झुक गये पीछे से गर्दन उचका उचका कर लोग उसे देख रहे थे, खुरदुरे उजड़ हाथा ने उस पकड़ लिया। 'बड़े चलो', गुँजती हुई कई आवाजा ने कहा। और वोलो ! कम भी एक इसी तरह का अजनबी आया था, वह भी ऐसी ही बात करता था। बढ़ाये चलो और वोलते चलो ! 'नेज्दानोब को अपने पैरों के नीचे की परती घूमती हुई सी मगी। उसे अपना ही स्वर अजीब सा लग रहा था, जैसे वह बहुत दूर से आ रहा हो। क्या यह मृत्यु थी, या कुछ और।

आर यकाएक उसक चहरे की भंगिमा कुछ अजीब सी हुई,—ठाजी हवा का एक झटका सा उसने अपने चेहरे पर महसूस किया और फिर सब शान्त हो गया, सास चहरे, घराव की तीव्र गध, मेड़ की खालें, चमड़े सब कुछ गायब हो गया। घाँसों के आगे घुर्छल का सा दृष्टा गया। ~ और वह फिर पवत के साथ गाड़ी पर बैठा था। पहले तो वह अज्ञान और चिन्ताया, 'ठहरो ! कहाँ से जा रहे हो ? मुझे उन्हें समझने का तो कुछ बक्त मिला ही नहीं' और तब उसने जोड़ा—'तुम स्वयं, तुम मूर्ख' छद्मवदमाश, घैतान, तुम्हारे क्या विचार हैं ? इस पर पवेल ने उत्तर दिया 'बड़ा अच्छा होगा अगर अभीर और अभीदार न रहें और सारी जमीन पर हमारा अधिकार हो जाय—इससे और अच्छा क्या होगा ? लेकिन अभी ऐसा संभव कहाँ है, और उसने बाढ़ा की रास मोड़ी, एक झटका दिया, खीचा और घोड़ा सरपट दीड़ने लगा, उस भीड़ के घोरगुल से दूर 'कारखाने की ओर।

नेग्मानोव गाड़ी क हिचकोला से इधर उभर झोकें ल रहा पा घोर  
उसे भयभीती सी घाने लगी थी। मीठी हवा मधुरता से उसक चहरे को  
रूपक रही थी घोर दुखदाई कसान्ध विचारा को पीछे रोके हुए थी।

वह नाराज घोर कुम्भंभाया हुआ पा कि उस अपन विचारों को  
पूरा तरह स सागा को समझने का प्रवसर नहीं दिया गया।  
सकिन् हवा ने फिर उसके उत्तेजित चेहरे का शान्त किया।

घोर तब मरिघाना की घुर्छेली सी धमन एक क्षण को उसके  
सामने धामई, उसका मन कट्ट तलसी भरे अपमान स जल उठा  
घोर "तब नी" भारी मृत्यु जैसी नीर ने उस घेर लिया।

यह सब वाद स पबल ने सालोमिन को बसाया। उसने सोलामिन  
स यह नहीं छुपाया कि उसने नेग्मानोव को पीने स नहीं राका पा  
घोर वह रोक भी नहीं सक्त था। दूसरे लोग उस वहाँ स जाने ना  
नहीं देते।

सकिन् जब वह खून घराध पीकर बहोष सा हाने लगा ता मैने  
घनेक बार उनक सामने कुच्छर उनसे प्रापना की मले मानुसा" मैने  
कहा इस विचार लइके को प्रव जान बा, देखो न यह भी कितना  
कच्चा उग्र पा है ' और उन्हाने उस घान दिया। 'सिर्फ हमें इस  
जाने देने के लिए घापा खज दे जाभा, उन्हाने कहा। सो मैने उह  
दे दिया।

'बहुत ठीक किया,' सालामिन न सहमसि प्रकट करते हुए कहा।

नेग्मानोव साता रहा घोर मरिघाना सिइकी पर बैठी बाहर  
छोटे स पर को घोर शून्य में ताकता रही घोर प्रादपर्य है कि नेग्मानाव  
क घाने स पहिल जा अपघण लगनग घैतानी भावनाएँ उसक  
मन में उठ रही पा, वह सय की सब एकदम स तिरोहित हो गई,  
ग्मानाव क प्रति उसक मन में श्रेष, कु नलाहट या पूरा की नावना  
हो थी, वरन् उस पर दया घा रही थी। वह पूव प्रकट सख्त जानती  
कि यह न तो बसती है घोर न उरवा घोर बैठी सोच रही थी

कि जब वह जगे तो वह उससे क्या कहे कुछ स्नेहपूर्णा, कि वह कुछ और सज्जा का अनुभव न करे। 'मुझे कुछ इस बंग से उससे बात करनी चाहिए कि वह अपने आप सब कुछ बता दे, कि यह सब कैसे हुआ।'

वह उद्विग्न नहीं थी, लेकिन दुखी थी—अत्यधिक दुखी। यह कुछ ऐसा था जैसे—जिस संसार में पहुँचने के लिए वह सघप कर रही थी, उसकी हवा का झंका उस पर से होकर प्रवाहित हो गया हो—और वह अपने इस निराशापूर्णा भावा पर काँप उठी। कैसी बिडम्बना थी? वह कौन सी वस्तु थी जिसके लिए यह अपना बलिदान करने आ रही थी?

लेकिन नहीं! यह नहीं हा सकता। यह कोई सास बात नहीं, यह तो हो ही गया किसी तरह और जल्दी ही सब ठीक हो जायगा।

यह एक क्षणिक प्रभाव था जिसने उसका सिर्फ इसलिए प्रभावित किया था क्योंकि इस सब की उसे आशा नहीं थी। वह उठ बैठी, सोफे के पास गई, जिस पर नेज्जानोव लटा था, और उसने उसकी पीली पलका पर, जो पीड़ा के कारण नींद में भी सिक्की हुई थी, स्नात फेरा और उसके बालों को मुह पर से हटा कर पीछे की धार किया।

फिर वह उसके लिए दुखी हो उठी वैसी ही दुखी जैसे एक माँ अपने बीमार बच्चे के प्रति दुखी हो उठती है। लेकिन इससे उसकी और देखने में उसका दिख दुखने सा, और वह आहिस्ता से अपने कमरे में चली गई और दरवाजे को आधा खुला छोड़ गई।

कमरे में जाकर वह बिचारा में खार निष्क्रिय बैठ गई। वह अनुभव कर रही थी कि समय बीतता जा रहा है, मिनट के बाद मिनट उड़ता जा रहा है और ऐसा अनुभव करना निरिपक्ष रूप से उस मधुर नप रहा था, उसका दिल पड़क रहा था और फिर वह सोच में पड़ गई—किसी चीज प्रतीक्षा करती सी।

सोलोमिन वहाँ बसा गया ?

भीरे से दरवाजा धरिया घोर साक्षाना कमरे में आई ।

क्या चाहिए तुम्हें ? भरिमाना न मुँहपाहट से उमसे पूछा ।

भरिमाना विक्रन्त्यवना' तात्याना ने दवे स्वर में कहता गुसु किय्या देखो, घबडाया मत । क्योंकि यह तो ऐसी बात है जो जायन में होती ही रहेगी, घोर ईस्वर को धन्यवाद भी दो—

मैं बिल्कुल नी नहीं घबड़ा रही हूँ तात्याना घोसीपोवना', भरिमाना न बीच में हा उसको बाल काट दी । अलैस्ती दिमित्रिच की तबियत जरा ठीक नहीं है, सफिन कोई ऐसी बड़ी घान नहीं है । '

'तुम घबड़ा नहीं रहीं यह तो यष्टुष ही भग्य्य है । लेकिन मैं उमर यह साध रही थी कि न जाने क्या बात है कि भरिमाना विक्रेत्येवना अपनी घा नहीं रही हूँ ? मेजिन उमके लिए मैं तुम्हारे पास नहीं आती क्योंकि एम मामला में पहिला निमम यह है कि प्रपना काम देगा । सफिन बाहर कोई भाया है—मैं नहीं जानती कि कौन है । वह एक नाटे कद का लगड़ा घादमी है घोर यह अलैस्ती दिमित्रिच से मिल बिना किसी भी तरह संस्तुत नहीं हो रहा है । यह वड़ा प्रजीय सा सा रहा है घात्र सवेरे ही वह स्त्री उस पूछती हुई माइ' घोर प्रय यह साङ्गरीन घा समझ । 'घोर नार' यह कह रहा है, 'अलैस्ती दिमित्रिच वहाँ नहीं है, तो हम उस घानिली फेरातिच से हो मिला दें । मैं किसी न किसी से बिना मिले नहा जाऊँगा' यह प्रङ्क पकड़े हुए हैं, कहता है—'क्याकि मिलना बहुत ही जरूरी है, एक बहुत जरूरी काम है ।' मैं उस स्त्री की तरह ही इस नी रफूचकर करना घाहा, उससे कहा कि घानिली फेरातिच वहाँ नहा है कहीं बाहर गए हैं लेकिन यह संगडू तो जम क बैठ गया हू, बटता है, 'मैं मिले बिना नहीं जाऊँगा, नन हा मुन्के घामी रात तन इन्तजार करना पड़े' " तो यह बाहर बोन में बहनकरना कर रहा है । घापो,



इधर आधो गेसरी में, खिड़की में से तुम्हें वह दिखाई दे जायगा क्या तुम मुझे बता सकती हो कि वह कौन और कैसा आदमी है ?

मरिघाना तार्याना के पीछे-पीछे गई। उसे नेग्धानोव की बगल से गुजरना पड़ा—और उसने फिर देखा कि उसकी भीहे पीड़ा से सिफुड़ी हुई थी, उसने फिर अपना स्माल उस पर फिराया। घूस से भटे खिड़की के धीर्षों में से उसने आगन्तुक को देखा। वह इसके लिए भवनी था, लेकिन उसी समय हाथ के एक धोर से सोलोमिन घाता लिखाई दिया।

वह नाटा लंगड़ा आदमी खेजी से उबकता हुआ उसके पास गया और उसकी भोर अपना हाथ बढ़ाया। सोलोमिन ने उसका हाथ धाम लिया। जाहिर था कि वह उस आदमी को जानता था। फिर दोनों ही भोमस्त हो गए।

मकिन अब उन दोनों की पदबाप सीढ़ियों पर सुनाई दी वे भोग ऊपर आ रहे थे

मरिघाना खेजी से अपने कमरे में घापस चली गई और कमरे के बीच में स्थिर खड़ी हो गई। [वह वस मुश्किल से साँस से रही थी और भय का अनुभव कर रही थी लेकिन किस से ? वह स्वयं नहीं जानती थी।

दरवाजे पर सोलोमिन का पहरा दिखाई पड़ा।

'मरिघाना पिकेन्त्येवना हम भोगों को भन्दर घाने की इजाजत दीजिए। मैं घापस मिलने के लिए एक ब्यक्ति को लाया हूँ, जिनसे घापको मिलना अत्यन्त आवश्यक है।'

मरिघाना ने उत्तर में सिर्फ सिर हिलाया, और सोलोमिन के पीछे-पाकिनन ने कमरे में प्रवेश किया।



## तेतीस

मैं तुम्हारे पति का एक दोस्त हूँ, उसने मरिघाना के सामने धर्मवादन के लिए मुक्त होए कहा। ऐसा सगता था जैसे वह अपना हवाइयाँ उड़ता घोर उद्विग्न चेहरा उससे छिपाने के लिए प्रयत्नगीत हो, 'मैं वासिली फेंदासिच का भी मित्र हूँ। प्रलक्षी निमिप्रिच सो रहे हैं। मैंने सुना कि उनकी सचियन खराब है, घोर मैं दुर्भाग्य से एक बुरी खबर सामा हूँ जो मैंने घोड़ी सी लो वासिली फेंदासिच से बता दी है घोर उनक परिणाम स्वरूप कुछ निर्गयात्मक बदम तुरन्त उठाने जरूरी हैं।

पाकिस्तान का स्वर बीच-बीच में उद्विग्नता क कारण दूट-दूट जाता उस मनुष्य की तरह जो प्यासा हो घोर प्यास क मारे उसका गला सूख गया हा। जो खबर वह सामा था वास्तव म ही बड़ी बुरी थी।—मार्कसोव फिताना के ही द्वारा पकड पर शहर स जाया गया है। उस मूर्ख वामाघ क्लर्क ने गोमुद्रिकन क साथ गहारी की है, घोर वह भी गिरफ्तार हो गया

है। और अब वह हर एक के साथ और पूरे उद्देश्य के साथ ही गहरी कर रहा है और उमने सब कुछ अधिकारियों को बसा दिया है। और फिर से पुरातनपन्थी होने को तैयार है, हाइ स्कूल को बड़े पादरो फ्लार्ट का चित्र भेंट कर रहा है और उसने 'भपाहिज सैनिकों' ने वांटने के लिए पाँच हज़ार रुबल दान कर दिए हैं। उसमें बग भी सन्देह नहीं कि उसने मेग्दानोव का नाम भी खोस दिया होगा, किसी भी शरण पुलिस कारखाने पर छापा मार सकती है। वासिली फवोतिच के लिए भी खतरा है, 'और रही मेरी बात', सो मुझे सचमुच आश्चर्य है कि मैं अभी तक स्वतन्त्रता से घूम रहा हूँ, हालाँकि ठीक ठीक कहा जाय तो सचमुच मेने राजनीति में कभी भाग नहीं लिया और किसी याजना में मेरा कौसा भी हाथ नहीं रहा। पुलिस ने दायद इसी सबसे मेरी आर ध्यान नहीं दिया, और इसी का फायदा उठाकर अबसर मिलते ही मैं यहाँ तुम लोगों को सारी स्थिति बताने और सलाह करने चला आया कि इस बुझदायी स्थिति से मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्या कुछ किया जाय।

मरिमाना अन्त तक पाकिस्तान की बात ध्यान से सुनी रही। वह भयभीत न हुई—बल्कि बिस्कुल शांत बनी रही। 'बकि निश्चय हा कुछ तो रुदम उठाने ही चाहिए थे। उसने सोलामिन की ओर देखा।

वह भी सोच में डूबा था, सिर्फ उसके मुख की पेशिया की फड़कन दिखाई दे रहा थी और उसके मुख पर उसकी सदैव की परिचित मुस्कान के विपरीत एक दुःख पूर्ण चिन्ता का भार ब्यात था।

बात तो उद्भिन्न बना देने वाली है,' उसने अन्ततः कहना आरम्भ किया। 'बकि मेरी समझ में अभी मेग्दानोव का छिया रहना ही अच्छा है, अच्छा यह तो वसामो पाकिस्तान,—तुम्हें यह कैसे पता लगा कि वह यहाँ है ?

पाकिस्तान ने उत्तर दिया, 'एक आदमी ने मुझ से कहा था। उसने इस आसपास प्रचार करते हुए घूमते देखा था। उसने इस पर नजर

रखो, किसी बुरी नीयत से नहीं। वह भी एक धपना हमदर्द ही है। लेकिन माफ कीजिए 'उसने मरिघाना की घोर उन्मुख होश हुए कहा, 'नेज्बानोय भी बहुत असावधान रहा, इतम भी सन्देह नहीं।

'भव उसे दोष देने से कोई साम नहीं' साभामिन ने कहना शुरू किया। यह बड़े दुःख की बात है कि इस समय उससे सलाह-मशविरा नहीं कर सकता लेकिन सब तक यह स्वतन्त्र हो लेगा और पुसिस अपने काम में उतनी मुस्तैद और तेज नहा है, जितनी तुम समझते हो। मरिघाना विरुद्धकेवना मुझ मगता है कि तुम्हें भी उसके साथ जाना होगा।

'निसन्देह', मरिघाना ने उवासी से किन्तु निश्चयमात्मकता से उत्तर दिया।

हाँ, सोलोमिन ने कहा। 'हमें सारी बातों पर विचार करना होगा और कोई न कोई रास्ता निकालना ही होगा।

मुझे एक सुझाव देने की मांग दीजिए, पाकिस्तान ने कहना शुरू किया, 'यह विचार यही बात समय रास्ता में ही मेरे दिमाग में आया है। मेने गाड़ीवान का रास्ते से ही नगर से एक मोल दूर ही छोड़ दिया है।'

तुम्हारा सुझाव क्या?' सोलोमिन ने पूछा।

'मैं अभी बताता हूँ, पहिले मेरे लिए पाकों का प्रवचन कर दो और मैं भाग कर सिप्यागिन के पास आऊँगा।'

'सिप्यागिन के यहाँ!' मरिघाना ने दुहराया 'किस लिए?'

'अभी बताता हूँ।

'लेकिन क्या आप उन्हें जानते हैं?'

'यिल्कुल भी नहीं! लेकिन मेरी बात सुनिए और सुझाव पर गम्भीरता से सोचिए।

'मुझे तो वह बहुत ठीक और उचित मगता है। आप जानते हैं कि माफ़ेभाव सिप्यागिन का सासा है। है न? क्या यह सुझाव है कि वे

महाशय अपनी सास को बचाने के लिए कुछ भी न करें? और फिर नेज्वातोव भी! माना कि सिप्यागिन उससे नाराज है फिर भी जब तो वह भी आपसे घादी करके उनका रिश्तेदार हो गया है। और हमारे मित्र के सिर पर सटकता संकट—'

'मेरा अभी विवाह नहीं हुआ है, 'मरिघाना ने कहा।  
पाकिस्तान चोक पड़ा।

'क्या? अभी तक' यह सब नहीं हो पाया! खैर, कोई बात नहीं', उसने अपनी बात जारी रखी, 'थोड़ी सी तो बात घनाई जा सकती है। यह एक ही बात है। आप दोनों की घादी ता होने जा रही है न जल्दी ही। इसके प्रतिरिक्त और कोई तरकीब नहीं सोची जा सकती। जरा इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि अभी तक सिप्यागिन ने आपको दखित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है। और फिर वह बड़ा उदारशील है। मैं देख रहा हूँ कि यह बात आपको रुचिकर नहीं हो रही है, तो फहा जाय कि कम से कम उदारता के प्रति थोड़ा सा लगाव तो उसे है ही। हम क्या न इस मामले में उसके इस स्वभाव का उपयोग कर? जरा गौर कीजिए मेरी बात पर, गम्भीरता से।

मरिघाना ने अपना सिर उठाया और वाला पर हाव केरा।

'आप उसका उपयोग चाहें तो मार्कोलोव के हित में कर सकते हैं, मिस्टर पाकिस्तान या अपने हित में, लेकिन प्रसैक्सी और मैं न ता सिप्यागिन की मदद चाहते हैं और न उनकी दवा और कृपा ही। हमने उनका घर इसलिए नहीं छाड़ा था कि हम वहाँ दुबारा निसाये की हैसियत से जायेंगे। हमें न ता उनकी पत्नी की उदारता की चाह है और न उनकी दया भी।

'निसदेह यह भावनाएँ बढ़ी ही प्रणसनीय है, पाकिस्तान ने कहा (लेकिन भिरा! यह बड़ा ही सुन्दर नाम कमबल है। उसके मन ने कहा), मगर आप जरा विचार करें खैर, मैं हर तरह से आपकी आज्ञा मानने को तैयार हूँ। मैं सिर्फ मार्कोलोव के लिए ही

काश्चित् करूँगा सिर्फ़ घपने प्रिय नले मार्क्सोव क लिए ! लेकिन मैं यह कहना चाँहूँगा कि मार्क्सोव से तो उसका झून का रिस्ता नहीं है सिर्फ़ पत्नी क भाई क नाते रिस्ता है, जब कि घाप से तो—'

'मिस्टर पाक्सिन, मैं घापसे घापना करती हूँ !

'धोह, हाँ हाँ ! लेकिन मैं घापसोस प्रगट किए विना नहीं रह सकता कि सिप्यागिन बड़ा प्रभावशाली ब्यक्ति है !'

'ता, तुम्हें घपन सिण कोई खतरा नहीं है ? सोलोमिन ने पूछा ।

पाक्सिन ने घपना सीना ताता ।

एस मोकों पर घपनी घपनी बात किसी का नहीं सोचनी चाहिए,' उसने गब से कहा पर बात सचमें यह थी कि वह निरन्तर घपने घार में सोचता रहा था । वह जैसा की कहावत है, (बेचारा दुर्बल, नाटा प्राणी) सबस पहिन मोके स मान उठाना चाहता था । उस घासा थी कि सिप्यागिन उसका इस सबा से प्रसन्न होकर जकरत पङ्गे पर उसकी सिफारिश भी कर सकता है । ब्याकि बान्तर म कहे चाहे वह कुछ भी कह भी, तो इसमें फँसा हुआ था । उसने मुना भी ऐसा था बल्कि घपन बारे वह कहता भी यही फिरता था ।

'मेरा ब्याप्त हे कि तुम्हारा विचार ता बुरा नहा, पाक्सिन में सोलोमिन ने कहा 'मघाप उसकी सफमता में मुझे सन्देह है । लैर, फिर भी तुम काश्चित् कर सकत हा । तुम कोई नुकसान नहीं पहुँचापागे ।

'निदधय ही नहीं । भच्छा, मानला उन्हाने मुझे पर स निकाल दिया और मरी घान नहा मुनी तो उससे नुकसान ही क्या होना है ?

'निदन्वय ही इससे काई हानि नहीं होगी - ' ('दया हो !' पाक्सिन ने सोचा ) और सोलोमिन घपनी बात कहता गया 'इस समय क्या बजा है ? पाँच बजे हैं, समय घान का बल्ल नहीं है । तुम्हें घभी घोड़े मिन जायेंगे । पसेत !'

लेकिन वज्राय पवेल के उन्होंने दरवाजे पर नेग्धानोव का देखा । वह लड़खड़ा रहा था और दरवाजे पर सहारा भकर खड़ा था, मुँह खाले स्तिम्मित शून्य नेत्रों से घूरते हुए ।

पाक्सिन सबसे पहिले उसकी ओर लपका ।

‘अल्पोशा !’ वह चिल्लाया, ‘तुम मुझे जानते हो जानते हो न ?’

नेग्धानोव ने धीरे से पलक झपकाते हुए उसकी ओर ध्यान से देखा ।

‘पाक्सिन ? उसने अन्ततः कहा ।

‘हाँ हाँ, यह मैं ही हूँ । तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है ?’

‘हाँ मैं अस्वस्थ हूँ । लेकिन तुम यहाँ कैसे ?’

मैं यहाँ लेकिन अभी मरिघाना ने चोरी से पाक्सिन के छोड़नी छुई । उसने घूम कर देखा । मरिघाना उसे इशारा कर रही थी ‘आह, हाँ !’ उसने बात बनाई मैं एक जरूरी काम से आया हूँ और तुरन्त ही मुझे यसा भी जाना चाहिए सोलागिन तुम्हें धारी बात बता देग—और मरिघाना मरिघाना थिकेन्त्येवना भी । यह दोना ही मेरी योजना से पुरी तरह सहमत हैं—यह एक ऐसी बात है, जिससे हम सबका सम्बन्ध है यह नहीं, नहीं, उसने जल्दी से मरिघाना के दृष्टिपात और संकेत के प्रत्युत्तर में बात समांती ‘यह मार्कोलोव के सम्बन्ध की बात है, हम सबके मित्र मार्कोसाय के, वस उसी से सम्बन्धित । लेकिन अब, नमस्ते ! हर क्षण कीमती है नमस्ते, मित्र हम फिर मिलेंगे । वासिली फेदोतिच, घोड़ों के लिए धाना देने को तुम मेरे साथ चलोगे ?’

‘जरूर ! मरिघाना मैं तुमसे कहना चाहता था घबड़ाना मत ! लेकिन अब कोई जरूरत नहीं । तुम सुद फौलादी हो !’

‘घो, हाँ ! घो, हाँ ! पाक्सिन ने सुर में सुर मिलाया ‘भाप काटो युग की सच्ची रोमन नारी हैं ! घुटिका का काटा । लेकिन चलो, वासिली फेदोतिच, हम साथ चलें !’

'बहुत समय है,' भ्रमसाई मुस्कान के साथ सामोमिन ने कहा। नेग्मानोव ने एक धीरे हटकर उन्हें बाहर जाने का रास्ता दिया। लेकिन भ्रम भी उसकी भाँखा में यही गून्मता घ्यात थी। तब वह दो कदम धागे बढ़ा और भाहिस्त से मरिधाना के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। 'मलैक्सी' मरिधाना ने घात छोड़ी 'सारी घात घुन गई है। मार्केंतोव उन्हीं किसानों के द्वारा जिन्हें वह विद्रोह के लिए नङ्का रहा था परङ्क लिया गया है और घन्य यह घहर में गिरपठार है। यही हाल उस व्यापारी का भी है, जिसके साथ तुमने भोजन किया था, बहुत सम्मष है पुलिस यहाँ नो ह्य लागा की खान करती हुई भ्रम मक। गफिलन, सिप्यागिन के पास गया है।'

'किस लिए?' नेग्मानोव त व्यपता से निन्तु मस्यट स्वर में कहा। लेकिन उसकी भाँखें साफ हा गई थी, उसका चेहरा चैतन्म हा गया था। उसकी मूर्च्छा यकायक मायव हो गई थी।

'उस मध्यस्य बनान की काशिज न। नेग्मानोव न सषेठ हाकर पूछा—'हमारे लिए।'

'नही, मार्केंतोव के लिए, यह हमारे तिम नी प्रार्थना करना चाहता था लेकिन मैंने उससे मना कर दिया। मैंने ठीक किया न, मलैक्सी?'

'ठीक किया?' नेग्मानोव ने कहा, और अपनी कुर्सी से बिना उठे ही उसने उसकी धीरे मपन हाय बढ़ा दिये। 'ठीक कहा?' उसने बुझाया, धीरे उसके नजदीक मुस्ते हुए और उसके चेहरे से अपने चेहरे का छिपाते हुए, यह एकाएक फूट कर रोने लगा।

'क्या घात है, मर प्राण? क्या बात है? मरिधाना उद्विग्न होती हुई चिल्लाई। भ्रम नी यह उसी दिन की ठरछु, जब वह उसके सामने घुटना के मस बैठ कर भाङ्कटापूणें माँघें रुग्म लगा था, उसके कापित हुए सिरको मपन दागा हाजा के सहता रही थी।



मेकिन अब उसके मन में उस दिन से बिल्कुल भिन्न भावनाएँ उठ रही थीं। उस दिन उसने अपने आपका उस समर्पित कर दिया था। उसने समर्पित कर दिया था और वह इस बात की प्रतीक्षा में थी कि वह उससे क्या कहता है। अब वह उस पर दया कर रही थी और जैसे उसे सानत्वना दे इसका प्रतिरिक्त और कुछ नहीं सोच रही थी।

‘क्या बात है, मेरे प्राण ?’ उसने कहा। ‘तुम तो किस लिये रहे हो ? निश्चय ही इसलिए नहीं कि तुम’ ‘बड़ी अजीब हालत में पर सौट है। यह नहीं हो सकता। या तुम मास्कोव के लिए दुखी हो, और मेरे लिए और अपने लिए बर रहे हो ? या हम सबकी खरिदत हुई मासामा पर दुखी हो / तुम यह तो नहीं सोच सकते कि हर काम मासानो से हो जायगा।

नज्मानोव ने एकाएक अपना सिर उठाया।

‘नहीं, मरिघाना’ अपनी सिसकियाँ को नियन्त्रित हुआ सा वह बाला में तुम्हारे लिए भयभीत नहीं है और न अपने ही लिए सकिन हूँ मैं दुखी हूँ’ ‘पर किसके लिए ?

‘तुम्हारे लिए, मरिघाना। मुझे दुख है कि तुमने अपना जीवन उस मादमी के साथ बाँधा है जो तुम्हारे लिए नितान्त अयोग्य है।

‘ऐसा क्यों ?’

‘इसीलिए कि वह ऐसे मीके पर भी मासू बहा रहा है !’

‘यह तुम नहीं रो रहे हो, यह तुम्हारी स्नामुय रो रही हैं !’

‘मेरी स्नामुयें और मैं एक ही हूँ ! देखो, मरिघाना, मेरे चेहरे पर देखो क्या तुम अब भी सबनुष कह सकती हो कि तुम्हें पछतावा नहीं है

‘क्या ?’

‘कि तुम मेरे साथ भायी ?’

‘नहीं।

और तुम मेरे साथ भाग भी बड़ी जायागी ? हर जगह जाऊँ /

हाँ ।

हाँ ? मरिघाना ?

हाँ । मैंने तुम्हें बचन दिया है, और जब तक तुम वहीं रहते हो जिससे मैंने प्रेम किया था तब तक मैं पीछे नहीं हटूँगी । नेपानोव अपनी कुर्सी पर ही बैठा रहा, मरिघाना उसके चले की ओर देखी थी । उसके हाथ उसकी कमर को धरे हुए थे और मरिघाना हाथ उसके कंधे पर टिके हुए थे । हाँ नहीं, नेपानोव ने सोचा कि तबिन—पहले जब मुझे इस भयानक प्राणिकरण में लाने का सोचा गया था तब इसका तरीका कम से कम निश्चल था लेकिन अब मुझे अनुभव हो रहा है कि यह इसकी इच्छा के विपरीत है और मुझे प्रसन्न हो जाना चाहती है । उसने अपने हाथ नीचे कर दिए मरिघाना सचमुच धीरे से पीछे हट गई ।

‘मरा स्वागत है, उच्च स्वर में कहा अगर हम भागना ही है उसके पहले कि पुलिस हमारा पता लगाए तो मैं समझता हूँ, हम लाना का पता कर लना ही इच्छा होगा । सनवत फिर हम कहीं जासिम जैसा पादरी न मिल सक ।

मैं तैयार हूँ, मरिघाना ने कहा ।

नेपानोव गौर से उसकी ओर देखता रहा ।

‘रामन कुमारी । उसने दुष्टापूर्ण अर्ध मुस्कान के साथ कहा ।

जैसा फलक नामना है ।

मरिघाना ने अपने कंधे उधकाए ।

हम सानोमिन से बात करनी चाहिये ।

हाँ सानोमिन नेपानोव मंद स्वर में बुद्ध-मुदाया ।

लेकिन मरा स्वागत है, जब भी तो कोई सतरा होगा । पुलिस उस भी तो पकड़ेगी । मुझे लगता है कि ‘उद्देश्य के लिए उसने मुझसे ज्यादा

काम किया है और उसक विषय में कुछ स ज्यादा जानता-समझता भी है।

‘मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानती, मरिघाना ने कहा। ‘वह कभी अपने बारे में बात नहीं करता।

‘मुझसे बिल्कुल विपरीत। नेग्दानोव ने सोचा। ‘वही इसका अभिप्राय है। सोलोमिन ‘सोलोमिन’ उसने सम्वी चुप्पी क बाद दुहराया। ‘तुम जानती हो मरिघाना अगर जिस आदमी से तुमने अपने जीवन को सम्बन्धित किया है वह सोलोमिन जैसा होगा या वह खुद सोलोमिन ही होगा ता मुझे तुम्हारे लिए परा भी कुछ न होता।

मरिघाना न नेग्दानाय की ओर अप्र दृष्टि से देखा।

‘तुम्हें ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है उसने प्रतव कहा।

‘मुझे कोई अधिकार नहीं था। उन शब्दों से भसा मैं क्या समझूँ?’

‘क्या तुम्हारा मतसब है कि तुम मुझसे प्रेम करती हो? या कि इस प्रश्न को पूछने का मुझे कोई अधिकार नहीं था?’

ऐसा कहने का तुम्ह कोई अधिकार नहीं था’, मरिघाना ने फिर दुहराया।

नेग्दानोव का सिर नीचे को मुड़क गया।

मरिघाना। वह धक्के रखते कुछ बबले हुए स्वर में याता।

हाँ।

अगर मैं अब अगर मैं अब वही साबल तुमसे पूछूँ—तुम जानती हो? नहीं मैं तुमसे कुछ नहीं पूछता नमस्ते।

वह उठ बैठा और बाहर बसा गया मरिघाना न उसे रोकने की कोशिश नहीं की। नेग्दानोव अपने कमरे में जाकर सोफे पर बैठ गया और उसन अपने दोना हाना स अपना मुँह छिपा लिया। वह अपने

ही विचारा स भयभीत था और न सोचने की कोशिश कर रहा था। सिर्फ एक ही भाव उसके मन में बार-बार उठ रहा था कि किसी काले भद्रस्य हाथ ने उसको सम्पूर्ण रूप से जकड़ लिया है और अब वह उस छोड़ेगा नहीं। वह जानता था कि वह मनोहर प्रमूख्य नारी ब्रह्म वह बगल के कमरे में छोड़ आया है उसके पास नहीं आयेगी और उस स्वयं उसके पास जाने का साहस नहीं है। और फिर लाभ क्या है? वह कहेगा नी क्या?

सधे हुए।

लेत्र इव पदचापा ने उस चाफा लिया। उसने अपनी आँखें खानी।

सानामिन ने उसक कमरे का पार करस हुए मरिधाना का दरवाजा पट-झटाया और नीतर चसा गया।

पवने से प्रकटा क लिए माग खाना करना। नेजधानाव ने मन ही मन कड़वी फुस-फुसाहट की।



## घौंतीस

रात क बस बजे थे । अर्जुना भवन क झाड़ग  
रूम में सिप्यागिन, उसकी पत्नी और  
कालोमियेत्सव बैठे साध खेत रह थे कि तभी  
एक नौकर ने अन्दर आकर खबर दी कि कोई  
अजनबी मिस्टर पाकिस्तन आय हैं, आ  
वोरिस ऐन्ड्रिच स किसी मस्यत महत्वपूर्ण  
और जरूरी काम से मिलना चाहत हैं ।

‘इतने रात गये !’ वालन्दिना मिस्त्रालाबना  
ने आश्चर्य प्रकट किया ।

‘ऐ ? वोरिस ऐन्ड्रिच ने अपनी खूब सूरत  
नाक को सिकोड़ते हुए पूछा । ‘क्या बताया  
तुमने, महाशय का नाम ?’

‘हुंकार उन्होंने बताया—पाकिस्तन !’

पाकिस्तन !’ कालोमियेत्सव चिल्लाया ।  
यह वो बिल्कुल देहाती नाम है । पाकिस्तन’  
(अर्थात्—करना—मरना) सासोमिन’  
(अर्थात्—छिड़कना) ‘एक दम स देहाती  
मामसा !’

और तुम कहत हा’, वारिस ऐन्ड्रिच  
ने नौकर की भार उन्मुख हात हुए उसी

धरुचि और जलाहट से पूछा 'कि उसका काम महत्वपूर्ण और जरूरी है ?'

'उन सज्जन ने ऐसा ही कहा हुआ ।

हैं कोई निखमंगा या टा होगा' ( या एक साथ बाना ही', कालोमियेत्सव ने बीच में जाड़ दिया)। 'बहुत सनस है। उसे मेर कमरे म बुलाओ। बारिस ऐम्ब्रिच उठ सड़ा हुआ। मुझे जरा माफ करना। सब तक प्राप नोना खेला या मरी प्रतीक्षा भी कर सकते हो। मैं मनी थापिस प्राया ।

'कुछ थोटासा सगसा है—थाटासा ! कालोमियेत्सव न कहा। जय सिप्यागिन अपने कमरे म पहुंच कर पाकिस्तन क दयनीय दुर्वल सरीर का भंगोठी और दरवाजे क बीच में बीवाल के सहारे गुड़ी मुड़ी हुआ उंडगा खड़ा था तो उसक मन में उसक प्रति मन्त्रीयाचित उपेक्षापूर्ण दया और कृपा का भाव उमड़ प्राया जा पीटर्सवर्ग क उच्च प्राप बारिया की खास बारिपिस विसेपसा है।

'हे भगवान ! जैसा छाग नाटा सा पंखहीन चिड़िया जैसा प्रादमी है ! उसने सोचा और में देखता हूँ कि यह लँगड़ा भी है !

तजरीफ रलिए उसने उदार मधुर स्वर म कहा और अपने प्राचरण में बिनम्रता और मिलनसारिता प्रकट करते हुए वह स्वयं प्रागन्तुन क सामने बैठ गया !

'प्राप सक गए हंगे अपनी याथा स, मे समझता हूँ, 'कृपया तजरीफ रलिय और करमाइये क्या है वह महत्वपूर्ण कार्यं, जिसके लिए इतनी रात में प्रापने मरे पास प्राने की तकलीफ की।

महामहिम पाकिस्तन न कुर्सी पर बैठकर बहना धुरु किया, मेने प्राप तक प्रान का साहस किया—

ठहरा ठहरा सिप्यागिन न बीच में राक दिया मेने तुम्हें पहल नी नहीं दे ता है। मैं तक धार मिन बहरे ता फिर कमी नही बूनता ,

मैं हमेशा उसे पहचान सता हूँ। ऐं ऐं ऐं ठीक ठीक  
 मैं तुमसे कहीं मिला था ?

महामहिम आप सही कह रहे हैं मुझे पीटसबर्ग में एक  
 व्यक्ति के यहाँ आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जो तब  
 से कुर्माव्य से उसने अपने आपको आप का काप भाजन बना  
 लिया है।

सिप्यागिन एकाएक अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

‘मिस्टर नेग्धानोव के यहाँ। अब मुझे याद आ गया। तुम उसके  
 पास से तो नहीं आये हो?’

‘ओह नहीं, महामहिम, ठीक इससे विपरीत मैं - -’

सिप्यागिन फिर बैठ गया। ‘ठा ठीक है। क्योंकि अगर तुम उसके  
 पास से आये होते तो मैं तुमसे तुरन्त पर स निष्पत्ति जाने को कहता।  
 मैं अपने और नेग्धानोव के बीच किसी मध्यस्थ की बात सुनने को  
 तैयार नहीं और न उस अपने नहीं आन ही दे सकता हूँ। मिस्टर  
 नेग्धानोव ने मेरा ऐसा अपमान किया है जिस में कभी नहीं भूल  
 सकता मैं उससे बदला लेने की भावना से ऊपर हूँ, लेकिन मैं  
 उसके बारे में कुछ जानना भी नहीं चाहता हूँ और न उस लड़की के  
 बारे में ही—जिसका दिमाग दिम की अपेक्षा ज्यादा भ्रष्ट हो गया है’  
 (सिप्यागिन ने मरिघाना के भागने के बाद यह वाक्य क्रम से क्रम तीन  
 बार तो दुहराया ही था) — जो इतना नीचे गिर सकी कि एक निम्न  
 कुल के आचारा के साथ पर छोड़कर भाग गई! उनके लिए यही बहुत  
 है कि मैं उन्हें भूल जाने के लिए सहमत हूँ।

दस अन्तिम शब्द का उच्चारण करते समय सिप्यागिन ने अपनी  
 साईं घुणामुचन में नीचे की ओर झटकी।

मैं उन्हें भूल गया हूँ, जनाब।

‘महामहिम मैंने आपसे पहले ही अर्ज किया कि मैं यहाँ उनकी  
 ओर से नहीं आया हूँ यद्यपि मैं थोमान जी को और बाता के साथ

साथ यह इत्तमा दूँ कि उन दोनों ने कानूनी रूप से शादी के बयान में अपने आपको बाँध लिया है। (‘यह एक ही बात है इसके कोई अन्तर नहीं पड़ता। पाकिस्तान ने सोचा मैं कहूँ भाया या मैं यहाँ घोड़ा सा मूठ बोखूँगा और मैं मूठ बोल रहा हूँ कोई बात नहीं।’) सिप्यागिन ने बैचैनी से अपनी धाराम कुर्सी की पीठ पर सहारे अपने सिर को दाएँ-बाय झुकाया।

‘जनाव यह मेरे लिए कोई विलचस्पी की बात नहीं है। ससार में एक और मूर्खता नरी शाही की बहनी हुई बस। लेकिन यह महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष ज़रूरी काम कौन सा है, जिसने मुझे आपका दर्जा का सीनाग्निया ?

प्रोह ! सरकारी विभाग का एक भूय कन्वन्स संचालक। पाकिस्तान ने फिर सोचा। ‘तुम्हारा यह रोज़ और घान बहुत ही सी कुल्प प्रोगरेज बन्दर के सहारे।

आपकी पत्नी के भाई साहब उसने उत्तर कहा— मिस्टर मार्कोलोव—ओ फ़िराना ने पकड़ लिया उन्ही फ़िराना ने जिनको यह तिद्रोह के लिए मड़गा रहे थे और प्रय के गतर के महान पर पुलिस की हिरासत में बन्द है।

सिप्यागिन दूसरी बार कुर्सी से उधल पड़ा।

क्या आपने क्या कहा ? यह हक़लाया, भगन गौरवपूर्ण स्वर में नहीं, बरन् दयनीय स्वर में।

मैंने कहा, आपका साल साहब निरपत्तार कर लिए गये हैं। जैत ही मुझे सबर मिली तब ही मैं पाड़े लकर आपको खबर देने के लिए आया था। मैं सोचा कि शायद इस प्रकार मुझे आपकी और स भगने बर्छि की बिनहो प्राय शायद बचा मुझे मूठ मया करने प्रबसर मिल जाय !

‘मैं आपका बड़ा ही आभारी हूँ, सिप्यागिन ने बैसी ही कमजोर स्वर में कहा और कुतुरमुते के कनल की पंटी पर जोर का हाथ



मारा, जिसकी गूँज से सारा घर खूँज उठा। 'मैं आपका बड़ा ही प्रामाणी हूँ, उसने बरा तेज स्वर से बुहराया 'हालांकि मैं आपको यह साफ बता दूँ कि जिस प्रामाणी ने सारे मानवीय और दैवी कानून को अपने पैरों तले रौंदा है, वह भले ही सौमार मेरा रिश्तेदार हो, मेरी भाँखों में वह क्या का पात्र नहीं, वग्न एक अपराधी है !'

एक नौकर ने कमरे में प्रवेश किया।

'भाभा, हुजूर ?'

बग्घी तैयार कराओ ! अभी इसी क्षण घोर धार घोड़ों की ! मैं शहर जा रहा हूँ। फ्रिंसिप और स्तेपान मेरे साथ बसेंगे !' नौकर बाहर चला गया। हाँ, जनाब, मेरा सामा एक अपराधी है, और मैं शहर जा रहा हूँ, उसकी रक्षा करने के लिए नहीं। मोह नहीं !'

'लेकिन महामहिम'

'मेरे ऐसे ही सिद्धान्त हैं जनाब, और मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप इस मामले में और कुछ कहने का कष्ट न करिए !'

सिप्यागिन कमरे में इधर उधर टहलने लगा पाक्सिन की भाँखें तस्तरों की गोस हो गई। मोह, शैतान !' वह सोच रहा था 'और तुम अपने को उदारपंथी कहते हो ! तुम तो फाड़खाने को तैयार होर हो !' दरवाजा खुला और प्राणें भागे तब कबर्मा से बालेन्तिना मिसालोबना न और उसक पीछे कालोमियेस्सेव ने प्रवेश किया।

क्या माने हैं, इस सबक, बोरिस ? तुमने बग्घी निकालन का आदेश दिया है ? तुम शहर जा रहे हो ? क्या हो गया है ?'

सिप्यागिन अपनी पत्नी के पास गया, कसाई और कुहनी के बीच से उसका हाथ पकड़ते हुए बोला 'तुम्हें हिम्मत से काम लेना होगा, मेरी प्यारी। तुम्हारा भाई गिरफ्तार हो गया है।

'भरा भाई ? सर्जी ? किस लिए ?'

'वह बिचारों में समाजवादी सिद्धान्तों का प्रचार कर रहा था, ( यह सुनकर कालोमियेस्सेव क मुँह स हल्की सी मीठी की आवाज

निकल गई।) 'हाँ। वह शक्ति का प्रसार कर रहा था। वह लोगों को भड़का रहा था। उन्होंने उसे पकड़ लिया, और पुलिस के हवाले कर दिया। अब वह घहर में है।

'पागल कहीं का। लेकिन तुम्हें यह सब बताया किसने ?'

'मिस्टर मिस्टर क्या नाम है इसका ? मिस्टर कानोप्टिन यह सबर साए हैं।

वालेन्तिना मिखासोवना ने पाकिस्तान पर दृष्टि डाली। उसने झुक कर अभिवादन किया। 'ये मेरे मुद्रा! कैसी गजब की जान मारा प्रीरत है।' उसके मन में बात उठी। ऐसे बुलपूर्णा क्षण में भी घफसोस है कि बेभार पाकिस्तान नागै सौन्दर्य से कितना प्रभावित हो रहा था।

और तुम घहर जाना चाहते हो— अब इतनी रात गए ?'

'घायब मुझे गबनर घब भी जगता मिय जाय।'

'मैं तो पहिले से ही जानता था कि इसका अन्त ऐसे ही होगा,' फालोमियेत्सेव ने कहा। 'इसका समावा और कुछ हो ही नहीं सकता था। लेकिन हमारे कभी किसान कितने धानदार हैं। वस मना घा गया। माफ कीजिए थोमती जी उन्होंने बहुत ही बुद्धिमानी का काम किया है, इसमें सन्देह नहीं।

'क्या तुम सचमुच ही बा रहे हा, बारिस ?' वालेन्तिना मिखा सोवना ने पूछा।

'मिरा तो पकड़ा विस्वास है,' फालोमियेत्सेव ने कहा, कि उन महात्मा, मास्टर महोदय मिस्टर मेग्पानोव का भी इसमें हाथ है। कम्बस्त कहीं था ! सब एक ही पैसो के चट्टे-चट्टे हैं। क्या वह भी पकड़ा गया है ? तुम नहीं जानते ?'

सिप्यापिन ने फिर घपनी कताई नोष की घोर सत्की।

'मैं नहीं जानता, और जानना भी नहीं चाहता !' घोर घपनी

पत्नी की घोर उमूख हौंकर उसने जोड़ा, उन दोनों ने क्षावी कर ली है।

'किसने कहा ? इन्हीं महाशय ने ?' यालन्तिना मिस्सालोवना ने फिर पाक्सिन की मोर देखा लेकिन भवकी अपनी भाँसिँ सिकोड़ कर।

'हाँ।

'तब तो,' कासोमियेस्सेव ने कहा, यह महाशय निश्चय ही जानते हैं कि वे लोग कहाँ हैं। क्या तुम जानते हो, वे लोग कहाँ हैं ? तुम जानते हो, वे लोग कहाँ हैं ? ए-ए-ए ? तुम जानते हो ?' कासोमियेस्सेव ने पाक्सिन क सामने अक्कर काटते हुए कहा, जैसे उसका रास्ता रोकना चाहता हो, हालाँकि पाक्सिन भागने की इच्छा जरा भी प्रगट नहीं कर रहा था। 'बोसो ! उत्तर दो। ए ? ए ? जानते हो तुम ? क्या तुम जानते हो ?'

'भगर में जानता भी हूँ,' पाक्सिन ने रोपभरी मुँसुवाहट स कहा—मन्त में उसका श्रोक उमड़ पड़ा और उसकी छोटी भाँसिँ चमक उठी—भगर में जानता भी हूँ, था भी तुम्हें नहीं बताना।

'भोह भोह भोह !' कासोमियेस्सेव बुदबुदाया। 'तुम सुन रहे हो—' सुन रहे हो ! यह, यह हजरत भी यह हजरत भी उन्हीं की पैली क है।

'भगपी तैयार है !' मौकर ने आकर बताया। सिप्यागिन ने बड़ी दबतापूर्ण भाषा क साथ अपना हूट उठवाया, लेकिन यालेन्तिना मिस्सालोवना ने उसस ऐसा धिनय पूर्ण आग्रह किया कि वह सबेरे तक आना टाल दे—उसने उनक सामने एस तर्क रखे कि सड़क पर भंपेरा होगा, सब काई नगर में सो रहे होंगे, वह सिफ अपने को परेशान करेगा और हो सक्रता टूटल ग जाय—कि सिप्यागिन को मन्त में जाना स्वमित करना ही पड़ा, 'भापका हुनम सिर माये।' उसी पदा—किन्तु भव की दबता से नहीं—क साथ उसने कहा, और अपना हूट मज पर रस दिया,

'बाड़े खोल दा ! उमने नीकर को घादेर दिया 'लेकिन सबेरे ठीक छः बजे बरषी तैयार रहे ! मुन रह हा ? भव तुम जा सकते हो ! ठहगे प्रागन्तुक महोदय का मगारी वापस भेज दा । उस घादमी का किराग बुझा ना । ऐं ? घापन कुछ कहा मिस्टर कोनोप्टिन ! मिस्टर कोनोप्टिन घात हमारे मान घस सबेरे राहर बसंगे । घापने कहा कहा 'मैन सुना नही घाप घोड़ी सा बाइफा पोएंगे ? मिस्टर कोनोप्टिन क लिए घोड़ी कोन्हा साधो । नहीं । घाप नही पोवे ? तब फिर, किराशर, महामय बी को ठहगन का हरा कमरा दिखाओ ! नमस्ते मिस्टर काना—

पाकिस्तन घय घैय न रम मका ।

'पाकिस्तन !' बहु गूँजती घावाज में बोला, मरा नाम पाकिस्तन है !'

'भो, हाँ, हाँ, वह एक ही बात है । कोई ज्यावा फरक नहीं है । लेकिन घापक घरेर क मुकामिने में घातकी घावाजा कितनी जोर वार है । नमस्त, मिस्टर पाकिस्तन 'भव तो ठीक कहा न । ऐं /

पाकिस्तन का प्रतिबिम्बाला में ले जाकर ठहरा दिया गया घौर बाहर से ताता मगा दिया गया । जैसे ही बहु कमरे में जाकर विस्तर पर बैठ कि उसने दरवाजे पर घरेँ जा ताते में वावो घूमने की घावाज सुनी । उसने मुँहनाल हुए भवने बुद्धि का घदभुल सूझ को कासा । उसे ठीक से नहीं मीद घापी ।

दूसरे दिन सबेरे ठीक साढ़े पाँच बजे उस जगामा गया । उसे काफ़ी पीने को बी मई, जब वह पी रहा था, एक नीकर जा कण्या पर कई हुई पोचक पहिने था, ट्रे लिए वहाँ पड़ा रहा । वह कभी एक पैर • बल लुथो कभी दूसरे पैर क बस खड़ा रहा, जैसे बहु कहना चाहता हो 'जन्दी परिण, घामान्, घाप श्रीमान् वा का प्रतोसा कय रहे है ।' त यह नीच से जाया गया । मरान क सामने बरषी पहिन ही से जु सड़ी थी । वहाँ कात्तोमियस्तव की एक तुमी बरषी भी जुती सड़ी थी सिम्पागिन सिङ्गिया पर दिताई पड़ा । बहु ऊँट के बाला का सबा



‘तुम लोगों क यात्रा धुन हो । —वापेलिना मिसानोवना ने ऊपर से कहा ।

‘धयवाद, आप भी सानन्द रहें ! कालामियत्स्वव ने तपाक से उसकी धोर अपनी माथा के समय पहिनी जान वाली टोपी जिसकी डिजाइन उसने खुद बनवाई थी के नीचे से ऊपर देखते हुए निल्लाकर कहा !

‘बना !’ सिप्यागिन ने बुहराया । मिस्ट्र पाक्सिन आपका ठंड तो नहीं लग रही ? चलो बड़ाधो जी ।

दो बगियाँ पीस से बाहर निकली ।

पहिसे दस मिनट तक तो दोनों सिप्यागिन धोर पाक्सिन धुप बैठे रहे । बगियों के भीतर की गहर मोन रंग की रेगमी पोखिष की पुष्ट भूमि में पीसट जीण कपड़ा में पाक्सिन की भार्कति धोर भी दयनीय लग रही थी । धुप बैठा वह हल्के नीचे रेगमी पदें पड़ी गिरकिरियाँ जो बटन दघाते ही उपर नीचे हो जाती थीं धोर सफेद भेड़ की मुनायम घाल के कासीन को जो पैरों के नीचे पड़ा था, धोर लाल सकड़ी के बोक्स का ओ सामने लगा था, जिसमें खता के रखने के लिए धूमदार ट्रे—मज धोर किताया की छाटी घालमारी भी फिट थी देख रहा था । (बोरिष एन्ड्रिव बगियों में बैठ कर शाम नहीं करना था, पर ही, वह सोर्गों को यह जरूर दिखाना चाहता था कि यह यात्रा में भी काम करता है ।) पाक्सिन कुछ सकपकाहट का अनुभव कर रहा था । सिप्यागिन ने दा चार घपने रोब किए गए शीघे से चमकते मुह को उसकी धार घुमा कर दया धोर बढ़ी घदा धोर धान से अपनी बगल को जेब से चांदी का सिगारों का डिब्बा निकाला, जिस पर पुरान सल्बोनिक टाइप में उसका नाम पुदा था, धोर उसकी धार बढ़ाया पोते कुत्ते की लाम क धंप्रेजी दस्ताने पहिने हाथ की दूसरी धोर सीमरी उँगलिमा के बीच में सिगार दबाकर उस दने को हाथ पनाया ।

‘ये नहीं पोता,’ पाक्सिन ने भीमे स्वर में कहा ।

घोड़! और सिप्यागिन ने स्वयं एक सिगार जप्ता लिया, जो सबसे प्रथम रिगेलिया सिगार था।

'मे आपको बसाऊँ प्रिय मिस्टर पाक्सिन,' उसने सौजन्यता से अपने सिगार का कण मीच और उसके सुगन्धित धूँए के छन्दे हवा में उड़ते हुए कहा 'कि मैं वास्तव में मे बहुत ही घामारी हूँ आपका आपकी फस कुछ अनुदार सगा हूँ हालाँकि वह मेरा स्वभाव नहीं है बिल्कुल भी नहीं है' सिप्यागिन जानबूझ कर अपने वाक्य को बीच-बीच में काट कर बोस रहा था) 'मे आपको इसका विश्वास दिमाना चाहता हूँ। लेकिन, मिस्टर पाक्सिन, आप अपने को मेरी स्थिति में रसकर देखिए (सिप्यागिन ने सिगार अपने मुँह के एक कोने से दूसरे कोने तक जीभ से लुढ़का दिया)। मैं जिस पक्ष पर हूँ कहना चाहिए उससे मेरी स्थिति बड़ी अजीब उलझन पूर्ण हो जाती है, और एकाएक मेरी पत्नी का भाई ऐसी अजीब स्थिति में फँस गया है और मे एक अजायब उलझन में हूँ! मिस्टर पाक्सिन? शायद आप सोचते होंगे कि यह तो कोई बड़ी बात नहीं है?'

'मैं ऐसा नहीं सोचता, महामहिम !

'आप नहीं जानते कि ठीक ठीक किस मामले में और कहाँ, वह गिरफ्तार किया गया ?

मैंने सुना कि ट—जिले में।

आपने किससे सुना।

'एक एक आदमी से।'

जाहिर है, चिड़िया से तो नहीं सुना होगा। लेकिन किस आदमी से ?

'गवनर के आफिस के एक संचालक के एक सहयोगी से।

'क्या नाम है उसका ?'

'संचालक का।'

'नहीं उसके सहयोगी का।'

‘उसका ‘उसका नाम है उल्माशेविच । वह बड़ा प्रचण्ड प्रफुल्लुर है प्रीमान । जब मैंने यह घटना सुनी, तो मैं जल्दी से आपके पास भागा प्राया ।’

जकर, जकर ! घोर मे फिर कहता है कि मे आपके बड़ा आनारी है । लेकिन कैसा पागलपन है ! यह पागलपन नहीं है क्या ? क्या मिस्टर पाक्लिन !’

‘वित्कृत पागलपन है । पाक्लिन ने कहा घोर गरम धारा सी पसीन की धार उसकी पीठ पर बह गई । वह धागे माला, इसका कारण है इसी किसान को वित्कृत भी न समझना । जहाँ तक मे जानता है मिस्टर मार्कसाव अत्यन्त दयामान और उदार हृदय क व्यक्ति है, लेकिन उन्होंने इस किसान का नहीं समझा । ( पाक्लिन न सिप्यागिन को धार नजर आता जा उनकी धार घूम कर उसके मनोभावों को पढ़न का आशिस कर रहा था पर कटुता से नहीं ) । इसी किसान को कभी विद्रोह क लिए नहीं भड़काया जा सकता, ही बस, उच्च अधिकारी वग तथा जार क प्रति उनकी भद्रा भक्ति के नाम पर ही उन्हें नड़काया जा सकता है । किसी किवदती का गड़ना जरूरी है—आपका उस इविम दिमिप्रियस की याद है—किसी तरह क, सोने पर तपे हुए साह की जमन के चिन्ह जरूरी हैं ।’

‘हाँ, हाँ, पुगाशेव जैसे, सिप्यागिन ने बीच में ऐसे स्वर में कहा जैसे कह रहा हा, मैं अपना इतिहास भूला नहीं है तुम्हें बित्सार से बतान की जरूरत नहीं है ! घोर जाड़ा यह पागलपन है ! पागलपन ! यह अपने सिगार से निकसत धूएँ क छल्लाँ क साथ बिचारा में छा गया ।

‘आमान जो !’ पाक्लिन न साहस बढ़ाते हुए कहा, ‘मैंने अभी आपके प्रश्न किया था कि मैं सिगार नहीं पीता लेकिन यह बात बिल्कुल सही नहीं है, मैं कभी कभी पी लेता है, धार आपके सिगार की सुगंध इतनी अच्छी है कि’



‘ए? क्या कहा आपन?’ सिप्यागिन ने कहा, जैसे सात से जगा हो, और पाकिस्तान को बुझा कहने का माफा न देते हुए, उसने यह सिद्ध कर दिया कि उसने उसकी बात सुनली है और वह प्रश्न उसने सिर्फ अपनी राय दिखाने के लिए ही किया है, और मुला मुला सिगार का डिब्बा उसकी ओर बढ़ा दिया।

पाकिस्तान ने धर्मार्थ हुए और आमार प्रकट करत हुए सिगार भरकर जला लिया।

अब मेरा क्या है, यह मन्थन मीका है’, उसने सोचा कि सिप्यागिन ने उसका मन की बात ताड़ ली, और अपनी ओर से बात पूर कर दी।

आपने मुझ से यह भी कहा था शायद आपका याद है! उसने अपनी सिगार की ओर देखते हुए नापरखाही से कहा, और उसने अपने हेड का धाबा आगे की ओर सरकाया ‘आपने कहा था ...?’ आपने अपने उस मित्र के बारे में जिसने मेरी रिश्तेदार से शादी करली है, कहा था। क्या आपन उन्हें देखा है? अ शायद यहीं कहीं पास में ही है।’

‘आहा! पाकिस्तान ने साधा ‘सिला सामधान हा जामा!’

‘मेने उन्हें सिर्फ एक बार देखा है थीमान। व वास्तव में व यहाँ से कहीं पास में ही रह रहे हैं।’

‘तुम शायद समझ ही गये हान’, सिप्यागिन उसी तरह कहता गया ‘कि मुझे अब उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रही है, जैसा मेने तुम्हें पहल ही साफ कर दिया था। न तो उस परिवर्तन, घुट सड़की में और न तुम्हारे उस दास्त में। इश्वर ही जानता है! मुझे उनसे कोई इप भी नहीं सकिन आप मुन्स सहमत हानगे यह ठा हद हा गई। यह मूर्खता है। यद्यपि न यह जानता है कि व शाना एक दूसरे के प्रति राजनीतिक रूप से अधिक आकर्षित है, (‘राजनीतिक।’ उसने कथे मिनकाठ हुए बुझाया? बजाय ओर किसी भावना के।

‘निश्चय ही मैं भी यहाँ साँचता हूँ, थीमान !’

‘हाँ, मिस्टर नेज्मानोव बहुत ही उग्र प्रजातन्त्रवादी है। मैं यह स्वीकार करके उनके साथ न्याय किये बिना नहीं रह सकता कि उन्होंने अपने विचारों का छिपाया नहीं।

‘नेज्मानोव’ पाकिस्तान में हिंस्रकियत हुए साहस किये ‘प्रभाव’ में बह गये शायद, लेकिन उनका दिल

‘अच्छा है’ सिप्यागिन ने बात पूरी की, निश्चय ही निश्चय ही मार्कोसाव की ही तरह। उन सबके दिल बड़े अच्छे हैं। शायद उन्होंने भी इस सबमें भाग लिया है—और शायद वह भी हमें उनकी रक्षा भी करनी होगी।

पाकिस्तान में अपने सोन पर दोना हान्य सस्ती से बाँध।

‘आह हाँ हाँ, थीमान ! महामहिम आप अपने संरक्षण का हाथ उनकी आर भी बढ़ाएँ। जल्द उन्हें भी आपकी सहायता और सहानुभूति की आवश्यकता है।

हूँ, हूँ सिप्यागिन ने कहा, तुम्हारा यही विचार है? अगर उसकी लिए नहीं तो कम से कम अपनी बीबी के लिए ही सही उसकी पत्नी के लिए ! (हूँ भगवान् ! हे भगवान् ! पाकिस्तान में सोच रहा था, ‘मैं कितना भूठ बान रहा हूँ !)

सिप्यागिन ने अपनी आँसू छपकी।

‘आप मुझे लगता है, उनके बड़े अच्छे दास्त है। यह बहुत अच्छी बात है, बहुत ही प्रशंसनीय, मर युवक मित्र। तो तुम्हारा कहना है कि वे यहीं कहीं पास में रहते हैं ?

‘हाँ थीमान महामहिम, एक बड़े कारखाने में पाकिस्तान ने अपनी बीबी काटी।

धैं धैं धैं मातामिन के यहाँ ! ता व रहीं है। मैं यह जानता था—निश्चय ही तुम्हें यह बताया गया था, मुझे यह सूचना

हैं थीं हों' (मिस्टर सिप्यागिन इस वारे में विल्कुल भी नहीं  
 ले वे, और न किसी ने उन्हें कुछ बताया ही था, लेकिन सोलोमिन  
 अपने यहाँ प्रागमन और प्राधीरात के समय उन दोनों से उसकी  
 उबीत की याद करके उसने यह दाव खेला और पाकिन्तन सुरन्त  
 के बक्कर में घा गया।)

'जब प्राप जानते ही हैं तो, उसने दुबारा अपनी जीम काटी  
 किन अब गाड़ी हाथ से निकल चुकी थी। सिप्यागिन ने इस पर  
 तो एक उड़ती हुई नजर डाली, उसी स वह समझ गया था कि वह  
 समातार अब तक उससे खस रहा था धैस ही जैसे एक बिल्ली चूह स  
 खेसता है।

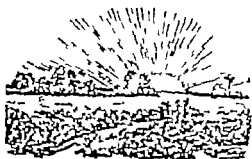
'मे थोमान था बताऊँ यद्यपि वह अभागा हिष्काराया कि मैं  
 वास्तव में कुछ नहीं जानता

और मैं तुमस कुछ पूछता भी नहीं विश्वास रखता। लेकिन  
 तुम्हारा मतलब क्या है? तुम मुझे और अपने को समझते क्या हा ?  
 सिप्यागिन ने तब हाठ हुए कहा और सुरन्त अपने उच्च पदीय गौरव  
 के स्तर पर बापस आ गया।

और पाकिन्तन जास में फँस दयनीय तुच्छ प्राणी का सा अनुभव  
 करन लगा अब तक वह सिगार अपने हाठ क एक कान में  
 दबाये हुए था और सिगार के कण पींचकर एक घोर धुँआ उड़ा रहा  
 था, लेकिन अब उसने उसे मुँह स बाहर निवास लिया और कण  
 साधना बन्द कर दिया।

'हे नगवान् ! यह मन ही मन फरहा—और पहले से भी अधिक  
 पसीना उसक कंधा पर स हाकर वह घसा। 'मैं क्या कर बैठा ! मेने  
 सब कुछ खोल दिया और सबसे गहारी की ! मैं सूर्त बन गया  
 एक बड़िया सिगार स खरीब लिया गया ! मैं एक भेदिया हूँ  
 अब इसका कैसे मिटाया जा सकता है ? माह, मरे ईश्वर !

अब कुछ करना बाकी नहीं रहा था। सिप्यागिन ऊँट की ऊँट के  
 अने तवावे में अपने को लपेटे उसी गर्वपूर्ण मुद्रा में झुकी सने लगा  
 था और घाड़ी देर बाद दोनों बगियाँ गवनर के भवन के सामने  
 जाकर ठहर गई।



'नहीं सा, मेरे मित्र, मैं नहीं समझ पाया, मिलनसार रसिक गवर्नर ने उत्तर दिया। उसके गैरनाथी गाला में मुस्कान से बस पड़ गए, जो सूँघा में से उसक घने दाँतों की, भ्रूँकी विस्तार रही थी।

'क्या। क्या तुम मार्केलोव क बारे में नहीं जानते ?'

'तुम्हारा मतलब क्या है ?—मार्केलोव ?' गवर्नर ने उसी लहजे में दुहराया। उसे यह याद ही नहीं था वास्तव में, कि ओ घावमी कल गिरफ्तार हुआ है उसका नाम मार्केलोव है, और फिर वह यह भी भूल गया था कि सिप्यागिन की पत्नी का भाई भी इसी नाम का है। 'लेकिन तुम खबे क्या हा, वोरिस ? बैठो न चाय पीयागे।

लेकिन सिप्यागिन चाय पीने के मूढ़ में नहीं था।

जब सिप्यागिन ने गवर्नर का सारा किस्सा बताया और अपने तथा कानोमिएत्सव क आग्रह का कारण बताया तो गवर्नर ने बड़ा दुख प्रकट किया उसक बेहूर पर दुख पूर्ण भाव आगए और उसने अपने माथे को पीटा।

'हाँ हाँ हाँ ! उसने दुहराया कैसा दुर्भाग्य है। और अब वह यहाँ है—आज बाढ़ा बेर के लिए तुम तो जानते ही हो कि ऐसे लोगों को हम जाग एक रात से अधिक अपने पास नहीं रखते, लेकिन पुलिस का कमान्डर शहर से बाहर गया हुआ है, इसलिए तुम्हारा साना यहाँ राक रिया गया है लेकिन उस वे लोग आगे भेज हंगे। मेरे प्यारे दोस्त ! कैसा दुर्भाग्य है ! तुम्हारी पत्नी कितनी दुखी होगी ! तुम्हारी इच्छा क्या है ?

'मैं उसस कुछ बात करना चाहूँगा नहीं—मह फानून क विरुद्ध तो नहीं है।

'मेरे प्रजीव दोस्तो ! कानून तुम जैसे लोगों क लिए नहीं है। मुझे सचमुच बहुत दुख है।

उसने एक विशेष प्रकार की घंटी बजाई। एक सैनिक अफसर हाजिर हुआ।

उसने उस सारी वार्ते समझाई, और वह वापस चला गया। फिर सिप्यागिन की ओर उमुख होकर बोला। 'उन नामा ने उसकी मुस्कं फ्त दी और खूब पिटाई की वस मरा नहीं यह समझ लो। और उवे याँप कर यहाँ ल जाए। और मयागा लो देखिए कि वह उसमे जरा भी नाराज नहीं है—जरा भी दिक्कन नहीं है उसक चेहरे पर। वह ऐसा प्रपने में ही प्रीया हुआ है कि मैं या देण कर बंग रह गया। सा भय तुम खुब ही देख लना।

'यह लो और नी बुरी बात है, कालोमिणस्सव ने कहा। गवनर ने इस नरिग्य दृष्टि स देखा।

लकिन मैं तुम्हें एक बात बना दू मिन्धान पयोविच। 'मया क्या बात है ?

कुछ प्रसंगत बात है।

'क्या बात है ?

'लो मुझे तुम्हें बना ही देना चाहिए तुम्हारा वह कर्मगर किसान, जा भरे पास एक तिकापन नकर प्राया पा—

'लो ?

'उसने प्रपन को फामी मगा लो तुम्ह मागूम है ?

क्य ?

'क्य, यह कोई सान बात नहीं है लकिन बुरी जम्बर है।

कालोमिणस्सव ने प्रपने कथे निचकाए और थड़े दैनापन से सिङ्गरी क पास चला गया। लभी नैनिक प्रकरन मारुणोव को लकर नीतर प्राया।

गवनर ने उसक बार में लही ही धराया या वह प्रलानाचिक रूप स गान्त था। उसना हमगा था यह गन्भारता नी उनक बहरे घ गायब हो गई थी और एक अजीब उपशगाव क्वास्त्रि ने उसका जगह लली था। प्रपने यहनोई ता बही दगदग नी उसमें काई परिपतन नहा प्राया यन जमन नैनिक प्रकरन का यह मनारे बरसवो नरप स

देखता रहा था। शायद इसमें उसकी जमन जाति के प्रति पुरानी घृणा उमर आई थी। उसका कोट जहाँ-तहाँ से फट गया था और मोटे बोरो से बड़े भूँड़े ढंग से सिला था, एक नौहूँ के ऊपर उसके माथे पर और नाक के ऊपर खोट के निशान दीख पड़ रहे थे, जिन पर खून जम गया था। वह नहाया भी नहीं था, लेकिन धासों में कंधा उसने जस्कर कर लिया था। एक दूसरे हाथ की धास्तीनों में कुहनी तक अपने हाथ घुमाए वह दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उसकी साँस में धवराहट नहीं थी।

सर्जी मिखासोविच ! सिप्यागिन ने दो कदम उसकी ओर भागे बढ़कर और अपना दाहिना हाथ उसकी ओर भाग बढ़ा कर ताकि वह उसका स्पर्श कर ले या अगर वह भागे बढ़ना चाहे तो उसे रोक ले, व्यग्र स्वर में कहा। 'सर्जी मिखासोविच ! मैं यहाँ तुमसे यह जाहिर करने नहीं आया कि तुम्हें यह सुनकर घड़ा आश्चर्य हुआ, घड़ा दुःख हुआ, यह तुम सन्देह नहीं कर सकते ! तुमने स्वयं अपना नाश चाहा ! और तुमने अपना नाश कर भी लिया ! लेकिन मैं तो तुमसे सिर्फ इसलिए मिलना चाहता था कि तुमसे कहूँ कि कि तुम बिना कुछ एक बार भ्रम की बात सुनने का आदर और मित्रता का भवसर दिया जाय ! तुम अब भी अपना जीवन सुधार सकते हो और विश्वास रखो, मैं भरसक, अपनी पूरी शक्ति से तुम्हारी सहायता करूँगा और हमारे प्रान्त के आदरणीय प्रधान इसमें हमारी सहायता करेंगे।' यहाँ सिप्यागिन ने अपनी आवाज थोड़ी ऊँची की 'अपने दोषों के प्रति दृढ़ मन से पश्चात्ताप प्रकट करो और बिना कुछ छिपाए सब कुछ यथा दो और स्वीकार करना, यह सब अगर के अधिकारियों के पास आवश्यक सिफारिश के साथ भेज दिया जायगा

'महामहिम, मार्कोलाव ने एकाएक यवनों को सम्बोधित करके कहना शुरू किया। उसका स्वर यद्यपि थोड़ा भारीया हुआ था, लेकिन गान्त था, भेने तो समझा था कि आपने मुझे कुछ बुरा-खास करने के

लिए या धीरे किसी काम में बुलाया है। लेकिन अगर आपने मुझे  
 महज मिस्टर सिप्यागिन को इच्छा पर ही बुलाया है, तो कृपया मुझे  
 वापस ले जाने की प्रार्थना दीजिए। हम एक दूसरे का कमी नहीं समझ  
 सकते। वह जो कुछ भी कहते हैं, सब मरे तिर प्रीत है,  
 दुबोष है।'

‘शोक निश्चय ही। फालोमिएल्लेव ने सीना उसजित ब्यक्तिया  
 क बोध में दखन दिया लेकिन क्रियाना को विद्रोह के लिए नष्टकाना  
 शोक नहीं है? ए?’

आपने यहाँ किन किन को जमा कर लिया है? गुप्तचर विभाग क  
 प्रफुल्ल सागों को? आपने काम में आप वझे सुन्न है? मार्केलोव न  
 पूछा और उसक भविष्य पीले शीटा पर हल्की सी हथपूग मुस्कान की  
 रेखा शोच गई।

फालोमिएल्लेव ने गुस्सा स पैर पटक लेकिन गवर्नर ने उसे रोक  
 दिया।

यह तुम्हारी ही गलती है सीम्योन पैत्राविच जो तुम्हारा काम  
 यहाँ उभरने तुम दखल हो क्यों दख हो?

मेरा नाम नहीं? मुझे कहना चाहिए, यह जनता का काम है  
 सनी तरोफ लागा जा!

मार्केलाव देर तक उन्मा पूर्ण दृष्टि स फालोमिएल्लेव को घूरता  
 रहा जैसे प्रन्डित बार देखा रहा हो फिर थोड़ा सिप्यागिन की ओर  
 उन्मुक्त हुआ। जीजाया शूकि आप चाहत हैं कि मैं आपको अपने  
 विचार बताऊँ, वो सुनिए। मैं मानता हूँ कि क्रियाना को यदि मरा  
 जान पयद नहीं धार्ती तो उह मुझे गिरफ्तार कर पुलिस क हवान  
 करन का पूरा अधिकार है। यत्ना करन को पूरी तरह स्वतन्त्र हूँ।  
 मैं उनक पास आया या न नि व मर पाय। और अगर सरकार मुझे  
 साइनेरिया भेजती है वो मुझे दसको भी फोद गिरावत नहा—  
 हानांक नें अपने का शरा नहीं समन्ता। यह धरना प्रपता काम



करने की बात है। वह ऐसा करेगी क्योंकि उसे अपनी रक्षा करनी है।  
कहिए, बस, सन्तुष्ट हैं अब आप ?

सिप्यागिन ने अपने हाथ फैला दिए।

‘बस ! क्या बात फही है। यह सवाल नहीं है, सरकार के कामों की प्राप्ति करना हरारा काम नहीं है। मैं तो बस इतना जानना चाहता हूँ, कि क्या तुम अनुभव करते हो क्या तुम, प्रिय सर्जी, अनुभव करते हो’—(सिप्यागिन ने उसकी भावना को उभारना चाहा) ‘कि तुम्हारा काम कितना सूक्ष्मता पूर्ण, निरर्थक ? और महत्व एक पागलपन था ? क्या तुम अपने कार्य के लिए पश्चात्ताप करने को तैयार हो ? और क्या मैं उत्तरदायी, एक हव तक उत्तरदायी, हो सकता हूँ, तुम्हारे लिए सर्जी ?’

मार्केलोव ने अपनी धनी भाहों को सिकोड़ा।

मुझे जो कहना था सो कह दिया मैं अब बार बार उस दुहराना नहीं चाहता।’

‘लेकिन पश्चात्ताप ! तुम्हारे पश्चात्ताप का क्या हुआ ?’

मार्केलोव एकाएक उठल हो उठा।

‘अपने ‘पश्चात्ताप’ से मुझे विश्वास ! क्या तुम मेरी आत्मा के भीतर रेंग जाना चाहते हो ? कृपया मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो !’

सिप्यागिन ने अपने कंधे झटपटारे।

‘यह तो तुम्हारी हमशा की जिद्द है, तुम कभी कायदे की बात नहीं सुनोगे। अब नी बिना किसी बदनामी या अपमान के तुम्हारे बच सकने का अवसर है।’

बिना किसी बदनामी और अपमान के ‘मार्केलोव ने अर्धग अभित सहजे से दुहराया। हम इन वाक्या को सूव जानते हैं। यह अत्यन्त मनुष्य को हमेशा नीध मुफ्तान के लिए सुनाए बात है। यही लका अभिप्राय है।

‘हमें तुम्हारे साथ हमदर्दी है,’ सिप्यागिन फिर ना मार्कोसोव को उदुपदेश देता रहा, ‘और तुम हमसे जुगा करत हो।’

‘उड़ी प्रच्छी हमदर्दी है। तुम हमें कभी सजा देकर माइवरिया नेब दो बस, यही हमदर्दी जिजायो हमार साथ भोह मुम्ह प्रक्या रहत वा प्रक्या छूग क बान्ने, माग पिड छोड दो।’

और मार्कोसोव का सिर उसक सीने पर झुक गया। उसकी आत्मा में भयंकर द्वन्द्व चल रहा था किन्तु बाहर से वह विस्फुल्ल घान्त था। यासोफ्लोक के तेरेमी ने ही उसक साथ गहारी की, यह विचार उस सबसे ज्यादा परेजान कर रहा था। एरमी ने गहारी की, जिस पर वह प्रायः मुँद कर विस्वान करता था। मार्कोसोव के लिए एरमी क्ली किसाना का प्रतीक था और उमीन उसक साथ गहारी की। सब वह सब, जिसके लिए मार्कोसोव खून-पसीना एक कर रहा था, सब गलत था, एक भ्रम थी? और क्या किस्व्याकाय नूँठा है? और क्या वासिली निकोलाइविच के आदेश गलत थे, और सारे सब और किसानों, समाजवादियों और महान विचारकों के विचार और पुस्तकें, जिनका एक एक प्रार उषके लिए अपार विश्वास की वस्तु थे प्रकाश्य और नुटि रहित थे—सब, क्या वे सब भ्रम, गलत बेकार हैं? क्या यह हो सकता है? और क्या—‘समाज के मुँदे हुए नामूर पर बस नक्षर बनाने भर की दर है’—शायद कपल बोचा वाक्य ही है? नहीं! नहीं! उसन मन ही मन बु-बुदाया, और उसक ठाँव जैसे गालों पर ईंट की धूप के रंग की हल्की रसा वह चली ‘नहीं यह सब सही है दोपों में ही है, मेरी समझ का दाप है, मैं सदा बात लोगों को नहीं समझ पाया मेरे कान करने के रंग में दाप था! मुझे सिर्फ आदेश देने चाहिए थे, और सब प्रार किसान ने बाधा डालने का काविय की होती, ता उसका पापड़ों में गोती मार देना चाहिए थी। समझान बुझाने की क्या जरूरत थी? जो हमार साथ नहीं है, उस जीन का अपिकार नहीं गदर और भेदिय, कुत्ता की मोत मारे जात है।’

घौर माकेंनाथ क मस्तिष्क में मपनी गिरफ्तारी का सारा दृश्य साकार हो उठा पहिल चुप्पा घोर निस्त्वन्धता घौर फिर एक दूसरे की घोर कनखियों से देखा-शास्त्री घौर एकाएक धीप-मुकार । एक घादमी का धोने बड़ घाना, मानों उसे सलाम करने धाया हो । घौर फिर एनाएक यह रेल-भ पेस, सबका म्पट पड़ना । घौर कैसे उस उन्हाने नीचे धर दवोचा पा । 'भाइयो ! भाइयो ! यह सब तुम क्या कर रहे हो ? तुम्हें क्या हो गया हे ?' घौर उनको पीछ, 'साप्रो एक रस्था भाप्रो ! यीधो इसे ।' घपनी हकिया की चरचराहट घौर विभशता पुण श्रेष बह उसक मुँह में घौर नाक म दुगन्ध पुण धूल का भर जाना 'गाड़ी में फक दा इस गाड़ी में । कोई भारी धावाज में शीघ कर कह रहा था उफ !

मैने काम करने का ठोक डंग नहीं घपनाया काम करने का ठीर डंग । यही धिचार उसे वधैन घौर दुखी बना रहा था , कि बह स्वयं ही घपनी सूना से घौर घपने दुर्भाग्य से इस संकट में फँस गया था । इससे साधारणत उद्देश्य में कोई घन्तर नहीं पड़ता । इस सबको तां यह सहन कर देगा 'लेकिन एरेमी ! एरेमी !

इपर जब माकेंलोव घपने ग्रथित धिचारा में निमन् घीने पर सिर मटकाए टड़ा था ता उधर सिप्यागिन गवनर को एक घोर म गया घौर उसके साथ धीरे धीरे फुसफुसा कर वारें करने लगा । वह मुँह बना बना कर घौर घपने माये पर दो डोंगलियां घुमाता हुधा धुछ कह रहा था, जैसे नानों बह यह समझ रहा था कि बधारे के विभाग का कोई पध डीना है घौर उस वचार पागल घादमी क लिए घगर सहानुभूति नहीं तो फम से कम फुछ दया का भाव गवनर क मन में पैदा करने की काशिसा फर रहा था घौर गवनर न घपने कध मिपकाए, धालें नधाइ घौर फिर घाबी बन्द करनीं घौर भाचारी प्रगट की, सकिन फुछ घनिदिबत से पायदे भी किर घपन भरसक तो श्यान रघु था 'निश्चय समझो, विदवाध करा पूरा क्यास रघु गा,' शोमलता

से फूटें गए। 'अब उसकी सुगन्धित सूँघों के नीचे से वड़े भीमे स्वर में सुनाई पड़े लेकिन, मेरे प्यार भाई, तुम तो जानते ही हो कानून, कानून है। 'यह बात तो है।' सिप्यागिन ने एक प्रकार की निरीह विवक्षता के साथ उसकी बात स्वीकार की।

जब इधर एक काने में खड़े यह दोना घापत्त में धीरे-धीरे वार्ते कर रहे थे तो कालामिस्नेव को छुपचाप छड़ा रहना डूबर हो रहा था, वह इधर से उधर चक्कर काटता रहा खींच-खुला कर अपना गला साफ कर, हूँ—हूँ करता यह हर प्रकार से अपनी धखीरता प्रगट कर रहा था। जब उसमें रूखा नहीं गया तो वह सिप्यागिन के पास जाकर बल्दी से बोना 'उस दूसरे आदमी के बारे में तो घाप भूस ही गए हैं।'

'घोह, हूँ! सिप्यागिन ने जोर से कहा। 'बड़ा घण्टा फिया, याद दिना दो। महामद्विम से सुके कुछ और भी कहना है', उसने गबनर की धार उन्मुख होते हुए कहा। (उसने अपने मित्र वोल्देमर के लिए यह आदर सूचक सम्बोधन जान बूझ कर फिया था, ताकि एक शक्तिकारी के सामने एक उच्च पदाधिकारी का सम्मान कम न हो।) 'मेरे पास यह अनुमान करने के लिए काफी कारण हैं कि मेरे साल साहय के इतत पागलपन नरे कार्यों को धारों इधर उधर और भी फेसी हुई हैं, और उसकी एक शान, इनके गुट का एक और ब्यक्ति इन शहर से कोई अधिकारी पर नहीं है।' और उसने आहिस्ते से कहा, 'उस आदमी का यहाँ बुला सीबिए वह घापक झाई कम में बैठा है। मैं उस भयन साथ ही तता घाया है।'

गबनर ने सिप्यागिन की ओर नजर गती और बढ़ा से सोचा, 'कमास या आदमी है। और घापत्यक आदेश दे दिया। एक मिनट के बाद ही इधर का सबक सिला पापितन उसके खानने लड़ा था।

सिला पापितन पाड़ा मुम्बर गबनर की सन्तान करने जा ही रहा था कि उसकी नजर आरुषाव पर पड़ गई और वह अपना सताम पूरा

न कर सका—जैसा था वैसा ही रह गया, भाषा मुका हुआ, अपनी टोपी को मरोबटा हुआ। मार्क्सलॉव ने एक धनमनी सी दृष्टि उस पर डाली, लेकिन शायद ही उसने पहचाना हो, क्योंकि वह फिर अपने विचारों में डूब गया।

‘क्या यही है वह छाया?’ पाकिन्सन की ओर अपनी सफेद उबली से जा हीरे जड़ी धँसुठी से सजी थी, इशारा करते हुए गवर्नर ने जिज्ञासा की।

‘प्रोह, नहीं! सिप्यागिन ने अब मुस्मान के साथ कहा। ‘लेकिन,’ दशमर सोचकर उसने जोड़ा, ‘मह, महामहिम’ उसने फिर सेब भावाज में पहना शुरू किया ‘आपके सामने मिस्टर पाकिन्सन हैं। मेरा विश्वास है कि मह भी पीटसवर्ग के ही निवासी हैं और उस व्यक्ति के परम मित्र हैं जो मेरे यहाँ थिअक का काम करता था और जो सब काम छोड़ गया और—मुझे कहते धर्म भाती है—अपने साथ मेरी एक रिश्तेदार बवान लडकी को भी भगा ले गया है।

‘प्रोह! हाँ—हाँ, गवर्नर ने अपने सिर का झटका देते हुए कहा, ‘मैंने कुछ ऐसा सुना तो था—काउन्टेस मुझे बता रही थी—’

सिप्यागिन ने अपना भावाज ऊँची की—

‘उस व्यक्ति का नाम मिस्टर नेग्धानाव है और मुझे पूरा-पूरा सन्देह है कि उसका विचार और सिद्धान्त भी ऐस ही खतरनाक और दूषित हैं—’

‘छुटा हुआ गुन्डा है साहब, नम्बर एक का। कान्मिमेस्सब ने कहा।

‘निःसन्देह उसके विचार और सिद्धान्त खतरनाक और दूषित हैं।’ सिप्यागिन ने और भी सज्जता के साथ बुझाया, और निश्चय इस प्रकार में उसका भी पूरा-पूरा शाय है इसमें जरा भी सन्देह नहीं है वह जैसा कि मुझे मिस्टर पाकिन्सन ने बताया है, व्यापारी फानेएब के कारखाने में छिपा हुआ है—’

‘जैसा कि मुझे बताया है गड्ढा सुनकर माकेंलाथ ने दूसरी वार पाकिस्तान पर दृष्टि डाली और घीर स घीर उपश्रा स मुस्तुराया।

लमा कीजिए, लमा कीजिए महामहिम पाकिस्तान न चीखकर नहा और घाय मिस्टर सिप्यागिन मैंने यह कनी नहीं कनी नहीं

तुम न व्यापारी फालएव का नाम लिया। गबनर ने सिप्यागिन स कहा और पाकिस्तान की घार घपना उंगली उठाई, माना उसस कह रहा हा घाय जरा घना सामान रहिए। हमार उन सम्मानित दाई घाल दुकानदारा का क्या हा गया है? कल भी एक उसी तरह की माजिन में परड़ा गया है। तुमन घायर उनमा नाम मुना हा— गोलुदिफन बड़ा घमौर घादमा है। सकिन यह, यह कनी जमन्ति महा पर सकता। घव यह पैरा में गिरकर गिड़गिड़ा रहा है।

‘व्यापारी फालएव वरूनूर है। उसका इस मामल में काइ ध्यान नहा है सिप्यागिन न कहा। मैं उसक विचार स वार म कुछ नहीं जानता मैं तो कवल उसक फारखान की घात कर रहा हूँ जहाँ, जैसा कि मिस्टर पाकिस्तान न बताया मिस्टर नेग्घानाव इस समय मिल सकत है।’

मैंने ता एसा नहा कहा। पाकिस्तान ने फिर खिरियात हुए कहा, यह सब ता घाय खुद ही बना कर कह रहे हैं।’

लमा कीजिए मिस्टर पाकिस्तान, सिप्यागिन ने उसी तरह प्रत्येक घबड़ को स्पष्ट उक्वारित करत हुए कहा। घाय जिस मित्रता क कारण घब दन्कार कर रहे हैं मैं उसका घादर करता हूँ। (गबनर मन में साध रहा पा ‘यह ता बड़ा बालाक है।’) ‘किन्तु मैं घपन घापको घापक खानने उदाहरण रूपमें रखना चाहता हूँ। मना घाय घाचत है कि मेरे दिन में घापको मित्रता की भावना स मरी रिस्तदारी का भावना कुछ कमवार है? सकिन और ना भावना है,

श्रीमान्, जो इससे भी ज्यादा बलवती है, और जिस हर्म अपने हर काम में अपना पयप्रदत्तक बनाना है—और वह है, पतञ्जली की भावना ।'

'वह नाचना वा सबसे महान है, सबसे ऊपर है,' कालोमिएस्केव ने स्पष्ट किया ।

मार्कोलोव ने शाना वरुमा की धार गौर से देखा ।

'श्रीमान् गवर्नर महोदय उसने गवर्नर को सम्बोधन करते हुए कहा 'मैं आपसे फिर विनती करता हूँ कि आप कृपा करके मुझे इन व्यर्थ के यकवासों मोगा के सामने से हटाए जाने का आवेद्य दीजिए ।' लेकिन इस पर गवर्नर कुछ नहला उठा ।

'मिस्टर मार्कोसाय । उसने कहा, मैं आपका सम्राह दूँगा कि अपनी वसमान स्थिति को ध्यान म रराकर अपनी भाषा का धरा संयत रखें, और अपने से बड़ा क प्रति अधिक सम्मान प्रगट करें । खासतौर स हम जब कि ये दस की समस्या पर अपने एस देशभक्ति पूर्ण विचार प्रगट कर रहे हा जैसे अभी आपने अपने वहनोई साह्य के मुख स सुने । प्रिय बोरिस मैं बहुत खुश हूँ गवर्नर न सिप्यागिन की धार उन्मुख होठ हुए कहा 'मैं तुम्हारी इस कारगुजारी का जिन्क थामान मन्त्रीजी से प्रवदम करूँगा । लेकिन यह मिस्टर नेज्जानोव ठीक ठीक कहाँ मिलेंगे—इस कारखान में ?'

सिप्यागिन की भाषा में यस पड़ गया ।

'यह कारखान क किसी घोवरसिपर मिस्टर सोलोमिन क यहाँ दिया है—ऐसा ही मिस्टर पाक्सिन न मुझे बताया है ।'

भगता था कि गरोव सिमा को छेड़ने में सिप्यागिन का विशेष सन्ताप मित्त रहा था वह भव गाड़ी में दिए गए सिगार का, अपने स्व पूर्ण व्यवहार का और जो यात्री सी उसकी सुधामद की थी, उस सब का बदला पुटाए ले रहा था ।

'और यह सोलोमिन नी, कालोमिएस्केव न कहा, 'निःसन्देह पक्का प्रजाठ नयारी शक्तिफारी है, महामहिम यदि आप उसकी

घोर भी थाड़ा ध्यान व घोर उस भी गिरफ्तार करा न सा ठाक होगा ।’

घाप जानते हैं, इन लोगो का सान्नामिन घोर क्या नाम है उसका नेज्मानोव को ?’ गबनर ने कुछ अधिकार पूर्ण नाक के स्वर में पूछा ।

मार्केलाव क नुपन श्रम स फूस उठे ।

घोर क्या घाप श्रीमान महामहिम कन्फूसिजस घोर लिबी को जानस है ।

गबनर न अपना मुह दूसरी धार कर लिया ।

इसस बात करना ही अर्थ है । उमन कन्व मिचकात हुए कहा, धैरन, श्वर तो घाना जरा !

सहामक नपक कर उसकी धार गया घोर इस घवसर का सान उठाकर पाकिजन लगड़ाता हुआ तंत्री स सिप्यागिन क पास जाकर उसम धीर स धाना

क्या कर रह है घाप यह ? क्या घाप अपनी भाँजा का जीवन बर्बाद करन पर ही तुन है ? यह भी उधी क सान है, नेज्मानोव क सान

‘महालयजी, मैं किसी का जीवन नहीं बर्बाद कर रहा हूँ’ सिप्यागिन न ऊँचे स्वर में उत्तर दिया, ‘मैं तो केवल अपनी आत्मा क आदेशा का पालन पर रहा हूँ घोर’

घोर अपनी पत्नी, यानी कि मरी यहन के आदेशों का, जा घापको अपनी दाब में रखती है ! मार्केलाव न नी उतने हा ऊँचे स्वर में कहा । सिप्यागिन क पाना पर ऊँ तक न रेंगा । यह बात उसक सम्मान क लिए इतनी मोद्दी थी, कि उसन उस पर सान देने की नी धायक्यता न समझी ।

मरी बात ता मुनिण’ पाकिजन न फुगफुगाव हुए कहा, उमवा सारा उत्तर उतबना घोर नायर नय स फाप रहा दा । उमक नप्रा



में भ्रूणा की घमक थी और मौसुमा से दूसरा क लिए दया के मौसुमों से उसका गला रूँघ गया था और प्रपन पर उसे शोध भा रहा था , 'सुनिए तो, मैंने आपका बताया था कि मरियाना ने उससे विवाह कर लिया है, यह सही नहीं है मने याही झूठ-झूठ कह दिया था । पर उन बाना का विवाह होने ही वाला है और अगर आप उसमें कुछ रुकावट डालेंगे, यदि पुलिस ने वहाँ छपा मारा तो आपकी आत्मा पर कसक का एक ऐसा टीका लग जायगा, जो फिर किसी तरह भी नहीं घुस सकगा और आप '

धभी आपन जा बात बताई है सिप्यागिन ने और भी ऊँचे स्वर म बात फाटते हुए कहा 'यदि वह वास्तव में सही है, जिसमें मुझे पूरा सन्देह है तब तो मुझ और जल्दी ही उचित कदम उठाना चाहिए । और मरी आत्मा के कलकित होने की बात से महाशय जी आप उसकी फिकर न कर ।

उस पर रम बड़ा हुआ है, भाई मेरे' मार्सेलाव ने फिर धीमे में एक फवती जड दी । घरे उस पर पीटसवग की वार्निश का एक गहरा कोट हा रहा है , धय उस पर और किसी चीज का रग नहीं बदन का । मिस्टर पाब्लिन आप चाहे जितना सिर मारिए, फुसफुसाइए, पर इस घाटासे से बचने का भव कोई रास्ता नहीं है, कोई डर नहीं ।

गवनर ने इस परस्पर को छींटाकशी को बन्द करना ही उचित समझा ।

'मैरा स्यात है,' उसने कहना शुरू किया, 'आप साग को जो कुछ कहना-सुनना था, वह आप साग कह सुन चुक । इसलिए वैरन आप मार्सेलाव को यहाँ से ल जा सकते हैं । वारिस, भत्र तो तुम्हें इनकी कोई जरूरत नहीं

सिप्यागिन ने तिरस्कार का भाव प्रगट किया ।

मे जो कुछ कह सकता था कह चुका ।

‘यहूत प्रच्छा प्रिय बैरन ।

पहरदार माकॅलाव की ओर बढ़ा और प्रागे की ओर हाथ स  
इशारा करते हुए बोला - ‘बसिए !’

माकॅलाव दरवाज की ओर मुड़ा और जाहूर चला गया । पाकिस्तान  
ने—कवल कल्पना में ही यह स्वीकार करना चाहिए लेकिन कद  
सहानुभूति के साथ और दया क साथ—उससे हाथ मिलाया ।

मैं अपनी कारखाने पर छापा मारन क लिए आत्मो मेजता हूँ  
गवनर न कहा । लेकिन वारिस एक बात है । मेरा क्याल है—इन  
सज्जन न’—(उसने अपने मुह क संकेत स हा पाकिस्तान की ओर  
इशारा किया ।)—‘तुम्हें तुम्हारी रिस्तेदार न वारे में कुछ सूचना की  
ह सम्भव है यह वहाँ हा कारखान म यदि ऐसा हो,  
कारखान में यदि ऐसा हा ।

उस गो किसी तरह भी गिरफ्तार नहा किया जा सकता ।  
सिप्यागिन न गम्भीरता स नहा सम्भव है उस प्रकल प्रा जान और  
वह रास्त पर सौट प्राए । प्रगर प्राप प्राप्ता स तो मैं उस एक छोटा  
सा पत्र लिख दू ।

‘भार तुम लिख दोगे ता मैं तो कृतज्ञ हूँगा । और मेरी ओर से  
तुम हर तरह से प्राप्यस्व रहो ।

‘सन्नि प्राप उस सोलानिन न वार में तो कोई कदम उठा ही  
नहा रहे हैं । पालामिबलय न सिन्धियाल हुए नहा । यह सिप्यागिन  
र गवनर की एका उ म हुई जाता का सार समय बढ़ ध्यान से जान  
गा कर मुनन की जागिज कर रहा था ।

‘मैं प्रापका विरयान लिताऊ हूँ कि वही उन सबका मरगना है ।  
उम्मी चिड़िया नीर लता है, इगमें कभी घोगा नहीं जाता ।

‘जकरत से ज्यादा उत्साह नी ठीक नहीं है, सम्पान पैसाबिच,  
र ने कहा ‘भार’ की का है ? भार कुछ पागाना गुमा ता वह

म श्रुणा की धमक थी और श्रांसुमा से दूसरा क लिए दया के श्रांसुमा से उसका गना रुध गया था और प्रपन पर उसे क्रोध था रहा था 'मुनिए तो मैने प्रापका बताया था कि मरिघाना ने उससे विवाह कर लिया है यह सही नहीं है मने याही झूठ-भूठ कह दिया था। पर उन दोना का विवाह होन ही वाला है और अगर प्राप उसमें कुछ रुकावट डालगे, यदि पुनिस न वहाँ घ्यापा मारा ता प्रापकी प्रात्मा पर कसंका का एक एसा टीका लग जायगा जो फिर किसी तरह भी नहीं धुल सकगा, और प्राप

'अभी प्रापन जा बात बताई है सिप्यागिन ने और भी ऊच स्वर ने बात फाटते हुए कहा 'यदि वह वास्तव में सही है, त्रिसमें मुझे पूरा अस्देह है सब ता मुझे और जस्त्री ही उचित कदम उठाना चाहिर। और बेगी प्रात्मा के कलंकित हाने की बात, सो महाप्रम जी प्राप उसकी फिकर न कर।

उस पर रंग चड़ा हुआ हे, नाई मरे' मार्केलाव ने फिर बीच म एक फवती बड़ दी। 'अरे उस पर पीटसवय की वानिष का एक गहरा काट हो रहा है अय उस पर और किसी चीज का रंग नहीं चढ़न का। मिस्टर पाक्सिन प्राप चाह जितना सिर मारिए, फुसफुसाए पर इस घाटासे से बचने का अब कोई रास्ता नहीं है, कोई डर नहीं।

गवनर ने इस परस्पर की छींटाकमी को बन्द करना ही उचित समझा।

भिरा ख्याल है, उसने कहना गुरु किया, 'प्राप सागा को जो कुछ कहना-सुनना था, वह प्राप सोग कह सुन चुके। इसलिये वेरन, प्राप मार्केलोव को यहाँ से ल जा सकते हे। गोरिस, अय तो मुम्हें इनकी कोई जरूरत नहीं।

सिप्यागिन ने तिरस्कार का भाव प्रगट किया।

'मे जो कुछ कह सकता था कह चुका।

‘बहुत अच्छा ‘प्रिय वैरन’ ।’

पहरदार मारकौलाब की घोर यद्दा घोर भागे को घोर हाथ स  
इशारा करत हुए बोसा “ ‘बलिए’ ।’

मारकौलाब दरवाजा की घोर मुझा भार बाहर जता गया । पाकिस्तान  
ने—केवल कल्पना में ही यह स्वीकार करना चाहिए, लेकिन कद  
सहानुभूति के साथ और दया व साथ—उससे क्षाम मिलामा ।

‘मैं घनी कारखाने पर छापा मारन क लिए आदमी भेजता हूँ,  
गवनर ने कहा । ‘लकिन बारिस एक बात है । मेरा ख्याल है—इन  
संज्जन न’—( उसने अपने मुँह क संकेत स हा पाकिस्तान की घोर  
इशारा किया । )—‘तुम्हें तुम्हारी रिश्तेदार क बारे में कुछ सूचना की  
है सम्भव है यह वहाँ हा कारखान म यदि ऐसा हो,  
कारखान में यदि ऐसा हो ।’

उस ना फिन्सी तरह ही मिरफतार नही किया जा सकता ।  
सिप्यागिन न सम्भोगता स कहा ‘सम्भव है उस बनन या जान घोर  
बहु रास्ते पर लौट आए । अगर आप आशा है ता मैं उस एक छोटा  
सा पत्र लिख दू ।’

‘अगर तुम लिख दोगे ता मैं ता इतन हूँगा । घोर मेरी घोर से  
तुम हर तरह से आदरस्व रहा ।’

लकिन आप उस सोतागिन क बारे में ता कोई बरन उठा ही  
नहीं रहे हैं ।’ फालामियलान ने निजियात हुए कहा । बहु सिप्यागिन  
घोर गवनर की एका उ में हुई याता का नार समय बड़े ध्यान स कान  
सगा तर मुतन की जागिर कर रहा था ।

‘मैं आपका बिरयान लिखता हूँ कि वही उन बरन मगना है ।  
मे उड़ीनी चिड़िया भाप फता है इगमें कभी फाजा नहीं आता ।’

जहरत स ज्मान उसाद नी ठाठ नहीं है, जन्मान वैरादेक,  
गवनर ने कहा, वनार की जद है ? नार कुछ नादाना हुआ ता बहु

हमें भी नहीं वरुहेगा। अशुद्ध हो मात्र अपनी खैर मनाए।' और गवर्नर ने अपने हाथ से गले के फुड़े का संकेत किया 'और देखो,' सिप्यागिन की ओर उमुख होते हुए और अपने मुख के संचालन से पाकिस्तान की ओर संकेत करते हुए कहा, 'यह तो मुझे कोई ऐसा सतरनाक भावमी नहीं जान पड़ता, मेरा क्या है इसे जाने दें,

हाँ, इन्हें जाने दीजिए' सिप्यागिन ने कामस स्वर से कहा।

किसी भासात कारण से उसने अनुमान किया कि वह गेटे की पछियाँ उड़ स कर रहा है।

भव प्राप जा सकत है जनाब। गवर्नर न ऊँच स्वर में कहा। हमें भव प्रापकी जरूरत नहीं है। फिर मिसन तक नमस्कार।

पाकिस्तान ने सबका मुफकर नमस्कार किया और बाहर सड़क पर निकल आया। वह पूरी तरह से कुबसा हुआ और अपमानित अनुभव कर रहा था। 'हूँ भगवान! इस प्रारम्भ भ्रूणा न उसका हर तरह स मुरबा कर दिया था।

न क्या है? उसने अवर्णनीय निराशा स सोचा, 'दोना ही—फायर भी और जासूस भी? मोह, नहीं' नहीं, मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ, एक शरीफ और मैं मनुष्यत्व से भी प्रभी रहित नहीं हुआ हूँ।

सकिन गवर्नर की सीढ़ियों पर पड़ा यह व्यक्ति कौन है, जो जाना पहचाना सा सगता है और जा उसकी ओर नैराशपूर्ण और भर्त्सनापूर्ण दृष्टि स देस रहा है - भरे यह तो वही मार्केसाब का पुराना बूढ़ा नौकर है। वह सगता है अपने मानिक की साब सवर सेने गहर आया है और उसक जेससाने से टसगा नहीं सकिन यह पाकिस्तान की तर एस वया पूर रहा है? उसने ता मार्केसाब क साथ विस्वासपात नहीं किया।

धार मुझे भी क्या भूत सवार हुआ कि जिस काम को करने की समीच नहीं उसमें टाँग पड़ा बैठा?' यह फिर निराश भाव स सोचन

खगा 'मैं चुप क्या न रह सका और अपने काम से ही काम क्या न रख  
 सका? और सब लोग-बाग कहें। और बहुत सम्भव हैं सिखेंगे भी  
 "एक मिस्टर पाकिस्तान थे, जिन्होंने विश्वासघात किया था 'अपने  
 मित्रों को शत्रु के हाथ में सार दिया था। तभी उसे याद आया कि  
 माकैलाव ने किस तरह उसकी ओर देखा था और उसके वे घालिरी  
 शब्द भी याद आए 'अप तुम्हारे लिए निकलने का कोई रास्ता नहीं  
 रहा इरा मत। और तब वे बड़ी निराश उदास बुझी हुई प्राँधि। और  
 फिर ऐसा कि घमघमा न लिखा रहता है, वह फूट-फूट कर रोया,  
 और निजलिस्तान की मार फोमुदका, फिमुदका और स्नानदुलिया के  
 पास चला गया ।



## धत्तीस

उसी दिन प्रातःकाल जब मरिघाना अपने कमरे के बाहर आई तो उसने देखा कि नेम्घानाव कपड़े पहिने एक हाथ पर अपना सिर टिकाए और दूसरे हाथ को बेजान और निदबल रूप से अपने धुटने पर रखे साफे पर बैठा है। वह उसके पास गई।

नमस्कार अलैक्सी तुमने कपड़े नहीं बदले ? साँप भी नहीं ? तुम्हारा चहुरा कितना पीला पड़ गया है।

उसकी भांगिनी पलकों धीरे-धीरे ऊपर का उठी।

'नहीं, मैं कपड़े नहीं बदल और न साँप ही।'

'क्या तुम बीमार हो, या यह कल का परिणाम है।'

नेम्घानाव ने अपना सिर हिलाया।

सालोमिन ने तुम्हारे कमरे में आने के बाद मैं साँप न सका।

'कन्य /

कल शाम को ।'

'क्या तुम्हें ईर्ष्या हो रही है, प्रतीक्षी ? यह तो बिल्कुल नई बात है । और ईर्ष्या के लिए तुमने समय भी क्या चुना है । वह मेरे साथ कुछ पन्द्रह मिनट रहा होगा—और हम लोग ने उसके नतीजे पुरोहित के बारे में और प्राची की व्यवस्था के बारे में दाने कीं ।

मुझे मान्य है कि यह तुम्हारे पास केवल पन्द्रह मिनट ही ठहरा था । मैंने जब वह बाहर आया था तो उसे देख लिया था, और मैं ईर्ष्याली नही हो रहा हूँ । मोह बिल्कुल भी नहीं । लेकिन फिर भी उसके बाद मैं सो न सका ।

क्या ?

नेम्यानोव ने कोई उत्तर नहीं दिया । थोड़ी देर बाद बोला, 'मैं सोचता रहा सोचता रहा सोचता रहा ।

क्या ?

'तुम्हारे बारे में 'और उसके' और अपने बारे में ।

'और किस नतीजे पर पहुँचे तुम ।'

'क्या तुम्हें बताना ही होगा मारमाना ?'

'हाँ, मुझे बताना ।'

मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे 'और उसके' और स्वयं अपने भी, रास्ते की बाधा हूँ ।

'मैंने ? उसका ? मैं पूछती हूँ, तुम्हारा इसका मतलब क्या है ? यद्यपि तुम कहते हो कि तुम्हें ईर्ष्या नहीं हो रही है । लेकिन तुम्हारी बात खुद जाहिर करती है कि तुम्हें ईर्ष्या हो रही है । लेकिन तुम अपने पाप ही अपने रास्ते की बाधा कम हो ।

'मारमाना मेरे भीतर तो प्रादमी हैं, और एक दूसरे को जिन्या नहीं रहने देना चाहता । इसलिए मैं सोचता हूँ कि दोना ही जिन्दा न रहें, ठा ही अच्छा है ।



‘बुप, बुप, धलैस्ती, ईस्वर के वास्ते बुप करो। क्यों तुम मुझे धौर भपने की भी प्रस्त करना चाहते हो? इस समय तो हमें यह सोचना-बिचारना चाहिए कि हमें क्या कदम उठाने हैं। तुम तो जानते ही हो कि वे लोग हमें यहाँ चैन से न बैठने देंगे।’

नेम्यानोष ने प्यार से उसका हाथ धाम लिया।

‘मेरे फरीब बैठ जाओ, मरिमाना, मेरी बगल में, धौर भाओ धभी जब तक कुछ समय है, हम कुछ यातें करल, दोस्तीं की तरह। भाओ मुझे भपना हाथ दे दो। मं सोचता हूँ कि हमें भापस में एक दूसरे की, भपने भापको समझ देना प्रच्छा होगा, हालाँकि कहा तो यह जाता है कि हर तरह का स्पधीकरण धौर भाधिक उलझन ही बढ़ाता है। लाफन तुम दयामु धौर बुद्धिमान हो, तुम यह सब समझ लोगी, धौर मैं जो न कह पाऊँगा, उसे तुम स्वयं समझ लोगी। बैठ जाओ।’

नेम्यानोष के स्वर में बड़ी कोमलता थी, धौर उसकी धायों में एक विशिष्ट स्नेह पूर्ण कोमलता धौर लिग्न्यता थी जिनसे यह एकटक मरिमाना को देख रहा था।

यह बड़ी प्रसन्नता के साथ उसकी बगल में बैठ गइ धौर उसका हाथ भपन हाथ में धाम लिया।

पन्थबाद, मेरी प्रिय मरिमाना! जा, भव सुनो! मैं तुम्ह बहुत देर तक नहीं राऊँ गा। म जो कुछ तुमस कहना चाहता हूँ उस पर मन धुब प्रच्छा तरह साथ विचार लिया है। रात भर मन ही मन उस दुहृयता रहा हूँ। तुम यह मत सोचना कि कल की घटना न मुझे विचलित कर दिया है, इसमें उन्वह नहीं, कि काम में बड़ा ही मूउतापूर्ण क्रिया था धौर कु-कलाहट पैग करने वाला भी, पर मैं यह भी जानता हूँ कि मेर बार में तुमने कोई गन्दी या सुच्छ बात नहीं बोधी हागी तुम मुझे प्रच्छी तरह समझती हा। मैं जो धभी तुमसे रहा कि मन की घटना न मुझे विचलित नहीं क्रिया है, यह सही नहीं

है यह सब बन्वास है इसने मुझे विश्रित कर लिया है, इसलिए नहीं कि मुझे नये की हानन में घर लाया गया बल्कि इसलिए कि यह मेरी असफलता का अन्तिम प्रमाण था सिर्फ इसमें नहीं कि मैं रुसिया की तरह घराब नहीं पी सकता बल्कि हर बात में। हर बात में। मरिमाना प्रय यह कह देना जरूरी हो गया है कि जो समान उद्देश्य हम दोना को करीब लाया था जो हमारे मिलन का आधार था और जिसके लिए हम लोगों ने पर छाड़ा था उस पर प्रय मुझे उनिक-नी विश्वास नहीं रहा है। सब बात बताऊँ कि मेरा जोग सी काफी पहिले ही ठंडा पड़ चला था लेकिन मुम्हारा जोय मुझे अब तक लगातार बढ़ाया देता रहा था और उसने फिर एक बार मेरे अन्दर जोय की ली जला दी थी। लेकिन मुझे अब उसमें कोई विश्वास नहीं है। मुझे उसमें जरा भी आस्था नहीं है।

उसने अपने खाली हाथ स अपनी भाँखें बन्द करनीं और दागनर मौन रहा। मरिमाना भी मौन रही और निगाह नीचे किए रहती - उसे धनुमय हो रहा था कि उनने उसे कोई नई बात नहीं बताई।

'मैं सोचा करता था नेग्यानोव ने अपनी भाँखा पर स हाथ हटा कर, लेकिन मरिमाना की और देखते हुए फिर कहना मुश्किल कि मैं उद्देश्य पर तो आस्था रखता हूँ सन्देह है मुझ अपने ही ऊपर है, अपनी शक्ति पर, योग्यता पर, और मैं साबता कि मैं ही उद्देश्य क योग्य नहीं हूँ पर अब ऐसा लगता है कि इन शाना को अलग चलना नहीं किया जा सकता और फिर अपने आपका पत्रा देने स क्या लाभ? नहीं मुझ उद्देश्य पर ही विश्वास नहीं है। और क्या तुम्हें विश्वास है, मरिमाना, उस पर?'

मरिमाना सीधी बैठ गई और उसने अपना सिर ऊपर उठाया, बोली।

हाँ, प्रलेखी, मुझे उस पर पूरा पूरा विश्वास है। मैं अपनी भारना की समस्त शक्ति से उस पर आस्था रखती हूँ, और इस-...

बाहे कितना भी नीच क्या न होऊँ। तुम्हें एक साथी भवस्य मिनेगा इसमें सन्देह न करो।'

मरिघाना ने ज्वानोव के घोर निःकट मुक भाई और उसके मुख के पास अपने मुख को लेजा कर अत्यन्त उत्सुकता और कौतूहल से उसने उसकी आँखों में उसकी आत्मा में—उसकी अपनी आत्मा की गहराई में झाँकने का प्रयास किया।

'तुम्हें हो क्या गया है, झलैकसी? तुम्हारे मन में क्या है? मुझे साफ साफ बताओ। तुम मुझे भयभीत कर रहे हो। तुम्हारे पन्द्रहने पहेली जैसे घोर प्रजीव है और तुम्हारा चेहरा! मैंने तुम्हारा ऐसा चेहरा कभी नहीं देखा।

नेज्वानोव ने स्नेह से, आहिस्ते से उसका मुख अपने मुख के पास से हटा दिया और उसका हाथ चूम लिया। इस बार मरिघाना ने विरोध नहीं किया, और न हँसी ही और तब भी सर्वांकित दृष्टि से उसकी घोर देखती रही।

'बवराओ मत कृपया! इसमें कोई प्रजूबा बात नहीं है। सारी मुश्किल तो यह है लोग कहते हैं कि मार्कोसोव को किसानाने न मारा पीटा है, उसने उनके साथ-भूँसे सहे हैं, उन्होंने उसकी पसलियाँ तोड़ दी हैं 'मुझे किसानाने नहीं पीटा—बल्कि उन्होंने मेरे साथ धराब भी पी, मेरे स्वास्थ्य के लिए पी लेकिन उन्होंने मार्कोसोव की पसलियों से भी अधिक मेरी आत्मा को घायल कर दिया, उसे चूर चूर कर दिया। मैं पैदा संश्रित हुआ' मैंने अपने को सुधारने की लाख कोशिश की पर जिसनी कोशिश की उसना ही और भी अधिक संश्रित होता गया। यही तुम मेरे बहरे में देख रही हो।'

'झलैकसी,' मरिघाना ने मद्धिम स्वर में कहा, 'मुझे अपने मन की सारी बातें साफ साफ न बताना, मेरे साथ तुम्हारा बहुत बड़ा अन्याय होगा। नेज्वानोव ने फिर उसका हाथ अपने हाथ में दबा लिया।

‘मरिघाना, मेरा समस्त ब्यक्तित्व तुम्हारे सामने है यह कहा जाय कि तुम्हारे हाथ में है और मैं जो भी करूँगा तुम्हें पहिने बसा कर करूँगा, तुम्हें किसी बात पर पादपर्य नहीं होगा सचमुच किसी भी बात पर नहीं।

मरिघाना ने उन शब्दों का धर्म पूछना चाहा पर न पूछ सकी और फिर उसी समय सोलोमिन ने कमर में प्रवेश किया। उसकी गति पहिले की अपेक्षा अपिक सीली और तेज थी। उसकी धाँजा में तनाव था उसक चौड़े हाँठ कसकर मिच हुए थे, उसक समस्त चेहरे पर एक पैनापन ब्याप्त था और उस पर नीरस कठोर, और लगभग अदृश्यपन का भाव था।

दोस्तो, उसने कहना शुरू किया, मैं तुम लोगों को यह बताने आया हूँ कि अब अधिक देर करने का समय नहीं है—जल्दी से तैयार हो जाइए घन्टे भर में ही आप लोग क जान का समय भागया है। अब आप लोग को अपने विवाह के लिए जाना चाहिए। पाकिस्तान की और से कोई समाचार नहीं मिला है, पहिले तो उसका घोड़ा मरुताना में रोका गया फिर वापस भेज दिया गया है। वह वहीं ठहर गया है। शायद य उस नगर में स गए हँ। वह भद ता नहीं खोलगा, पर फिर भी कुछ कहा नहीं जा सकता शायद कोई बात उसक मुँह से निकल जाय और फिर शायद य पाइ स ही पता लगाल। मेरे भतीजे का तुम लोग की प्रतीक्षा करने का संदेश भेज दिया गया है। पवन तुम लोग क साथ आयगा। यह गवाह होगा।

‘और तुम, सोलोमिन चायिली?’ नेग्रानोव ने पूछा। ‘क्या तुम नहीं चले रहे हो? मैं दल रहा हूँ कि तुमने यात्रा क सपना पहिन रख है,’ उसने सोलोमिन क ऊँच जूता को देखते हुए कहा।

‘प्रोह, यह तो मेने बैस ही पहिन लिए है बाहर कीपड़ हो रही है।

‘सकिल क्या तुम्हें हम सोगा का उत्तरदायी नहीं बनना पड़ेगा, वासिनी ?

‘मेरा तो ऐसा विचार नहीं है सैर, यह मेरा अपना मामला है, इस मुद्दे पर छाड़ो। हाँ, एक घन्टे में। और मरिमाना तास्याना तुमसे मिलना चाहती है। वह वहाँ कोई चीज बना रही है।

‘ओह, हाँ ! मैं तो उसके पास खुद ही जा रही थी  
मरिमाना दरवाजे की ओर बढ़ी

कुछ विचित्र कुछ-कुछ घातक हाँ, और ब्यसापूर्ण हाँ नेज्मानोव के चेहरे पर छा गया।

‘प्रिय मरिमाना क्या तुम जा रही हो ?’ उसने एकाएक दूटती सी भावाब्ज में कहा।

‘वह कर गई।

‘मैं अभी आध घन्टे में लौट कर आई। मुझे वाँघा-बूँधी में धेर नहीं सगेगी।

‘हाँ, ठीक है, लेकिन जरा मेरे पास आओ  
‘अवश्य, लेकिन किस लिए ?’

‘मैं तुम्हें एकवार और जी भर कर देख लेना चाहता हूँ।’ उसने उसे देर तक धीरे धीरे देखा। ‘असखिदा, असखिदा, मरिमाना !’ यह भौंचक्की हो गई।

‘क्यों मैं क्या ब्यर्थ की बकवास करने लगा था ? तुम आध घन्टे में लौट आओगी न, लौट आओगी न ? क्यों ?’

‘जल्द।

‘जल्द’ मुझे माफ करना। जागने के कारण मेरा सिर चकरा रहा है। मैं भी ‘जल्दनी ही सामान बाँधे लेता हूँ।

मरिमाना कमर के बाहर चली गई ! सोलोमिन भी उसके पीछे हो जाने वाला था।

मफिन नेग्घानाव न उस राक लिया ।

'बासिली ।

'हाँ, क्या बात है ?'

'मुझे प्रपना हाय दा । तुम्हारे प्रतिधिसत्कार क सिग मुक्त तुहें  
मन्यवाद देना है, मेरे दोस्त ।

सोसाभिन हँसा ।

क्या क्याल है । फिर भी उसन उग्र प्रपना हाय द दिया ।

घोर एग बात घोर कहनी है, नग्घानाय ने प्राण कहा प्रगर  
मुझे कुछ हा जाय सो क्या में तुम पर विदवास कर सकना है,  
बासिली कि तुम मरिघाना का नहा छोड़ोगे ।

तुम्हारी हाने बानी पत्नी को ।

हाँ मरिघाना दा ।

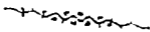
'पहिली बात सा यह कि मुक्त पूरा पूरा विरवास है कि तुम्हें कुछ  
नहीं हागा लकिन फिर भी तुम निदिपन्त रहो मरिघाना मर लिए  
उतनी ही प्रिय है जितनी कि यह तुमका प्रिय है ।

प्राह ! यह में जानता हूँ जानता हूँ ! तब ठीक है, मन्यवाद ।  
सो फिर एक घण्ट में ?

'हाँ ।

में धियार रहूंगा । प्रसविना ।

सासाभिन बाहर चला गया घोर उसन मरिघा १ का सीढ़ियाँ पर  
पकड़ लिया । नग्घानाव क बार म उसत कहूने भी कारे बात उसक  
मन में थी लकिन उसन नहीं नहीं । घोर मरिघाना भी प्रपन मन में  
समझती जो कि वह उसन कुछ कहना चाहता है लकिन वह वह नहीं  
रहा है, घोर वह नी चुप ही रही ।



## रातोस

सोलामिन जम ही कमर स बाहर गया  
नेग्रानोव साफा पर से तुरस उठकर  
खड़ा हा गया, एक काने स दूसरे कान तक दा  
वार घबकर काट धीर फिर कमरे क बीचा  
बीच जड़वत बिभार मग्न खड़ा रहा फिर  
एकाएक मपन का ककभोरत हुए उसने मपने  
की संयत किया और त्यागवासा भेष बदला  
ठाकर मार कर उन कपड़ा को एक काने  
में फक दिया और मपने कपड़े निदास पर  
पहिन लिए । तब बह तीन पाया बाली मज  
पर गया, दरार में स उसने दो सोसयम्ब  
लिफाके और एक छोटी सी बीज निकाली ।  
उस बीज को उसने मपनी जेब में ठूस लिया  
और लिफाफों का मेज पर ही छोड़ दिया ।  
तब बह प्रंगीठी क पास झुक गया और उसका  
छोटा सा दरवाजा खोला । प्रंगीठी में रास  
का डेर सगा हुआ था । नेग्रानोव की पातु  
सिपि, उसकी कविताया का प्रय यही प्रवसेप  
बचा था उसने उन सबको रास में जमा  
बासा था । उनिल मार्कोनोव की दी हुई

मरिघाना भी तस्वीर बची हुई थी। वह मंगीठी में दीबास के सहार  
 चिपकी पड़ी थी। ऐसा लगता था कि उस तस्वीर को भी जला टाकने  
 का उसे साहस नहीं हुआ। नज्दानोव ने सावधानी से चित्र को बाहर  
 निकाला और लिफ्टफा के पास ही नज़र पर रख दिया। तब दृढ़ता के  
 मान के साथ उसने अपनी टापी उठाई और दरवाज़े की धार बढ़ा।  
 लेकिन वह रुक गया। पीछे मुड़ा और मरिघाना के कमरे में गया।  
 वहाँ वह एक मिनट तक खड़ा रहा चारा धार देता और उसक छोट  
 से सकरे बिम्बेर के पास जाकर मुँहा घोर "वी हू" निसर्बी भरत हुए  
 उसने अपने हाठ गड़ा लिया उमकें तकिए पर नहा बल्कि पैरा की  
 जाह पर तब वह एकाएक उठ खड़ा हुआ और अपनी धाँपा पर  
 अपनी टापी घाबत हुए धनी से बाहर निकल गया।

बराम्द या सीढ़ियाँ पर नज्दानोव की क्रिया से ना नट नहीं हुई।  
 वह सीधा पिछवाड़े के हात में जा पहुँचा। नीचे मुँह धारता से धाकाय  
 पूसरित और उदास सा हा रहा था। नम हुआ के भ्रका से पास की  
 नाकें धीरे पड़ा की पतियाँ नून रहीं थीं। प्रायः कारखान में धीरे दिना  
 की प्रपक्षा कम धीरे और गड़ाग्राहट हा रही थी। उसक प्रहाते से  
 पोयले तारकोल और चर्वी की गंध आ रही थी। नज्दानोव ने साथ  
 धीरे एक पैनी, तेज कुछ खोजती हुई सी नज़र डाली और सीधा उस  
 पुराने सय से वृण के पास जा पहुँचा जिसने उसक यहाँ आने के पहिले  
 ही दिन जय उत्तन अपने कमरे की लिङ्गी से बाहर भ्रका पा सी  
 उठना ध्यान अपनी धीरे धाकदित किया था। इस पड़ के तन पर  
 मूगी भाई वन गई थी उसकी टेढ़ी मड़ी नंगी धाने जिय पर बस कहीं  
 कहीं लालिनायुक्त हरे पतियाँ न्यकें ल रही थीं। इपर उपर किन्ती  
 कूड़े की नीर मागडा सा याहा से तप्ट हवा में उठी हुई थीं।  
 नज्दानोव पड़ की जड़ा में पास की कान्नी मिट्टी पर दृढ़ चरणा से लड़ा  
 हा गया और उसने अपनी खेब से पट्ट छाटी सा खीज निकाली जो  
 उसने मत्र धीरे दरवाज़े में से निजान कर अपनी खेब में डस ला पा।



तब उसने उस छाटे से मजान की सिङ्गिन्या की घोर ध्यान से देखा ।

'अगर फाई मुझे धब नी देत थ', उसने सोचा, 'तो मैं टास जाऊँ। लेकिन कहीं किसी मानव चतुर का चिह्न भी नहीं दिखाई दिया। हर चीज मरी हुई सी ना रही थी, हर चीज ने उससे मुँह मोड़ लिया था और उस उसके भाव्य पर छाड़ दिया था। कवल कारखाना माना नारी मन से गुरा रहा था, और ऊपर से सुहान बड़े मेहू की पैनी चूँदे गिरने लगी थी।

तब उसने पड़ की झुती हुई ढाला क बाब से, जिसके नीचे वह खड़ा था तोच भुक धु धने, उदास धूम्य नम आदात को देखा, अम्हाई सा अपने बन्धे भवभोरे धार सोधा धब कुल जेप रही रहा—मैं धब पाटसवग धापस नहीं जाऊँगा, न खेल न जाऊँगा। उसने टापो एक धार फकी। उस लगा जैसे एक धनन्त नतान्ति ने उस दबाध सिधा है। उसने पिस्तौल सीन पर रबो और उत्तका धाड़ा दबा दिया ।

उसे लगा जैसे किसी चाञ्च ने उस एकदम धक्का दिया हो, पर बहुत जोर से भी नहीं लेकिन वह पीठ क बल गिर पड़ा था और समझने की कोशिश कर रहा था कि उस क्या हो गया है, और कैसे उसने मनी-अमी कार्याना का दखा है। उसने उसे पुकारने की भी कोशिश की, और कहना चाहा, कि 'भाहू, मैं मरना नहीं चाहता'। लेकिन धब वह पूरी तरह से चुप पड़ गया था और एक पुपस हरे रंग की एक नभर उसके मुँह पर, उसकी आँखा में उसके सिर पर उसकी हड्डिया क भीतर धनकर काट रही थी—सग रहा था कि कोई एक धपटा भयानक बाध उस गुम्बी पर दबापता ना रहा है।

वास्तव में नेज्जानोथ ने सामने की सिङ्गिनी में कार्याना की नसक उसी समय देखा थी जब उसने अपनी पिस्तौल का धोड़ा दबाया था। वह ऊपर एक सिङ्गिनी क पास गई थी और उसने नेज्जानोथ का सब क

पेड़ के नीचे खड़े देख लिया था। उसे यह सोचने का अवसर ही न मिला कि वह इस समय पानी बरसते में सेवक पेड़ के नीचे नगे सिर पड़ा क्या कर रहा है कि उसने देखा कि वह घनाज की वाली की तरह पीठ के बल पीछे का मुड़फ गया। उसने गान्धी की आवाज नहीं सुनी—उसकी आवाज बड़ी मद्धिम थी—लेकिन उसने तुरन्त अनुमान लगा लिया कि जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है और वह बंद हवाय नीचे बगीचे की घोर दीड़ी और दीड़कर नेग्यानोव के पास पहुंची। 'असैजसो दिमित्रिच, क्या बात है?' लेकिन तब तक तो अचकार उस आवाज चुका था। सात्याना उसके ऊपर झुकी, ता खून दखा।

'पबेल!' वह इतनी आरसे बीसी कि जैसे वह आवाज उसकी न हा—'पबेल!'

दूसरे ही क्षण मरिमाना, सोलोमिन, पबल और फारखान क दा और मजबूर बगीचे में जा पहुंचे। उन्होंने तुरन्त नेग्यानोव को उठाया और कमरे में लाए और उस उसी साफे पर सिटा दिया जिस पर उसने अपनी अन्तिम रात बिताई थी।

वह पीठ के बल लेटा था और उसकी अघरगुनी आँखें जड़ हो रही थीं और उसका बहुरा तंजी से स्वाह पड़ता जा रहा था। वह धीमी और भारी सांस ल रहा था, कभी-कभी सिसकी भी भरता, जैसे मानो उसका दम घुट रहा हो। अभी जीवन न उसका साथ नहीं छोड़ा था। मरिमाना और सोलोमिन सोफे के अगल-अगल खड़े थे। दोनों का चेहरा भी वैसा ही पीला था, जैसा कि नेग्यानोव का। अग्निभूत, अकभ्योर हुए थे, उत्तजित और सप्त स थे दोनों ही—विशेषकर मरिमाना—लेकिन होंग हवास नहीं खोप था। 'पहिल हम लोग न यह बात क्या नहीं साचा। व दोनों ही साथ रह थे और साथ-साथ यह भी साथ रहे थे कि उन्हें पहिल हा से इसका आभास हो गया था। जब नेग्यानोव ने मरिमाना से कहा था 'मैं जो कुछ भी करूंगा तुम्हें बचा कर करूंगा, तुम्हें निया पाउ पर आश्वर्ष नहीं करना हागा',

घोर फिर जब उसने अपन भीतर के वा अलग अलग ब्यक्तियों की बात कही थी, जो साथ-साथ नहीं रह सकते, तो क्या मरिघाना के हृदय में एक धु बसी सी घासका नहीं उत्पन्न हुई थी? क्यों नहीं उसने ठगी उस घासका पर विचार किया? क्या जब वह सोलोजिन की घोर देखने का साहस नहीं जुटा पा रही है, जैसे मानों वह भी उसका साथी रहा हो। माना वह भी घासा की घुटन का अनुभव कर रहा हो? इस समय क्यों वह नेग्जानोव के लिए न केवल असीम अनुकम्पा और दया का अनुभव कर रही है, वरन् एक प्रकार का गय और कंप और सज्जा का भी अनुभव कर रही है? क्या यह सम्भव है कि उसे बचा सकता उसका हाथ में था? क्या दोमा को ही वाचने का साहस नहीं हा रहा है? मुश्किल से सांस न पा रहे हैं—और प्रतीक्षा कर रहे हैं किन्स बात की? हे, दयामु भवमान् !

सोसागिन न डॉक्टर का बुला भेजा, यद्यपि यह साफ था कि जब कोई घासा नहीं थी। उस छाटे से घाब पर, जो जब फाला और रक्छीन हा गया था सात्याना ने ठंडे पानी का बड़ा सा फाया बना कर रख दिया था, उसने उसका याला का भी ठंडे पानी और सिरक स भिगा दिया था। एकाएक नेग्जानोव ने सम्वी-सम्बी गहरी सांस लेना बन्द किया और थोड़ा हिंसा हुआ भी।

‘जब हाथ घा रहा है इत’, सोलोजिन ने फुसफुसाया।

मरिघाना साक्षा के पास अपन घुटना के यत्न बैठी थी

नेग्जानोव ने उसकी घोर देखा, जब तक उसकी घासा में मरते हुए ब्यक्ति की जड़ता थी।

घोट, मैं अभी तक जीवित हूँ’, उसने अत्यन्त धीरे स्वर में कहा कि उसका सुनना नी कठिन था। ‘फिर प्रसक्त रहा मैं तुम्हें रोके हुए हूँ।

प्रत्याजा। मरिघाना सिसकने लगी।

‘घोट, हाँ अभी वाद है तुम्हें, मरिघाना, मेरी कथिता

में "फूला स मुझे संजा देना" " कहीं हैं फूल ? लेकिन उसके बदल तुम यहाँ हो बहीं, मेरे पत्रों में ' "

वह एकाएक ऊपर से नीचे तकड़काप उठा ।

'भाहू, यह खी' एक दूसरे को दो दोनों अपने हाथ—मेरे सामने 'बल्दी' पकड़ो

सालामिन ने मरिमाना का हाथ पकड़ लिया । उसका स्तिर साफ़ पर टिका हुआ था और चहरा नीचे की ओर मुका था, धाव क पास ।

सालामिन सतर और स्तिर सड़ा था, और रात की तरह से काना दिखाई पड़ रहा था ।

'हाँ ठीक ही'

मेग्मानोव फिर मुबक उठा, किन्तु एक विचित्र प्रसाधारण ढग से 'उसकी छाती पूरी और जोर की निश्वास निकसी

वह उन दोनों के घापस में श्रुये हाथा पर अपना हाथ रखने की कोशिश कर रहा था लेकिन, उसके हाथ तो पहिस ही निर्जोब हो चुक थे ।

'यह जा रहे है अब', तात्याना, बुदबुदाई, जो परबाजे पर खड़ी थी, और अस का चिह्न बनाने लगी थी ।

सित्तियाँ धीरे-धीरे कम होती जा रही थीं उसकी घाँवें अब भी मरिमाना को सोज रही थीं पर एक प्रकार की खोफनाक, पीछे का सी जड़ सफेदी उन पर छाती जा रही थी

'ठीक है ' उसक अन्तिम शब्द थे ।

उसक प्राण पक्षक उड़ चुक थे और सालामिन और मरिमाना के घापस में जुड़ हाथ अब भी उसकी छाती पर पड़े थे ।

उसने अपने अन्तिम श पत्र छोड़ थे । एक सित्तिय क नाम था जिसमें कुछ पंक्तियाँ ही थीं

'अलविदा नाई, मित्र अलबिरा ! जब तक यह कागज का टुकड़ा तुम्ह मिनागा, नै इन संसार न जा चुका होगा । वह मत्र पूछा रि

क्यों घोर कैसे, घोर शोक भी मत करो, विश्वास करा कि भय में मजे में है। घमर पुश्किन की 'एव्गेनी बोनोविन' में लेन्की की मृत्यु पर उसकी कृति पढ़ना। तुम्हें याद है?—“सिद्धकिया पर सकेदी हो गई है, मालकिन खली गई है” बस। तुमसं भय घोर बात करना शर्य है क्योंकि मुझे बहुत कुछ कहना है और उस सबका कहने के लिए समय नहीं है। लेकिन तुम्हें सूचित किए बिना मैं जा भी तो नहीं सकता था, नहीं तो तुम मुझे अभी जीवित ही समझा, और यह हमारी दास्ती के प्रति अन्याय भी होता। घमविदा, बिन्दा रहो।

तुम्हारा मित्र—घ० ने०।'

दूसरा पत्र जरा कुछ इससं बढ़ाया। बहु पत्र सोलामिन घोर मरिघाना खाना के नाम था। उसमें लिखा था 'मेरे बच्चो!' (इन शब्दों के बाद ही कुछ अथवा छुट्टी हुई थी कुछ मिट गया था या उस पर शब्दा पड़ गया था, जैसे उस पर धाँसू पड़ गए हैं।) 'तुम्हें याद यह मजबूत सा लगे कि मैं तुम्हें उस तरह से सम्बोधित कर रहा हूँ। मैं खुद भी अभी एक बच्चा ही हूँ और तुम सानोमिन, मुझ से तो उमर में बड़े ही हो। लेकिन मैं मर रहा हूँ, और अपने जीवन के छोर पर खड़ा हूँ अपने का बुजुर्ग समझ रहा हूँ। मैं तुम दोनों के हाँ भाने बहुत दापी हूँ, विशेषकर तुम्हारे भागे मरिघाना, तुमको इनना पुत्र बन के लिए (मैं जानता हूँ, मरिघाना, तुम्हें बुझ होगा) और मैं तुम्हें इतना बेचैन और उद्विग्न करता रहा हूँ। लेकिन मैं करता भी क्या? मेरे सामने घोर कोई रास्ता ही न था। मैं अपने को 'सत्य' नहीं बना सका, मरे लिए कबल एक ही रास्ता बचा था कि अपने धाँसू ही मिटा दूँ। मरिघाना, मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए भी एक काम बन कर खड़ा। तुम्हारा हृद्य विश्वास है, तुम मोह सदन करन में भी धाननन्द का अनुभव करतीं, एक घोर त्याग करने में लेकिन मुझे तुमसं ऐसा त्याग पाने का कोई प्रतिकार

नहीं था, तुम्हें और नी महान् और धम्मे काम करने हैं। मेरे सम्बन्धो  
 प्राप्ति, मैं तुम्हें एक सूत्र में बाँधूँ, अपनी कल्प में से। तुम दोनों  
 साथ साथ प्रसन्न रहोगे। मरिचाना, तुम निश्चय ही सोनामिन से  
 प्रेम करने लगोगी, और वह। वह था तुमसे अभी से प्रेम करता  
 है, अब उसने पहिले पहिले तुम्हें सिम्हागिन क यहाँ देखा था। वह  
 मुझसे छिपा न था, मर्यापि उसक कुछ दिन बाद ही हम दोनों साथ  
 साथ मागे से। माह, वह प्रातः कितनी धानवार थी कितनी मधुर  
 और जवान। अब उसकी याद मेरे लिए एक प्रतीक क रूप में है,  
 तुम्हारे सहगामी जीवन के प्रतीक रूप में—तुम्हारे और उसके—  
 और मैं तो उस दिन मनायास, वस संयोगवश ही उसकी जगह पर  
 था। लेकिन अब उसे समाप्त करने का समय आ गया है। मैं  
 तुम्हारे माबनामा को उसजित नहीं करना चाहता। मैं तो सिर्फ  
 अपने कार्य को म्यायोचिन ठहरा रहा हूँ। अब तुम्हारे कुछ क्षण बचे  
 ही बूझ क सीतगे— लेकिन कोई चारा नहीं। और कोई और  
 रास्ता भी नहीं, है क्या? मर्याविदा मरिचाना मरी भोती, मरी  
 सम्बन्धो सङ्गी, मर्याविदा। मर्याविदा सोनामिन। मैं उस तुम्हारी  
 देख देख में छोड़ रहा हूँ। धानन्द से जीवन व्यतीत करना—दूसरों की  
 नसाई के लिए जीवित रहना और तुम, मरिचाना मेरे धार में अभी  
 सोचना जब तुम गुप्त हो। और मरी याद करना कि वह भी एक  
 सच्चा और भला भावमी था, लेकिन ऐसा, जिसके लिए जीवित रहने  
 की अपेक्षा मर जाना ही उचित था। मैं तुम्हें सचमुच ही प्यार करता  
 था, मैं नहीं जानता, मरी प्यारी, लेकिन इनना मैं जानता हूँ कि इतनी  
 यहूरी भावना कितनी तुम्हारे लिए अनुभव की, पहिले कभी और छिपी  
 के लिए ना अनुभव नहीं की, और यदि यह जानना मरने के समय  
 कल्प में अपने साथ ले जाने क लिए मरे पास न होती, तो मरना मेरे  
 लिए बड़ा ही सचकर हो जाता।

'मरिचाना ! अगर कभी मरुतिना नाम की सङ्गी से तुम्हारी जेंट  
 हो, तो, मेरा इरादा है, सोनामिन उसे जानता है, और तायर तुमने

भी उसे देखा है—उससे कहना कि अपनी मृत्यु से थोड़ी बेर पहिले मेने  
 धडी कृतज्ञता से उसकी याद की थी। वह समझ आयगी।

लेकिन अब मुझे यह सब छोड़ना ही चाहिए। मेने अपनी खिड़की  
 के बाहर देखा है, जल्दी-जल्दी चलते बादलों के बीच में एक प्यारा  
 सा तारा। बादल चाहे जितनी जल्दी चलें पर उसे छिपा नहीं पाते।  
 उस तारे को देखकर, मरिघाना, मुझे तुम्हारी याद हो घाई है। इस  
 समय तुम बगल के कमरे में सो रही हो और तुम्हारे मन में कोई  
 प्रायश्चा नहीं है मैं तुम्हारे दरवाजे ठक गया था, और मेने तुम्हारी  
 पवित्र और धाम्त साँसों को सुना। अलविदा, अलविदा मेरी प्यारी।  
 अलविदा मेरे बच्चों, मेरे दोस्तों ! अलविदा !

तुम्हार—अ०।

पुन—‘ओफ, घिबकार है मुझे, कि मरने से पहिले अपने इस अन्तिम  
 पत्र में मेने अपने महान उद्देश्य के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा ?  
 सम्भवतः इस लिए कि मृत्यु के समय आदमी झूठ नहीं बोल सकता।  
 मरिघाना, मुझे इस पुनश्च के लिए क्षमा करना। झूठ मेरे ही मन में  
 है, उसमें नहीं, जिसमें तुम्हारी आस्था है।

‘ओह ! एक बात और तुम शायद सोचो मरिघाना, वह जेल से  
 डर गया, जहाँ उसे निश्चय ही घन्द कर दिया जाता, और उससे बचने  
 की उसने यह तरीका निकाल ली। नहीं, जेल जाना कोई बड़ी बात  
 नहीं है, पर उस उद्देश्य के लिए जेल जाना, जिस पर बिश्वास न हो,  
 सबमुज ही मूर्खता है। और मैं जेल की यातनाओं से बचकर अपने  
 धाम्त नहीं कर रहा हूँ। अलविदा मरिघाना ! मेरी पवित्र, निष्कलंक,  
 सङ्गी, अलविदा !

भारी-वारी से मरिघाना और सोसामिन ने इस पत्र को पढ़ा।  
 उसके बाद उसने इन दोनों पत्रों और अपने पत्र को अपनी जेब में  
 रखा और स्थिर खड़ी रह गई।

तब सोसामिन ने उससे कहा

'सब तैयारी पूरी है, मरिघाना घाघो भय हम बसें। हमें उसकी इच्छाएँ पूरी करनी चाहिएँ।

मरिघाना ने गघानोव क पास गई और अपने होठों से उसकी पीतल मोहों का स्पर्श किया और सोलोमिन की ओर मुड़कर बोली बसो।

सोलोमिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और दोनों कमरे से बाहर बसे गए।

कुछ पन्टा बाद जब पुलिस ने कारखाने पर छापा मारा तो उन्हें ने गघानोव मिला ता, पर साध के रूप में। दलपाना ने सब सन्धाम कर बाहर रख दिया था, उसके सिर के नीचे एक सफेद सक्रिया लगा दिया था और उसके हाथों से कास का बिन्हु बना दिया था और उसक पास ही एक छोटी सी मेज पर कुछ फूस भी रख दिए थे। पत्रेस ने, जिसे सोलोमिन चलते समय समाम जकरी हियायतों दे गया था पुलिस का स्वागत किया और उनकी ऐसी घापनुसी भी की और तिल्ली नी उड़ाई कि वे मही नहीं से कर पाए कि उसको पन्पवाद दें या उस फिरकार करमें। उसन विस्मार से उन्हें बला लिया कि घात्म हत्या कैथे हुई, और पुलिस वालों को बढ़िया पनीर और चरण पिताई और इस समय वासिली कैरोतिच और उख महिला फहाँ हैं इस पर अपनी अनिभिन्नता प्रगट की। यह बार बार यही कहता रहा कि वासिली कैरोतिच कभी अपने काम की वजह से देर तक बाहर नहीं रह और ये आज ही, और नहीं तो कस ठरू तो वापस सीट हो पाएंगे और ठव बहु उसी क्षण पुलिस वाला को उनके घाने की मुषना दे देया। यह पकका नरोस का प्रादमी है।

तो इस तरह सुपोम्य पुलिस अधिकाारी सासी हाथ वापस सीट गए, और उख की निगरानी पर एक सिपाही निमुछ कर गए और उससे वाचश कर गए कि वे सोध ही जाकर दावाधिकारी का भेजेंगे।



## अध्याय तीस

इन सारी घटनाओं के दो दिन बाद 'भासानी' से बात मान लेने वाले पादरी जोसिम के हाते में एक छोटी सी गाड़ी आकर रुकी। उस गाड़ी में एक स्त्री और पुरुष बैठे थे, जो पाठकों के अन्धरी तरह जाने-पहचाने हैं। भाने के दूसरे ही दिन दोना का विभिन्न विवाह हो गया। विवाह सम्पन्न होने के तुरन्त बाद ही वे दोनों वहाँ से भापता होगा और भले पादरी जोसिम को अपने काम के लिए कभी परचाताप नहीं हुआ। सोसोमिन कारखाने में अपने मालिक के नाम एक पत्र छोड़ गया था, जो पब्लिस ने उसे दे दिया था, जिसमें कारखाने की व्यवस्था का, जो मुनाफे पर चल रहा था पूरे विस्तार के साथ ब्योरा दिया हुआ था। उसी पत्र में उसने मालिक से तीन महीने की छुट्टी माँगी थी। यह पत्र नेज्मानोव की मृत्यु के दो दिन पहिले की तारीख में सिखा गया था, जिससे प्रगट होता है कि सोसोमिन ने नेज्मानोव और मरिघाना के साथ साथ जाकर स्वयं भी कुछ दिन छिपे रहने का निश्चय

पहिले ही कर लिया था। मज्धानोब की घातम हत्या के सम्बन्ध में जाँच हुई, पर किसी को कुछ भूराग न लग सका। लाश को दफना दिया गया था, और सिप्यागिन भी अपनी माँजी की सोब-सबर से हाथ धो बैठा था।

नी महीने बाद मार्कोलोव का मुकदमा पेश हुआ। मुफ्दमे के समय भी उसने वैसा ही धर्ताबा किया जैसा गवर्नर के यहाँ किया था, जिसमें घातम सम्मान भी था घातम संयम भी और नैराश्य का भाव भी। उसका वह स्वानाविक छीसापन अब कुछ मुलायम पड़ गया था, लेकिन कायरता से नहीं, परन्तु इसके मूल में एक दूसरी ही महती भावना थी। उसने अपनी कोई सफाई नहीं दी और न कोई पदचाताप ही प्रगट किया, न किसी को दोष दिया और न किसी दूसरे का नाम ही प्रगट किया। उसकी बुझी हुई धाँपों और कुम्हसाए मुख पर बस एक ही भाव विद्यमान था—इकता के साथ जो सामने है उसे सहने का भाव, उसे अपना भाव्य मान कर। उसका सरल सच्चे उत्तरा ने न्यायाधीशों तक के हृदय को पिपसा दिया और उनके हृदय भी उसके प्रति सहानुभूति से भर उठे। जिन किमाना ने उसे पकड़ा था और उसके खिलाफ गवाही दी थी उनके मन में भी उसके प्रति करुणा उमड़ आई और उन्होंने भी उस एक सरल सीधा और सच्चा घादमी बतया। लेकिन उसका धपराप सा साफ था ही। धपराप के दंड से बचने का तो उद्यक लिए कोई रास्ता था ही नहीं। और वह शायद स्वयं अपने को दंड का भागी समझता भी था। उसका सनी सहयोगी बिल्वर गए थे। मरुतिना ता जहाँ नजर नहीं घाती थी। घाँसोबुनोब को एक ब्यापारी ने, जिस वह त्रान्ति के लिए उकसा रहा था, मार डाला था। मोसुदिकन नय के मारे पागल सा हो गया था और उसने अपने कारनामा के लिए पदचातान प्रगट किया था। उसका ब्यास करके उस साधारण सा ही दंड दिया गया, किस्सायाकाव को एक महीने तक कैद में बन्द रखकर घाँ में रिहा कर दिया गया था और उसका एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में धूमत-फिरत रहने पर भी किसी प्रकार की कोई रोक नहीं

4 । ई नेग्यानोष को तो उसकी मृत्यु न ही मुक्त कर दिया था ।  
 ।मिन के मिसाफ कोई सख्त नहीं था, प्रत उसके विरुद्ध कुछ हो  
 तो न सका, पर उस पर सन्देह बना ही रहा । उमने जाँच पड़ताल से  
 बचने की भी काशिश नहीं की, और जब भी पूछ-ताछ के लिए उसकी  
 जबरन पड़ी, वह स्वयं मानर ह्राजिर हो गया । भरिमाना तो तस्वीर  
 से बिल्कुल बाहर ही रही और पाकिस्तन सारी मुसीबतों से साफ बच  
 गया । तब तो यह है कि उसकी भार किसी का ध्यान ही नहीं गया ।

इस समय में सनमग उड़ बरस बीत गया और जाड़े का मौसम आ  
 गया । सिप्यागिन, पीटसवगों में भव राज्य परिषद का सदस्य और  
 राजभवन का प्रमुख प्रयन्धकर्ता हो गया था और वह दिन पर दिन  
 तरकी करता आ रहा था ।

उसकी पत्नी संगीत और कला की संरक्षिका बन गई थी, हर  
 शाम को उसके घर पर संगीत गोष्ठी जमती और साना पीना होता ।  
 उसने शारव की भोजन-घासायें स्थापित कीं । मिस्टर कालोमियेस्तेव  
 भी अपने विभाग के एक प्रत्यन्त उदीयमान सचिव माने जाने लगे थे ।

उसी पीटसवग की एक वासिनी घोस्त्रोथ सड़क पर एक नाटे  
 कद का घाइमी फटा सा बिल्ली की खास क बोसगवाला घोवरकोट  
 पहने खगडाता हुआ पला जा रहा था, वह पाकिस्तन था । दिनव  
 दिमा में वह बिल्कुल बदल गया था । उसकी वासादार टापी के  
 नीचे सिर क बासों की निकली हुई सटों में भव कुछ चाँदी के  
 से सफेद धागे दिखाई पड़ने लगे थे । जब वह सड़क पर जा रहा  
 था तो सामने से एक लम्बे कद की भारी भरकम बदन वाली महिला  
 भी मोटे कपड़े क सवादे में अपने शरीर को पूरी तरह लपेटे घसी पा  
 रही थी । पहन तो पाकिस्तन ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और  
 उस पर एक उड़ती हुई नजर डालवा हुआ धागे बढ़ गया । सफिन  
 थोड़ी दूर पर ही वह एकदम ठक से खड़ा रह गया, दाएँ भर सोचता  
 रहा और फिर अपने हाया को ऊपर उछलता हुआ बल्दी से पीछे का

उड़ी। और महिला के समीप जा पहुँचा और उसकी टोपी के नीचे से झुककर गौर से उसकी घोर देखने लगा।

‘मगुरिना?’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।

महिला ने बड़े रीव से उसको सिर से पैर तक घूरा और एक शब्द भी बोले बिना भागे बढ़ गई।

‘प्रिय मगुरिना मैं तुम्हें पहिचानता हूँ’ पाकिस्तान कहते हुए मर्गजाता हुआ उसके पीछे लपका लेकिन डरो मन। मैं तुम्हारे साथ विश्वास घात नहीं करूँगा। तुमसे मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं पाकिस्तान हूँ सिला—पाकिस्तान जानती हो नेज्मानोव का दोस्त प्राप्रो मेरे साथ प्राप्रो। मैं यहाँ से सिर्फ दो फवम पर ही रहता हूँ। कृपया चलो न।

‘मैं कार्टेस रोकादीसातोपियूम हूँ, महिला ने धीमे संयत भाव जनक रूप से कुछ क्वी उच्चारण में उत्तर दिया।

‘चलो भी बेकार की बात मत करो। क्या खुब कार्टेस हो। प्राप्रो मेरे साथ। बैठकर कुछ बातें करेंगे

‘पर तुम रहते कहाँ हो?’ इटलियन कार्टेस ने यकायक पृ क्वी भाषा में पूछा। ‘मेरे पास समय बरबाद करने को नहीं है।

‘मैं यहीं रहता हूँ, इसी सड़क पर, देखो वह रहा मरा घर, या भूरा सा तिमजिसा मकान। तुमने बड़ी दया की कि तुमने रहस्यमयी बनने की कोशिश नहीं की। प्राप्रो मुझे अपना हाथ दो और मेरे साथ चलो। क्या तुम्हें यहाँ प्राये काफ़ी दिन हो गए? और वह तुम कार्टेस कैस हो गए? क्या तुमने किसी इटली के कार्टेस से विवाह कर लिया है?’

‘मगुरिना ने इटली के किसी भी कार्टेस से यास्त्व में शादी नहीं की थी। असल बात तो यह है कि उसला पासपोर्ट किसी कार्टेस रोकादीसातोपियूम के नाम में बनवाया गया था, जो प्रभी पिछले दिना ही मरी थी। इस पासपोर्ट के द्वारा वह बड़ी शान से बिना किसी बाधा

के रूत सौट भाई थी, यद्यपि वह इटली भाषा का एक छन्द भी नहीं जानती थी और उसका चेहरा भी एकदम विचित्र रूप से कसी था।

पाकिस्तान उस अपने मत्स्य साधारण निवासस्थान पर ले गया। उसकी कुवची बहन भी रसोई घर के दरवाजे पर पड़े पर्दे के पीछे से प्रागन्तुका से मिलने के लिये बाहर निकल आई।

'यह है स्नापोचिका,' पाकिस्तान ने परिचय दिया, 'मेरी एक पतिव्रत मित्र। जितनी जल्दी सम्भव हो सके हमें बोड़ी सी चाय बनाकर दो।'

पाकिस्तान ने यदि नेग्मानोव का नाम न लिया होता तो मधुरिना उसके साथ न जाती। उसने अपनी टोपी उतारी और अपना पुरुषा जैसा हाथ अपने छंटे सँवारे बालों पर फेरा और अभिवादन कर चुपचाप बैठ गई। उसमें कोई परिवर्तन नहीं आया था यहाँ तक कि वह रूपड़ भी वही पहिन थी जो दो वर्ष पहिले पहिने थी, किन्तु उसकी भाँखों में अघल स्थिर पीड़ा थी, जिसने उसके चेहरे की स्वभाविक कठोरता में एक अजीब मर्मस्पर्शिता उत्पन्न कर दी थी।

स्नानदुनिया चाय बनाने जाती गई और पाकिस्तान मधुरिना के सामन बैठ गया, उसके घुटना को कोमलता से थपथपाया और सिर झुका लिया, लेकिन जब उसने बोलने की कोशिश की, तो उसे अपने गले को साफ़ करना पड़ा, पर उसकी आवाज भर्रा गयी और स्वर टूट गया औरता में धीसू डबडबा घाए। मधुरिना झूझ, स्थिर और कुर्सी की पीठ से बिना टिके सीधो सतर वैठी थी और उदास भाँखों से मृन्ध में साक रही थी।

'हाँ, हाँ' पाकिस्तान ने कहना शुरू किया। 'कैसे ये बे दिन!' तुम्हें देय कर मेरी माय ठानी हो रही है, बहुत सी बातें - मुझे याद आ रही हैं, और बहुत से सोग, मृत और जीवित, मरे वे तोते भी मर गए बच्चे लेकिन तुम तो उन्हें नहीं जानती, और दोना मरे भी एक हा दिन, जैसा मैंने पहिले ही कहा था। नेग्मानोव - बेचाप नेग्मानोव। 'तुम तो जानती होगी, निरूपय ही'

‘हाँ, जानती हूँ मगुरिना न कहा वह प्रब मो क्षुभ्य में साक  
 रखी थी ।

‘और तुम भौत्राकुमाव के बार में भी जानती हागी / मुसिरिना  
 न उत्तर में केवस सिर हिनाना । वह नेजबानोव क वारे में ही बातें  
 करती रहता चाहती थी पर वह पास्तिन से उसके वारे में और कुछ  
 पूछने का साहस नहीं कर सकी । लेकिन इसके बिना भी वह मगुरिना  
 क मन की बात समझ गया ।

‘मुझे पता बना था कि वह जा पत्र छाड़ गया है, उसमें तुम्हारे  
 वारे में उसन कुछ लिखा है—क्या यह सच है /’

मगुरिना तुरन्त कोई उत्तर न दे सकी ।

‘सच है घंतव वह किसी तरह स कह सकी ।

‘बड़ा प्यारा भादमी था वह ! सिफ जरा भपन रास्ते स भटक  
 गया था । वह मुझ जैसा ही श्रन्तिकारण था । जानती हो, वह वास्तव  
 में क्या था ? मयाव भादशवादी ! समझी मेरी बात ?’

मगुरिना न उस पर एक उड़वा सी नजर डाली । उसन उसकी  
 बात नहीं समझी थी भार वास्तव म उसन उसे समझने की कोशिश  
 भी नहीं करनी चाही । उसे बड़ा भजाव और अनुपयुक्त लगा कि  
 पास्तिन नेजबानोव क साथ भपनी सुनना करन का साहस करे, लेकिन  
 उसने सोचा ‘जता, बपारन दा इत छोटी । ( यद्यपि वह दोली  
 विस्तुस भा नहा बपार रहा था, बल्कि जपन बिभार स ती वह भपने  
 का और नी बिनीत बना रहा था । )

सिस्तिन नाम क एक ब्छि न मुझे यहाँ लाव निकाला , पास्तिन  
 न भपनी बात जारी रखी । नेजबानोव ने मृत्यु स पहिल उस भी एक  
 पत्र लिखा था । वह सिस्तिन पूछ रहा था कि क्या वह उसक कुछ  
 कागज-भत्तर कही पा सकता है । लेकिन प्रत्याज का साथ सामान  
 वो मुहर बन्द कर दिया गया है । और फिर उसमें कोई कागज  
 प नी नहीं । उसने सब जना मत प, , यहाँ तक कि भपनी श्रित्ताएँ

भी। तुम शायद नहीं जानतीं कि उसने कविताएँ भी लिखी थीं। मुझे उनका बड़ा दुःख है। मेरा विश्वास है कि उनमें से कुछ तो बड़ी ही सुन्दर रही होंगी। सब कुछ उसका साम ही नष्ट हो गया। एक रैवर में डूब ही गया। सदा सदा के लिए मर गया। कुछ भी नहीं बचा, सिवाय उसके मित्रों के मन में उसकी स्मृतियाँ के और यह भी तभी तक जब तक कि वे भी अपनी अपनी मारी से इस संसार से चले ही नहीं जाते।

याड़ी देर के लिए पाकिस्तान मौन हुआ गया, और फिर उसने कहना शुरू किया 'सिप्यागिन! याद है तुम्हें उस रोनील देवी बुद्धिमान यादमी की? अब उसकी पौ बरह है। वह इस समय तक शक्ति और यश की धाटी पर खड़े हुए हैं।

मसूरिना का सिप्यागिन की जरा भी याद नहीं लेकिन पाकिस्तान का सिप्यागिन दम्पति से बड़ी भूला थी, विशेषकर मिस्टर सिप्यागिन से उतनी ज्यादा कि वह उनकी घञ्जियाँ उड़ाने के लोभ को न छोड़ सकता था। उसका कहना है कि उनके घर में बड़ी उच्छ्रिता का बाधा बरह है। वे सदैव अपने गुणा की बढ़ बढ़ कर ध्यान मारा करते हैं। लेकिन मैंने देखा है कि जो अपने गुणा के बारे में अपने मुह मिट्टी बनते हैं और बढ़ बढ़ कर बातें करते हैं, वे जैसे ही दुर्गन्धित होते हैं जैसे रोगियों का कमरा निश्चय जानो तुम, कि उनमें कोई न कोई कमपता निश्चय ही होती है। यह सन्देहास्पद विश्व है। बेभार प्रसन्नता। वे ही उसके नाश के कारण थे, वह सिप्यागिन दम्पति।'

'सोलागिन के क्या हाल-भाव हैं?'

मसूरिना ने पूछा। एकाएक नेग्रानोव के बारे में पाकिस्तान से और कुछ जानने की उसकी इच्छा समाप्त हो गई।

'सोलागिन! पाकिस्तान ने ऊँच स्वर में कहा। वह बड़ा धांधलार यादमी है। बड़े मजे में कट रही है उसकी। उसने अपना पुराना कारखाना दोड़ दिया और अपने साथ प्रथम प्रथम मजदूरों को भी

सेता गया, उनमें एक था सुनते हैं, बड़ा तेज था। उसका नाम पवेल था—'बहु' उस भी अपने साथ सेता गया। अब सुनते हैं उसने अपना कारखाना स्थापित कर लिया है छोटा सा ही है। कही पम नगर की ओर है। यह कारखाना उसने सहकारिता के आधार पर स्थापित किया है। यह एक ऐसा जीवट का भादमी है कि जिस काम के पीछे पड़ जाता है उसे करके ही छोड़ता है। कोई पाया उसके रास्त का रोक नहीं सकता। बड़ा ही तेजतरार और जीवट का भादमी है, ओर मजबूत इरादे का भी भट्टक व्यक्ति। नि सन्देह बड़ा ही राश्वार भादमी है। और सबसे बड़ी बात यह है कि यह शहर भर के प्रतिष्ठे से बीमार नहीं है। वह सारे समाज की दुराइया को पुटकिया में मुधारने का ठेकेदार नहीं बनना। क्योंकि तुम तो जानती ही हो, हम स्त्री बड़े भोजन साथ है, हम घागा करत ह कि अब कुछ एक साथ घार एक दिन म हो जाय। हस्पता पर सरसा जमाना चाहत है। चाहत है कि कुछ ऐसा हो जाय कोई ऐसा व्यक्ति पैदा हो जाय, जो पत्तक मारते हो एक दिन में मारे दुःख दूर करव हमारी सारा मुसीबतें ओर हमारे कष्ट हमारे जीवन से दूर करव तक दुखत दौत की छरव। ऐसा क्या जादू हो सकता है भला—शांतिवाद, ग्राम पंचायतें, ग्रहिय पेपेंट्सेय विदधी युद्ध या जा भा तुम चाहो! हम तो बस यह चाहिये कि हमारा दुखता दौत कोई निफल व। यह सब काहिता, निकम्मापन ओर उधन बिचार है। लेकिन सामाजिन एसा नहीं है—नहीं, यह नीम हकीम नहीं है, यह नम्बर एक का भादमी है।

मरुतिना ने अपना हाथ हिलाया, मानां वह रहा, 'छोड़ो, छोड़ो, तो उसकी बात छोड़ो।'

'अच्छा और यह लड़की', उसने पूछा, 'नाम भूल गई मैं उसका— जो उससे साथ भागी थी मेग्यानाय के साथ ?'

मरिमाना ? ओह, यह घर उया सालामिन की पत्नी है। अब तो एक घात से भी ऊपर हो गया उनके रिवाज का ठहर। पहिले तो वह



सिर्फ सोगा को दिखाने के लिए ही था, पर अब तो मुना है वह सचमुच उसकी पत्नी हो गई है। हाँ, हाँ उसकी पत्नी हो गई है।'

मधुरिना ने फिर अपना हाथ हिनाया। एक बार उसे नेज्जानोब के कारण मरिघाना से इर्षा हुई थी, अब वह उससे नाराज थी कि उसने उसकी स्मृति के साथ विदबासपात किया। मरा क्याम है कि अब तक तो बाल-बच्चा भी हो गया है उनके। उसने तिरस्कार के स्वर में कहा।

'हो सकता है, पर मुझ पता नहीं। लेकिन तुम किपर चला? पाकिस्तान ने, यह देखते हुए कि वह जाने के लिए अपना हूट उठा रही है कहा। 'यात्री दर और रुको न स्नापाश्का अभी पाय धाती ही हाथी। यह बात नहीं है कि उसे मधुरिना का राक रत्न में ही कोई विशेष दिलचस्पी था, वह तो किसी के सामने अपने सीन में अब तक जमा हुए और व्यक्त होने के लिए उमड़ते भावा को अभिव्यक्त करने के लिए लाजावित था। और इस अवसर को वह हाथ से नहीं जाने देना चाहता था। पाकिस्तान पीटसबर्ग में सौटने के बाद बहुत कम लोगों से मिला था, खास कर नयी पीढ़ी के लोगों से। नेज्जानोब काइ ने उसे इरा दिया था, वह बड़ा चौकन्ना हो गया था और सभा सासाइटी से फगो काटता था, और उबर नौजवान भी उसे सर्वाधिक दृष्टि से देखते थे। यहाँ तक कि एक मौजवान ने तो उसके मुँह पर ही उस पुलिस का मुखाविर तक बह दिया था। और पुरानी पीढ़ी के लोगों से मिलने-जुलन की उस कोई इच्छा नहीं होती थी। इसलिए अभी कभी तो ऐसा होगा कि हफ्ता यह बिना बोन ही रह जाता। यह अपनी बहन से भी गुल कर न बोल पाता था—इसलिए नहीं कि यह उसे इसक यात्रा महा समझता था, नहीं यह बात नहीं थी। उसकी वाक्य बुद्धि के धारे में उसकी बड़ी अंभी धारणा थी लेकिन उसके साथ उस बड़ी गम्भीरता और सच्चाई से बात करनी होती थी, जैसे हा यह उसके साथ 'तुम्हारे पाय चलने लगता' कहते हैं वह

उसको घोर ऐसी धर्म पूरा कदम दृष्टि से देखने लगती कि वह धर्म से पानी-पानी हो जाता। घोर मला घादमी 'तुरुप बात' के बिना मसे ही कभी-कभी ही सहा कैसे रह सकता है? इस लिए पीटसबर्ग का जीवन उसक लिए अत्यन्त ही नीरस और बकाने वाला हो गया था घोर यह सोचता कि यहाँ से यह कहीं और चला जाय, चायद मास्का। बन्द तासाव के पानी की तरह, तरह-तरह के विचार, कल्पनाएँ, तरह-तरह की उड़ाने, सुभँ, सुन्दर वाक्य उसके मन में इकट्ठे हाँसे जा रहे थे बाँध टूटने की नौबत ही न भाती थी, पानी में अब संझाप घान सगी थी। तभी मरुरिना से उसकी भेंट हो गई और उसने बाँध क दरबाजे फोस दिए, और मोलता गया मोलता गया। " वह पीटसबर्ग वहाँ के जावन, और तपूच कस के वार में बालसा रहा, कुछ नहीं छूटा उसमे। मरुरिना का उन सय वाता स कोई विशेष विम्वस्यो नहीं थी पर उसने कहीं टा- टारु नहीं की और न धपनी घोर से ही कोई बात बहो, उस चुपचाप सुनती रही और वह जाहता भी नहीं था।

'हाँ निश्चय ही, उसने कहा, 'बड़े भजोव दिन प्रागए है, मे सुम्ह बिदवास दिला सकता है। समाज में एक टहराव प्रागया है हर प्रादमी सिर सन ऊवा हुमा है। साहित्य में एक सोचतापन ध्याया हुमा है। प्रालोचना के क्षेत्र में धनर किसी उन्नतिशील प्रालोचक का कहना है कि 'मुर्गी की विशेषता है अडे देना' सो इस महान सत्य की स्थापना करने क लिए नी बह पूर कीस पेज लगाएगा और फिर भी बात साफ नहीं होगी। घोर में सुम्ह बताऊँ कि यह सोच पय क डेर की तरह मुसापम घोर ठडे गाशन को तरह चिकने होत है और इतनी बातें करत है कि मुहस पूरु निमसन लगता है घोर बह नी अत्यन्त चापारण जान। विज्ञान म हा ! हा ! हा 'सबमुष हमारा भी एक प्रसिद्ध फाट है सकिन यह हमार इन्जीनियरा क कातरा पर टके कीते क प्रतिरिक्त घोर कुछ नहीं है। रजा में भी नहीं हात है।

अगर आज तुम संगीत सुनने जाओ तो वहाँ तुम्हें राष्ट्रीय एग्जिमेन्टस्की  
 का संगीत सुनने का मिस आयगा 'आज कम बड़े हल्ले हैं उसके।  
 और मैं तुम्हें सच कहता हूँ कि गधा भी उससे पच्छा गाता होगा।  
 और स्कोरोफिन भी—हमारी समझ से सम्मानित भरिस्टारकस को तो  
 तुम जानती ही हो—वह भी उसकी तारीफ के पुल बाँधता है। वह  
 कहता है कि यह कुछ पादचात्य कला से भिन्न वस्तु है। वह हमारे  
 निकम्मे चित्रकारों की प्रशंसा करते नहीं पावता। एक जमाना था, वह  
 कहता है कि वह योरप और इटली वाले कलाकार का बड़ा गुन गाता  
 था पर उसने रासिनी को सुना है और सोचा 'वाह! वाह!' और  
 उसने राफने के चित्र देखे—'वाह! वाह!' और वह वाह वाह हमारे  
 नौजवानों के लिए काफी है वह भी स्कोरोफिन के साम-साप वाह  
 वाह चित्स्लात हैं। और सन्तुष्ट है। और उधर जनता की गरीबी  
 ममानक रूप धारण करती जा रही है, करों के बोझ से दबे जा रहे  
 हैं। सुधार के नाम पर वस इतना ही हुआ है—सबने टोपी पहनना  
 शुरू कर दिया है और उनकी पत्नियां न टोपियाँ उतार दी हैं  
 और भुँसमरी। घराब खोरी। सूख खारी।

लेकिन अब मधुरिना का जम्हूँर घाने लगी थी और पाबिसन ने  
 मनुमथ किया कि अब बात था विषय बदलना चाहिए।

उसने विषय बदलत हुए मधुरिना से पूछा, कि अरे तुमने अभी  
 यह तो बताया ही नहीं कि पिछले दो वर्षों तक तुम कहाँ-कहाँ रही,  
 अब यहाँ किसने दिना से हा और क्या कर रही हो यहाँ, और  
 इटैलियन कैस बन गई तुम, धार

'तुम्हें यह सब यादें जानने की कोई आवश्यकता नहीं', मधुरिना  
 ने उत्तरी बास फाटते हुए कहा, 'तुम्हें क्या साम है? तुम्हारे मोत्र से  
 तो यह सब अब बाहर के विषय है।'

इस बात से पाबिसन के दिल को ठेस लगी, पर वह इस ठेस के  
 नाव का छिपाने के लिए जबरदस्ती की हँसी-हँसा।

खर, मुन्हारी नर्जी, उसने कहा मैं जनता हूँ कि वर्तमान पीढ़ी  
के लोग मुझे पुराना पढ़ गया समझते हैं और वास्तव में मैं अपने  
को उन लोगों की पक्ष में नहीं गिन सकता जो  
उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। 'लो स्तोत्रोक्ता हमारे लिए चाय  
मे आई। ना एक प्याना जरूर पिया और जरा मरी बान सुनो  
गायद मेरी बाता में तुम्हें कुछ अपने मतलब की बान मिल जाय।  
मगुरिना ने एक प्याना चाय और एक टिकिया चीनी से ली और  
उसके साथ चाय की चुस्की लेन लगी।

इस बार पाकिलन की हँसी सफ़री थी।

'यह अच्छा ही है कि यहाँ इस समय कोई पुस्तक वाला नहीं है,  
नहीं तो इन्ट्रो की काउन्टेस - क्या मला सा नाम है?'  
'रोसादीसान्ताफियूम' मगुरिना ने अपनी चाय की चुस्की तब  
ए प्रनटिग्न गम्भीरता के साथ कहा।

'रोसादीसान्ताफियूम। पाकिलन ने दुहराया, 'और वह बानी  
ने टिकिया के साथ चाय की चुस्की ली है। यह बड़ी वमन बात है।  
ए मिनट में पुस्तक चायपान हा जायगी।

हाँ मगुरिना ने कहा विदेश में एक यर्दीपारी मर पीछे पड़  
गया, और सवाला की भङ्गी लगा तो उसने प्राशिर जब मुन्ह  
सहन न हुआ तो मैं प्राजिब प्राकर उसने कहा 'तुदा क वान्त मरा  
पिड छोड़िए जनाव!

क्या यह तुमने स्टैलिनन मापा में कहा ?  
नहीं, रूसी में।'

'और उद्यन क्या किया ?'

'उद्यन ? यह यहाँ च चलता बना।

सायाज। पाकिलन ने ऊँच स्वर में कहा। काउटेन जिगवार।  
एक प्याना और सा। हाँ, मे तुनय यह कहना चाहता था कि तुम

अगर आज तुम संगीत सुनने जाओ तो वहाँ तुम्हें राष्ट्रीय एग्जिमेन्टस्को  
 का संगीत सुनने को मिल जायगा आज कल वड़े हस्ले हैं उसके ।  
 और मैं तुम्हें सब कहता हूँ कि गया भी उससे अच्छा गाता होगा ।  
 और स्कोरोफिन भी—हमारी समझ से सम्मानित भरिस्टारफस को तो  
 तुम जानती ही हो—वह भी उसकी तारीफ के पुस बाँधता है । वह  
 कहता है कि यह कुछ पाश्चात्य फसा से भिन्न वस्तु है । वह हमारे  
 निकम्मे चित्रकारों की प्रशंसा करते नहीं आघता । एक जमाना था, वह  
 कहता है कि यह योरप और इटली वाले कलाकारों का बड़ा गुन गाता  
 था पर उसने रोसिनी को सुना है और सोचा 'वाह ! वाह !' और  
 उसने राफल के चित्र देखे—'वाह ! वाह !' और वह वाह वाह हमारे  
 नौजवानों के लिए काफी है, वह भी स्कोरोफिन के साथ-साथ वाह  
 वाह चित्नात हैं । और सन्तुष्ट है । और उपर जनता की गरीबी  
 भयानक रूप भारण करती जा रही है, फरा के बोझ से दबे जा रहे  
 हैं । सुपार के नाम पर बस इतना ही हुआ है—सबन टोपी पहनना  
 शुरू कर दिया है और उनकी पत्निमा ने टोपियाँ उतार दी हैं  
 और भु सभरी । घराब खोरी । सुद खारी ।"

लेकिन अब मधुरिना को चम्हार्ई जाने लगी थी और पाक्सिन ने  
 अनुभव किया कि अब बात का विषय बदलना चाहिए ।

उसने विषय बदलते हुए मधुरिना से पूछा, 'बिं भरे तुमन अभी  
 यह था बताया ही नहीं कि पिछले दो वर्षों तक तुम कहाँ-कहाँ रही,  
 अब यहाँ कितने दिना से हो और क्या कर रही हो यहाँ और  
 इटैलियन कैस बन गई तुम, धार ।'

तुम्हें यह सब बातें जानने की कोई आवश्यकता नहीं', मधुरिना  
 ने उसरी बात पाटते हुए कहा, 'तुम्हें क्या लाभ है ? तुम्हारे क्षेत्र से  
 था यह सब अब बाहर के विषय है ।'

इस बात से पाक्सिन के दिल को ठेस लगी, पर वह इस ठेस के  
 नाव को छिपाने के लिए जबर्दस्ती की हँसी-हँसा ।

'सैर, तुम्हारे मर्जी' उसने कहा मैं जनता है कि वर्तमान पीढ़ी को नोग मुझे पुराना पड़ गया समझत है और बान्धव में नै धपन को 'उन लोगों की पंक्ति में नहीं गिन सकता जा उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। 'लो स्तोपोन्ना हमारे लिए चाय वे माई। ला, एक प्याना जरूर पिया और जरा मरो वात नुनो चाय' मेरी बातों में तुम्हें कुछ धपन मतलब की वाम मिल जाय। मधुरिना ने एक प्याला चाय और एक टिकिया पीनी ल पी और उसके साथ चाय की चुस्की लेन लगी।

इस वार पाकिस्तान की हँसी सक्की पी।  
'बहु धक्का ही है कि यहाँ हम समय कोइ पुगिस वाता नहीं है'  
नहीं तो इटली की काउन्टेस 'क्या भला ना नान है'

'रोफादीसान्तोफियूम' मधुरिना न अपनी चाय का चुम्बा लें हुए धनद्विन गम्भीरता के साथ कहा।  
'राफा-नेसान्तापिचूम। पाकिस्तान ने दुहराया और बड़ बान्धव की टिकिया के साथ चाय का चुस्की लती है। मत्र वरा धनन बन्द है। एक मिनट में पुलिस रावधान हा जायगी।

हाँ, मधुरिना न कहा 'पिदा में एक बर्षोचारी नर बद्ध - नचा, और सवाला की रुनी लगा था उसने, फाल्तिन उड चुक्य महन न हुषा सो मेने प्राजिज भाकर गनम यहा "सुना इ इन्ड न्या पिड छाड़िए, जनाव।'  
क्या यह तुमने इटैलियन नापा म करा /  
'नहीं कसी में।  
और उसन क्या किया ?  
'उसने ? वह यहाँ स चलता बना।'  
शाबाश ! पाकिस्तान ने जैव स्वयं न दृष्टा। इतना उद्वेग

क्या नामा और सा ! हाँ, मैं तुम्हें नू इतना उद्वेग

सोसोनोमिन के बारे में बड़े ठंडे स्वर में बोल रही थीं। लेकिन क्या तुम जानती हो कि मैं मुझे किस बात का विश्वास दिला सकता है। उसकी तरह के लोग ही—वास्तविक मानव हैं। पहिले तो वे समझ में नहीं आते, लेकिन वे वास्तविक मानव हैं, इसमें जरा भी संदेह नहीं, यह तुम विश्वास जानो, और भविष्य उन्हीं के हाथ में है। न तो वे महापुरुष या नेता हैं और न 'धर्मवीर' ही हैं, जिनके बारे में किसी भी मछली वाले समरीकी ने या प्रियेज ने—हम गरीबों के निस्तार के लिए एक किताब लिख डाली है, वे लोग मजबूत, मनगढ़ मुस्त जनता के भादमी हैं। लेकिन आज ऐसे ही लोगों की जरूरत है। सोसोनोमिन को ही देखो, उसकी बुद्धि दिन के प्रकाश की तरह साफ और मछली की तरह स्वस्थ है क्या आश्चर्य नहीं! और हमारे यहाँ रूस में यही होता रहा है कि अगर आप मावुक, सबेठ और सजीव व्यक्ति हैं, तो निश्चय ही आप अपाहिज हैं। लेकिन दावे से कह सकता है कि सोसोनोमिन का दिम उन्हीं बाता से दुस्तता है, जिनसे हमारा दिम दुस्तता है, और वह उनसे पूणा करता है, जिनसे हम पूणा करते हैं—लेकिन वह घान्त स्वभाव का भादमी है, और उताका घात शरीर उसी रूप में क्रियाशील होता है जैसा वह चाहता है इसी लिए ता वह शान्दार भादमी है। हाँ, निश्चय ही, दूढ़ भादर्श का व्यक्ति है, व्यर्थ की बाता से मतलब नहीं रखता, शिक्षित—और जनता के बीच का भादमी है, सरल—पर चतुर और मुझे क्या चाहिए ?

और तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो, पाकिस्तान ने अपनी बात जारी रखी। वह जाग में आता जा रहा था और जोष के भावेय में उस इस बात का भी ध्यान नहीं रहा कि मशुरिना फासी बेर से उसकी बात नहीं सुन रही है और फिर एक बार दूर दूर्य में उसकी नजर खो गई है। कोई चिन्ता की बात नहीं कि रूस में हर तरह का साग है—स्ताबाकित, प्रकसर और जनरल, सारे और सरल और

उर्फ मङ्गल वासे नी ध्यानन्वयादी नी और नकसदी हर तरह के लोग, बड़े विश्वित्र-विश्वित्र । मैं एक महिला को जानना हूँ जिसका नाम या हावराग्या त्रिस्टेहाय, जो बिना किसी तुरु-दान या उर्फ क राबनक हो गई नी और हर व्यक्ति का यह विद्वान्य दिसावो फिरती थी कि उसक मरने पर यदि उसका हृदय और कर दत्ता जायगा तो उसक हृदय पर हावरोग्या त्रिस्टेहाय क हृदय पर हनरी पंचम का नाम प्रफिष्ट मिना। इसलिए मरी प्यारी मगुरिना इस सब की चिन्ता मत करो, मकिन एक बात में तुम्हें बचाव है और यह यह कि हमारा सच्चा गस्ता सोनोमिन क साथ है, सीधे सच्चे उमभंगर जालामिना क साथ ! जरा ध्यान दो यह बात में तुमस जब १८३० क जाड़े में पढ़ रहा है तब जर्मनी फ्रांस को कुचसन की नैयारा कर रहा है—

सिमुरदा' पाकिस्तान क पीठ पीछे य स्नानदुमिया पी कोमत प्राबाज मुनाई नी 'मिर सगन स तुन धननी इन नविप्य सम्बन्धी कल्पनाप्रा म धन धन और उसक प्रभाव का नून जा रह रहा' - धोर फिर उसने बलरी स जाइ नशम नगुरिना तुम्हारी बात नहा सुन रही' प्रकटा हो तुन उन्हें एम प्याला पान धोर ग।'

पाकिस्तान सनल गया ।  
'मोह, हाँ ! क्या एक प्याला धोर नहा लागी ?'

मकिन मगुरिना ने धननी उदास धोर बुन्दी हुइ प्राधैं धीरे धीरे उसकी धोर फेर धोर सोई-सोई सी वाली पाकिस्तान में तुमस पूछना पाहती या कि क्या तुम्हारे पास ने-पानोव क कुछ पन या उवका कार्ड वस्वीर हे ।

हाँ मरे पाउ एउ वस्वार ता हे धोर मेरा काल है, वह काफी प्रकटी नी है, इस मत्र की दरज में है । धनो दवा है हुइ कर । जब वह दरज में उन्वीर बुझने लगा तो स्नानदुमिया मगुरिना क निवट प्राई धोर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि स दर तरह उस एक टक



देखती रही और एक साथी की भाँति उसका हाथ अपने हाथ में धाम लिया ।

'यह रहा । मैंने पा लिया ।' पाकिस्तान ने चीख कर कहा और तस्वीर मशूरिना का धमा दी । मशूरिना तस्वीर को अन्धरी तरह देखे बिना और बन्धुवाद का एक शब्द भी न कहते हुए, एक धम गुलाबी होते हुए तस्वीर को जल्दी से खेब में रख और टोपी पहनती हुई दरवाजे की ओर बढ़ी ।

'जा रही हो तुम ?' पाकिस्तान ने पूछा । 'कम से कम, हमें यह तो बसाती जाती कि तुम रहती कहाँ हो ?'

'जहाँ पैर फैसाने को जगह मिल जाय ।

'ठीक है, समझ गया, तुम नहीं चाहती कि मैं जानू । खैर ! अन्धका कम से कम यह तो बता दो कि क्या तुम अब भी बासिन्ती निकोसायेविच के नेतृत्व में काम करती हो ?'

'तुमसे मतसब ?'

'या संभवतः किसी ओर के—सिदोर सिदोरिच के नेतृत्व में ?'

मशूरिना न कोई उत्तर नहीं दिया ।

'या कोई गुप्त नाम व्यक्ति तुम्हारा नेतृत्व करता है ?'

मशूरिना दरवाजे के बाहर निकल चुकी थी ।

हाँ कोई गुप्त नाम ही है !

उसने जोर से दरवाजा बन्द किया ।

बहुत देर तक पाकिस्तान शब्द दरवाजे के आगे खड़ा रहा ।

'गुप्त नाम रुस !' अन्ततः उसने कहा ।



---

घामरा घमरा घाटं घेस घहीर पाहूँ घामरा ।

